Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुदत्त

न्यायाधिकरण

TeleFax - 23553624 , P.P.- 23617134
E Mail : indiabooks@rediffmail.com
हिन्दी साहित्य सदन
2 , बी डी चैम्बर्स , 10/54 डी बी गुप्ता मार्ग
(समीप पह्लाद मार्केट) करोल बाग, न० दिल्ली-05

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
167926

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर्ष साहित्य
Complete Vedic Books Store
Yog, Vedic, Ayurvedic, Religious
All Yog & Organic Products
(M) 9541317278, 8069821469
Web.: aarshsahitya.com

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न्यायाधिकरण

गुरुदत्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रंजन साहित्य प्रकाशन द्वारा प्रकाशित

श्री गुरुदत्त की अन्य अनुपम रचना

दो लहरों की टक्कर

दो खण्डों में सम्पूर्ण (पृष्ठ सं० १२७०)

भारत में अंग्रेज़ी राज्य की स्थापना और ईसाइयों द्वारा प्राचीन ज्ञान-विज्ञान पर आरोप, इनकी प्रतिक्रिया में भारत में दो विचार तरंगें उठीं। एक तरंग थी राजा राजमोहन राय द्वारा स्थापित ब्रह्म समाज के रूप में तथा दूसरी तरंग थी महर्षि दयानन्द द्वारा स्थापित आर्य समाज के रूप में। दोनों का परस्पर टकराव हुआ। यह टकराव क्या था और समयान्तर में दोनों ने क्या-क्या रूप धारण किये, यह इस अन्यतम उपन्यास का विषय है।

सामाजिक, राजनैतिक तथा सांस्कृतिक समस्याओं का विश्लेषण उपन्यास के रूप में और वह भी इतना सजीव तथा सरस, यह श्री गुरुदत्त की लेखनी का कमाल है।

□ □

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न्यायाधिकरण

गुरुदत्त

081
167926
167926

रंजन साहित्य प्रकाशन, नई दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संस्करण : द्वितीय १९७५

R
089.9143
GUR-N

[redacted]
23553624, 23551344, 9213527666
हिन्दी साहित्य सदन
2, बी.डी. चैम्बर्स 10/54 देशबन्धु गुप्ता रोड
करोल बाग, नई दिल्ली-1100 5
[redacted]

₹70P00

प्रकाशक : रंजन साहित्य प्रकाशन, नई दिल्ली-२६

वितरक : भारती साहित्य सदन सेल्स,
३०/९० कनॉट सरकस, नई दिल्ली-१

आवरण शिल्पी : पाल बंधु

मुद्रक : अजय प्रिंटर्स,
शाहदरा, दिल्ली-११००३२

23553624, 23551344, 9213527666
हिन्दी
2.

NYAYAADHIKARAN : Novel : Gurudutt : ₹ 70P00

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूमिका

स्वराज्य-प्राप्ति के उपरान्त भारत में धर्म-व्यवस्था उत्तरोत्तर बिगड़ती जाती दिखाई देती है। यहाँ धर्म कानून का पर्याय माना है। करने योग्य कर्म को धर्म कहते हैं और वर्तमान काल में कानून ही करने योग्य कर्म का निर्णय करता है।

जब यह देखा जाता है कि चोरी, डाके, हत्याएँ, लड़ाई-झगड़े बढ़ रहे हैं, तो इसमें कारण जानने की लालसा उत्पन्न होनी स्वाभाविक ही है। यह पुस्तक इस जानने की लालसा की पूर्ति में एक प्रयास है।

अधर्माचरण अर्थात् कानून के विरुद्ध आचरण, आज समाज में व्याप्त हो रहा है। यह निरन्तर अधिक और अधिक हो रहा है। ऐसा क्यों है?

लेखक का मत है कि इसमें मुख्य कारण जीवन की भौतिकवादी कल्पना (materialistic conception of life) ही है। यूँ तो आत्मा-परमात्मा को न मानने वाले, वैसे ही आदि काल से संसार में उपस्थित हैं, जैसे आत्मा-परमात्मा को मानने वाले। देवता और दानवों की उत्पत्ति आदिकाल में हुई ही मानी जाती है। इस पर भी यूरोप के सत्रहवीं और अठारहवीं शताब्दी के प्रायः मीमांसक (फिलौसोफर) जीवन की भौतिकवादी कल्पना पर विशेष बल देते रहे हैं। इस बल का परिणाम यह हुआ है कि यूरोप की राजनीति भौतिकवाद की भित्ति पर खड़ी हो गई है। कार्ल मार्क्स ने तो जीवन तथा संसार की गतिविधि का कारण ही भौतिक बताने का यत्न किया है और उसकी मीमांसा की संसार पर आज गहरी छाप है।

भौतिकवादी मानता है कि इस घटनावश बने संसार में मनुष्य एक घटना है। इसके सब कार्य उसकी शारीरिक आवश्यकताओं की पूर्ति के निमित्त ही हैं और मानव-इतिहास इन आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए किए गये प्रयत्नों का इतिहास-मात्र है। दुनिया की गतिविधि इसी विचार की धुरि के चारों ओर चल रही है।

यूरोप का भौतिकवाद भारत में, अंग्रेज़ी काल की शिक्षा-दीक्षा के माध्यम से आया है। अब अंग्रेज़ तो गये, परन्तु अंग्रेज़ी भाषा, साहित्य और जीवन-मीमांसा के अनुयायी नेताओं को पीछे छोड़ गये हैं। अतः वह नैतिक पतन, जो यहाँ अंग्रेज़ी काल में आरम्भ हुआ था, अभी तक चल रहा है और दिन-प्रतिदिन वृद्धि पा रहा है।

अंग्रेज़ी काल में यहाँ एक विशेष न्याय-प्रपंच बना और स्वराज्य-प्राप्ति के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपरान्त वैसा ही चल रहा है। वही डिप्टी-कमिश्नर और डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट, वही कचहरियाँ और वकील, पुलिस तथा खुफिया पुलिस, कोर्ट-फीस और वकीलों की उजरत, अपीलें और रिविज़न इत्यादि चल रही हैं, जो अंग्रेज़ी काल में थीं।

अंग्रेज़ी काल में तो शासक विदेशीय थे और वे जैसे-कैसे अंग्रेज़ी शासन बनाये रखने में ही अपना कल्याण मानते थे। अतः उनकी दृष्टि में मौलिक न्याय अंग्रेज़ी राज्य को यहाँ बनाये रखने में था।

कहीं अंग्रेज़ी न्यायाधीश बहुत यत्न से दूध-का-दूध, पानी-का-पानी करता देखा जाता था तो इसमें भी उसका उद्देश्य वही होता था, जिससे शासितों के मन में अंग्रेज़ी न्याय की महिमा बनी रहे और भारतवासी यहाँ पर अंग्रेज़ी राज्य को ईश्वरीय वस्तु समझते रहें।

उनके लिये न्याय राज्य के लिये बन रहा था। राज्य न्याय की स्थापना के लिये नहीं था। जब-जब भी न्याय किसी राज्यद्रोही के पक्ष में होता था, अंग्रेज़ी न्याय अन्याय का रूप धारण कर लेता था। उस काल में कानून अर्थात् धर्म केवल अंग्रेज़ी राज्य को भारत में बनाये रखने के लिये रह गया था। परिणाम यह हुआ कि राज्य का नाश हुआ। रक्षा किया हुआ धर्म रक्षा करता है। मारा हुआ धर्म मारकर ही साँस लेता है।

यही बात स्वराज्य-प्राप्ति के उपरान्त कांग्रेसी राज्य में हो रही है। आज कांग्रेस अपना शासन बनाये रखने के लिये कानूनों का निर्माण कर रही है। शासन मौलिक न्याय के लिये नहीं है।

संसद् और विधान सभाएँ प्रजा से निर्वाचित प्रतिनिधियों से बनती हैं, परन्तु इन संस्थाओं की सदस्यता के लिये किसी प्रकार की योग्यता का होना आवश्यक नहीं है अर्थात् कानून वाली संस्थाओं में सदस्य बनने के लिये कानून जानने और इसके मानव-समाज पर प्रभावों के ज्ञान की आवश्यकता नहीं मानी जाती। यह ब्रिटिश पार्लियामेंट की नकल पर यहाँ चल रहा है।

यूरोप के प्रायः देशों में, जहाँ प्रजातन्त्रात्मक विधान प्रचलित हैं, यही विडम्बना चल रही है और मानवता का ह्रास हो रहा है। कारण स्पष्ट है कि कानून और शासन चलाने वालों में इन दोनों बातों का ज्ञान और अनुभव नहीं होता।

कानून का ज्ञान और कानून का आधार कुछ तो होना आवश्यक ही है। पार्लियामेंट, संसद्, धारा-सभाएँ अपने कार्यों में सर्वथा स्वतन्त्र नहीं हो सकतीं। मौलिक न्याय को विकृत करने का अधिकार इनको भी नहीं होना चाहिए। भारत के संविधान में कुछ मौलिक बातों का उल्लेख है। वे पर्याप्त नहीं और फिर उनमें भी परिवर्तन करने का अधिकार संसद् को है।

भारतीय परम्परा में कानून का आधार सत्य ज्ञान माना है और वेद सत्य विद्याओं की पुस्तक मानी गयी है। भारतीय धर्मशास्त्र में लिखा है—

'वेदोऽखिलो धर्ममूलं स्मृतिशीले च तद्विदाम।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूर्ण धर्म का मूल वेद तथा वेद और स्मृति के विद्वानों का चलन है। और—

'सर्वंतु सम वेक्ष्येदं निखिलं ज्ञानचक्षुषा।'

अपने धर्म का निश्चय करते समय ज्ञान चक्षु से देखो।

अर्थात् धर्म व्यवस्था देने वाले, अभिप्राय यह कि कानून बनाने वाले वेद अर्थात् सत्य ज्ञान के जानने वाले होने चाहिएं। पाश्चात्य आचार-विचार के मानने वालों को यहाँ वेद शब्द अरुचिकर प्रतीत होगा, परन्तु इस बात को कौन अस्वीकार कर सकता है कि समाज के लिये कानून बनाने वालों को संसार का सत्य ज्ञान होना आवश्यक है।

सार्वलौकिक मत (Universal Franchise) से संसद् सदस्य निर्वाचित हों अथवा किसी अन्य प्रकार से उनकी नियुक्ति हो, यह विवेच्य नहीं। विवेच्य बात तो यह है कि कानून बनाने वाले, जिनको धर्म की व्यवस्था करनी है, धर्म के ज्ञाता और धर्म के मूल आधार को जानने वाले होने चाहिएं।

भारत में भी संसद् तथा विधान सभाओं का संगठन वैसा ही बना है, जैसा यूरोपीय प्रजातन्त्रात्मक देशों में है। अतः जो अव्यवस्था वहाँ पर है, वही भारत में भी उत्पन्न हो रही है। इस अव्यवस्था का व्यापक परिणाम यह हो रहा है कि जैसे संसद् में सदस्यता के लिये योग्यता, चरित्र और अनुभव का होना कोई आवश्यक नहीं, वैसे ही देश की अन्य बातों में भी अधिकारी-अनधिकारी का भेद-भाव मिटता जाता है। उचित-अनुचित तथा उपकारी-अनुपकारी में भेद करने की न तो किसी में योग्यता ही रह गयी है और न ही इच्छा।

यूरोपीय न्याय-व्यवस्था में वकीलों का एक महान् स्थान है। इसमें लेखक का मत है कि वकील होना तो कोई बुरी बात नहीं है। हाँ, पेशेवर वकील होना, जो दाम लेकर किसी को न्याययुक्त सिद्ध करने का यत्न करता है, बुरी बात है। इसी से खराबी उत्पन्न होती है। इनसे अभियोगों में वृद्धि, इनका लम्बे काल तक चलना, न्यायाधीशों का स्वयं न्याय करते समय प्रमाद में फँसना, इत्यादि कितने ही अवगुण उत्पन्न होते जाते हैं। सबसे बुरा परिणाम, पेशेवर वकीलों के होने से यह हो रहा है कि न्याय उत्तरोत्तर महँगा और महँगा होता जाता है।

जिन लोगों ने न्याय की समस्याओं पर कभी गम्भीरतापूर्वक विचार नहीं किया, उन्हें न्यायालय, बिना वकीलों के एक अस्वाभाविक बात प्रतीत होगी। वास्तव में पैसा लेकर पैरवी करने वाले वकील, न्याय को अप्राप्य करने में और न्याय को अन्याय में बदलने में, पूर्णतया नहीं तो बहुत अंशों में उत्तरदायी अवश्य हैं।

प्रश्न उपस्थित होता है कि बिना वकीलों के यह कैसे हो? उत्तर है जैसे होना चाहिए वैसे हो अर्थात् प्रजा को न्याय प्राप्त कराना राज्य का दायित्व है। अतः राज्य को निष्पक्ष, विद्वान्, अनुभवी और चरित्रवान् न्यायकर्ता नियुक्त करने चाहिएं।

जब किसी को यह अनुभव हो कि उसके साथ अन्याय हो रहा है, वह सीधा न्यायाधीश के सम्मुख उपस्थित होकर अपनी बात मौखिक रूप में बताये। कचहरी में उसकी बात को लिखा जाये और न्यायाधीश उस पर उचित आज्ञा करे। वह बताये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि क्या सत्य ही उस व्यक्ति के साथ किसी प्रकार का अन्याय हुआ है ? यदि अन्याय हुआ है तो किसने किया है ? अपराधी को दंडित करने से पूर्व उसको बुलाकर उसके विपरीत आरोप सुनाये। आरोप कहे जाने पर वह उस अपराधी की सफाई सुने और तदनन्तर आवश्यक हो तो साक्षी बुलाये और अंत में विधि-विधानानुसार निर्णय दे।

यदि न्यायकर्ता स्वयं कानून नहीं जानता और उसे पक्ष-विपक्ष के वकीलों की बहस सुनकर ही निर्णय लेने की बात समझ में आती है, तो वह व्यक्ति न्यायकर्ता के पद के योग्य नहीं है।

इसके साथ ही कानून की भाषा सरल, स्पष्ट और सुबोध होनी चाहिए। कानून के शब्द, कानून का उद्देश्य और अर्थ, जैसे कानून बनते समय उपस्थित किये गये हो, उस उद्देश्य को ही प्रकट करें। उद्देश्य से भिन्न अर्थ अमान्य हों।

कानून का आधार व्यक्ति को अधिक-से-अधिक स्वतन्त्रता प्रदान करना हो। समाज की स्वतन्त्रता अथवा अधिकार व्यक्ति की स्वत्रतन्ता की उपज ही हों। जब तक किसी व्यक्ति का कार्य किसी दूसरे व्यक्ति की स्वतंत्रता तथा अधिकारों का हनन न करे, तब तक कानून उसकी स्वतन्त्रता और इच्छा का आदर करे।

शासन स्वयं व्यापारी अथवा उद्योगपति न हो। ऐसा होने से शासन वैश्य-वृत्ति वाला बन जायेगा। वैश्य-वृत्ति वाला शासन न्याय करने के अयोग्य सिद्ध होगा।

वैश्य-वर्ग प्रायः लोभी होता है। इसकी लोभ की प्रवृत्ति को नियन्त्रण में रखने के लिये शासन की आवश्यकता है। जब शासन स्वयं ही वैश्य-वृत्ति करने लगेगा तो उसे नियन्त्रण में कौन रख सकेगा ? यह सर्वत्र देखा गया है कि ज्यों-ज्यों शासन उद्योग-धंधों को हाथ में लेता जाता है, त्यों-त्यों न्याय का स्तर हीन होता जाता है।

कानून अर्थात् धर्म एक अति पवित्र वस्तु है। इसके लिये नागरिक राज्य को करोड़ों रुपये कर के रूप में देते हैं। जिस दिन जन-साधारण की दृष्टि में कानून की पवित्रता लोप होगी, उसी दिन शासन और जाति का विनाश आरम्भ हो जायेगा।

देश में शान्ति, सुख और आनन्द की वृद्धि के लिये न्याय-व्यवस्था स्थिर आधारों पर बननी चाहिए। वे स्थिर आधार हैं—सत्य, ज्ञान तथा निष्पक्षता और कानून को बनाने वाले कानून के ज्ञाता, अनुभवी, आस्तिक और मनुष्य को मिट्टी का ढेला न समझने वाले हों।

न्याय की उपलब्धि के लिये पेशेवर वकीलों को निःशेष किया जाये।

न्यायाधीश विद्वान्, कानून के ज्ञाता और अनुभवी व्यक्ति होने चाहिएं।

न्याय प्राप्त करने के लिये एक पैसा व्यय भी राज्य पर कलंक है।

यह है पृष्ठ-भूमि 'न्यायाधिकरण' की। यह एक उपन्यास है। इसके पात्र और घटनाएँ कल्पित हैं। इनका किसी के मान-अपमान से कुछ प्रयोजन नहीं।

—गुरुदत्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रथम परिच्छेद

: १ :

राजस्थान की एक जाट रियासत की घटना है। बीसवीं शताब्दी के दूसरे दहके के किसी एक वर्ष के मार्च मास में होली के उत्सव के पाँच दिन पीछे की बात है।

कलकत्ता का एक नवयुवक वकील रियासत की राजधानी में एक रईस के घर आया हुआ था। रईस ने तार भेज उसको बुलाया था। उसके आने पर, स्टेशन पर से, घोड़ा-गाड़ी भेज, उसे घर लाया गया। स्नान-भोजनादि के पश्चात् जब हवेली की बैठक में वे बैठे तो रईस ने तार द्वारा बुलाने का कारण बता दिया।

रईस एक वृद्ध परन्तु ओजस्वी और सुदृढ़ डील-डौल वाला व्यक्ति था। नाम था बलभद्रसिंह। वकील कलकत्ता का एक बैरिस्टर डॉक्टर एस० एस० राय, बार० एट० ला० डी० लिट् था। डॉक्टर राय बलभद्रसिंह का मुकदमा देखने और राय देने के लिये आया था।

मुकदमा इस प्रकार था। रईस का पुत्र बलवीरसिंह होली से पहली रात महाराज के महल में, होली की दावत खाने गया था और लौटा नहीं। रईस ने पुलिस में 'रिपोर्ट' लिखवानी चाही थी, परन्तु वह लिखी नहीं गयी।

एक बात और हुई थी। उसी रात रानी साहिबा का, जो रईस की लड़की थी, देहान्त हो गया और अगले दिन उसका संस्कार कर दिया गया। रानी साहिबा के देहान्त का लड़के के लापता होने के साथ घना सम्बन्ध प्रतीत होता था।

रईस ने उक्त घटना बताकर कहा, "अब आप बताइये कि मैं क्या करूँ?"

डॉक्टर राय ने कह दिया, "यह मुकदमा नहीं है। एक वकील इसमें कुछ नहीं कर सकता।"

"परन्तु आप राय तो दे सकते हैं कि मैं क्या करूँ? आप रियासतों के मुकदमे करते रहते हैं। आप कानूनी परिस्थिति को जानते हैं। इसी कारण ही आपको यहाँ बुलाया है।"

"परन्तु श्रीमानजी! बात तो अभी पुलिस में भी नहीं गयी। इसमें अभी वकील की आवश्यकता नहीं।"

बलभद्रसिंह वकील साहब की इस अवहेलना से बहुत परेशान था। वह मन में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विचार कर रहा था कि इतना कुछ तो वह भी जानता है। जो कुछ वह नहीं जानता, उसी के लिये ही तो इतना खर्चा देकर उसे इतनी दूर से बुलाया था।

यदि कोई नौकर इत्यादि होता तो मारपीट कर उससे काम ले लिया जाता, परन्तु एक वकील को कैसे विवश किया जाये कि वह ठीक ढंग पर विचार करे।

एक बार उसने अपनी स्थिति का पुनः वर्णन कर, कहा, "देखिये, डॉक्टर राय ! मैंने आपको किसी मुकदमे में बहस करने के लिये नहीं बुलाया है। मैं एक मुसीबत में फँसा हुआ आदमी हूँ। लड़की की मृत्यु हो गयी है। लड़का लापता हो गया है। पुलिस इसलिये रिपोर्ट नहीं लिखती क्योंकि महाराज का नाम बीच में आता है। पुलिस रिपोर्ट लिख भी ले, तो भी मुझको रियासत से न्याय पाने की आशा नहीं। मैंने आपको इसलिये बुलाया है कि मैं न्याय प्राप्त करने के लिये क्या करूँ?"

"आप नई दिल्ली में वायसराय के पास अर्जी भेज सकते हैं।"

"यही तो पूछ रहा था। आप वह अर्जी लिख दीजिये। साथ ही वायसराय बहादुर से भेंट करने की प्रार्थना भी कर दीजिये।"

डॉक्टर राय को समझ आ गया कि वह एक ऐसी रियासत में है, जहाँ पर कोई अच्छी अर्जी लिखने वाला भी मिलना कठिन है। इस पर भी वह समझता था कि वायसराय के पास अर्जी करनी अंधे कुएँ में ईंट फेंकने के तुल्य होगा। उसे, इस हत्या के कारण, वायसराय का राजा के कार्य में हस्तक्षेप करना असम्भव प्रतीत होता था।

इस पर भी अपनी फीस हलाल करने का उसको मार्ग सूझ गया और वह वायसराय के नाम प्रार्थना-पत्र लिखने के लिए तैयार हो गया। उसने ठाकुर साहब को कह दिया, "प्रार्थना-पत्र सायंकाल तक तैयार कर दूँगा। उस समय तक आप टाइपिस्ट बुला रखिए। टाइप होने के पश्चात् पत्र को पुनः देख लूँगा। कल प्रातःकाल मैं यहाँ से जा सकूँ, ऐसा प्रबन्ध कर दीजिए।"

"ठीक है।" बलभद्रसिंह ने कह दिया। वह मन में विचार करता था, वकालत भी कैसा पेशा है ! ये लोग अपने-आप तो कुछ बताते ही नहीं। उसने कहा तो करने को तैयार हो गये। वह विचार करता था कि इतना कुछ तो वह पहले ही विचार चुका था।

वकील उठकर .उस कमरे में चला गया, जहाँ उसको ठहराया गया था। वहाँ अपने 'पोर्टमैंटू' में से खाली कागज़ निकाल, कलम खोल प्रार्थना-पत्र लिखने बैठ गया। उसने अभी एक-आध पंक्ति ही लिखी थी कि कमरे के बाहर से किसी ने आवाज़ दी—

"हज़ूर !"

"कौन है ?" डॉक्टर राय ने लिखना बन्द कर पूछ लिया।

"आपसे एक आवश्यक कार्य है। भीतर आ सकता हूँ ?"

"हाँ ! आ जाओ।"

अर्दली के-से वस्त्र पहने हुए एक आदमी कमरे में आ गया। उसने झुक कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सलाम की और कहने लगा, "आपको महाराज ने बुलाया है।"

डॉक्टर राय को इसका अर्थ समझ नहीं आया। समझने के लिये उसने पूछ लिया, "किस महाराज ने ?" उसका विचार था कि सम्भव है ठाकुर साहब के नौकर ठाकुर साहब को ही महाराज कहकर सम्बोधन करते हों।

"यहाँ तो एक ही महाराज रहते हैं। मेरा मतलब वालिये रियासत से है।"

"उन्होंने किसको बुलाया है ?"

"कलकत्ता से आये हुए वकील साहब को। मुझको बताया गया है कि आप ही वे वकील हैं।"

"हूँ तो मैं ही। मगर मैं यहाँ खाली नहीं हूँ। एक काम में लगा हुआ हूँ। मेरे कहीं जाने की फीस होती है। साथ ही मैं चपरासियों के हाथ बुलाने से नहीं जाता। जाओ ! ये तीनों बातें अपने महाराज से कह दो।"

डॉक्टर राय समझ रहा था कि बात मजेदार हो रही है। ज़रा दबदबे से ही जाना चाहिए। उसको विश्वास-सा था कि महाराज भी उसी विषय में कुछ कहना चाहते हैं, जिसके विषय में ठाकुर बलभद्रसिंह ने उसे बुलाया है।

अर्दली गया तो डॉक्टर राय वायसराय के नाम चिट्ठी लिखने लगा। उसने अभी एक फुलस्केप शीट ही लिखा था कि नगर का सुपरिण्टेण्डेण्ट पुलिस, वकील साहब को बुलाने के लिए वहाँ आ पहुँचा। ठाकुर बलभद्रसिंह भी उसके साथ था।

चपरासी तो बिना ठाकुर साहब को बताये, नौकरों से ही पूछकर वहाँ पहुँच गया था। थानेदार वैसा नहीं कर सका। उसे ठाकुर साहब को साथ लाना पड़ा। जब वकील ने पुलिस अधिकारी को देखा तो विचार करने लगा कि अब वह क्या करे ? वह इस प्रकार भी जाने की इच्छा नहीं रखता था। उसे एक बात सूझी। उसने ठाकुर साहब और थानेदार को बैठाया और जल-पान के लिये पूछ, कहा, "फरमाइये ! कैसे आना हुआ है ?"

"मुझको अभी-अभी टेलीफ़ोन आया है कि महाराज बहादुर आपसे मिलना चाहते हैं। इस कारण मुझको आज्ञा हुई है कि मैं आपको लेकर उनके सामने हाज़िर हो जाऊँ।"

"मतलब यह कि मुझको हिरासत में ले रहे हैं।"

"यह तो मुझको हिदायत नहीं है।"

"तो ऐसा करिये कि पहले पूरी आज्ञा पा लीजिये। यदि मैं मुलज़िम हूँ और मेरे नाम वारंट हैं तो उसको साथ लेकर आइये। और यदि महाराज ने ऐसे ही याद किया है तो उनसे पूछियेगा कि क्या उनकी रियासत में चपरासी और पुलिस वालों के अलावा कोई अन्य आदमी है अथवा नहीं ? भले लोगों को ऐसे नहीं बुलाया जाता।"

पुलिस का अधिकारी मुख लटकाए हुए चला गया। ठाकुर बलभद्रसिंह ने कह दिया, "आपको जाना चाहिए। रियासतों में बहुत गड़बड़ हो सकती है। महाराज को आपके इन्कार करने से क्रोध आ सकता है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डॉक्टर राय ने बलभद्रसिंह के भय को सुन एक योजना बना डाली। उसने एक तार लिखा और अपने एक मित्र मिस्टर चटर्जी, वकील चाँदनी चौक, दिल्ली को भेज दिया। साथ ही एक पत्र लिख दिया। उस पत्र में उस घटना का पूर्ण वृत्तान्त लिख दिया, जिसके विषय में वह वहाँ आया हुआ था। उसने यह भी लिख दिया कि यहाँ जान-माल खतरे में होने से वह तार और चिट्ठी भेज रहा है।

ठाकुर साहब ने तार भेजने के लिये और चिट्ठी डाक में डालने के लिये, नौकर को भेज दिया। अब डॉक्टर राय ने अपना आशय वर्णन कर दिया—"यह मैंने अपनी रक्षा के निमित्त किया है। यदि मैं कल बारह बजे तक दिल्ली न पहुँचा तो महाराजा के विरुद्ध अर्जी और मुझको छुड़ाने का प्रबन्ध वायसराय के पुलिटिकल सेक्रेटरी से किया जायेगा।"

तार तो भेज दिया गया, परन्तु वकील साहब पकड़े नहीं गये। सायंकाल से पूर्व ही डॉक्टर राय ने एक पत्र वायसराय के नाम लिखकर ठाकुर साहब को दे दिया, जिससे वह टाइप किया जा सके।

सायंकाल से पूर्व ही महाराज के प्राईवेट सेक्रेटरी का एक पत्र एक सफेदपोश व्यक्ति लेकर आया। उस पत्र में लिखा था, "महाराज आपके साथ अपने महल में भोजन कर अति प्रसन्न होंगे। कृपया आने का कष्ट करें।"

डॉक्टर ने पूछ लिया, "किस समय चलना चाहिए?"

"ठीक आठ बजे। महाराज की मोटर आपको लेने के लिये आयेगी।"

"मैं चलने को तैयार रहूँगा।"

इस समय भी ठाकुर बलभद्रसिंह वकील साहब के समीप खड़ा उनकी बात सुन रहा था। जब सन्देश लाने वाला चला गया तो बलभद्रसिंह को वकील साहब ने महाराज के प्राईवेट सेक्रेटरी का पत्र देकर कहा, "इस पत्र को सुरक्षित रखिये। यदि मेरा कुछ अनिष्ट हो गया तो यह पत्र मेरे वकील श्री चटर्जी को चाँदनी चौक के पते पर भेज देवें। आप अपनी चिट्ठी भी, जो मैंने लिख दी है, इन्हीं चटर्जी के द्वारा भिजवा दीजियेगा।"

: २ :

ठीक आठ बजे महाराज की मोटरगाड़ी डॉक्टर राय को लेने आ गयी और सवा आठ बजे डॉक्टर राय, महाराज तथा उनके सेक्रेटरी के साथ खाने की मेज़ पर बैठा था।

भोजन परस दिया गया। कुछ देर तक तीनों चुपचाप बैठे भोजन करते रहे। यह शान्ति भंग महाराज के प्राईवेट सेक्रेटरी ने की। उसने कहा, "मैं महाराज का प्राईवेट सेक्रेटरी हूँ। मेरा नाम शमशेरसिंह है।"

"ओह! हमारे यहाँ परिचय पहले होता है और खाना-पीना पीछे।"

"अपना-अपना रिवाज़ है।" प्राईवेट सेक्रेटरी ने कह दिया।

"हाँ, यहाँ सब-कुछ विलक्षण ही प्रतीत हो रहा है। हमारे यहाँ भले लोगों को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बुलाने के लिए पुलिस नहीं भेजी जाती ।

"मैं जब दिल्ली जाता हूँ, हज़ूर लाट साहब की कोठी की ड्योढ़ी में नाम लिख आने पर, कभी भोजन पर, कभी चाय पर और कभी ऐसे ही बुलाया जाता हूँ । परन्तु इस बुलाने के लिये कभी पुलिस अफसर अथवा चपरासियों को कष्ट नहीं दिया जाता । वायसराय बहादुर के निजी क्लर्क द्वारा अथवा डाक द्वारा निमन्त्रण आ जाता है ।"

इस पर महाराज ने स्वयं कह दिया, "हम हिन्दुस्तानी हैं । हम इस प्रकार की तकल्लुफबाज़ी में विश्वास नहीं रखते । खैर, अब छोड़िये इस बात को । क्या हम जान सकते हैं कि आपने हमारे नगर में आने का कष्ट क्यों किया है ?"

"मुझको यहाँ के एक रईस का तार प्राप्त हुआ था कि उसके किसी मुकदमे में मेरी सेवाओं की आवश्यकता है । मैं आज प्रातः की गाड़ी से ही यहाँ पहुँचा हूँ ।"

"उसका क्या मुकदमा है ?"

"उसका लड़का छः-सात दिन से लापता है और उसकी लड़की का देहान्त सन्देहात्मक परिस्थिति में हुआ है । वह रईस पुलिस में रिपोर्ट लिखवाने गया था, परन्तु पुलिस ने रिपोर्ट नहीं लिखी । इस पर उस रईस ने मुझको, यह जानने के लिए बुलाया है कि ऐसी परिस्थिति में वह क्या कर सकता है ?"

"आप यहाँ के कानून से परिचित हैं क्या ?"

"मैंने कानून की किताब यहाँ के एक वकील साहब से मँगवाई थी । उन्होंने कहला भेजा है कि इस रियासत में तीन कानून चलते हैं । एक अंग्रेज़ी हिन्दुस्तान का, दूसरा जयपुर रियासत का और तीसरा महाराज के महल का ।

"दो के विषय में मुझको ज्ञान है। तीसरे अर्थात् महाराज के महल के कानून की किताब मुझको अभी तक नहीं मिली ।"

इस पर महाराज खिलखिलाकर हँस पड़े । प्राईवेट सेक्रेटरी भी मुस्करा रहा था । डॉक्टर राय आँखें नीचे किये खाना खाता रहा । हँसकर महाराज ने कहा, "उस तीसरे कानून की कोई किताब छपाई नहीं जाती । इसमें कारण यह है कि यह कानून बहुत जल्दी-जल्दी बदलते रहते हैं । जब महाराज अथवा महाराज की कोई रानी और कभी तो महाराज के प्राईवेट सेक्रेटरी भी, बदलते हैं तो कानून भी प्रायः सब के सब बदल दिये जाते हैं ।

"इन नित बदलने वाले कानूनों की किताब छपवानी कठिन ही नहीं प्रत्युत असम्भव भी है ।"

"ओह ! परन्तु महाराज ! कोई मुआमला किस कानून के अधीन चल रहा है, वह कैसे पता चले ?"

"जब," प्राईवेट सेक्रेटरी ने कह दिया, "पुलिस ने रिपोर्ट नहीं लिखी तो इसका अर्थ स्पष्ट ही है कि मुआमला तीसरी किस्म के कानून के अधीन आ गया है ।

"डॉक्टर साहब ! लड़का जो लापता है, वह महाराज का साला है । लड़की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो मर गयी है, वह महाराज की सबसे छोटी रानी थी। इस कारण आप समझ सकते हैं कि इसमें महाराज के महल का कानून लागू हो रहा है।"

"हम प्रार्थना करना चाहते हैं," डॉक्टर राय ने महाराज की आँखों में देखते हुए कहा, "कि इस मुआमले में अंग्रेज़ी हिन्दुस्तान का कानून लागू किया जाये। इस पर महाराज के महल का कानून लगाना ठीक नहीं रहेगा।"

"यह प्रार्थना किसके पास करने जा रहे हैं ?"

"मैं अभी इस विषय में विचार कर ही रहा था कि आपका निमन्त्रण मिला। इस पर मैंने यह विचार किया है कि श्रीमान् जी से ही इस विषय पर पता किया जाये कि कानून बदलने के लिए प्रार्थना किसके पास की जाये ?"

"रियासत में हाईकोर्ट मैं ही हूँ। प्रायः ठीक कानून लगाने की प्रार्थनाएँ (रिवीज़न पटीशन) मेरे पास ही आती हैं। रियासत में सबसे ऊँचा न्यायालय मैं ही हूँ।"

"ठीक है महाराज ! परन्तु आपको कदाचित् विदित नहीं कि आपसे ऊपर एक अन्य भी न्यायालय है। वह है इंग्लैण्ड के राजा और भारत के सम्राट् की प्रिवि-कौंसिल।"

"वह तो ब्रिटिश इण्डिया के लिए है। मैं समझता हूँ कि बैरिस्टर साहब यह भूल रहे हैं कि यह एक हिन्दुस्तानी रियासत है।"

"नहीं महाराज ! मैं भूल नहीं कर रहा। प्रिवि-कौंसिल भारत सम्राट् की कौंसिल है। भारत सम्राट् इस रियासत के राजा को गद्दी से उतार सकता है। अतः उसके विपरीत प्रार्थना भी सुन सकता है।"

"परन्तु भारत सम्राट् तो बहुत दूर है। हम तो आपके सामने बैठे हैं।"

"परन्तु महाराज ! सम्राट् का एक प्रतिनिधि दिल्ली में भी रहता है।"

"हाँ, इस पर भी दिल्ली जाने के लिए समय और साधन चाहिए।"

"वे साधन मेरे पास हैं।"

"सेक्रेटरी !" महाराज ने उत्तेजित हो कहा, "यह वकील गुस्ताख होता जा रहा है। इसको हम, हमारे महल में आकर, हमारा अपमान करने के अपराध में बन्दी बनाते हैं। कल इसको हमारी अदालत में उपस्थित किया जाये।"

डॉक्टर राय ने खाना छोड़ दिया। उसने उठकर, झुककर सलाम करते हुए कहा, "महाराज ! मैं बन्दी होने के लिए तैयार हूँ। परन्तु इतना आपको विदित होना चाहिए कि कल बारह बजे, आपके विरुद्ध, वायसराय के पुलिटिकल सेक्रेटरी के सामने इस धींगा-मस्ती का मुआमला उपस्थित हो जायेगा।

"यदि विश्वास न हो तो यहाँ के तारघर में से दोपहर पश्चात् दो बजे के समय भेजे तार की नकल मँगवाकर पढ़ लें।"

महाराज भौंचक्के हो मुख देखते रह गये। इस पर डॉक्टर राय ने कह दिया, "उसी समय एक रजिस्ट्री पत्र, जिसमें पूर्ण घटना का वृत्तान्त लिखा है, उसी आदमी को भेजा जा चुका है, जिसको तार गया है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"बैठिये डॉक्टर राय !" महाराज ने घबराकर कहा, "बैठिये ! हम आपके कथन की परीक्षा करना चाहते हैं।"

डॉक्टर राय समझ गया कि तीर ठिकाने लगा है। वह मुस्कराते हुए बैठ गया।

महाराज के प्राईवेट सेक्रेटरी ने नगर के तारघर को टेलीफोन कर पूछ लिया। इसके उत्तर में तारों की फाइल देखकर, कहा गया—"हाँ ! एक तार डॉक्टर राय की ओर से, दो बजकर बीस मिनट पर भेजा गया है। यह तार दिल्ली के एक वकील मनमोहन चटर्जी के नाम भेजा गया है। तार में लिखा है—'कदाचित् महाराज मुझको बन्दी बना लेंगे, और उस मुकदमे में, जिसके लिए आया हूँ, बाधा खड़ी करेंगे। चिट्ठी भेज रहा हूँ। पुलिटिकल सेक्रेटरी से मिलकर इस गैर-कानूनी बाधा को रोको।"

महाराज ने प्राईवेट सेक्रेटरी से तार बाबू की बात सुन डॉक्टर राय से पूछ लिया, "क्या होगा इससे ?"

"आपको विवश किया जायेगा कि मुझको जमानत पर छोड़ दिया जाये। इसके पश्चात् मैं असली मुकदमा वायसराय के पुलिटिकल सेक्रेटरी के सामने रख सकूँगा।"

"देयर आर मैनी ऐ स्लिप्स बिटविन दि कप ऐण्ड दि लिप्स।" इतना कह महाराज खिलखिलाकर हँस पड़े।

डॉक्टर राय अब पुनः निश्चिन्त हो भोजन करने लगा था। महाराज खाने का बहाना-मात्र कर रहे थे। जब राय ने खाना बन्द किया तो तीनों उठ खड़े हुए।

: ३ :

तीनों ड्राइंग-रूम में जा पहुँचे। महाराज ने बैठते हुए पूछा, "ठाकुर बलभद्रसिंह का क्या मुकदमा है ?"

"उन्होंने पुलिस में रिपोर्ट लिखानी चाही थी। वे लिखाना चाहते थे कि उनका लड़का बलवीरसिंह होली से पहली रात आपका निमन्त्रण पा, आपके महल में पहुँचा था। वहाँ वह आप द्वारा दिये गये प्रीतिभोज में सम्मिलित हुआ था। पीछे वह उठकर आपके साथ आपके निजी कमरे में चला गया।

"इसके पश्चात्, वह दिखाई नहीं दिया। वे यह भी लिखाना चाहते थे कि प्रीतिभोज समाप्त होने के एक घण्टा पश्चात् आपके सोने के कमरे में से दो बार पिस्तौल चलने का शब्द हुआ था।

"प्रातः चार बजे आपके महल से उनको टेलीफोन गया कि आपकी छोटी रानी रमणीदेवी, ठाकुर बलभद्रसिंह की लड़की, का देहान्त हो गया है। उनके घर के लोग भागे हुए आपके महल में पहुँचे, परन्तु रानी साहिबा का दाह-संस्कार हो रहा था। महारानी की चिता जल रही थी।

"ठाकुर साहब चाहते थे कि पुलिस रिपोर्ट लिख लेती। पीछे मुकदमा उचित अदालत में होता।

"पुलिस ने रिपोर्ट नहीं लिखी तो उन्होंने मुझको तार भेज यहाँ बुला लिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैंने उनको बताया है कि रिपोर्ट और मुकदमा दोनों नई दिल्ली में वायसराय के पास किये जा सकते हैं।

"मैंने कागज़ात अपने मित्र मिस्टर चटर्जी के पास भेज दिये हैं। यदि कल बारह बजे तक मैं वहाँ न पहुँचा तो सब कागज़ात पुलिटिकल सेक्रेटरी के सामने उपस्थित कर दिए जायेंगे।"

इस पर महाराज और उनके प्राईवेट सेक्रेटरी कुछ परेशान प्रतीत होने लगे थे। वे गम्भीर हो डॉक्टर राय का मुख देखने लगे। डॉक्टर राय मुस्कराता हुआ उनकी परेशानी उनके मुख पर अंकित देख रहा था।

आखिर महाराज ने कहा, "देखिये ! बलवीरसिंह यहाँ पर उपस्थित है। वह अपनी करतूत पर लज्जित है। इस कारण अपने पिता के पास जाना नहीं चाहता। उसने ही अपनी बहिन की हत्या की है।"

"मैं समझता हूँ कि आपका सफाई देना उचित ही है। इस पर भी जब तक बलवीर स्वयं उपस्थित हो, अपनी बात नहीं बतायेगा, तब तक कौन और कैसे कोई कह सकता है कि आपकी सफाई में कोई छिद्र नहीं है।"

"हम उसको आपके सामने उपस्थित कर असली घटना का वृत्तान्त सुना सकते हैं। परन्तु यह तब ही हो सकता है, जब आप वचन दें कि आप बलभद्रसिंह को समझा देंगे कि दोनों परिवारों की नेक-नामी के लिए बात यहीं समाप्त कर दी जाये।"

"हाँ, यदि मुझको समझ में आ गया कि आपका कथन सत्य है कि रानी साहिबा की हत्या उनके भाई ने ही की है और किसी लज्जायुक्त बात को छुपाने के लिये यह हत्या हुई है तो मैं पूरा यत्न कर दूँगा कि बात आगे न चलाई जाये।"

"केवल यत्न से काम नहीं चलेगा। आपको वचन देना होगा कि ठाकुर को यह राय दी जायेगी कि बात आगे नहीं चल सकती। इस पर भी वह न माने तो आपको मुकदमा मेरी ओर से लड़ना होगा ! ठाकुर की ओर से नहीं।"

"यह तो तब ही हो सकता है, जब मुझको यह समझ आ जाये कि लड़का दोषी है और उसका पिता आपको तंग करने के लिए ही झगड़ा कर रहा है। तब मैं आपकी ओर से पैरवी करूँगा। परन्तु मैं झूठे मुकदमे नहीं लेता।"

महाराज मुस्कराये। ऐसा लगने लगा कि उनकी जान में जान आ गयी है। उन्होंने कह दिया, "हमको स्वीकार है।"

इतना कह महाराज ने अपने प्राईवेट सेक्रेटरी की ओर देखा। वह उठा और ड्राइंग-रूम में चला गया। इस समय महाराज ने पूछ लिया, "कुछ पियेंगे ?"

"हाँ, एक प्याला कॉफी।"

"बस ? 'शेरी' अथवा 'सीडार' ठीक नहीं रहेगी क्या ?"

"जी नहीं ! मैं शराब नहीं पीता। मुझको वह अनुकूल नहीं बैठती।"

महाराज ने ताली बजाई। एक सेवक आया तो कह दिया गया, "बैरा को कहो, साहब के लिए कॉफी लाये और हमारे लिए 'शेरी'।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह सामान अभी आ ही रहा था कि एक सत्रह-अठारह वर्ष का युवक, शराब से अर्ध-चेतनावस्था में, लड़खड़ाते कदमों से सेक्रेटरी का आश्रय लिए हुए, वहाँ आ पहुँचा। महाराज ने बैठ जाने की आज्ञा दी तो उसे आश्रय दे बैठा दिया गया। वह बैरिस्टर साहब के पास सोफा पर बैठा था। उसके मुख से शराब की तीखी गंध आ रही थी।

युवक बैठ, बितर-बितर वकील साहब का मुख देखने लगा। बात बैरिस्टर साहब ने आरम्भ की। डॉक्टर राय ने पूछा, "क्या नाम है आपका ?"

युवक इस प्रश्न से भयभीत ही डॉक्टर राय का मुख देखने लगा। बहुत यत्न कर उसने पूछा, "क्यों पूछ रहे हो ? कौन हो तुम ? कहाँ ले जा रहे हो मुझको ?"

"कहीं नहीं। मैं तुमको इस हालत से निकालने आया हूँ। परन्तु तुमको सब सच-सच कह देना होगा ?"

युवक ने उत्तर नहीं दिया। ऐसा प्रतीत होता था कि वह कोई अतीत की घटना स्मरण कर रहा है। डॉक्टर राय ने उसको चित्त स्थिर करने के लिये समय दे दिया।

कॉफी आ गयी तो वह कॉफी पीने लगा। जब महाराज के सामने गिलास और शराब की सुराही रखी गयी तो युवक ने भी गिलास पकड़ने के लिये हाथ बढ़ाया, परन्तु डॉक्टर राय ने उसका हाथ पकड़ लिया और कहा, "बातचीत के पीछे। तुम तो पहले ही बहुत पिये हुए हो। अच्छा, तुम्हारा नाम क्या है ?"

"बलवीर।"

"तुम यहाँ कब आये थे ?"

"कई दिन हो गये। स्मरण नहीं रहा कि कितने दिन।" युवक की जिह्वा शराब पीने से मोटी पड़ गयी थी और वह स्पष्ट उच्चारण नहीं कर पा रहा था।

"तुम घर क्यों नहीं जाते ?"

"बहिन मर गयी है। मुझको डर लग रहा है। इस कारण।"

"किसने मारा है, उसको ?"

"मुझको पता नहीं। मुझको होश नहीं था। जब होश आया तो पिस्तौल मेरे हाथ में था।"

"तुम उस समय कहाँ थे ?"

"महाराज के सोने के कमरे में।"

"क्या कर रहे थे वहाँ ?"

"मुझको ठीक-ठीक याद नहीं। एक तवायफ का नाच हुआ था। मैं उसकी खोज में गया था। वह मिल गयी थी, मगर फिर क्या हुआ, मुझको याद नहीं।"

युवक के इस बयान की पूर्ति महाराज के प्राईवेट सेक्रेटरी ने कर दी। उसने बताया—"कुँवर बलवीरसिंह तवायफ के कमरे में गये थे, परन्तु भूल से अपनी बहिन के कमरे में जा पहुँचे। न जाने दोनों में क्या बातचीत हुई कि दोनों 'हम-बिस्तर' हो गये। महाराज का अनुमान है कि दोनों का पहले भी सम्बन्ध रहा है। महाराज जब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रानी के कमरे में पहुँचे तो दोनों बिस्तर पर थे।

"रानी साहिबा जब रंगे हाथ पकड़ी गयीं तो बहुत घबराईं। रानी साहिबा के कमरे में उनका पिस्तौल रखा था। कुँवर साहब ने पिस्तौल उठाया और अपनी बहिन पर गोली चला दी। ये तो स्वयं को भी गोली मारने वाले थे, परन्तु महाराज ने पकड़ लिया।

"तब से यह इसी प्रकार बेहोश रहना चाहते हैं। जब नशा उतरने लगता है तो और पी जाते हैं।"

डॉक्टर राय ने मुस्कराते हुए कहा, "महाराज! आपने अपनी सफाई बहुत ही सुन्दर ढंग से बनाई है। मैं आपका मुकदमा लेना चाहूँगा। क्या फीस देंगे आप.?"

"क्या लेते हैं आप? बलभद्रसिंह क्या देने वाला है?"

"आने-जाने का फर्स्ट क्लास का किराया और पाँच हज़ार फीस। यह तो राय करने का है। मुकदमा करने का दो सहस्र नित्य।"

"ठीक है।"

"यहाँ आने तक का मिल जाये। सब पाँच हज़ार पाँच सौ बना है।"

"चैक लेंगे?"

"नहीं, नकद लूंगा।"

"मिल जायेगा।"

जब मिल जायेगा, तब ही मैं ठाकुर साहब को समझा सकूंगा। वह लड़का उनके हवाले कर उनको चुप रहने की राय दे दूंगा।"

रुपये गिनकर दे दिये गये। डॉक्टर राय ने रुपये जेब में रख ठाकुर साहब बलभद्र सिंह को बुला भेजा। ठाकुर साहब आये तो डॉक्टर राय ने कहा, "देखिये! यह लड़का आपका है?"

"बलवीर! बलवीर!!" ठाकुर साहब ने उसको पुकारा। बलवीर ने नशे में आँखें खोल अपने पिता को पहचाना। तब उठकर वह अपने पिता से गले मिलने लगा, परन्तु नशे के कारण अपनी टाँगों पर खड़ा न रह सका। उसको गिरते देख ठाकुर ने लपककर पकड़ लिया। तदनन्तर उसको अपने पास सोफा पर बैठा लिया।

अब बैरिस्टर साहब ने वह कहानी सुना दी, जो सेक्रेटरी और बलवीर ने सुनाई थी। इसके उपरान्त उसने कह दिया—"देखिये! मेरा विचार है कि आप लड़के को घर ले जाइये। इसको होश में लाकर समझाइये और इस घटना को भूल जाइये। इसको प्रकट करने से सिवाय बदनामी के कुछ बनने का नहीं।"

बलभद्रसिंह ने लड़के को पाया तो समझा लाखों पाये। वह लड़की की मृत्यु पर तो सन्तोष कर चुका था। अतः उसने बलवीर को बाँह से पकड़कर उठाया और महाराज से कहा, "मैं इस पूर्ण घटना के लिये शरमिन्दा हूँ। हमको क्षमा कर दें।"

वह लड़के को लेकर वहाँ से चला गया। बैरिस्टर ने भी महाराज से हाथ मिलाया और यह कहा, "मैं समझता हूँ कि बात 'हश-अप' हो जायेगी और आपको

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरी कुछ आवश्यकता नहीं पड़ेगी। इस पर भी, यदि कुछ गड़बड़ हुई तो आप मुझको कलकत्ता में मिल सकते हैं।"

इतना कह वह भी महल से निकल आया। ठाकुर बलभद्रसिंह की हवेली में पहुँच, डॉक्टर राय ने पूछ लिया, "दिल्ली के लिये गाड़ी किस समय मिलती है?"

"प्रातः चार बजे।"

"मैं उस गाड़ी से चला जाऊँगा। देखिये ठाकुर साहब! मेरी राय अब यह है कि लड़के को होश में लाइये और फिर कलकत्ता चले आइये। मैं यहाँ अभी आपको कुछ राय नहीं दे सकता।"

"अब राय करने को रह क्या गया है?"

"बहुत कुछ है और हो सकता है। मुझको इस कहानी के एक अक्षर पर भी विश्वास नहीं है।"

"क्यों?"

"जब तक लड़का रियासत से बाहर जाकर और शराब के प्रभाव से मुक्त होकर बयान नहीं देगा, तब तक न तो इसके बयान पर विश्वास किया जा सकता है, न ही किसी अन्य व्यक्ति पर।

"अपनी सम्मति मैंने दे दी है। वह प्रार्थना-पत्र जो मैंने लिखा था, वह तो रद्दी हो गया है। मैं समझता हूँ कि उससे कहीं अधिक प्रभावयुक्त प्रार्थना-पत्र अब बन सकता है।"

: ४ :

डॉक्टर शान्तिसागर का कलकत्ता बालीगंज में एक चार तल्ले वाला मकान था। नीचे दुकानें थीं और गोदाम थे। दूसरी मंज़िल पर डॉक्टर राय रहता था। वहीं उसका कार्यालय भी था। तीसरी और चौथी छत पर उसके भाई-बन्धु रहते थे। वे सब बँटवारा कर चुके थे और पृथक्-पृथक् रहते थे।

डॉक्टर शान्तिसागर जब बर्लिन से डी० लिट० की उपाधि प्राप्त कर लौटा, तो पहली बात, जो उसने की, वह अपने भाइयों में बँटवारे की थी। डॉक्टर का सबसे बड़ा भाई एक रिटायर्ड सरकारी कर्मचारी था। अब पेंशन लेता था। उसका बहुत बड़ा परिवार था। उसका निर्वाह कठिनाई से होता था। बाप की सम्पत्ति अभी साझी थी। इसी साझी सम्पत्ति के बल-बूते पर ही शान्तिसागर बर्लिन में अपनी पढ़ाई कर सका था। अब उसके बड़े भाई सुखसागर के बच्चों की पढ़ाई का समय था। सुखसागर का सबसे बड़ा लड़का एम० ए० में पढ़ता था। उससे छोटी लड़की बी० ए० में। एक लड़का इण्टरमीडिएट में था और तीन लड़कियाँ क्रमशः नवीं, सातवीं और चौथी श्रेणी में थीं।

सुखसागर समझता था कि यदि पिता की सम्पत्ति इकट्ठी रहेगी, तो वह अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा दे सकेगा। परन्तु डॉक्टर राय युरोप की हवा खाकर आया था और साथ ही संयुक्त परिवार के अवगुणों का पाठ पढ़ कर। आते ही उसने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परिवार में बँटवारे का प्रस्ताव उपस्थित कर दिया।

सुखसागर से एक छोटा भाई था ज्ञानसागर। वह बेचारा जन्म का अपाहिज था। उसकी आँखें दुर्बल थीं और वह कुछ भी पढ़-लिख नहीं सका। उसका विवाह भी एक निर्धन माता-पिता की लड़की से हुआ था। शान्तिसागर के पिता ने उसके लिये विशेष प्रवन्ध कर दिया था। उसको अपनी सम्पत्ति में से एक मकान देकर, उसके निर्वाह का प्रबन्ध कर रखा था।

ज्ञानसागर रहता पैतृक मकान में ही था, परन्तु पिता से दी हुई पृथक् सम्पत्ति से निर्वाह करता था। उसके भी तीन बच्चे थे। एक लड़की और दो लड़के। वे अभी छोटे-छोटे थे और स्कूल में पढ़ते थे।

शान्तिसागर आया तो उसने दोनों भाइयों को बुलाकर कहा, "देखो दादा ! संसार ने अपने अनुभव से सीखा है कि मनुष्य अकेला रहकर जितनी उन्नति कर सकता है, उतनी संयुक्त परिवार में रहकर नहीं कर सकता।"

दोनों बड़े भाई शान्तिसागर के इस विचार को समझ नहीं सके और बितर-बितर अपने छोटे भाई का मुख देखने लगे। उनको चुप और प्रश्न-सूचक मुद्रा में अपनी ओर देखते पा, शान्तिसागर ने अपने आशय को स्पष्ट कर दिया। उसने कहा, "दादा ! उन सब देशों में, जिन्होंने समाजशास्त्र में भारी उन्नति की है, यह माना गया है कि लड़का अथवा लड़की जब सज्ञान हो जाते हैं, तब उनको अपना पृथक् घोंसला बनाने को कह दिया जाये। मैं भी यही कह रहा हूँ।"

"तो तुम पृथक् रहना चाहते हो ?"

"हाँ दादा !"

"कोई विलायत से बीवी ले आये हो ?"

"नहीं ! मैं तो हिन्दुस्तानी बीवी पसन्द करूँगा, परन्तु रहन-सहन युरोपियन ढंग का रखना चाहता हूँ।"

"तो ऐसा करो अपने लिए एक पृथक् मकान ले लो। अपनी कमाई भी पृथक् रख लेना।"

"वह तो होगा ही, परन्तु मैं तो पिताजी की सम्पत्ति में से अपना भाग पृथक् करना चाहता हूँ।"

"देखो शान्ति ! तुम्हारी पढ़ाई पर बीस हज़ार रुपया परिवार की सम्पत्ति में से व्यय हुआ है। यहाँ शान्ति निकेतन में रहते हुए भी तुम्हारा खर्चा साठ रुपये मासिक से कम नहीं रहा था। अब बारी मेरे बच्चों के पढ़ने की है। जब तक उनकी पढ़ाई समाप्त नहीं हो जाती, तब तक सम्पत्ति में बँटवारा ठीक नहीं होगा।"

"दादा ! मेरी तुलना तो आपसे थी। आपको पिताजी ने पढ़ाया था अपनी सम्पत्ति में से। मैं भी पढ़ा हूँ उनकी सम्पत्ति में से। यदि आप मैट्रिक से अधिक पढ़ नहीं सके तो इसमें मेरा दोष नहीं।

"रही सुरुचि, अभिरुचि इत्यादि की बात, उनकी तुलना होगी मेरे बच्चों से।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

R 089.9143
GUR-N
167326
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरे साथ नहीं हो सकती।"

सुखसागर ने बँटवारे से इनकार कर दिया। ज्ञानसागर ने तो इतना कहा, "मेरे न पढ़ सकने के कारण पिताजी ने लाल बाग वाला मकान मेरे नाम पृथक् कर लिख दिया था। अतः मुझको रहने भर के लिए इस मकान में स्थान मिला रहे तो मुझको कोई आपत्ति नहीं होगी।"

डॉक्टर शान्तिसागर ने अपनी वकालत आरम्भ कर दी और भाइयों से बँटवारे के लिए मुकदमा कर दिया। सुखसागर की बहू सुमति ने कह कर तथा अपने पति की मिन्नत-समाजत कर घर पर ही बँटवारे के लिये उसको तैयार कर लिया। उसने अपने पिता को सालस नियत करवाकर एक निर्णय करवा लिया।

शान्तिसागर ने इस निर्णय को नहीं माना। सुमति के पिता ने सम्पत्ति में से पुत्र और पौत्रों के लिये एक नियत रकम उन सबके नाम कर, शेष सम्पत्ति के तीन भाग कर दिये थे। जब निर्णय सुनाया गया तो डॉक्टर शान्तिसागर राय ने समझा कि वह तो घाटे में जा रहा है। उसका न तो अभी विवाह हुआ था और न ही अभी कोई सन्तान थी। इस कारण उसको केवल शेष सम्पत्ति का तीसरा भाग मिला था। दोनों भाइयों को परिवार के सदस्य-संख्या के अनुसार शान्तिसागर से अधिक ही मिला था।

शान्तिसागर ने सुमति के पिता के निर्णय को अमान्य कर कोर्ट में बँटवारे के लिये प्रार्थना कर दी। उसको तो न वकील करना पड़ता था न मुंशी। उसको अपने कारोबार से समय निकालने की भी आवश्यकता नहीं थी। वह नित्य कचहरी जाता ही था। इस कारण एक ही वर्ष में ज्ञानसागर और सुखसागर मुकदमे से ऊब गये और शान्तिसागर से उसकी अपनी शर्तों पर सुलह कर बैठे।

निर्णय के अनुसार बालीगंज वाला पूर्ण मकान शान्तिसागर के भाग में आया और दोनों बड़े भाई छोटे भाई के किरायेदार हो गये।

इसका एक परिणाम यह हुआ कि दोनों बड़े भाइयों के बच्चे अपने चाचा के घोर शत्रु हो गये। सुखसागर के बड़े लड़के ने एम० ए० कर पढ़ाई समाप्त कर दी और सरकारी नौकरी पर चला गया। उससे छोटे ने बी० ए० पास करके ही नौकरी कर ली।

बँटवारे के पश्चात् सुखसागर की लड़कियों का विवाह वैसी अच्छी जगह पर नहीं हो सका, जहाँ पर आशा की जाती थी। ज्ञानसागर तो बेचारा निर्धन था ही। उसकी सबसे बड़ी लड़की इण्टरमीडिएट में ही किसी सहपाठी से अपने माता-पिता के ज्ञान के बिना विवाह कर, उसके साथ पूर्णिया भाग गयी। वहाँ जाकर उसने अपने विवाह के विषय में लिख दिया।

ज्ञानसागर की छोटी लड़की ने टेलीफोन कार्यालय में नौकरी कर ली और तदनन्तर अपने सहकारी रफीक अहमद से विवाह कर मुसलमान हो गई।

डॉक्टर राय का कार्य खूब फलने-फूलने लगा। उसने तीन-चार वर्ष में ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपनी वकालत चमका ली। उसकी ख्याति में एक कारण यह था कि उसने राजनीतिक क्षेत्र में नेतागिरी आरम्भ कर दी थी और वह रियासतों के मुकदमे लेने में रुचि लेने लगा था। इसके अतिरिक्त शरारती मस्तिष्क रखने के कारण वकालत के काम में भी दिन-दुगुनी रात चौगुनी उन्नति करने लगा।

डॉक्टर शान्तिराय को वकालत आरम्भ किये अभी चार वर्ष ही हुए थे कि वह राजनीतिक कार्य के भँवर में फँस गया। साइमन कमीशन हिन्दुस्तान में आने वाली थी और देश की दोनों प्रमुख राजनीतिक पार्टियाँ उस कमीशन के बहिष्कार में सहमत थीं। इस कारण देश में एक उत्तेजना-जनक वातावरण बन रहा था। डॉक्टर राय भी इस आन्दोलन में सम्मिलित हो गया।

इस आन्दोलन के दिनों में उसकी, शान्ति निकेतन में पढ़ने वाली पूर्व-परिचित एक मोहिनी देवी से भेंट हो गई। दोनों में मेल-जोल बढ़ा, घनिष्ठता हुई और फिर दोनों कलकत्ता के राजनीतिक भूमंडल में चमकदार सितारों की भाँति चमकने लगे।

इस समय डॉक्टर राय को यह राजस्थान की जाट रियासत का मुकदमा मिला। डॉक्टर राय का एक मित्र और इंग्लैण्ड में सहपाठी मिस्टर चटर्जी ने यह मुकदमा दिलवाया था। उसने ही बलभद्रसिंह के एजेण्ट को डॉक्टर एस० एस० राय का पता बताया था। डॉक्टर राय और चटर्जी में परस्पर यह समझौता था कि इस प्रकार से काम दिलाने पर फीस का पचीस प्रतिशत चटर्जी को मिलेगा।

डॉक्टर राय ने दिल्ली पहुँच उक्त घटना का विवरण चटर्जी को बताया तो दोनों हँस-हँसकर दुहरे होने लगे। चटर्जी का कहना था—"ये गधे यदि हिन्दुस्तान में न हों तो हम वकील लोग भूखों मरने लगें।"

डॉक्टर राय ने अपने मन की बात बता दी—"इससे उलट बात भी तो हो सकती है। यदि हम वकील न हों तो कदाचित् ये मूर्खता करने में संकोच करें। महाराज का वह प्राईवेट सेक्रेटरी कोई वकील मालूम होता था। यह सब झूठ का दुर्ग उसका ही बनाया प्रतीत होता है। मेरे साथ बातचीत का सुझाव भी उसी का दिया हुआ प्रतीत हुआ है।"

डॉक्टर राय ने चटर्जी को उसकी कमीशन दी और एक दिन दिल्ली रहकर कलकत्ता चला गया। डॉक्टर राय का सितारा तेज था और ऐसे मुकदमे आते रहते थे, जिनसे लाखों की आय अनायास ही हो जाती थी।

: ५ :

उक्त घटना के दो मास पश्चात् की बात है। डॉक्टर राय अपने स्टडी रूम में बैठा था। उसके पास ठाकुर बलभद्रसिंह बैठा अपनी बात बता रहा था। ठाकुर कह रहा था—"आपने कहा था कि जो कुछ वहाँ कहा गया है, सत्य नहीं। अब लड़का भी यही कहता है। बहुत विचारोपरान्त मैंने यह निश्चय किया है कि एक प्रार्थना वायसराय के पास दे ही देनी चाहिए। प्रार्थना भेजने के पश्चात् वायसराय के पुलिटिकल सेक्रेटरी से मैं स्वयं मिलूंगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मुझको कुछ ऐसा समझ आया है कि महाराज बहुत ही पाजी आदमी है। आपने उससे अपनी लड़की का विवाह क्यों किया था ?"

"तब मुझको ये सब बातें विदित नहीं थीं। कभी किसी से महाराज की निन्दा सुनता था, तो मुझको विश्वास नहीं आता था। बड़े लोगों की निन्दा हुआ ही करती है। अब मुझको अपने लड़के की बात सुन तो विश्वास हो गया है कि प्रारम्भिक भूल मुझसे ही हुई है।"

"अच्छा, आप सारी घटना मुझको लिखा जाइये। मैं कल तक अर्जी लिखकर आपको सुना दूँगा। तब आप टाइप कराकर भेज दीजियेगा।"

ठाकुर साहब ने सब घटना के नोट्स तैयार किये हुए थे। डॉक्टर राय ने उनको लिख लिया। जहाँ कहीं कोई छिद्र दिखाई दिया, उसको प्रश्नोत्तर कर ठीक कर लिया। पूर्ण विवरण इस प्रकार था—

१. मैं रियासत······का रहने वाला हूँ। मैं निम्नलिखित सत्य घटना परमात्मा को साक्षि रखकर लिख रहा हूँ। मैं अंग्रेज़ी न्याय की, जिसकी आज संसार में धूम है, याचना करता हूँ।

२. आज से दो वर्ष पहले महाराज······मेरे पास आये। वे पहले भी आया करते थे। उस दिन उन्होंने मुझसे मेरी लड़की विवाह में माँगी। मैंने तब उनको बताया कि लोगों का कहना है कि उन्होंने अपनी पहली रानी को विष देकर मार डाला है।

इस पर उन्होंने कहा था, 'आप मेरे इतने समीप होते हुए भी क्या ऐसी बात पर विश्वास करते हैं ?'

मेरा उत्तर था, 'मुझको विश्वास नहीं। परन्तु उसका देहान्त एकाएक हुआ है। इस कारण कहने वालों का मुख तो बन्द नहीं किया जा सकता।'

महाराज ने कहा, 'यह सब झूठ है। मेरी वह रानी बाँझ थी। वह अपनी बहुत चिकित्सा कराया करती थी। उसके सन्तान नहीं हुई।

'मरने के कुछ दिन पहले वह एक देसी दायी की चिकित्सा करा रही थी। वह दायी उसको खाने के लिये और भीतर रखने की दवाइयाँ दिया करती थी। एक दिन वह दवाई दे गयी। रानी ने खाई और उसके प्राणान्त हो गये। वह औषधि पीछे निरीक्षण कर देखी गयी थी। वह विष नहीं थी।'

मेरा दूसरा संशय यह था कि लोग महाराज को नपुंसक बताते थे। मैंने यह संशय वर्णन किया तो उन्होंने कहा, 'मेरी पहली रानी के सम्बन्धियों ने ही यह बात प्रचारित कर रखी है। वे नहीं चाहते कि मेरा दूसरा विवाह हो सके। असल बात यह है कि मैंने अपने शुक्र की परीक्षा पिछले ही सप्ताह कराई है और उसकी रिपोर्ट यह है।'

इतना कह उन्होंने डॉक्टर विग एम० डी० बर्लिन की रिपोर्ट दिखाई। मैं मान गया और मेरी लड़की रमणी का विवाह उनसे हो गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३. रमणी ने अपनी माँ से यह शिकायत की थी कि महाराज उसके सोने के कमरे में कभी नहीं आते। उसकी माँ ने उसको कहा था कि वह अपने पति से ही इसका कारण पूछे। यह बात होली से एक सप्ताह पूर्व की है।

४. घटना वाली रात के पहले रमणी ने अपनी माँ को बताया था कि महाराज ने उस रात उसके शयनागार में आने का वचन दिया है। इस पर उसकी माँ ने कुछ ऐसी बातें अपनी लड़की को कही थीं, जो ऐसे अवसरों पर माताएँ अपनी लड़कियों को समझाया करती हैं।

५. मध्याह्नोत्तर बलवीर को महाराज का निमन्त्रण आया। उसमें लिखा था कि होली का उत्सव मनाया जा रहा है। इस अवसर पर बनारस से एक नाचने व गाने वाली भी आई हुई है।

६. बलवीर सायं सात बजे गया। बलवीर ने बताया है कि सत्य ही एक नाचने वाली आई हुई थी। परन्तु उस मजलिस में केवल चार मेहमान थे। बलवीर था, शमशेरसिंह, महाराज का प्राईवेट सेक्रेटरी था, एक नाथूराम था। वह परलोक-वासी महाराज के हजाम का लड़का है, साथ ही महाराज के बचपन का साथी है। चौथा काहनचन्द था। यह शराब बेचने वाले ठेकेदार का लड़का है। यह भी महाराज के अंतरंग मित्रों में से एक है।

नर्तकी का नाच और गाना हुआ। भोजन हुआ और मद्य का सेवन किया गया। रात के बारह बजे महाराज ने बलवीर से पूछा, यह बाई कैसी लगी है?'

बलवीर ने कहा था, 'बहुत सुन्दर है।' इस पर महाराज का प्रश्न था—'रात इसके पास जाना चाहोगे?' बलवीर ने कह दिया, 'मैं आपका बहुत आभारी रहूँगा।'

ऐसा ही हुआ। महाराज ने बलवीर को समझा दिया, 'मैंने इसको अपने लिये निश्चय किया था, परन्तु मैं तुम्हारी बहिन की संगत में जा रहा हूँ। तुम मेरे स्थान पर इसके पास जा सकते हो। इसको पता नहीं चलना चाहिए कि मुझ और तुम में अदला-बदली हो गयी है। बिजली बुझ जायेगी और तुम ऐसा व्यवहार करना, जैसे मैं हूँ। बहुत कम बोलना। इसमे यह तुमको महाराज मान प्रसन्न करने का यत्न करेगी।'

इस समय नर्तकी नृत्य कर रही थी। बलवीर को शराब पिलाकर मदमस्त कर दिया गया।

७. जब मजलिस उठी और नाचने वाली और उसके साथी चले गये, महाराज बलवीर को एक कमरे में ले गये। वहाँ ले जाकर बलवीर को समझा दिया गया कि नाचने वाली इस बगल के कमरे में आ रही है। उसको, कपड़े बदल, उस कमरे में चला जाना चाहिए।

८. बलवीर कपड़े बदल जब कमरे में जाने लगा तो एकाएक पूर्ण महल की बिजली बुझ गई। वह अँधेरे में ही कमरे में पहुँचा और एक औरत उससे बगलगीर हो आलिंगन करने लगी। वे दोनों पलंग पर लेट गये। वह बलवीर को महाराज-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महाराज कहकर बुलाती रही। बलवीर हूँ, हाँ, ठीक इत्यादि में ही उत्तर देता रहा।

९. ठीक दो बजे बिजली आई और महल के साथ उस कमरे में भी रोशनी हो गई। बलवीर और उसकी साथिन एक-दूसरे को देख भौचक्के रह गये। वह बलवीर की बहिन थी। बलवीर लपककर उठा। उसकी बहिन भी चीख मारकर अचेत हो गई। इसी समय महाराज वहाँ आ गये और अपनी रानी को अवस्त्र बलवीर के पलंग पर पड़े देख, वहाँ रखा पिस्तौल उठा उन्होंने गोली चला दी।

१० रानी साहिबा की बाँदी सोहनी से पता चला है कि उसी सायंकाल रानीजी को महाराज का संदेश आया था कि वे उसी कमरे में बारह बजे आयेंगे और वह उनके स्वागत के लिये तैयार रहे। वह बांदी किसी के भी सामने यह बयान देने के लिये तैयार है।

११. रानी की अचेतनता की दशा में हत्या कर दी गई। बलबीर को शराब पिला-पिलाकर अचेतावस्था में रखा गया और उसके मस्तिष्क में यह बात अंकित करने का यत्न किया गया कि उसने ही अपनी बहिन की हत्या की है।

१२. घर आकर कई दिन के यत्न करने पर बलवीर की स्मरणशक्ति लौटी और वह इस पूर्ण घटना को स्पष्टतया समझ और बता सका है।

बलभद्रसिंह ने यह विवरण डॉक्टर को बताया। इस विवरण के आधार पर ही डॉक्टर राय ने एक लम्बा-चौड़ा, दस पृष्ठ का प्रार्थना-पत्र लिख दिया। यह 'प्लेंट' बलभद्रसिंह के हस्ताक्षरों के साथ वायसराय के नाम पोस्ट कर दी गयी।

इसके दो मास पश्चात् महाराज का प्राईवेट सेक्रेटरी शमशेरसिंह डॉक्टर राय के पास पहुँचा और उसने बताया—"महाराज की उस घटना के सम्बन्ध में वायसराय बहादुर से शिकायत हो गई है। अब उस शिकायत पर जाँच हो रही है।"

"कैसे पता चला है आपको?" डॉक्टर राय ने पूछा।

"तीन दिन हुए महाराज, बुलाये जाने पर, वायसराय बहादुर के पुलिटिकल सेक्रेटरी से मिलने गये थे। भेंट के समय सेक्रेटरी ने महाराज का अपमान कर दिया। सेक्रेटरी स्वयं तो कुर्सी पर बैठा रहा। और महाराज को बैठने को भी नहीं कहा गया। वह बैठे-बैठे ही बातें करने लगा। इस पर महाराज ने स्वयं कुर्सी पर बैठकर कहा, 'मैं वालिये रियासत हूँ। मेरी 'हिज़ मैजेस्टी दि किंग एम्परर' के साथ संधि है। इससे मैं अपने को उनके ही बराबर समझता हूँ। तुमको इतनी समझ होनी चाहिये कि तुम्हारी पदवी मुझसे बहुत छोटी है।'

"इस पर वायसराय बहादुर के पुलिटिकल सेक्रेटरी ने कह दिया—'युअर हाईनैस! इस समय आप पर मुकदमा चल रहा है। आप पर हत्या करने का आरोप है। मुझको वायसराय बहादुर ने, जो हिज़ मैजेस्टी के हिन्दुस्तान में प्रतिनिधि हैं, आप पर मुकदमे की जांच के लिए नियुक्त किया है। इस कारण इस समय मैं एक जज की हैसियत में हूँ। आप एक अपराधी की स्थिति में हैं। अतः आप खड़े हो जाइये और मेरे प्रश्नों का उत्तर दीजिये।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"इस पर महाराज ने कह दिया—'मैं आपको जज नहीं मानता। आप कानून और हमारी संधि के विरुद्ध कार्यवाही कर रहे हैं।'

"इस समय सेक्रेटरी ने मेज़ पर लगी घण्टी बजाई और चार सैनिक कमरे में आ गये। सेक्रेटरी ने उनको आज्ञा दे दी—'महाराज को बन्दी बना लो। इनकी तलाशी लेकर इनके अस्त्र-शस्त्रों पर अधिकार कर लो और इनको अपनी कोठी में ले जाकर बन्दी कर दो। कोठी के बाहर फौजी पहरा रहे और न तो इनको कोठी से बाहर जाने की स्वीकृति हो, न ही मुझसे पूछे बिना इनसे कोई मिलने आये। ले जाओ।'

"इस प्रकार महाराज दिल्ली में अपनी कोठी में ही बन्दी हैं। महाराज को चार्जशीट दे दिया गया है और उनको अपने वकील द्वारा जवाब देने की स्वीकृति मिल गई है।

"महाराज ने मुझको आपके पास भेजा है कि आप उनके मुकदमे की पैरवी करें।"

डॉक्टर राय ने कुछ विचार कर कहा, "आने-जाने का हवाई जहाज का किराया और दो हजार रुपया नित्य के हिसाब से एक सप्ताह की फीस पेशगी जमा कर दो, तब ही मैं चार्जशीट देखूंगा।"

शमशेरसिंह इस बात के लिये तैयार होकर आया था। उसने पन्द्रह हजार रुपया जमा करा दिया तो डॉक्टर राय ने चार्जशीट को हाथ लगाया।

दो दिन तक राय चार्जशीट, कानून और रियासत की सन्धिपत्र इत्यादि को देखता रहा। तदुपरान्त नई दिल्ली जा पहुँचा।

: ६ :

चार्जशीट का उत्तर दे दिया गया। इस पर पुलिटिल सेक्रेटरी ने डॉक्टर राय को बुलाया और उसके सामने अपनी पूरी जाँच का वृत्तान्त रख दिया।

उस जाँच में ठाकुर बलभद्रसिंह का प्रार्थना-पत्र दिखाया। यह वही था, जो डॉक्टर राय ने ही लिखा था डॉक्टर राय ने यह नहीं बताया कि वह स्वयं ही उसका लिखने वाला है। तदनन्तर सेक्रेटरी ने उन सब गवाहों के नाम बताये, जिनके बयान लिखित में आ चुके थे। शमशेरसिंह के भी बयान लिये जा चुके थे। इन सब बयानों से यह सिद्ध होता था कि महाराज ने न केवल अपनी रानी रमणी की हत्या की है, प्रत्युत अपनी पहली रानी की हत्या करने वाले भी वहीं हैं। यह भी सिद्ध हो चुका था कि बलवीरसिंह को अपनी बहिन के पास धोखा देकर भेजने का पूर्ण दोष महाराज पर ही है।

डॉक्टर राय यह सब कुछ जानता था। इस पर भी उसने विस्मय प्रकट करते हुए पूछ लिया, "परन्तु श्रीमान्! इसमें कारण क्या हो सकता है? कौन अपनी पत्नी के पास, स्वयं ही, किसी दूसरे को भेज सकता है?"

"इन कारणों के विषय में खोज की गयी है। यद्यपि उनको हम इस मुकदमे में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपस्थित नहीं करेंगे, परन्तु आपकी जानकारी के लिये, मैं चाहता हूँ कि आप महाराज के परम मित्र, उनके पिता के हजाम के लड़के, नत्थुराम तथा काहनचन्द का बयान पढ़ लें तो आपको पता चल जाएगा।"

इतना कह सेक्रेटरी ने फाइल में से इन दोनों के बयान निकाल कर डॉक्टर राय को पढ़ने के लिए दे दिये। डॉक्टर राय उन बयानों को पढ़ स्तब्ध रह गया। पूर्वी-देशों, विशेष रूप से मुसलमानी देशों में प्रचलित विकृत यौन-क्रियाओं का चित्र उनमें था। नत्थुराम का तो स्पष्ट कथन था कि महाराज सर्वथा नपुंसक हैं और वह विकृत यौन-क्रियाओं के बहुत ही शौकीन हैं।

डॉक्टर राय को नत्थुराम और काहनचन्द के बयान पढ़कर रोमांच हो आया। उसने फाइल सेक्रेटरी को वापस कर कह दिया—"मुझको किसलिये बुलाया गया है ?"

"महाराज को अपमान से बचाने के लिये हमने उनके वकील को समझाने के लिये इस भेंट का प्रबन्ध किया है। हमारा यह प्रस्ताव है कि आप महाराज से पूछें कि वे मुकदमा लड़ेंगे अथवा वायसराय बहादुर का निर्णय बिना मुकदमे के स्वीकार कर लेंगे।

"मुकदमा लड़ने की अवस्था में उनको अपराधी के कटघरे में खड़े होकर, अपने पर आरोपों पर बहस सुननी पड़ेगी। तदुपरान्त जो कुछ भी निर्णय अदालत करेगी, उसके लिये भी तैयार रहना चाहिये। वह निर्णय फाँसी के दण्ड का भी हो सकता है।

"दूसरा अपवाद यह है कि वे वायसराय बहादुर का निर्णय मान लें। वह निर्णय यह है। महाराज साहब को अपनी रियासत से पृथक् हो जाना चाहिये। उनकी रियासत पर, अभी कोई व्यक्ति, रीजेन्ट बैठा दिया जायेगा। पश्चात् यह किसी उचित अधिकारी को दे दी जायेगी। महाराज माउण्ट आबू पर जाकर रहेंगे। वहाँ उनके रहने के लिये एक कोठी और निर्वाह के लिये पचास हज़ार वार्षिक अलाउँस मिल जायेगा।

"महाराज को इस सब-कुछ को, स्वयं एक प्रार्थना-पत्र में, यह लिखकर कि उनका स्वास्थ्य ठीक नहीं और वे रियासत के कार्य को करने में अयोग्य हैं, माँगना होगा।

"आप महाराज से मिलकर पूछिये कि वे क्या चाहते हैं ? यदि उनकी मुकदमा लड़ने की इच्छा है तो वायसराय तीन जजों की एक ट्रिब्युनल नियुक्त कर देंगे, अन्यथा उनको, जैसा मैंने कहा है, एक प्रार्थना कर देनी चाहिये।"

डॉक्टर ने मुकदमे की पूरी फाइल देखने की इच्छा प्रकट की। इस पर सेक्रेटरी ने एक पृथक् मेज पर एक क्लर्क की देखरेख में पूर्ण फाइल देखने की स्वीकृति दे दी। डॉक्टर ने उस फाइल का तीन घण्टे भर निरीक्षण किया और पश्चात् यह कह, कि वह वायसराय महोदय की इच्छा महाराज तक पहुँचा देगा, महाराज से मिलने के लिये उनकी कोठी को, जहाँ वे बन्दी के रूप में रखे गये थे, चला गया।

कोठी पर पहुँच जब महाराज को पूर्ण परिस्थिति से अवगत किया गया तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महाराज ने कह दिया, "यह पुलिटिकल सेक्रेटरी हिन्दुस्तानियों के सख्त खिलाफ है और यह अभिमानी ब्रिटिश अधिकारी बड़े-से-बड़े हिन्दुस्तानी का अपमान करने के लिये तैयार रहता है। यदि मैं इसके सामने हजूर-हजूर करता तो निस्सन्देह इसका व्यवहार और साथ ही वायसराय का निर्णय भिन्न होता।"

महाराज मुकदमा लड़ने के पक्ष में थे, परन्तु डॉक्टर राय ने बताया कि नत्थु और काहन के बयान महाराज के चरित्र को बहुत ही घृणित रंग में उपस्थित करते हैं और जब महाराज को पता चला कि शमशेरसिंह भी उनके विरुद्ध बयान दे चुका है तो वे पेंशन लेने के लिये तैयार हो गये।

रियासत पर ब्रिटिश सरकार का रीजेन्ट बैठा दिया गया। महाराज को आबू पर एक बंगले में स्थान मिल गया और पचास हज़ार वार्षिक की पेंशन मिलने लगी।

डॉक्टर राय का इस मुकदमे में दोनों पक्षों से रुपया लेकर खा जाने और दोनों पक्षों की सहायता में अपनी बुद्धि के प्रयोग पर उसके मित्र और परिचित विस्मय करते थे।

यह मुकदमे की बात तो सन् १९२६ में हुई थी, परन्तु डॉक्टर राय १९३१ में यह बात अपने मित्रों को बता रहे थे।

१९२६ से १९३१ तक भारत के राजनीतिक क्षेत्र में अनेक घटनाएँ घट चुकी थीं। १९२८ में साइमन कमीशन हिन्दुस्तान में आयी थी। उसके बहिष्कार का वृहद् आयोजन हुआ था। तदनन्तर १९२९ में, ऐतिहासिक दृष्टि से अति विख्यात, लाहौर का कांग्रेस अधिवेशन हुआ था और १९३० में नमक सत्याग्रह किया गया। इस सत्याग्रह में बीस हजार के लगभग लोग नमक कर भंग करने पर बन्दी बनाये गए थे। इन सत्याग्रहियों में डॉक्टर राय भी थे।

सत्याग्रह आन्दोलन डॉक्टर सप्रू और श्रीयुत जयकर के प्रयत्नों से बन्द हुआ था। महात्मा गांधी कांग्रेस के प्रतिनिधि के रूप में लन्दन में हो रही द्वितीय राउण्ड-टेबल कॉन्फ्रेंस में सम्मिलित होने के लिये गये हुए थे।

डॉक्टर राय छूटकर आया तो उसके मित्रों ने एक दावत में उसको सम्मान प्रदान किया। इस दावत में पन्द्रह-बीस के लगभग अभ्यागत थे और दावत के पश्चात् बातों-ही-बातों में अंग्रेजी राज्य की न्याय-व्यवस्था पर बात चल पड़ी। चर्चा का विषय यह था कि एक चुटकी भर नमक बनाने के लिए छः-छः मास की कठोर सजा अंग्रेजी कानून से बहुत अधिक थी। यह अन्याय भी कहा जा सकता है।

डॉक्टर राय की एक मित्र और साथी कार्यकर्त्ता मोहिनी देवी थीं। वे भी छः मास के लिए कारावास में रहकर आई थीं और डॉक्टर राय की इस दावत में उपस्थित थीं।

मोहिनी देवी के पति श्री विपिनबिहारी दास, कलकत्ता के एक विख्यात वकील भी वहाँ पर उपस्थित थे।

मिस्टर दास का कहना था कि नमक बनाना अपराध नहीं है। नमक बनाकर,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिना सरकारी टैक्स दिये बेचना अपराध है। इस कारण नमक बनाते-बनाते ही किसी को पकड़ लेना और उसको दण्ड दे देना न्याय के विपरीत था।

इस पर डॉक्टर राय ने कहा था कि न्याय और दण्ड का रूप परिस्थितियों के अनुरूप ही होता है। अपने कथन की पुष्टि में उन्होंने उक्त घटना का वृत्तान्त सुनकर कहा कि एक हत्यारे और अत्यन्त घृणित चरित्र वाले वालिये-रियासत को पचास हजार की पेंशन और आबू जैसे सुखप्रद स्थान पर रहने को एक सुसज्जित कोठी, न्याय की दृष्टि से भले ही कुछ न हो, परन्तु राजनीतिक विचार से ठीक ही थी।

"इसी प्रकार," डॉक्टर राय का कहना था—"हम पकड़े गये तो इस कारण नहीं कि हमने एक चुटकी भर नमक बनाया था, प्रत्युत इस कारण कि हमने जानबूझ कर और घोषणा कर कानून भंग किया था। अतः राजनीतिक परिस्थिति की यह माँग थी कि हमको दण्ड मिले।"

"वास्तव में," मिस्टर दास का कहना था—"आपने कोई कानून भंग नहीं किया था। देखिए, कोई भी व्यक्ति भूमि में से नमक निकाल कर अपने प्रयोग में ला सकता है। जैसे एक 'कॉपीराइट' वाली पुस्तक का हस्तलिखित अनुवाद कोई भी कर अपने घर में रख सकता है। हाँ! उसको छपवाकर बेच नहीं सकता।

"इसी प्रकार नमक अपने प्रयोग के लिए बनाना अपराध नहीं।"

"यह बात नहीं मिस्टर दास! जैसे एक बम्ब बनाना, भले ही अपनी हत्या के लिये बनाया जाये, कानून विरोधी है, वैसे ही नमक है।"

"परन्तु नमक और बम्ब बनाने में भारी अन्तर है। आत्महत्या भी तो अपराध है। इस कारण बम्ब बनाना, जिससे आत्महत्या की जा सकती है, अपराध है। परन्तु नमक की बात तो दूसरी है।"

इस पर डॉक्टर राय ने कह दिया—"कुछ भी हो, हम तो कानून भंग करने गये थे। हमने जानबूझ कर और घोषणा कर विद्रोह किया था। इतने बड़े अपराध के लिये केवल छः मास का दण्ड कुछ बड़ा नहीं था।"

इस पर मोहिनी देवी ने पूछ लिया—"एक ओर तो हत्या के अपराध के लिए पचास हज़ार वार्षिक की पेंशन और दूसरी ओर चुटकी भर नमक बनाने के लिए छः मास का यह कारावास—बड़ा विचित्र न्याय है!"

"इसमें वैचित्र्य तो कुछ भी नहीं। कानून राज्य चलाने के लिए होता है, न कि राज्य कानून चलाने के लिए। दण्ड-विधान सरकार की सुविधा-असुविधा पर चलता है। देखिये, यदि एक-दो व्यक्ति सत्याग्रह करने वाले होते तो कदाचित् विद्रोह करने वालों को दो-तीन वर्ष का कड़ा दण्ड दिया जाता। जब सरकार ने देखा कि कानून तोड़ने वाले सहस्रों की संख्या में हैं तो उन्होंने जेलखाने जल्दी खाली कराने के लिए दो मास से छः मास के कारावास का दण्ड दिया है।"

"तो क्या स्वराज्य-प्राप्ति के पश्चात् भी यही होगा?"

"ऐसा नहीं करेंगे तो राज्य चलाना असम्भव हो जायेगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस पर दास ने पूछ लिया, "तो क्या स्वराज्य मिल रहा है ?"

"तो इसमें सन्देह है ?" डॉक्टर राय ने मुस्कराते हुए पूछ लिया।

"संदेह की बात नहीं, विश्वास की बात है कि स्वराज्य का अंश मिल रहा है, परन्तु महात्मा जी उसको स्वीकार नहीं कर रहे।"

"क्यों ?" डॉक्टर राय ने विस्मय प्रकट करते हुए पूछ लिया।

"इस कारण कि महात्माजी कुछ ऐसी बात की आशा कर रहे हैं, जिसके मिलने की न आशा है और जिसको प्रयोग करने की न ही हममें योग्यता है।"

योग्यता की बात सुन डॉक्टर राय के माथे पर भृकुटि चढ़ गयी। मोहिनी ने अपने पति से पूछ लिया, "आप कैसे कहते हैं कि महात्माजी और पंडितजी में योग्यता नहीं है ?"

"मेरा मतलब था कि डॉक्टर राय, जो यह कहते हैं कि राज्य कानून चलाने के लिए नहीं प्रत्युत कानून राज्य चलाने के लिए होता है, और यदि कांग्रेस के नेता भी यही मानते हैं तो वे भी, अयोग्य ही कहे जायेंगे।

"देखो मोहिनी ! कानून न तो राज्य के लिए है, न ही किसी अन्य के लिए। कानून धर्म और न्याय की स्थापना के लिए है, राज्य कानून चलाने के लिए होता है।

"यही कारण है कि हमारी संस्कृति के अनुसार राज्य कानून नहीं बनाता, कानून धर्मशास्त्री निर्माण करते हैं। वे जन-साधारण के मतदान से नहीं प्रत्युत अपनी धर्म एवं योग्यता से बनते हैं।"

"तो क्या आप यह समझते हैं कि पंडित जवाहरलाल आदि नेतागण कानून बनाने की योग्यता नहीं रखते ?"

"अभी तक तो इस विषय में उनकी योग्यता के लक्षण दिखाई नहीं दिये। इस पर भी एक बात निश्चय है कि जो शासक होगा, वह कानून-निर्माता नहीं हो सकता। यदि कहीं ऐसा हो गया तो कानून राज्य अर्थात् शासन के लिए हो जायेगा। हम अर्थात् प्रजा, शासकों के लिए रह जायेगी।"

"नहीं-नहीं मिस्टर दास ! ऐसा नहीं होगा। प्रति पाँच वर्ष पर मतदान की तलवार सिर पर लटकती रहेगी, तो वे जनता के साथ न्याय के अतिरिक्त अन्य कोई व्यवहार कर ही नहीं सकेंगे।"

: ७ :

डॉक्टर राय की अनुपस्थिति में, जब वह जेल में था, ज्ञानसागर के लड़के मोहनसागर ने एक कमरा अपने चाचा के फ्लैट का, अपने अधिकार में कर लिया था। जेल से लौटने पर डॉक्टर शान्तिसागर ने वहाँ मोहन का सामान रखा देखा तो उसको बुलाकर कह दिया—"मोहन ! अब मैं आ गया हूँ। तुम तुरन्त इस कमरे को खाली कर दो।"

"चाचाजी !" मोहन ने कह दिया—"आपके पास इस मंज़िल में सात कमरे हैं। एक बड़ा हाल है। क्या आवश्यकता है आपको इतने कमरों की ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मुझको चाहिए। तुम खाली कर दो।"

"क्या आपका विवाह हो रहा है ?"

"बकवास मत करो। कमरा खाली कर दो।"

"चाचाजी ! ऊपर अपने फ्लैट में पढ़ाई हो नहीं सकती। रात-भर वहाँ हल्ला होता रहता है। इस कारण यहाँ आया था और यह स्थान खाली भी तो पड़ा था।"

"मोहन ! कैसी बातें करते हो ? तुम्हारे बाप को मकान के ऊपर का हिस्सा ही किराये पर दिया है। इस मंज़िल पर कोई भी स्थान उसको नहीं दिया।"

"तो अब दे दीजिए। बताइये क्या किराया लेंगे ?"

"पाँच सौ रुपया महीना।"

"ओह ! आप तो सरमायादारों की-सी बातें करने लगे हैं। इस 'आठ 'बाई' दस' के कमरे का पाँच सौ रुपया ? आप हमारी मजबूरी का नावाजिब लाभ उठाना चाहते हैं ?"

"नहीं मोहन ! मुझको मकान का यह भाग किराये पर नहीं देना, इसलिए किराया इतना कह दिया है।"

"देखिए चाचाजी !" मोहन ने अब कुछ अकड़कर कहा—"यह कमरा खाली पड़ा है और मुझको इसकी आवश्यकता है। निर्णय का विवाह हो गया है और उसकी बहू के बच्चा होने वाला है। इस कारण ऊपर की मंजिल पर स्थान खाली नहीं।

"अतः मैं यहाँ आ गया हूँ। किराया लेना है तो पाँच रुपये मासिक ले लीजिए, नहीं तो समाज में निर्धनों के रहने के लिए भी तो स्थान चाहिए।"

"यह ठीक है कि तुमको स्थान चाहिए। परन्तु मुझको यह स्थान किराये पर नहीं देना। तुम किसी अन्य स्थान पर कमरा ले लो।"

इस पर भी मोहन ने कमरा नहीं छोड़ा। जिस दिन दावत थी, डॉक्टर राय दावत से लौटा तो मोहन को अपने कमरे में बैठे हारमोनियम बजाते देख, क्रोध से आगबबूला हो गया। वह कमरे से बाहर खड़ा हो कहने लगा, "मोहन ! बन्द करो यह बाजा। अब सोने का समय है।"

"अच्छी बात है। बन्द कर रहा हूँ। चाचाजी ! आप कपड़े उतारिये, तब तक मैं एक ट्यून और निकाल लूँ।"

"ट्यून के बच्चे।" डॉक्टर राय ने उसके कमरे में जाकर हारमोनियम कमरे के बाहर फेंकने के लिए उठा लिया। मोहन ने चाचा की नीयत को समझ एक मुक्का चाचे के मुख पर दे मारा और कहा, "चाचा ! निकल जाओ, नहीं तो 'ट्रेस-पास' का मुक़दमा कर दूँगा।"

ट्रेस-पास से तो डॉक्टर राय डरता नहीं था। हाँ, मुक्के से उसके सिर में चक्कर आने लगा था। उसने यह कह, "सुबह तक यहाँ से निकल जाओ, नहीं तो पुलिस के हवाले कर दूँगा।" अपने सोने के कमरे में चला जाना ही उचित समझा।

रात को मुक्का लगने के स्थान पर पीड़ा अधिक होने लगी तो उसने 'इलैक्ट्रिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हीटर' पर ऐण्टि-फ्लोजिस्टीन गरम की और मुख पर बाँध ली।

प्रातःकाल जब उठा, पीड़ा तो कम हो गयी थी, परन्तु सूजन अभी भी थी। उसने प्लास्टर उतारा, गरम जल से सेक किया और फिर पट्टी बाँध ली। कुछ चबाते समय उसको पीड़ा होती थी। साथ ही सूजन के कारण कोई ठोस वस्तु खाई भी नहीं जा सकती थी।

मुख पर मफलर लपेटे हुए वह अपने कमरे से निकला। मोहन अपना कमरा बन्द कर ताला लगा कहीं चला गया था। पुलिस बुलाने से पूर्व उसने अपने भाई ज्ञानसागर से बात कर लेनी उचित समझी। वह ऊपर की मंज़िल पर जाकर आवाज़ देने लगा, "ज्ञान दादा! ज्ञान दादा!!"

ज्ञान की पत्नी आयी और अपने देवर को सामने खड़े देख, सब कुछ समझ बोली, "हाँ भैया! क्या कहते हो?"

शान्तिसागर ने मुख पर से मफलर उतारकर कहा, "भाभी! देखो तुम्हारे लड़के ने यह क्या कर दिया है?"

"क्या कर दिया है? यह तो मुख सूज रहा है। क्या कोई दाँत दर्द हो रहा है?"

"दाँत दर्द नहीं भाभी! यह तो मोहन ने मुक्का मारा है। मैं यही कहने आया हूँ कि उसको कह दो कि कमरा खाली कर दे अन्यथा वह आज सायंकाल हवालात में चला जायेगा।"

"मैंने उसको कहा था, परन्तु वह कहता था कि यह मकान उनके बाबा का है। उनके चाचा ने उसके पिता को धोखा देकर स्वयं ले लिया है।"

"यदि उसको कुछ आपत्ति है तो वह अदालत में जा सकता है। यहाँ मुक्के-बाज़ी करने से क्या होता है?"

"कल रात उसका अपने पिता से इसी बात पर झगड़ा हुआ था। वह कहता था कि वह क्यों अदालत में जाये? चाचा तो रोज कचहरी जाता ही है। वही जाये। उसको वहाँ जाने में सुविधा है। मुझको तो मुक्का चलाने में ही सुविधा प्रतीत होती है।"

"तो तुम उसको समझाना नहीं चाहतीं?"

"चाहती क्यों नहीं? समझाती भी हूँ, परन्तु आजकल का लड़का है न, वह किसी की माने भी तो।"

"तो मैं उसको मनाऊँ फिर? अच्छी बात है। उसकी जमानत का प्रबन्ध कर छोड़ना, नहीं तो रात को हवालात की हवा खायेगा।"

मोहन की माँ शारदा चुपचाप खड़ी रही। उसे चुप देख डॉक्टर शान्तिसागर नीचे उतर आया। उसके कार्यालय में दो पुलिस कॉन्स्टेबल खड़े थे। वह उनको वहाँ देख विस्मय में उनका मुख देखने लगा। डॉक्टर राय का विचार था कि पुनः उसके वारंट हैं। कोई राजनीतिक गिरफ्तारी है। परन्तु उसके विस्मय का ठिकाना नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहा, जब उसको मजिस्ट्रेट की आज्ञा मिली।

उसने बैठकर आज्ञा पढ़ी। लिखा था—"वादी मोहनसागर राय, पुत्र ज्ञानसागर राय—प्रतिवादी डॉक्टर शान्तिसागर एम० ए० बार एट० ला०, डी० लिट०।

"वादी ब्लाक नम्बर ४, मकान नं० ३६८ में अपने कमरे में दस वर्ष से रहता, पढ़ता और खाता-पीता तथा सोता है। डॉक्टर शान्तिसागर उसको उस कमरे से निकालना चाहता है और तंग करता है। अतः वादी का दावा है कि प्रतिवादी को यदि कोई शिकायत है तो वह अदालत में आकर चाराजोई करे, अन्यथा झगड़ा होने की सम्भावना है।"

"इसलिए आज्ञा दी जाती है कि प्रतिवादी डॉक्टर शान्तिसागर आकर बताये कि क्यों न उसको शान्ति रखने के लिए क्रिमिनल प्रोसीजर कोड की दफा १०७ के अधीन जमानत से बाँध दिया जाये।"

डॉक्टर राय इस आज्ञा को पढ़कर जल-भुन गया। उसने आज्ञा ले ली और हस्ताक्षर कर नकल कॉन्स्टेबल को दे दी। हाज़िर होने की तारीख अभी पाँच दिन की थी। यह जारी हुई थी दो दिन पहले, अर्थात् उसका मोहन से झगड़ा, आज्ञा जारी होने से एक दिन पीछे हुआ था। इसका अर्थ था कि पिछली रात के झगड़े में वही दोषी सिद्ध होगा। मोहन ने तो पहले ही मजिस्ट्रेट को लिखकर दिया है कि उसका चाचा उसको तंग करता रहता था।

वह अभी इस विषय में विचार ही कर रहा था कि उसके टेलीफोन की घंटी बजी। उसने 'रिसीवर' उठा कान से लगा, सुना। मोहिनी, विपिनविहारी दास की पत्नी बोल रही थी। मोहिनी का कहना था—"दास बाबू कचहरी गये हुए हैं। आप यहाँ आ जाइये।"

"क्यों?"

"चित्त उदास हो रहा है। कई वर्ष की भाग-दौड़ के पश्चात् अब राजनीतिक कार्य रहा नहीं और अन्य किसी कार्य में रुचि नहीं रही।"

"ओह! परन्तु मोहिनी! मेरा मुख सूजा हुआ है और मैं घर से निकलने में लज्जा अनुभव करता हूँ।"

"मैं आपके घर आ नहीं सकती। एक तो आपने अपने फ्लैट में एक कमरा किसी युवक को देकर वहाँ की 'प्राईवेसी' (एकान्तता) विलुप्त कर रखी है।"

"इस पर भी आज तो तुम आ ही जाओ। उस युवक से तुम्हारी मित्रता करा दूँगा। फिर तो एकान्तता बन जायेगी न?"

"क्या बेहूदा बात करने लगे हैं? मुझको क्या समझ रखा है आपने? अच्छा मैं आती हूँ और आपके इस युवक मित्र को जूतों से पीटकर सीधा कर देती हूँ।"

डॉक्टर राय हँस पड़ा। परन्तु मोहिनी ने टेलीफोन बन्द कर दिया। डॉक्टर मुख पर सेक कर रहा था कि मोहिनी आ पहुँची। वह डॉक्टर का मुख सूजा देख विस्मित रह गई। डॉक्टर मुस्करा रहा था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यह क्या हुआ है आपको ?" मोहिनी ने पूछ लिया।

"यह तुम्हारी एकान्तता भंग करने वाले युवक ने किया है। मैं कल रात उसको उस कमरे में से निकालने के लिये वहाँ गया तो उसने तान कर एक मुक्का मारा।"

"परन्तु यह आपने किया क्यों ? जब आप किराया लेते हैं तो फिर बलपूर्वक निकालने की क्या आवश्यकता थी ?"

"किसने कहा है कि मैं किराया लेता हूँ ?"

"वही कह रहा था। एक दिन मैं आयी थी। आप कहीं बाहर गये हुए थे। मैंने उससे पूछा कि आप कब तक लौटने वाले हैं, तो वह बोला कि वह नहीं जानता। वह आपका मास्टर नहीं है। मैंने पूछ लिया कि वह कौन है। इस पर वह कहने लगा कि वह आपका किरायेदार है। वह आपको पाँच रुपये महीना इस कमरे का किराया देता है।"

"यह सब झूठ है, मोहिनी ! वह मेरे बड़े भाई ज्ञानसागर का लड़का मोहन सागर है। वह किरायेदार नहीं, बलपूर्वक इस कमरे पर अधिकार जमा बैठा है।"

"ओह ! तो अब समझी हूँ।"

इस पर डॉक्टर ने अपने भाइयों से बँटवारे की पूर्ण कथा सुना दी। साथ ही कह दिया, "मैं जेल में था और यह पीछे किसी को यहाँ न देख, इस कमरे पर अधिकार जमा बैठा है।"

"तो निकाल बाहर करो।"

"वही तो रात करने लगा था और उस प्रयास में यह मिला है। अब तो उसने मुझ पर 'ट्रेस-पास' करने का दावा कर दिया है और मैं हैरान हूँ कि इस सबके लिये भाग-दौड़ भी करनी पड़ेगी। मैं तो अभी भी उसको ठीक करने के लिये घर से निकल गया होता, पर इस सूजे मुख के साथ कहीं जा नहीं सकता। इसके ठीक होने की प्रतीक्षा में हूँ।"

: ८ :

मोहिनी का विवाह दास बाबू से १९२५ में हुआ था। १९२६ में उसका एक लड़का हुआ था। नाम था हरिमोहन। इसके पश्चात् अन्य कोई सन्तान नहीं हुई।

विपिनविहारी दास गम्भीर विचार और कानून का विस्तृत ज्ञान रखनेवाला एक वकील था। वह सेशन कोर्ट और हाईकोर्ट में ही मुकदमे करता था। उसकी ख्याति कानून के ज्ञाता के रूप में बहुत अधिक थी। इसके विपरीत डॉक्टर राय एक राजनीतिक नेता होने के कारण विख्यात था। राय पढ़ा-लिखा बहुत था, परन्तु राजनीति में अधिकांश समय देने के कारण वह अपने कार्य में कुछ अधिक ध्यान नहीं दे सकता था। इसके अतिरिक्त भी कुछ मोटी बुद्धि का आदमी था, परन्तु राजनीतिक कार्यकर्त्ता होने के कारण सदा सतर्क और सजग रहता था।

मोहिनी विश्व-भारती की विद्यार्थिनी थी। वहीं से उसने बी० ए० किया था। विश्व-भारती के कॉन्वोकेशन के समय में ही विपिनविहारी ने उसको देखा था और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसे देखने के एक सप्ताह के भीतर ही उससे विवाह कर लिया था।

डॉक्टर शान्तिसागर राय भी विश्व-भारती का पढ़ा हुग्रा था। वहाँ से ही उसका मोहिनी से परिचय हुग्रा था। उस समय मोहिनी केवल सोलह वर्ष की लड़की थी ग्रौर कॉलेज के प्रथम वर्ष में पढ़ती थी।

शान्तिसागर तब एम० ए० फाइनल में पढ़ता था। उनके भेंट होने के कुछ मास पश्चात् ही शान्तिसागर एम० ए० पास कर विलायत चला गया। यह सन् १९१९ की बात थी। शान्तिसागर बार० एट ला० ग्रौर डी० लिट० बनकर कलकत्ता में १९२३ में ग्राया ग्रौर ग्रपने काम-धन्धे में लग गया था। सन् १९२८ में साइमन कमीशन के बहिष्कार ग्रान्दोलन में वह कांग्रेस में सम्मिलित हो गया। इस समय उसकी मोहिनी से पुनः भेंट हो गई। ग्रब मोहिनी का विवाह हो चुका था ग्रौर उसके घर पर एक लड़का भी हो चुका था। एक दिन मोहिनी ने पढ़ा कि एक डॉक्टर राय पार्क-सर्कस में साइमन कमीशन के बहिष्कार के विषय में व्याख्यान देने वाले हैं। वह यह न जानते हुए कि डॉक्टर राय कोई उसका पूर्व-परिचित है, व्याख्यान सुनने चली गयी। परन्तु जब उसने डॉक्टर राय को मंच पर खड़े हुए देखा तो पहिचान गयी।

व्याख्यान समाप्त हुग्रा तो मोहिनी, मंच से उतरते हुए डॉक्टर राय के सामने जा खड़ी हुई। डॉक्टर राय उसको देख विस्मय में बोल उठा, "तुम मोहिनी! कहाँ रहती हो?"

"मुझको नहीं पता था कि कॉलेज का साथी शान्तिसागर ग्रौर डॉ० राय एक ही व्यक्ति है। मैं तो व्याख्यान सुनने ग्रायी थी ग्रौर ग्रापको देख ग्रापसे मिलने की इच्छा करने लगी।"

"तो ऐसा करो। कल किसी समय मिलने चली ग्राग्रो। तुमसे बहुत बातें करनी हैं।"

"कहाँ ग्राऊँ?"

"बालीगंज, ब्लाक ४, मकान ३६८, फर्स्ट फ्लोर।"

"ठीक है। ग्राऊँगी।"

ग्रगले दिन मोहिनी उससे मिलने पहुँची तो डॉ० राय ग्रकेला था। मोहिनी की माँग में सिन्दूर देख राय ने कहा, "मोहिनी! मैं ग्रभी तक तुम्हारी प्रतीक्षा में ग्रविवाहित हूँ। तुमने मेरी प्रतीक्षा भी नहीं की।"

"झूठ मत बोलो, राय! जिस दिन मैंने ग्रात्म-समर्पण किया था, उस दिन के बाद तो तुम कॉलेज में तीन मास तक रहे, परन्तु ग्राँख बचाकर निकल जाते थे। इससे पूर्व मुझसे ऐसे चिपके रहते थे, जैसे गोंद से चिपके हो। उन्हीं दिनों तुम्हारे सम्मोहन में मैंने यह कहा था कि मेरा तुमसे विवाह होगा।

"तुम इंग्लैण्ड गये ग्रौर वहाँ से लौटे, कब? मैं नहीं जानती। मैंने तो कॉलेज १९२४ में छोड़ा था। तुम यूरोप से कब लौटे थे?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं १९२३ में आ गया था, परन्तु काम चलाने की चिन्ता में था। मुझको यह पता नहीं था कि तुम कॉलेज में ही हो।"

"मेरा विवाह कॉलेज छोड़ते ही, १९२५ में हो गया था। अब मेरा कहा मानो, तुम भी विवाह कर लो।"

"किससे कर लूँ? मैं तो तुम्हारी प्रतीक्षा में हूँ।"

"वह अब नहीं हो सकता। मैं विवाहिता हूँ और मेरे पति बहुत ही भद्र पुरुष हैं।"

"विवाह नहीं हो सकता न? मैं अब इस जीवन में विवाह नहीं करूँगा। तुमसे भी तो मैं अब कुछ माँगता नहीं। मित्र के नाते तो हम मिल ही सकते हैं।"

इसमें कुछ भी आपत्तिजनक बात नहीं थी। अतः मोहनी की डॉक्टर राय से मेल-मुलाकात आरम्भ हो गयी। तदुपरान्त मोहिनी राजनीतिक क्षेत्र में अवतीर्ण हुई। मोहिनी को जब विदित हुआ कि वह बहुत अच्छा भाषण कर सकती है और उसकी वाणी में प्रभाव है, तो वह नेता बनने के लोभ में राजनीतिक कार्य में कूद पड़ी।

१९३० के नमक सत्याग्रह आन्दोलन में तो डॉक्टर राय से उसकी मुलाकातें मित्रता की सीमा भी पार कर गयीं। जब वह कैद हुई तो उसको डॉक्टर राय से पृथक् होने का, अपने पति से पृथक् होने से, अधिक दुःख था।

दास बाबू पहले तो दोनों में मेल-मुलाकात को केवल राजनीतिक कार्य के कारण समझता रहा था, परन्तु पीछे उसको इस घनिष्ठता में अनुचित व्यवहार का सन्देह भी हुआ था, पर उसके पास कोई प्रमाण नहीं था।

जब मोहिनी जेल से लौटकर आयी तो वह अपने पति के प्रति अरुचि को छुपाकर नहीं रख सकी। दिन-पर-दिन व्यतीत हो रहे थे और वह कभी भी दास बाबू की संगत की इच्छुक प्रतीत नहीं होती थी। दास अपनी पत्नी पर बल प्रयोग करने को पाप समझता था। इस प्रकार विवाहित जीवन में एक प्रकार से विरक्तता उत्पन्न हो गयी थी।

मोहिनी डॉक्टर राय से एक महीना पहले ही पकड़ी गयी थी और एक महीना पहले ही छूटकर आयी थी। अतः जब डॉक्टर राय छूटकर आया तो वह उससे एकान्तवास के लिये उतावली अनुभव करने लगी थी।

इसकी पूर्ति में वह दावत के दूसरे दिन ही डॉक्टर राय को टेलीफोन कर उसके घर जा पहुँची।

मोहिनी डॉक्टर के गाल पर फोमेन्टेशन करते-करते, डॉक्टर का मुख चूमने के लिए झुकी ही थी कि बाहर से किसी के खाँसने का शब्द हुआ। मोहिनी सतर्क हो गयी। यह मोहनसागर था। वह अभी-अभी बाहर से आकर अपना कमरा खोल भीतर गया था। उसके कमरे में दर्पण से डॉक्टर का शयनागार दिखाई देता था। उस दर्पण में ही उसने मोहिनी को डॉक्टर के मुख की ओर झुकते देखा तो खाँस-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर सचेत कर दिया था। उसका मतलब था, 'चाचा ! तुम्हारे शयनागार का द्वार खुला है। इसे बन्द तो कर लो।'

इस खाँसने की आवाज़ सुन डॉक्टर और मोहिनी दोनों परेशानी में एक-दूसरे का मुख देखने लगे। इस समय मोहन ने अपने कमरे का दरवाज़ा बन्द कर लिया। द्वार बन्द होने की आवाज़ से डॉक्टर और मोहिनी समझ गये कि सामने के कमरे में रहने वाले ने खाँसा था। उसने खाँसा था कुछ देखकर अथवा ऐसे ही गले में खुजली होने के कारण, यह वे नहीं समझ सके।

डॉक्टर राय ने कह दिया, "मोहिनी ! द्वार बन्द कर दो। अब तो अपने घर में भी जासूस बैठे हैं।"

मोहिनी आज घर लौटी तो बहुत प्रसन्न थी। दास ने समझा कि आज अवसर है अपनी पत्नी से प्रेम-आलाप करने का। परन्तु रात के भोजनोपरान्त जब सोने का समय हुआ तो मोहिनी चुपचाप उठी और अपने सोने के कमरे में चली गयी तथा भीतर से द्वार बन्द कर सो गयी। दास को यह प्रवृत्ति बहुत खटकने लगी थी। एक दिन दास इस विषय में कह ही बैठा।

मोहिनी प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी की एक बैठक में हाज़िर होकर आयी थी। दास बाबू एक मुकदमे के कागज़ देख रहा था। जब मोहिनी आयी तो उसने बैरा को भोजन लगाने की आवाज़ दी। दास ने मोहिनी की आवाज़ सुनी तो कागज़ आदि बन्द कर डाइनिंग हॉल में चला आया। मोहिनी ने हाथ की घड़ी में समय देख पूछ लिया, "आपने अभी भोजन करना है क्या ?"

"हाँ, मैं आज तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहा था।"

"क्या बात है ?"

"मैं एक-आध बात जानना चाहता था।"

"पूछिये।"

"भोजन करने के पश्चात्। मुझको भूख लगी है। कदाचित् तुमको भी लगी होगी।"

इस समय बैरा भोजन परोसने लगा। दोनों खाने लगे। भोजन समाप्त कर दोनों ड्राइंग-रूम में चले गये। वहाँ बैठ दास ने कहा, "तुमको जेल से छूटकर आये डेढ़ महीने से ऊपर हो गया है। परन्तु मैं अभी तक यह अनुभव नहीं कर सका कि तुम आ गयी हो ?"

मोहिनी ने मुस्कराते हुए पूछा, "क्या अभाव देखा है आपने, जिससे मैं होती हुई भी आपके अनुभव में नहीं आ रही ?"

"मोहिनी ! हरिमोहन की माँ तो आ गयी है, परन्तु विपिनविहारी की पत्नी मोहिनी नहीं आयी।"

"ओह ! समझी। परन्तु मैं पूछती हूँ कि यह अभाव तो दोनों की ओर की बात है न ? क्या आप मेरी ओर देख सन्तोष नहीं कर सकते ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इससे दास कुछ लज्जा अनुभव करने लगा। यह एक प्रकार से उसके संयम पर सीधा आघात था। मोहिनी ने अपनी बात जारी रखी और कहा, "मेरे विवाह के समय आपकी आयु तीस वर्ष की थी। मैं उस समय बीस वर्ष की थी। विवाह को हुए सात वर्ष हो चुके हैं अर्थात् आप सैंतीस वर्ष की आयु के हैं, मैं अभी सत्ताईस वर्ष की हूँ, अब बताइये, मुझको संयम से रहने में अधिक कठिनाई होनी चाहिए अथवा आपको ?"

"परन्तु मैं पूछता हूँ कि कठिनाई कम है अथवा अधिक, यह विचारणीय नहीं। विचारणीय बात यह है कि यह कठिनाई क्यों सहन की जाये ? इस तपस्या की क्या आवश्यकता है ?"

"इसलिये कि मैं जिस कार्य में लगी हूँ, वह बच्चे पैदा करने से अधिक आवश्यक है। मैंने अपना जीवन देश के लिये समर्पित कर दिया है।"

दास बाबू बुद्धिशील व्यक्ति था। इस कारण उसने उठते हुए कहा, "मैं तुम्हारे मन की भावनाओं का आदर करता हूँ। यद्यपि मैं कांग्रेस की कार्यविधि को स्वराज्य लाने वाली नहीं मानता, तो भी मैं कार्यविधि के विरोध के कारण, भावना का विरोध नहीं कर सकता।"

"क्या विरोध है आपका कार्यविधि पर ?"

"यह आज के विचार का विषय नहीं। आज के विचार के विषय में तुमने मेरा समाधान कर दिया है। मैं दो बातों को परस्पर मिलाना नहीं चाहता। यदि मेरी पत्नी किसी देश के कार्य के लिये इतना त्याग और तपस्या कर रही है तो मैं अति प्रसन्न हूँ और उसको व्रत-पालन में सहायता देना चाहता हूँ।"

उस रात मोहिनी को अपने झूठ बोलने पर पश्चात्ताप होने लगा। वह मन में विचार करती थी कि इतने भले आदमी को धोखा देना ठीक नहीं। इससे उसके हृदय में एक टीस-सी उठने लगी। टीस से व्याकुल हो वह सो नहीं सकी। वह मन में विचार करती थी कि क्या वह सब कुछ अपने पति को सत्य-सत्य बता दे ? केवल एक विचार उसको सत्य कहने से रोकता था। वह यह कि सत्य प्रकट होने पर मिस्टर दास को भारी दुःख होगा। अनृत भाषण से वह उसके मन की शान्ति बनाये हुए है।

यह आत्म-वंचना का विचार उसको ईमानदारी के मार्ग पर चलने से रोक रहा था।

अगले दिन प्रातः वह नौ बजे तक सोयी रही थी। जब प्रातः के अल्पाहार के समय उसको जगाया गया और वह आँखें मलती हुई अपने शयनागार से निकली तो उसने स्वयं ही अपनी सुस्ती का कारण बता दिया, "रात तीन बजे तक मैं सो नहीं सकी। पश्चात् कहीं नींद आयी तो फिर पूरी नींद लिए बिना जाग नहीं सकी।"

दास बाबू को कुछ ऐसा समझ आया कि रात उसके वासना-तृप्ति की ओर संकेत ने मोहिनी के मानसिक संतुलन को बिगाड़ दिया था, और वह बिचारी उस सन्तुलन को पुनः लाने के लिए रात बिस्तर पर करवटें लेती रही है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दास ने मन में निश्चय कर लिया कि उसको इन्सान बनना चाहिए और वासना के पीछे जाकर अपनी पत्नी के मन को कुपित नहीं करना चाहिए।

: ६ :

मोहिनी को अपने पति की यह बात भी खटकी थी कि कांग्रेस की कार्यविधि स्वराज्य नहीं ला रही। वह इस विषय पर विचार-विनिमय करने की इच्छा रखती थी। दास यह समझ मोहिनी से राजनीति के विषय पर बात नहीं करना चाहता था, कि वह उस जितना कानून नहीं जानती। वह समझता था कि किसी ऐसे व्यक्ति से, जो देश तथा विदेशों के कानूनों को समझता हो, बात करने में ही आनन्द आ सकता है।

इस पर भी एक दिन बात हुए बिना नहीं रह सकी। महात्मा गांधी ने लन्दन से कांग्रेस कमेटी के मन्त्री को तार दिया था कि वह अमुक तारीख को बम्बई पहुँच रहे हैं, अतः उसी दिन बम्बई में कांग्रेस वर्किंग कमेटी की बैठक भी बुलाई जाये। साथ ही उसमें उन घटनाओं के विषय में, जिनमें यह आरोप है कि सरकार ने उस पैक्ट को तोड़ा है, जो डॉक्टर सप्रू जयकर द्वारा कांग्रेस और वायसराय के भीतर हुआ था, जानकारी एकत्रित कर ली जाय।

इस समाचार से समझदार लोग समझ रहे थे कि सत्याग्रह करने की पुनः तैयारी है। जिस दिन यह समाचार छपा था, उसी रात मोहिनी घर नहीं आयी। दूसरे दिन मध्याह्न के समय वह आयी, तो दास हाईकोर्ट में गया हुआ था। सायं-काल जब दास लौटा तो वह पुनः कहीं जा चुकी थी। इस रात के खाने के समय वह घर पर आयी तो दास ने पूछ लिया, "मोहिनी! कल रात नहीं आईं, कहाँ गयी थीं?"

"मैं बर्दवान गयी थी। रात देर हो जाने से लौट नहीं सकी।"

"क्या कोई कांग्रेस की मीटिंग थी?"

"हाँ, प्रान्तीय कार्यकारिणी की बैठक थी।"

"तो अब तुम लोग पुनः सत्याग्रह की तैयारी कर रहे हो?"

"हाँ, परन्तु हमने तो इस बात को अत्यन्त गुप्त रखा हुआ है। आपको किसने बताया है?"

"मेरा अनुमान मात्र था। अब तुमने इस अनुमान की पुष्टि कर दी है।"

मोहिनी एक क्षण तक विचार कर बोली, "क्या अन्य लोग भी इसी प्रकार के अनुमान लगा रहे हैं?"

"यह बताना तो अति कठिन है, परन्तु कुछ हैं, जिनको अनुमान लगाने का कष्ट नहीं करना पड़ता। उनकी भेदिया पुलिस आपकी पूर्ण कार्यवाही जानती रहती है।

"निर्मलचन्द्र भट्टाचार्य, इन्स्पेक्टर जनरल ऑफ पुलिस इन्टैलिजेंस डिपार्ट-मेण्ट (भेदिया पुलिस विभाग) एक दिन बता रहा था कि आपकी कार्यकारिणी में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दो उनके विभाग से सम्बन्ध रखने वाले सदस्य हैं।"

"यह असम्भव है।"

"असम्भव क्यों है? एक के विषय में तो मुझको भी सन्देह है। मैंने उसका नाम लेकर भट्टाचार्य से पूछा तो वह हँस पड़ा। उसके हँसने के ढंग से मैं समझा हूँ कि मेरा सन्देह ठीक है।"

"कौन है वह?"

"देखो मोहिनी! यदि तुम्हारे पेट में बात रहे तो तुमको बता सकता हूँ और उससे तुम सतर्क रह सकती हो?"

"हाँ, आप बताइये, किसी से नहीं बताऊँगी।"

"डॉक्टर राय पर मुझको भारी सन्देह था और भट्टाचार्य के हँसने से वह सन्देह और भी पुष्ट हो गया है।"

"मैं समझती हूँ कि यह आपका भ्रम है। डॉक्टर राय एक ईमानदार और निष्ठावान् कार्यकर्त्ता है।"

"यह मेरी भूल भी हो सकती है। इस पर भी उससे सतर्क रहने में हानि भी क्या है?"

"परन्तु मोहिनी! मैं तो यह कह रहा था कि महात्मा गांधी पुनः सत्याग्रह आरम्भ करने वाले हैं और इस बार सत्याग्रह से कुछ भी सफलता नहीं मिलेगी।"

"यह आप किस आधार पर कह रहे हैं?"

"आधार तो स्पष्ट है। गांधीजी वहाँ गये थे यह विचार कर कि भारत की पूर्ण जनता का प्रतिनिधित्व करेंगे। मिस्टर जिन्ना और अन्य मुस्लिम डेलिगेट महात्माजी के नेतृत्व से बाहर रहे थे। महात्माजी ने उनको अपने साथ रखने का भरसक यत्न किया था, परन्तु वे नहीं माने। अतः महात्माजी अपनी बात को उस बल से नहीं कह सके, जिससे वह कहना चाहते थे। इस कारण वह निराश लौट रहे हैं।

"दूसरे कुछ कन्ज़र्वेटिव डेलीगेट्स ने महात्माजी को खरी-खरी सुनायी है और वे वहाँ से लौट, अपना सम्मान, जो देश के पढ़े-लिखों के मन में खो रहे प्रतीत होते हैं, अब पुनः प्राप्त करने का प्रयत्न करने वाले हैं। साथ ही आते ही बम्बई में वर्किंग कमेटी की बैठक बुलाना भी इस बात का सूचक है कि किसी प्रकार का ऐक्शन विचार किया जा रहा है।

"परन्तु मोहिनी! तुम अपने विषय में विचार कर लो कि क्या तुमने पुनः जेल-यात्रा करनी है?"

"यदि होनी है तो होगी।"

"निरुद्देश्य?"

"उद्देश्य तो है। हम पूर्ण स्वतन्त्रता चाहते हैं।"

"बिना योग्यता प्राप्त किये? मैं समझता हूँ कि स्वराज्य-प्राप्ति का ध्येय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसके अतिरिक्त अन्य कुछ नहीं हो सकता कि हम भारत की कोटि-कोटि जनता के साथ न्याय चाहते हैं। हमारा विचार है कि बिना अपना राज्य प्राप्त किये भारतीयों को न्याय मिल नहीं सकता। मैं तनिक इससे दूर जाता हूँ। मैं कहता हूँ कि भारतीयों के राज्य से और वह भी सही दिमाग भारतीयों के राज्य से ही न्याय की प्राप्ति हो सकती है।

"सही दिमाग से मेरा अभिप्राय यह है कि जो न्याय और न्याय के लिए कानून की महिमा को जानते हैं। डॉक्टर राय जैसे लोग, जो यह समझते हैं कि कानून की आवश्यकता केवल राज्य चलाने के लिए है, न्याय को गौण मान रहे हैं। ऐसे लोगों को मैं राज्य-भार वहन करने के अयोग्य मानता हूँ और उनके हाथों स्वराज्य कभी भी कल्याणकारी नहीं हो सकता।"

मोहिनी अन्य कांग्रेसी कार्यकर्त्ताओं की भाँति समझती थी कि वे लोग, जा राजनीति में सक्रिय भाग नहीं ले रहे, देश और संसार की बहुत-सी बातों से अनभिज्ञ हैं। ऐसी ही धारणा वह अपने पति के विषय में बना बैठी थी। इस पर भी उसने मिस्टर दास के संशयों के निवारण तथा उनकी धारणाओं के संशोधन का यत्न न करते हुए अपनी घड़ी में समय देखा और उठकर बोली, "अब सोना नहीं चाहिए क्या ?"

"जाओ सो जाओ, परन्तु यह समझ लो कि जो कुछ ये कांग्रेसी कर रहे हैं, 'ब्लैक मेलिंग' के अतिरिक्त कुछ नहीं। मेरा मतलब है कि जिस बात के तुम योग्य नहीं हो, उसको प्राप्त करने के यत्न को 'ब्लैकमेलिंग' ही कहते हैं।"

मोहिनी उठती-उठती बैठ गयी। 'ब्लैकमेलिंग' का शब्द वह हजम नहीं कर सकी। मिस्टर दास ने अब उठते हुए कहा, "तो अब नींद नहीं रही। चलो, चलकर सो जाओ।"

"जी नहीं। आपने गाली दी है, मुझको नहीं प्रत्युत हमारे नेताओं को। यह सुनकर मेरी नींद हराम हो गयी है। बताइये कौन 'ब्लैकमेलिंग' कर रहा है ?"

मिस्टर दास पुनः बैठ गया और कहने लगा, "ब्लैकमेलिंग से मेरा अभिप्राय यह है कि हमारे नेता सत्याग्रह की धमकी देकर वह कुछ प्राप्त करना चाहते हैं, जो उनका अधिकार नहीं है। बताओ, तुम लोग क्या चाहते हो ?"

"हम स्वराज्य चाहते हैं।"

"स्वराज्य से क्या मतलब है ? क्या मैसूर, बीकानेर और जयपुर में स्वराज्य नहीं है ?"

"परन्तु वह लोक-राज्य नहीं है। वहाँ पर एक व्यक्ति का राज्य है।"

"तो स्वराज्य से मतलब लोक-राज्य से है ?"

"हाँ।"

"परन्तु उस दिन तुम्हारे नेता कह रहे थे कि कानून राज्य की सुविधा के लिए होता है। कानून सुविधा के लिए मानने वालों को मैं अयोग्य मानता हूँ। कानून लोक-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हित के लिए होता है न कि सुविधा के लिए। फिर राज्य की सुविधा तो अत्यन्त भयानक बात माननी चाहिए।

"इसी प्रकार सत्याग्रह नेताओं की सुविधा के लिए तो महापाप हो जायेगा। महात्माजी की बात नहीं मानी गयी, इस कारण उनको अपने-आपको पुनः प्रतिष्ठित बनाने के लिए सत्याग्रह की शरण लेना अनर्थकारी होगा।"

"परन्तु महात्माजी तो वही चाहते हैं, जो सब लोग चाहते हैं। अतः उनकी बात नहीं मानी गयी, तो जनता की बात नहीं मानी गयी समझनी चाहिए।"

"परन्तु मोहिनी! राउंड टेबल कॉन्फ्रेंस तो अभी समाप्त नहीं हुई। उसने अभी विधान बनाया नहीं। अभी कैसे कह सकते हैं कि जनता की बात नहीं मानी गयी ?"

"पूर्ण स्वराज्य नहीं मिलेगा। यह तो निश्चय है न ?"

"देखो मोहिनी! मुसलमान पूर्ण स्वराज्य नहीं चाहते। राजा-रईस भी औपनिवेशिक राज्य चाहते हैं। इतना कुछ तो मिलने वाला है ही। पूर्ण स्वराज्य के लिए योग्यता होगी तो औपनिवेशिक स्वराज्य में से पूर्ण स्वराज्य वैसे ही प्राप्त हो जायेगा, जैसे आयरलैंड को है।

"अभी यहाँ प्रान्तीयता इतनी प्रबल है कि उनको एक सूत्र में बाँधने के लिए किसी केन्द्रीय संगठनात्मक शक्ति की आवश्यकता है। कांग्रेस ने तो भारत में 'फैडरल स्टेट' निर्माण करने का प्रस्ताव पास कर रखा है। उस अवस्था में औपनिवेशिक राज्य ही अभी हितकर होगा।"

"प्रान्तीयता है, इस कारण इंग्लैंड का यहाँ अधिकार रहना चाहिए, यह क्या कोई युक्ति है ?"

"मैंने यह नहीं कहा। मैंने कहा है कि देश में प्रान्तीयता का जोर है, इस कारण पूर्ण स्वराज्य के हम योग्य नहीं। जिसके योग्य हम नहीं, उसको धमकी देकर माँगना यह 'ब्लैकमेलिंग' करना ही है।"

"उपनिवेश मात्र बनने से तो अपनी विदेश नीति में हम किसी को सहयोगी बनाने की बात नहीं कर सकते। यदि पूर्ण रूप से हम स्वतन्त्र हों और विदेशी नीति में अंग्रेजों का सहयोग प्राप्त कर सकें, तो हानि है क्या ?"

"देखो मोहिनी! हम बंगाली हैं और बंगालियों की मनोवृत्ति को जानते हैं। वे बंगाल को एक स्वतन्त्र राज्य बनाना पसन्द करेंगे। यहाँ तक कि दूसरों से पृथक् होने के लिए वे अपनी नाक कटाने को भी तैयार हो जाते हैं।"

"यह कैसे ?"

"बंगाली, देश की भाषा हिन्दी को स्वीकार नहीं करते। यह जान कि उनकी बंगला तो राष्ट्रभाषा हो नहीं सकती, वे अंग्रेजी को ही राष्ट्रभाषा बनाने में जोर देने लगे हैं। जैसे हिन्दी सीखना अंग्रेज़ी सीखने से भी कठिन है।

"यही प्रवृत्ति तैमिलियन, आंध्रियन, कन्नड़ इत्यादि भाषा-भाषियों की है।"

"परन्तु यह कैसे कह रहे हैं कि बंगाली के राष्ट्रभाषा न हो सकने के कारण अंग्रेज़ी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का पृष्ठ-पोषण होता है ? मैं तो यह समझती हूँ कि अंग्रेज़ी एक समृद्ध भाषा है। इस कारण हमको उसे राष्ट्रभाषा बनाना चाहिए।"

"मेरा यह कहना है कि राष्ट्रभाषा वह भाषा हो सकती है, जो देश के बहुसंख्यक बोलते-लिखते हों और जिसको प्रायः लोग सुगमता से सीख सकें। अंग्रेज़ी सब हिन्दुस्तानी भाषाओं से इतनी भिन्न है कि उसको सीखना हिन्दी से सुगम नहीं। अतः यह देश की राष्ट्रभाषा नहीं हो सकती।

"इसके अतिरिक्त मैं तो उस प्रवृत्ति का उल्लेख कर रहा हूँ, जिससे बंगाली, तमिल इत्यादि अहिन्दी भाषी हिन्दी पर अंग्रेज़ी को उपमा देते हैं। इस प्रवृत्ति की उपस्थिति में 'फैडरल स्टेट' बनाने वालों को अयोग्य न कहूँ तो क्या कहूँ ?"

मोहिनी स्वयं भी फैडरल स्टेट की नीति को समझ नहीं सकी थी। १९२८ में कांग्रेस ने औपनिवेशिक राज्य की माँग की थी, परन्तु १९२९ में पूर्ण स्वराज्य की माँग कर ली। औपनिवेशिक स्वराज्य की रूपरेखा पंडित जवाहरलाल के पिता पंडित मोतीलाल ने बाँधी थी और पूर्ण स्वराज्य की रूपरेखा १९३१ में पंडित जवाहरलाल ने कराची में बाँधी थी। इसमें फैडरल स्टेट बनाने का प्रस्ताव किया गया था। मोहिनी को, वे सब युक्तियाँ जो पंडितजी ने इस पक्ष में दी थीं, उनके अपने ही पक्ष का विरोध करती प्रतीत हुई थीं। इस पर भी गांधीजी तथा अन्य नेता चुपचाप बैठे रहे और पंडितजी का प्रस्ताव स्वीकार हो गया था।

वह मन में विचार करती थी कि या तो वह नासमझ है अन्यथा प्रायः नेता नासमझ हैं। पंडित जवाहरलाल ने कहा था कि देश में भिन्न-भिन्न प्रवृत्ति और विश्वासों के लोग बसते हैं। इस कारण फैडरल स्टेट की आवश्यकता है। उसका अपना मन कहता था कि देश में प्रान्तीयता और मज़हबों के झगड़े हैं, इस कारण केन्द्रीय संगठन सुदृढ़ रखकर विधान बनाना चाहिए अर्थात् जो युक्ति पंडितजी ने फैडरल स्टेट के पक्ष में दी थी, वही युक्ति उसको केन्द्रीयकरण के पक्ष में प्रतीत हुई हुई थी।

अतः वह विचार करती थी कि क्या सत्य ही उसके पति की बात ठीक है कि कांग्रेस के नेता अयोग्य हैं और वे अभी पूर्ण स्वराज्य प्राप्त करने के योग्य नहीं। यदि मिस्टर दास ठीक कहते हैं तो सत्य ही इनके हाथ में राज्य लाने के लिए सत्याग्रह की धमकी ब्लैकमेलिंग होगी।

इस पर भी वह इतनी बड़ी बात के लिए अपने मन को तैयार नहीं कर सकी। वह चुपचाप उठी और अपने कमरे में जाकर पलंग पर लेट गयी।

: १० :

दास बाबू को अपना जीवन अत्यन्त ही फीका प्रतीत होने लगा था। उसके गृहस्थ-जीवन में पत्नी का अभाव हो गया था और वह भी इस कारण कि उसकी पत्नी कुछ ऐसा कार्य कर रही थी, जिसको वह देश के लिए भी कल्याणकारी नहीं मानता था। त्याग और तपस्या करने के लिए वह विवश हो रहा था और वह भी एक निरर्थक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ही नहीं, प्रत्युत एक हानिकर कार्य के लिए।

अपने इस जीवन की नीरसता से आँखें मूँदने के लिए वह अपने व्यवसाय की ओर, अधिक और अधिक ध्यान लगा रहा था।

वह प्रातः चार बजे ही उठकर अपने मुकदमों की तैयारी करने लगता था। आज भी जब वह उठा तो मोहिनी अभी सो रही थी। वह मन में विचार करता था कि कदाचित् उसके पिछली रात की युक्ति और विवाद ने उसके मस्तिष्क में इतनी हलचल मचाई है कि वह आज भी रात ठीक तरह से सो नहीं सकी।

वह अभी उस दिन के मुकदमे के कागज़ देखकर अवकाश पाया था कि एक सेठ उसको मिलने के लिए आ गया। यह सेठ निरंजनदास, अपने मुंशी के साथ था। जब दास ने प्रश्न-भरी दृष्टि से उसकी ओर देखा तो बात सेठ के मुंशी ने की। उसने बताया—"हम एक मुकदमे में आपसे सहायता लेने आये हैं।"

"बताइये।"

"सेठजी का नाम निरंजनदास है। इनके एक भाई हैं, सामलदास। सेठ निरंजन दास सन् १९१६ में अपने पिता तथा भाई की अनुमति तथा सहायता के बिना कलकत्ता में पेट भरने के विचार से चले आये थे। ये घर से एक पैसा भी लेकर नहीं आये। कलकत्ता में पहुँचे तो इन्होंने पहले नौकरी की, पीछे १९१९ में स्वतन्त्र कारोबार किया और १९२३ के आते-आते दस लाख के स्वामी हो गये।

"सन् १९२३ में इनके पिता का देहान्त हुआ तो ये अपने घर गये। वहाँ इनके भाई की अवस्था बहुत बिगड़ी हुई थी। इस पर भी भाई व्यापार करने से अधिक कांग्रेस का कार्य करने में रुचि लेता था।

"सेठ निरंजनदास अपनी माँ को साथ ले यहाँ आ गये। भाई साथ नहीं आया। वह सार्वजनिक कार्य में संलग्न रहा। एकाएक सन् १९२४ में सामलदास ने बँटवारे की प्रार्थना कर दी और डॉक्टर शान्तिसागर राय की सहायता से अपने बड़े भाई की सब सम्पत्ति सील-बन्द करवा दी।

"तब से मुकदमा चल रहा है। दोनों भाई उधार ले-लेकर निर्वाह करते हैं। फिर भी मुकदमा लड़ते हैं। ये सेठजी नीचे की कचहरियों में मुकदमा हार चुके हैं। अब मुकदमा हाईकोर्ट में है। हम चाहते हैं कि आप इस मुकदमे में हमारी सहायता कर दीजिये।"

"मुझको अवकाश बहुत कम है। मैं आपके मुकदमे में पूरा ध्यान नहीं दे सकूँगा।"

"दास बाबू!" सेठ ने बहुत आग्रहपूर्वक कहा, "दूसरी ओर से मुकदमा डॉ० राय कर रहे हैं। यह मेरा मुंशी कहता है कि आपके अतिरिक्त डॉक्टर राय से मुकाबिला करने वाला कोई नहीं। इसका विचार है कि आप डॉक्टर राय के विरुद्ध मुकदमा ले लेंगे।"

दास विस्मय में मुंशी का मुख देखने लगा। यह एक बंगाली युवक था। वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दास बाबू के मुख पर देखता हुआ मुस्करा रहा था। दास ने अपने मन को टटोला। वह डॉक्टर राय को एक मोटी बुद्धि का वकील मानता था और इस अवसर की खोज में था, जब वह उसकी कोर्ट में दी गयी युक्तियों की धज्जियाँ उड़ा सके। इस बंगाली युवक को, उसके अन्तरात्मा की बात कहते सुन, वह इसका मुख विस्मय में देखने लगा। कुछ विचार कर उसने पूछ लिया, "क्या नाम है जी ! आपका ?"

"मैं मोहनसागर राय हूँ। कलकत्ता यूनिवर्सिटी का ग्रैजुएट हूँ। इस सेठजी की नौकरी करता हूँ। मैं डॉक्टर शान्तिसागर राय के भाई का लड़का हूँ। मैं जानता हूँ कि आप डॉक्टर राय को परास्त करने में कारण रखते हैं।"

"क्या कारण रखता हूँ ?"

"देखिये श्रीमान् ! सब बातें सदा कहने के लिये नहीं होतीं। मैं तो एक बात कहता हूँ कि आप अपने मन को टटोलकर बताइये कि मैं ठीक कह रहा हूँ अथवा नहीं ? यदि मैं ठीक कह रहा हूँ तो यह मुकदमा लीजिये और कीर्ति-लाभ करिये।"

"मैं तो यह जानना चाहता हूँ कि जब एक भाई ने चार-पाँच वर्ष में लाखों कमाये हैं तो वह अपने भाई से बाँटकर क्यों नहीं खाता ?"

उत्तर सेठ ने दिया, "मैंने सामल से कहा था कि घर पर ही फैसला कर ले। उस समय मैं सवा लाख नकद उसको देना चाहता था। वह एकदम आधा अर्थात् पाँच लाख चाहता था। पहली अदालत में जब मैं हारा तो उसकी माँग बढ़कर छः लाख हो गई। उसका कहना था कि तीन वर्ष में उसका इतना खर्च हो गया है। मेरी धारणा थी कि उसने झूठा मुकदमा कर मुझको हानि पहुँचाई है, अतः सवा लाख से भी उसे कुछ कम मिलना चाहिए। इस पर भी मुकदमा हारने पर मैं पाँच लाख देने को तैयार हो गया था। सेशन कोर्ट में भी मैं हारा तो सामल की माँग साढ़े सात लाख हो गयी।

"अब मैंने हाईकोर्ट में अपील की है। हाईकोर्ट में डॉक्टर राय स्वयं मुकदमा लड़ने वाले हैं। अब मैंने इस युवक को अपना क्लर्क बनाया है। इससे पता चला है कि सन् १९२४ से ही डॉक्टर राय सामलदास की धन से और सम्मति से सहायता कर रहा है। साथ ही यह कहता है कि उसके मुकाबिले में आपको करना ठीक है।

"मैं अब भी घर पर फैसला करने को तैयार हूँ। मैं अपना इतना खर्चा हो जाने पर भी पाँच लाख देने को तैयार हूँ।"

डॉक्टर दास ने मुकदमे के कागज लेते हुए पूछ लिया, "डॉक्टर राय आपके भाई की विशेष सहायता क्यों कर रहा है ?"

उत्तर मोहनसागर ने दिया, "डॉक्टर साहब कहते हैं कि सामलदास कांग्रेस का कार्यकर्त्ता है और इस नाते यह उसका कर्तव्य है कि वह एक कांग्रेसी कार्यकर्त्ता की पूरी सहायता करे।

"परन्तु मैं इसके कुछ अन्य कारण भी जानता हूँ। एक तो सामल की पत्नी अच्छी-खासी सुन्दर है, दूसरे सामल पाँच सौ लेकर दो हज़ार का प्रोनोट लिखकर दे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देता है।"

"इसमें कुछ प्रमाण भी दे सकते हो ?"

"पहली बात का प्रमाण तो मैं नहीं दे सकता, परन्तु सामल की पत्नी और सेठजी में कुछ बातें हुई हैं। कम-से-कम इनको मेरे कथन का विश्वास हो गया है। दूसरी बात अर्थात् सामल के प्रोनोटों का प्रमाण तो मैं दे सकता हूँ।"

"अच्छी बात है।" दास ने कह दिया, "मैं इस मुकदमे के कागज़ देखूंगा और यदि इसमें कुछ भी तथ्य दिखाई दिया तो मैं मुकदमा ले लूंगा, अन्यथा तीन दिन में कागज़ वापस कर दूंगा।

"तब तक आप सामलदास के प्रोनोटों का कोई लिखित प्रमाण लाइये।"

"मैं कुछ प्रोनोटों की कापियाँ ला सकता हूँ।"

"मैं समझता हूँ वे आपके मुकदमे में सहायता दे सकती हैं।"

मिस्टर दास जानता था कि प्रोनोटों का मुकदमे पर सीधा प्रभाव तो नहीं पड़ेगा। हाँ, वे सामलदास और राय के कथन का प्रभाव छीन लेंगी।

दास बाबू ने मुकदमा ले लिया। निरंजनदास की ओर से एक प्रार्थना हाई-कोर्ट के पास भेज दी गयी कि डॉक्टर राय अपने ग्राहक सामलदास को झूठा मुकदमा लड़ने के लिये धन दे रहा है। यह वकालत के लाइसेंस के नियमों के विरुद्ध है। उसका लाइसेंस जब्त होना चाहिए। इस प्रार्थना के साथ कुछ प्रोनोटों की फोटो कापियाँ और एक पत्र का फोटोग्राफ, जो डॉक्टर राय ने सामलदास को कुछ दिन हुए लिखा था, भी भेज दिया।

नियत दिन डॉक्टर राय ने मुकदमे का 'स्टेटमैंट' भेज दिया और वह मुकदमा लड़ने के लिये कोर्ट में जा पहुँचा।

कोर्ट में जाने से पहले डॉक्टर राय ने दास को देखा तो विस्मय में पूछ लिया, "तो आप यह मुकदमा लड़ रहे हैं ?"

"हाँ!"

"परन्तु आप तो झूठे मुकदमे लेते नहीं। यह तो हारने वाला मुकदमा है।"

"मैं ऐसा नहीं समझता।"

"दास बाबू! मुकदमा स्पष्ट है। यह संयुक्त परिवार है और बड़ा भाई परिवार की पूर्ण सम्पत्ति को हड़प लेना चाहता है।"

"देखेंगे।"

डॉक्टर राय को विपिनविहारी दास की आँखों में कुछ शरारत दिखाई दी। परन्तु वह समझ नहीं सका था कि वह क्या करना चाहता है।

मुकदमा हाईकोर्ट की एक बेंच के सामने उपस्थित हुआ। दास ने अपील के स्वीकार किये जाने के लिये अपना वक्तव्य दिया। उसने कहा, "मुकदमा चलते हुए सात वर्ष हो गये हैं। यह इस कारण हुआ कि नीचे की अदालतें यह समझती और कहती रही हैं कि मारवाड़ी समुदाय में संयुक्त परिवार का होना अनिवार्य है। अतः उन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अदालतों का यह निर्णय है कि यह परिवार भी संयुक्त परिवार ही होगा। यह युक्ति ठीक नहीं है। एक समुदाय में प्रायः लोग एक व्यवहार को स्वीकार करते हैं। इससे यह कैसे सिद्ध हो गया कि यह व्यक्ति भी उस व्यवहार को मानता है, जो उस समुदाय के अधिकांश सदस्य स्वीकार करते हैं। वास्तविक प्रश्न यह है कि सामलदास और निरंजनदास के पिता का परिवार संयुक्त परिवार था अथवा नहीं? इसका मुकदमे की फाइल पर कोई लिखित प्रमाण नहीं है।

"मारवाड़ी समुदाय में किसी प्रथा के प्रचलित होने से वह प्रथा किसी विशेष परिवार में भी है, मान लेना ऐसे ही है, जैसे यह कहना कि रात के समय सब सोते हैं, इस कारण चोर भी सो रहा होगा और वह चोरी नहीं कर रहा होगा।"

जज इस युक्ति से मुस्कराने लगे। दास ने अपनी युक्ति को और स्पष्ट करने के लिये कह दिया, "मी लार्ड ! इस युक्ति की बेहूदगी को एक अन्य उदाहरण से भी प्रकट किया जा सकता है। भारत में प्रायः स्त्रियाँ सधवा अर्थात् विवाहिता होती हैं। इस कारण कलकत्ता में कोई वेश्या नहीं। सब विवाहिता सती-सधवा ही हैं, ऐसी बात कोई भी मान नहीं सकता। यह युक्ति जो ऑनरेबल सेशन जज ने दी है, किसी भाँति भी स्वीकार नहीं की जा सकती।

"जहाँ तक सामलदास के पिता के परिवार के संयुक्त होने का प्रमाण है, वह मैं अपने प्रतिवादी के वकील से जानना चाहूँगा। इसके विपरीत ऐसे प्रमाण तो हैं, जिनसे यह स्पष्ट रूप में इंगित होता है कि परिवार ने निरंजनदास को एक पैसे की सहायता नहीं दी। निरंजनदास के पिता ने अपने लड़के से कभी एक पैसा तक नहीं माँगा। यदि कभी निरंजनदास ने रुपया नहीं भेजा तो उसके पिता ने गिला नहीं किया। इसका अर्थ स्पष्ट है कि निरंजनदास अपने पिता और माता की आर्थिक सहायता करता था। केवल इसलिये कि वे उसके माता-पिता हैं। वैसे तो दोनों भाइयों की माता सेठ निरंजनदास के पास रहती है। यह इस बात का प्रमाण नहीं माना जा सकता कि वह उसके पास संयुक्त परिवार के नाते रहती है। संयुक्त परिवार के होने में शर्त यह है कि हानि-लाभ में परिवार के सब सदस्य भागीदार हों। जब निरंजन दास कलकत्ता जैसे नगर में पन्द्रह रुपये मासिक वेतन पर निर्वाह करता था, उसके पिता अथवा भाई ने कभी एक पैसे की सहायता नहीं भेजी।

"संयुक्त परिवार न होने का एक अन्य प्रमाण भी है। वह यह कि जब निरंजन दास अपना स्वतन्त्र काम करने लगा था, तब भी उसके पिता अथवा भाई ने कभी भी उसके कारोबार में सहायक होने का यत्न नहीं किया।

"इन सब बातों से यही सिद्ध होता है कि सामलदास के पिता का परिवार संयुक्त नहीं था। इसके विपरीत कोई ऐसी बात नहीं कही गयी, जिससे यह सिद्ध हो कि यह संयुक्त परिवार था।"

जब डॉक्टर राय ने युक्ति की तो जजों ने स्वयं उससे प्रश्न पूछना आरम्भ कर दिया। इन प्रश्नों का परिणाम यह हुआ कि डॉक्टर राय ने अपनी बहस शीघ्र ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समाप्त कर दी।

जजों ने उसी समय निर्णय दे दिया कि निरंजनदास की अपील स्वीकार होती है। सविस्तार निर्णय लिखकर पीछे देने को कह दिया गया।

जिस समय दास बाबू बहस कर रहा था, जज कुछ फोटोग्राफ एक-दूसरे को दिखा रहे थे और मुस्करा रहे थे।

दास जजों की रुचि उन फोटोग्राफ में देख समझ रहा था कि इस विषय में कुछ कार्यवाही होनी सम्भव है। जब निर्णय निरंजनदास के पक्ष में हो गया तो डॉक्टर राय को, उन प्रोनोटों के विषय में बताने के लिये नोटिस जारी होने की सम्भावना बढ़ गयी थी।

: ११ :

दास बाबू जब कोर्ट-रूम से बाहर निकला और अपनी मोटरगाड़ी की ओर जाने लगा तो डॉक्टर राय उसको बधाई देने आया। वहाँ निरंजनदास उसका धन्यवाद करने आया हुआ था। डॉक्टर राय की बधाई स्वीकार करते हुए दास ने पूछ लिया, "आपका सामलदास से क्या सम्बन्ध है? मैंने सुना है कि आप बिना फीस के मुकदमा कर रहे थे?"

"कौन कहता है?"

"आपका क्लायेंट सामलदास ही कह रहा था।"

"मैं बताना तो नहीं चाहता था। पर अब जब आपने पूछा है तो कहता हूँ कि वह कांग्रेस का कार्यकर्त्ता है और मैं कांग्रेस का नेता हूँ।"

"ओह! ठीक याद आ गया है। आपने उस दिन कहा था कि न्याय और दण्ड का आधार सरकार की सुविधा-असुविधा के साथ भारी सम्बन्ध रखता है। यहाँ आपकी न्यायप्रियता का आधार कांग्रेस दल के लोगों की सुख-सुविधा ही हो सकती है।"

"न्यायप्रियता नहीं मिस्टर दास! सहायता की बात है।"

"अर्थ एक ही है। सहायता के लिये अधिकारी-अनधिकारी की जाँच का आधार राजनीति है और सत्य तथा न्याय नहीं।"

डॉक्टर राय चुप कर रहा। अब निरंजनदास ने कहा, "बाबू साहब, मैं आपका बहुत आभारी हूँ। आपकी योग्यता ने ही मुझको जिता दिया है। मैं बरबाद हो गया हूँ। सात वर्ष से कोई काम नहीं किया। जो कुछ चोरी-चोरी किया है, वह निर्वाह के लिये पर्याप्त नहीं हुआ। पूर्ण सम्पत्ति तो मुक़दमे ही में व्यय हो चुकी है। इस पर भी आपका धन्यवाद है। मैं कल से कुछ करने का यत्न करूँगा।"

इस समय डॉक्टर राय दास बाबू से डाँट खाकर बार-रूम में चला गया था। उसे गये देख दास ने निरंजनदास को कह दिया, "आपका पत्र और प्रोनोटों के फोटोग्राफ जजों के हाथों में चक्कर काट रहे थे। मैं समझता हूँ कि उनका प्रभाव आपके हक़ में ही हुआ है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं भी देख रहा था, परन्तु उसके विषय में कोई बात चली नहीं।"

"चलेगी। इसका प्रभाव डॉक्टर राय की प्रैक्टिस पर पड़ने वाला है। इस मुकदमे में तो प्रभाव गुप्त ही रहा है, परन्तु दूसरे में प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता प्रतीत होता है।"

निरंजनदास हँस पड़ा। इस समय सेठ निरंजनदास का मुंशी मोहनसागर वहाँ आ पहुँचा। वह कोर्ट में रजिस्ट्रार के पास कुछ पता करने गया हुआ था। वह आया तो दास बाबू को 'कांग्रेचुलेट' कर कहने लगा, "मैं आपसे यही आशा करता था। आपके विषय में यह बात नगर-भर में विख्यात है कि आप हारने का नाम तक नहीं लेते। आपकी वह युक्ति तो कमाल की रही, जो आपने सधवा और वेश्याओं के विषय में दी थी।"

इस समय दास बाबू को मोहन के पिछले दिन का कथन स्मरण हो आया। मोहन ने कहा था कि दास बाबू डॉक्टर राय के विरुद्ध मुकदमा लेने से इन्कार नहीं करेंगे। उसने उस दिन मोहन से पूछा था तो उसने कह दिया था कि सब बातें हर समय बताने की नहीं होतीं। आज दास बाबू के मन में पुनः इच्छा उत्पन्न हुई कि इस विषय में उससे पूछे। इस कारण उसने पूछ लिया, "मोहन बाबू! तुमने एक दिन कहा था कि सब बातें सदैव कहने के लिये नहीं होतीं। मैं जानना चाहता हूँ कि क्या उस बात के कहने का समय अभी भी आया है अथवा नहीं?"

इस प्रश्न पर मोहन गम्भीर हो गया। उसने कुछ विचारकर कहा, "मैं सब-कुछ तो अभी नहीं बता सकता, इस पर भी आइये, ज़रा पृथक् होकर बात करें तो ठीक रहेगा।"

दास सेठ निरंजनदास को वहीं छोड़कर मोहनसागर के साथ एक ओर हटकर खड़ा हो गया। मोहन ने कहा, "मैं जितना कहूँगा उतना ही पर्याप्त समझ लीजियेगा और अधिक प्रश्न न पूछियेगा। कदाचित् मैं बता भी नहीं सकूँगा।

"मैंने आपको यह बताया था कि मैं डॉक्टर राय के भाई का लड़का हूँ। मेरे पिता का नाम बाबू ज्ञानसागर है। चाचा विलायत से पढ़कर आये तो पहली बात, जो इन्होंने की, वह बाबा की सम्पत्ति का बँटवारा था। परिणाम यह हुआ कि न तो हमारे ताऊजी, न ही हमारे पिताजी, अपने लड़के-लड़कियों को भली-भाँति शिक्षा दे सके। मेरी पढ़ाई भी बन्द हो गयी। हमारे पिताजी के साथ तो विशेष रूप से अन्याय हुआ है। उनकी आँखें बचपन से खराब हैं और इसी कारण वे पढ़-लिख नहीं सके। उनको तो चाचाजी ने बिना कुछ दिये ही टरका दिया है।

"जब ये जेल गये हुए थे, मैंने इनके फ्लैट में एक कमरे पर बलपूर्वक अधिकार कर लिया। उस कमरे के विषय में मेरा चाचा से मुकदमा चल रहा है।

"इस सब कथा का सम्बन्ध आपसे यह है कि यह कमरा चाचाजी के ड्राइंग-रूम में खुलता है और मैं उस कमरे में बैठा हुआ चाचा के ड्राइंग-रूम और शयनागार में हो रहा सब कुछ देख सकता हूँ। मुझको केवल कमरे में लगा दर्पण घुमाना पड़ता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस प्रकार चाचाजी के शयनागार की यात्रा करने वाले सब पक्षियों को मैं जानता हूँ।

"यही कारण है कि मैं सामलदास की पत्नी के विषय में जान गया था। मेरे कहने पर ही सेठ ने अपनी भावज को डाँटा-डपटा और फिर उसके द्वारा उन प्रोनोटों के फोटोग्राफ लिये हैं। आपका भी एक सम्बन्धी उस शयनागार का यात्री है।

"मैं समझता था कि आप जानते हैं। खैर, मैं और अधिक कुछ नहीं बता सकता।"

इतना कह मोहन नमस्कार कर चला गया, परन्तु दास इतने वृत्तान्त से बहुत-कुछ समझ गया था। उसका मुख पीत वर्ण हो गया। वह कितनी ही देर तक वहाँ खड़ा-खड़ा विचार करता रहा। तत्पश्चात् वह अपनी मोटरगाड़ी में सवार हो घर को चला आया।

डॉक्टर राय को उस दिन ही पता चला था कि उसका भतीजा मोहन सेठ निरंजनदास के पास नौकरी करता है। उसको कचहरी में सेठ के आगे-पीछे घूमते देख उसने उसे बुला, पूछ लिया, "मोहन! क्या कर रहे हो यहाँ?"

"चाचा! अपनी नौकरी बजा रहा हूँ।"

"नौकरी? कहाँ नौकरी करते हो?"

"एक सेठ निरंजनदास हैं। उनके पास क्लर्क का काम करता हूँ।"

"निरंजनदास? जिसने आज़ अपील की थी?"

"जी।"

"क्या वेतन मिलता है उससे?"

"दो सौ पचास रुपया मासिक।"

"पर वह तो कहता था कि उसका दिवाला पिट रहा है। वह तुमको वेतन कहाँ से देता है?"

"भगवान् सबको देता है, चाचा!"

"हाँ, चोरों को भी, भले लोगों को भी। बताओ, कमरा खाली करने का विचार है अथवा नहीं?"

"है तो। परन्तु तुम बाबा को पचास हज़ार रुपया, जो धोखे से तुमने उसके भाग का छीन लिया है, वापस कब करोगे?"

"बहुत भोले हो, मोहन! इन दोनों बातों का परस्पर क्या सम्बन्ध है? मकान तो तुमको खाली करना ही पड़ेगा। रुपये के विषय में सालस डाल लो।"

"सत्य कहते हो, चाचा! मैं तैयार हूँ। लिखकर देना होगा कि उसका निर्णय स्वीकार करोगे।"

"हाँ, परन्तु सालस किसी कानून जानने वाले को डालना होगा। ऐसे ही किसी भावुक व्यक्ति के हाथ में मैं यह बात नहीं दे सकता।"

"हाँ चाचा! नाम बताऊँ कि मैं किसको सालस स्वीकार कर लूँगा?"

"बताओ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"बाबू विपिनविहारी दास को मैं सालस स्वीकार कर लूंगा।"

"वह तो उलटी खोपड़ी का आदमी है।"

"हाँ चाचा! तुमसे उलटी खोपड़ी वाला। वैसे कानून का ज्ञाता तो है। तुमसे अधिक कानून जानता है। तभी तो तुम, जहाँ पन्द्रह मिनट बहस नहीं कर सके, वहाँ वह दो घण्टे तक बहस करता रहा है।"

"नहीं मोहन! किसी और को डाल लो।"

"नहीं चाचा! बस मुकदमा चलेगा। अभी तो उस कमरे का झगड़ा चल रहा है; परन्तु शीघ्र ही बँटवारा रद्द करने का भी दावा होने वाला है।"

"अच्छा तुम घर पर मिलना।"

"परन्तु वहाँ तुमको अवकाश भी तो नहीं होता। मिलनेवालियों का जमघट लगा रहता है?"

"मिलनेवालियाँ? कौन मिलनेवालियाँ?"

"यही मिसेज़ दास और मिसेज़ सामलदास इत्यादि।"

"बकवास बन्द करो।"

मोहन चल पड़ा, परन्तु दो पग चलकर लौट आया। उसने कहा, "चाचा! मैं तो अफ़सोस करने आया था, तुमने दूसरी बातों में लगा लिया। मुझको तुमसे हार्दिक सहानुभूति है। मुकदमे के हारने की बात तो साधारण-सी है। उसमें तुमने पेश होने की फीस भी तो नहीं ली थी। मुझको तो शोक उन प्रोनोटों के व्यर्थ जाने का है, जो सामलदास ने लिखकर दिये हुए हैं। अब वह उनका भुगतान नहीं कर सकेगा।"

"तुम क्या जानते हो प्रोनोटों के विषय में?"

"यही कि पाँच-पाँच सौ देकर, दो-दो हज़ार के लिखवाये प्रोनोट, जो अब एक पैसे के भी नहीं रहे। सामलदास दिवाले की प्रार्थना करने वाला है।"

"किसने बताया है यह सब तुमको?"

"किसी ने भी बताया हो? परन्तु चाचा! यह सौदा बहुत महँगा पड़ने वाला है।"

"तुमको कुछ हानि नहीं होगी। तुम क्यों चिन्ता कर रहे हो?"

"मुझको तो चिन्ता इस बात की है कि कहीं तुम्हारा दिवाला निकल गया तो हमारा पचास हज़ार भी डूब जायेगा।"

इस पर राय मोहन को खड़ा छोड़, घर को चल पड़ा।

डॉक्टर राय के घर पर सामलदास बैठा उसकी प्रतीक्षा कर रहा था। वह निर्णय सुनते ही वहाँ से भाग आया था। डॉक्टर राय प्रोनोटों की बात सुन आग-बबूला हो रहा था। अतः सामलदास को देखते ही उस पर बरसने लगा, "क्यों बे सेठ के बच्चे! अपने पर किये अहसान का यह बदला दे रहे हो कि सबके सामने डोंडी पीटने लगे कि पाँच सौ देकर दो हज़ार के प्रोनोट लिखकर दिये हैं?"

"मैं तो इसलिए आया था कि आज घर में खाने को कुछ नहीं है। पाँच सौ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग्रौर दे दीजिये।"

"ग्रब भाग जाग्रो यहाँ से। कोई ग्रौर मोदी ढूँढ़ लो। तुम्हारे साथ तो मेरा भी दिवाला पिट गया है।"

सामलदास बैठा रहा। उसकी ग्राँखें भीग गयी थीं। इस पर डॉक्टर राय ने कह दिया, "पहले यह बताग्रो कि रुपये देने का क्या प्रबन्ध होगा?"

"ग्रभी तो मैं कुछ नहीं कह सकता। इस विषय पर विचारकर ही बता सकता हूँ।"

"तो ऐसा करो, पहले विचार कर लो। पीछे एक, दो हज़ार का प्रोनोट लिख-कर बीवी के हाथ भेज देना। मैं देखूँगा कि उसके लिये क्या दे सकूँगा?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्वितीय परिच्छेद

: १ :

सामलदास के मुकदमे का दोहरा प्रभाव डॉक्टर राय पर हुआ। मुकदमे के लिये डॉक्टर राय ने सामलदास को दो लाख के लगभग रुपया उधार दिया था और लगभग आठ लाख के प्रोनोट लिखाए हुए थे। वे सब गये। मुकदमे का निर्णय होने के दूसरे दिन ही सामलदास ने दिवालिया होने की प्रार्थना कर दी। इस विषय में उसके लेनदारों को नोटिस मिल गया कि उन्होंने जो कुछ लेना है, आकर लिखायें। इस प्रकार का नोटिस डॉक्टर शान्तिसागर राय को भी मिला।

मुकदमे के निर्णय होने के एक सप्ताह के भीतर डॉक्टर राय को हाईकोर्ट कलकत्ता का एक नोटिस मिला कि वह अमुक तिथि को कोर्ट से नियुक्त ट्रिबुनल के सामने उपस्थित होकर बताए कि क्यों न उसका प्रैक्टिस करने का लाइसेंस रद्द कर दिया जाये ? उस पर आरोप यह है कि वह अपने एक 'क्लायेंट' को धन दे-देकर, उसको झूठा मुकदमा करने का प्रोत्साहन दे रहा था। साथ ही उसने बहुत कम रकम देकर, चौगुनी रकम के प्रोनोट लिखाये हैं।

इस नोटिस के मिलने पर तो उसके पाँव तले की ज़मीन खिसक गयी।

निरंजनदास को भी एक नोटिस मिला। उसमें उसको उपस्थित होकर अपने दिये हुए फोटोग्राफों की सत्यता में प्रमाण देने को कहा गया था।

डॉक्टर राय को तो इस नोटिस के मिलने पर ज्वर-सा आने लगा। वह दिन-रात बिस्तर पर लेटा रहने लगा। पहले तो डॉक्टर राय ने मोहिनी को कुछ नहीं बताया। परन्तु एक दिन, जब उसको यह पता चला कि ट्रिबुनल के सामने सरकारी पक्ष को उपस्थित करने के लिये विपिनविहारी दास नियुक्त हुए हैं, तो वह मोहिनी को पूर्ण वृत्तान्त बताने पर विवश हो गया।

मोहिनी को डॉक्टर राय की कठिनाई का ज्ञान हुआ तो वह उसकी सहायता के लिये योजना बनाने लगी।

अपने पति से मोहिनी का व्यवहार वैसा ही चल रहा था, जैसा जेल से छूटकर आने पर था। अब डॉक्टर दास के लिये वह अपने व्यवहार में कुछ मधुरता लाने का विचार करने लगी। यूँ तो वह अनुभव कर रही थी कि दास कई दिन से अपने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकालय में इतने व्यस्त रहते हैं कि प्रातः-सायं भोजन के समय के अतिरिक्त उससे बात करने का भी अवसर नहीं मिलता। रात के भोजन के समय तो वह बहुत कम अपने घर पर होती थी।

अतः वह आज रात के खाने के समय घर पहुँच गयी। दास उसको कपड़े बदल भोजन के लिये आते देख विस्मय में पूछने लगा, "मोहिनी! आज कोई मीटिंग नहीं थी क्या?"

"नहीं; सब कार्यकर्त्ता और नेता बम्बई गये हैं। वहाँ से सूचना आने तक हम लोगों के लिये कुछ काम नहीं है। यूँ सत्याग्रह की पूरी तैयारी है।"

दास ने इस बात को आगे नहीं चलाया। वह भी तैयार हो डाइनिंग हॉल में पहुँच गया। भोजन करते समय कुछ विशेष बातचीत नहीं हो सकी। बैरा भोजन करा रहा था। दास जानता था कि राजनीति में वह मोहिनी से सहमत नहीं और भोजन के समय वह इस न समाप्त होने वाली बहस को चलाना नहीं चाहता था। दोनों भोजन करते रहे।

भोजनोपरान्त अपने स्वभावानुसार दास अपने ड्राइंग-रूम में जा बैठा। वहाँ वह कोई साधारण-सी पुस्तक पन्द्रह-बीस मिनट तक पढ़ा करता था। तदुपरान्त, जिस दिन उसको कोई मुकदमे की तैयारी करनी नहीं होती थी, वह कॉफी पीकर सो जाता था। आज भी उसका यही कार्यक्रम था। विशेष बात उस दिन यह थी कि मोहिनी भी उसके पास बैठी हुई थी।

दास ने कुछ बात करने के लिये पूछ लिया, "तो तुम जेल जाने के लिये तैयार हो?"

"मैं बहुत विचार कर इस परिणाम पर पहुँची हूँ कि तीन-चार दिन जो शेष हैं, वे आपकी संगत में व्यतीत करूँ।"

"बहुत धन्यवाद है। परन्तु मोहिनी! तुमको आराम करना चाहिए। इसबार जेल में वे सब सुविधाएँ प्राप्त नहीं हो सकेंगी, जो पीछे मिलती रही हैं। वायसराय बदल चुका है। यह ठीक आदमी नहीं है।"

कुछ देर बाद दास ने पूछ लिया, "डॉक्टर राय कलकत्ता से बाहर गये हैं क्या?"

"नहीं, वे तो बीमार पड़े हैं।"

"क्यों? क्या हुआ है?"

"उनको हाईकोर्ट से नोटिस आया है कि उनका प्रैक्टिस करने का लाइसेंस क्यों न रद्द कर दिया जाये?"

"क्या अपराध किया है उन्होंने?" दास बताना नहीं चाहता था कि वह राय के विषय में बहुत-कुछ जानता है।

मोहिनी ने विस्मय में अपने पति के मुख पर देखते हुए पूछा, "तो आपको पता नहीं है क्या?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"क्या पता नहीं है ?"

"आपको ट्रिबुनल के सामने सरकार की ओर से उपस्थित होने को हाईकोर्ट ने कहा है न ?"

"यह तो ठीक है, परन्तु मैंने मुकदमा देखा नहीं। कल कोर्ट जाऊँगा तो पता चलेगा। मैं समझा था कि तुमको सब-कुछ मालूम है, इसीलिये पूछा था।"

"हाँ; डॉक्टर राय ने बताया तो है। परन्तु आपको तो पता चल ही जायेगा। राष्ट्र का काम करने वालों पर ऐसी कठिनाइयों का आना स्वाभाविक है।"

"कोई प्रोफ़ेशनल सदाचार का नियम भंग किया होगा ?"

"कोई ऐसी बात नहीं। एक कांग्रेसी कार्यकर्त्ता की धन और कानूनी ज्ञान से सहायता की है। दुर्भाग्य से वह मुकदमा हार गया है और धन की सहायता पर कोर्ट ने आपत्ति उठा दी है।"

दास चुप रहा और विचार करता रहा। यदि मोहनसागर की बात सत्य है तो आज मोहिनी को क्या आवश्यकता पड़ गयी जो उसकी संगत की इच्छुक हो गयी है। इस समय उसको विचार आया कि यह कहीं उससे राय के मुकदमे में कुछ बात कहने के लिये ही न हो। इस सन्देह पर तो दास को बहुत दुःख हुआ। उसकी अपनी पत्नी, किसी दूसरे की सहायता करने हेतु वह कुछ करने के लिये तैयार हो गयी है, जो वह अपने पति के लिये करने को तैयार नहीं होती थी।

इस विषय में वह मोहिनी के विचार जानने के लिये प्रश्न-भरी दृष्टि से उसकी ओर देखता रहा।

मोहिनी ने अपने पति को चुप देख कहना जारी रखा। उसने कहा, "सामलदास राजस्थान में एक प्रमुख कार्यकर्त्ता था। उसकी सिफ़ारिश दिल्ली के एक बहुत बड़े कांग्रेसी नेता ने की थी। अतः डॉक्टर साहब का यह कर्तव्य हो गया था कि वह उसकी सहायता करें। उन्होंने सहायता की।"

अब दास बाबू ने कहा, "बात तो सरल है। डॉक्टर राय सामलदास को ट्रिबुनल के सामने उपस्थित कर दे। सामलदास को बताना चाहिए कि धन जो उसको मिल रहा था, सहायता थी, कोई ऋण नहीं था। उसने डॉक्टर को एक कौड़ी भी नहीं देनी।"

"आप उसकी सहायता कर दें तो डॉक्टर राय का उद्धार हो सकता है।"

"क्या सहायता चाहता है वह, मुझसे ?"

"यही कि सामलदास से कुछ अधिक जिरह न करें। वह साधारण बुद्धि का आदमी ठीक-ठीक उत्तर नहीं दे सकता।"

"सचाई जानने का यत्न तो किया ही जायेगा। अदालत भी इसी काम के लिए बनी हुई है।"

"वह मूर्ख व्यक्ति क्या-क्या मनघड़ंत बातें बता देगा, कहा नहीं जा सकता।"

"उसकी मनघड़ंत बातों को कपोल-कल्पित सिद्ध करने के लिए ही तो सचाई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जानने की आवश्यकता होगी।"

"मैं चाहती हूँ कि यह जाँच हश-अप हो जाय।"

"मोहिनी! तुम ऐसा क्यों चाहती हो?"

"इस कारण कि वह देश का सेवक है। उसने देश के लिए बहुत कुछ बलिदान किया है। उसकी सहायता करना मेरा कर्तव्य है।"

"बात तो ठीक है। यदि उसने शुद्ध पवित्र भाव से यह सब किया है, तो उसकी रक्षा करना मेरा भी कर्त्तव्य हो जायेगा।"

मोहिनी को इतने आश्वासन से सन्तोष नहीं हुआ। उसने इस आश्वासन को पुष्ट करने के लिए कह दिया, "अच्छा छोड़िये इस बात को। चलिए, अब सोना चाहिए।"

"ठीक है।" दास उठ खड़ा हुआ। जब वह अपने शयनागार में जाने लगा तो मोहिनी ने प्रेम-भरी दृष्टि से उसकी ओर देखकर कहा, "आज इधर मेरे शयनागार में आ जाइये।"

दास इस निमन्त्रण की आशा कर रहा था। इस कारण उसने इसका उत्तर भी मन में विचार रखा था। उसने कह दिया, "नहीं मोहिनी! तुम देश के लिए एक बड़ा काम करने जा रही हो। उस कार्य में मैं बाधक बनना नहीं चाहता। कहीं गर्भ ठहर गया तो जहाँ तुम्हारे काम में बाधा होगी, वहाँ मुझको मेरी आत्मा कोसती रहेगी।"

इतना कह दास अपने कमरे में चला गया। मोहिनी वहीं भौचक्की हो खड़ी रह गयी। कुछ देर तक विचार करती रही, तदनन्तर अपने कमरे में चली गयी। अपने शयनागार का द्वार उसने बन्द नहीं किया।

प्रातःकाल मोहिनी ने, घर से जाने के पूर्व अपने पति से पूछा, "यदि आप कहें तो डॉक्टर राय अपना केस बताने के लिए आपसे मिलने आ जायें?"

"नहीं, मैं उनके विरोधी पक्ष का वकील हूँ। यह हमारे व्यावसायिक चरित्र के विपरीत है कि हम अपने विरोधी पक्ष के किसी आदमी से मिलें। मैं ऐसा नहीं कर सकता।"

"कौन देखने आयेगा?"

"मोहिनी! मैंने अभी तक राजनीतिक कार्य करना अपना जीवन का ध्येय नहीं बनाया। उसके लायसेंस को तो बचा सकूँगा अथवा नहीं, कह नहीं सकता। हाँ, इससे अपनी प्रैक्टिस का लायसेंस गँवा बैठूंगा।"

इस बात ने सब युक्तियाँ समाप्त कर दीं।

निश्चित दिन ट्रिबुनल के सम्मुख डॉक्टर राय के विषय में जाँच हुई। आरोप यह था कि डॉक्टर अपने मुवक्किलों को धन दे-देकर मुकदमा लड़ाता है और एक के चार-चार लिखवाता है। ऐसे व्यक्ति को बार का सदस्य नहीं रहने देना चाहिए। उसका वकालत करने का लायसेंस जब्त कर लेना चाहिए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विपिनविहारीदास सरकार के इस पक्ष को सिद्ध करने के लिए नियुक्त हुआ था। डॉक्टर राय अपना मुकदमा स्वयं लड़ रहा था। ट्रिबुनल में हाईकोर्ट के चीफ़ जस्टिस, एक अन्य जज तथा बार कौंसिल के प्रधान कुल तीन सदस्य थे।

सबसे पहले निरंजनदास उपस्थित हुआ। निरंजनदास ने अपने मुकदमे का संक्षेप में वर्णन सुना दिया। उसने बताया, "जब मुझको यह विदित हुआ कि डॉक्टर राय मेरे भाई की पत्नी से अनुचित सम्बन्ध रखता है तो मैं उससे मिलने गया। जब, अभी सामलदास गाँव में था, तो मेरी भावज ने कई बार अपने और बच्चों के भूखे-नंगे होने की बात लिखी थी और मैं सदा उसकी सहायता करता रहता था। मैंने उसको बहुत डाँटा। मैंने कहा था कि यदि वह इतनी बुरी अवस्था में थी तो मुझको लिख भेजती! मैं उसकी सहायता कर देता। उसने अपना शरीर बेचकर हमारे खानदान की नाक कटवाई है। इस पर वह रोने लगी और यह प्रोनोटों की बात और मुकदमा लड़ने में डॉक्टर राय द्वारा प्रोत्साहन की कहानी बताने लगी।

"तब मैंने उसको कहा कि मुकदमे की बात तो नहीं कह सकता। हाँ, उसके और उसके बाल-बच्चों के खाने-पीने के लिए तो सहायता अब भी दे सकता हूँ।

"उसी दिन से मैं उसकी सहायता करने लगा हूँ। मैंने उसको बताया कि यदि मैं मुकदमा जीत गया, तब भी मैं उसके पति को एक अच्छा भाग सम्पत्ति में से दे दूँगा। इससे प्रभावित हो वह मुझको वे प्रोनोट, जो मियाद समाप्त हो जाने के कारण बदलने के लिए डॉक्टर राय से वापस आते थे, दिखाये, तो मैंने उनके फोटोग्राफ लेकर कोर्ट को भेज दिये।"

इसके पश्चात् सामलदास के बयान हुए। उसने बताया, "मेरी खस्ता हालत देख दिल्ली के एक कांग्रेसी नेता ने मेरे साथ सहानुभूति प्रकट करने के लिए, डॉक्टर राय के नाम पत्र देकर मुझको कलकत्ता भेज दिया। मेरी इच्छा थी कि मुझको, मेरे भाई से कहकर, भाई के कारोबार में सम्मिलित करवा दिया जाये। परन्तु डॉक्टर राय ने मेरी बात सुन कह दिया कि मैं पूर्ण सम्पत्ति के आधे का हकदार बन सकता हूँ। मैं लोभ में फँस गया। इस पर डॉक्टर राय ने मुकदमे की योजना बताई। मैंने कहा भी कि यह बात सत्य नहीं है, परन्तु डॉक्टर साहब कहते रहे कि कचहरी में झूठ सत्य और सत्य झूठ होता है।

"मुझको डॉक्टर राय की बात पर विश्वास हो गया, जब पहली अदालत में मेरी जीत हुई। उन दिनों डॉक्टर राय जब भी मुझको रुपये की आवश्यकता होती, मुझको दो हज़ार का प्रोनोट लिखकर अपनी पत्नी के हाथ भेजने को कह देता और उसके हाथ पाँच सौ रुपया भेज देता। यह तो बहुत पीछे मुझको पता चला कि डॉक्टर राय पाँच सौ रुपये के बदले में दो हज़ार के प्रोनोट से सन्तुष्ट न होकर, मेरी पत्नी से दुराचार भी करता था। इस समय मुकदमा सेशन कोर्ट में था और मुझको जीत जाने की आशा थी। मैं चुप रहा। सेशन कोर्ट से हारकर भाई ने हाईकोर्ट में अपील कर दी। उस समय भाई को मेरी पत्नी के चरित्र पर सन्देह हुआ तो वह उससे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिला और बहुत डाँट-फटकार के पश्चात् हमारे निर्वाह के लिए धन दे गया। इसके पश्चात् मेरी स्त्री ने डॉक्टर राय के पास जाने से इन्कार कर दिया।

"तब भी डॉक्टर राय ने हाईकोर्ट में मेरे पक्ष में मुकदमा लड़ा, परन्तु वहाँ वह जीत नहीं सका।

"मेरी पत्नी ने प्रोनोटों की कापी भाई को मेरे ज्ञान के बिना दिखाई थीं। वह पत्र भी, जो डॉक्टर राय ने मेरी स्त्री के उसके पास जाने के पश्चात् लिखा था, मुझसे चोरी-चोरी मेरे भाई को दिया। पूछने पर उसने बताया है कि वह डॉक्टर राय को उसकी दुष्टता का दंड दिलवाना चाहती है।"

दास ने उससे केवल यह पूछा, "तुमने दिवाले के लिए प्रार्थना-पत्र दिया है?"

"हाँ।"

"तुमने किस-किसका देना है?"

"मुख्य रूप में तो डॉक्टर राय का ही देना है। कई लाख के प्रोनोट हैं। पाँच हज़ार बनिये, बजाज और मालिक-मकान के हैं।"

अन्त में डॉक्टर राय के बयान हुए। डॉक्टर राय ने बताया, "मैंने सामलदास की आर्थिक सहायता की थी। यह ऋण नहीं था। प्रोनोट इसलिए लिखवाये थे, जिससे इस पर अंकुश रह सके और यह फिज़ूलखर्ची न कर सके।

"यह सहायता केवल कांग्रेस के कार्यकर्त्ता होने के कारण ही थी।"

परन्तु ट्रिबुनल का निर्णय डॉक्टर राय के विरुद्ध गया। उसका लायसेंस पाँच वर्ष के लिए ज़ब्त हो गया।

अगले दिन 'अंग्रेजी ब्यूरोक्रेसी का कांग्रेस पर घातक आघात' के शीर्षक से समाचार-पत्रों में मुक़दमे की बात छपी। उसमें निरंजनदास, सामलदास और मिस्टर विपिनविहारीदास के विरुद्ध विष-वमन किया गया।

: २ :

डॉक्टर राय और मिस्टर दास में ठन गयी। समाचार-पत्रों में चोर को शाह और चोर को पकड़ने वाले को आततायी लिखे जाने पर दास क्रोध से भर गया। इस पर भी वह पब्लिक के विवाद का विषय बनना नहीं चाहता था। उसने केवल ट्रिबुनल की कार्यवाही, छपने के लिए समाचार-पत्रों में भेज दी।

डॉक्टर राय इसी बात की आशंका कर रहा था और इसको रोकने की योजनाएँ बनाने में लगा था। उसने सामलदास को बुलाया और डरा-धमकाकर उससे एक बयान लिखवाने का यत्न किया। जब राय ने सामलदास को हस्ताक्षर करने को कहा तो उसने कह दिया, "मैं हस्ताक्षर कर दूँगा। परन्तु पहले वकील साहब से पूछ लूँ।"

"किस वकील से पूछना चाहते हो?"

"दास बाबू से।"

"वह तो बड़ा काइयाँ है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"पूछने तो दीजिये।"

डॉक्टर राय ने बहुत यत्न किया, परन्तु उसको सफलता नहीं मिली।

डॉक्टर राय के विषय में समाचार-पत्रों में लेख छपने के दिन मोहिनी सोने के पहले घर पहुँच गयी। दास अपने शयनागार में पहुँच रात के सोने के कपड़े पहन रहा था कि मोहिनी आ गयी।

"अभी आप सोये नहीं ?"

दास ने उत्तर देने के स्थान पूछ लिया, "भोजन करना है क्या ?"

"कर आयी हूँ।"

"कहाँ ?"

"आज कांग्रेस कमेटी के मन्त्री के घर दावत थी।"

"अच्छी बात है। अब जाकर सो जाओ। मैं आज बहुत थका हुआ हूँ। चार घण्टे कोर्ट में खड़े होकर बहस करनी पड़ी है।"

"आप इतनी मेहनत क्यों करते हैं ?"

"देश में अन्यायाचरण होते देख मुझसे रहा नहीं जाता। मैं कानून पढ़ा हूँ और एक सभ्य समाज में कानून को सुख का आधार मानता हूँ। जहाँ भी कानून भंग होता देखता हूँ, चाहे तो वह किसी राय जैसे धूर्त द्वारा हो और चाहे सरकार के उच्छृङ्खल अधिकारियों द्वारा, मैं कानून की रक्षा करने का यत्न करता हूँ।

"आज एक 'हैबियस कार्पस' की पटीशन के लिए कोर्ट में गया था। एक निर्धन दुकानदार को पुलिस के लोग पकड़कर ले गये थे। यह कलकत्ता में यत्र-तत्र होता रहता है। जब किसी थाने के पुलिस-अधिकारियों को किसी जलसे-जशन के लिये धन चाहिए तो पाँच-दस पुलिसमैन बाज़ार में भेज दिये जाते हैं। वे घूम-फिरकर फल बेचने वालों को पकड़कर थाने में ले आते हैं। वहाँ उनसे दस-दस रुपये प्राप्त कर उन्हें छोड़ देते हैं। पकड़े हुए लोग दस रुपये देकर छूट जाने पर भी अहोभाग्य मानते हैं और पुलिस-अधिकारियों का जशन हो जाता है।

"एक बिहारी विष्णुचन्द्र भी पकड़ा गया। उसके पास दस रुपये थे नहीं। पुलिस ने उसको निर्धन समझ हवालात में बन्द कर दिया। उसके विरुद्ध कोई आरोप तो था नहीं। उसको छोड़ देना चाहिए था, परन्तु पुलिस वालों ने इस लोभ से कि विष्णुचन्द्र का कोई सम्बन्धी उसको छुड़ाने के लिए आयेगा तो रुपये देगा ही, उसे मजिस्ट्रेट के सामने उपस्थित नहीं किया। परसों विष्णुचन्द्र की पत्नी उससे मिलने गयी तो विष्णुचन्द्र ने उसको कहा कि कहीं से दस रुपये लाकर दे, तो वह छूट सकेगा।

"विष्णुचन्द्र की पत्नी ने अपने पड़ोसी विमलानन्द को यह कथा बताई तो वह उसको मेरे पास ले आया। तुम समझ सकती हो कि मुझको तो आग लग गयी। मैंने हाईकोर्ट में पटीशन कर दी और प्रान्तीय सरकार को नोटिस दिला दिया। इस समय पुलिस ने उसका चालान कर रात के ग्यारह बजे मजिस्ट्रेट के सामने उपस्थित कर दिया। अगले दिन जब हाईकोर्ट में सरकारी वकील ने बताया कि विष्णुचन्द्र का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चालान होकर मजिस्ट्रेट से रिमांड ले ली गयी है तो मैंने एक घंटा की बहस के पश्चात् जजों की बेंच को इस बात पर तैयार किया कि सरकारी वकील से इस चालान के वक्त और तारीख के विषय में जिरह की जा सके।

"तदुपरान्त दो घंटे की जिरह में मैंने सरकारी वकील को कोर्ट को धोखा देने की साजिश को मानने पर विवश कर दिया। हाईकोर्ट से नोटिस जारी होने के पश्चात् रात के दस बजे चालान किया गया था। ग्यारह बजे मजिस्ट्रेट के घर पर, जब वह सोया हुआ था, उसको उठाकर रिमांड ली गयी थी और जिस अपराध में वह पकड़ा गया है, वह सरकार द्वारा कार्यवाहा करने का अपराध (कौगनिज़ेबल) नहीं है। उसके लिये पुलिस को कोई मुकदमा भी नहीं चलाना चाहिए। मुझको इस केस में दो घंटा बहस करनी पड़ी और जब विष्णुचन्द्र छूटा तो पुलिस के अधिकारियों के विरुद्ध भी कठोर सम्मति लिखी गयी।"

"क्या फीस मिली है आपको?"

"जो दस रुपये रिश्वत नहीं दे सकता था, वह फीस क्या देता? बस विमलानन्द का पाँव पकड़कर पति-पत्नी रोते रहे।"

मोहिनी गम्भीर विचार में पड़ी मुख देखती रह गयी। आज उसने फिर कहा, "तो मैं यहाँ सो जाऊँ?"

"मैं अभी नहीं चाहता।"

"क्यों?"

"तुम्हें सत्याग्रह में जाना है। मैं ऐसे अवसर पर किसी प्रकार की गड़बड़ नहीं चाहता।"

मोहिनी ने लालसा-भरी दृष्टि से अपने पति की ओर देखा तो दास उठकर सोने के कमरे से बाहर निकल ड्राइंग-रूम में जा बैठा। वह मन में निश्चय कर बैठा था कि यदि मोहिनी ने अधिक आग्रह किया तो वह इस तपस्या का कारण सविस्तार बता देगा।

मोहिनी कुछ समय तक अपने पति के शयनागार में भौचक्की हो खड़ी रही। पीछे वह धीरे-धीरे वहाँ से निकली और अपने सोने के कमरे में चली गयी। आज उसने भीतर से कमरा बन्द कर लिया।

दास ड्राइंग-रूम में बैठा विचार कर रहा था कि क्या उसने ठीक किया है? उसका मन बार-बार कहता था कि मोहिनी का इन दो रातों में उससे सहवास में रुचि प्रकट करना, उसे अपने सम्मोहन में लाकर डॉक्टर राय के किसी कार्य को सिद्ध करना है। वह मन में विचार करता था कि वह इतना मूर्ख नहीं कि अपनी पत्नी के सम्मोहन में फँस, कोई ऐसा कार्य करने के लिए तैयार हो जायेगा, जो नैतिकता से गिरा हो। परन्तु वह तो अपनी पत्नी का तिरस्कार इस कारण नहीं कर रहा था कि उसके सम्मोहन में फँस जाने का भय था। उसको तो मोहनसागर से कही बात का विश्वास अधिक और अधिक होता जाता था और यह तिरस्कार उस विश्वास से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्पन्न ग्लानि का परिणाम था।

यूँ तो उसके मन में कई बार यह विचार आया था कि वह मोहिनी को अपने मन के भाव बताकर सन्मार्ग पर आ जाने का अवसर दे, परन्तु वह विचार करता था कि अब तो वह जेल-यात्रा के लिए तैयार बैठी है। इस समय उसके मन में किसी प्रकार की हलचल मचाना ठीक नहीं रहेगा।

इसी प्रकार के विचारों में वह दो घण्टे-भर वहाँ बैठा रहा और तदनन्तर उठकर मोहिनी के शयनागार के दरवाज़े से कान लगा, उसको खर्राटें भरते सुन, अपने कमरे में जाकर सो रहा।

मोहिनी भी अपने पति के व्यवहार से अपने को अपमानित की गयी मानती थी। यद्यपि उसके मन में काम-तृप्ति की लालसा नहीं थी, इस पर भी अपने पति से तिरस्कृत हो वह अपने को आकर्षणविहीन हो गयी समझ, अपने मन में बहुत छोटी अनुभव करने लगी। अपने शयनागार में जा, द्वार भीतर से बन्द कर, कपड़े बदलकर वह अपने पलंग पर लेट गयी और अपने मन की इस अवस्था का विश्लेषण करने लगी।

बार-बार उसके मन में यह बात उठ रही थी, वह अपने व्यवहार से ऐसा प्रकट कर दे कि वह अपने पति के व्यवहार से सन्तुष्ट नहीं है। वह कोई ऐसी बात विचार नहीं सकी, जिससे वह अपनी नाराज़गी प्रकट कर सके। इसी विचार में वह सो गयी।

उसकी नींद प्रातः चार बजे ही खुल गयी। वह उठी और इस विषय में डॉक्टर राय से सम्मति लेने का निश्चय कर बैठी। उसको यह समझ आया कि वह अपने अपमानजनक रोष को प्रकट करे और फिर डॉक्टर राय से बात कर इस रोष को कहाँ और कैसे समाप्त करे, का निश्चय करे।

इतना निश्चय कर, वह शौचादि से निवृत हो, कपड़े पहन, अपना बाहर जाने के लिये सदा तैयार रहने वाला सूटकेस ले, घर से बाहर निकल पड़ी।

वह प्रायः कलकत्ता से बाहर अपने राजनीतिक कार्य के लिये आती-जाती रहती थी। अतः द्वार के चौकीदार को इसमें कोई अस्वाभाविक बात प्रतीत नहीं हुई। उसने मालकिन को अपना सूटकेस स्वयं उठाकर कोठी से निकलते देख कह दिया, "लाइये, मैं उठाकर छोड़ आऊँ।"

मोहिनी ने विचार किया और सूटकेस उसको पकड़ाकर, टैक्सी-स्टैंड की ओर चल पड़ी।

दास प्रातः छः बजे उठा। शौचादि से निवृत होते-होते सात बज गये। वह अपने कमरे से निकल अपने स्टडी-रूम में जाने लगा तो मोहिनी के शयनागार का द्वार खुला देख, उसके भीतर झाँककर देखने के लिये घूम पड़ा। मोहिनी वहाँ नहीं थी। वह बिना कुछ विचार किये भीतर गया तो उसको उसके पलंग पर एक लिफाफा पड़ा दिखाई दिया। दास का माथा ठनका। वह पहले भी उसको बताये बिना जाया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करती थी, परन्तु इस प्रकार पत्र रखकर कभी नहीं गयी थी। आज की विलक्षणता का रात की घटना से सम्बन्ध हो सकता है, ऐसा विचार कर उसने लिफाफा उठा लिया और उसमें से पत्र निकाल पढ़ा। केवल एक पंक्ति लिखी थी। उसने लिखा था—

"आई एम लीविंग। यू आर आईदरए ब्रूट और हैव ग्रोन अटरली इम्पोटेंट।"

इस लांछन को पढ़ तो वह, एक वकील की भाँति इसका विश्लेषण कर अर्थ समझने लगा। वह मन में विचार करता था, "क्या मैं सत्य ही जंगली हो गया हूँ ?"

उसने जेब से सिगरेट निकाला, लाईटर से जला एक कश खींचा और परि-स्थिति को स्मरण कर मन में निश्चय कर बैठा, 'दि बूट इज़ ऑन दि अदर लेग'। दोष तो उसका है। ब्रूट कोई है तो मोहिनी है। फिर वह विचार करने लगा कि क्या वह नपुंसक हो गया है ? इसका भी उसको विश्वास नहीं हुआ।

"वह कहाँ गयी होगी ? कदाचित् डॉक्टर राय के घर।" इतना विचारकर वह समझ गया कि वह सायंकाल तक लौट आयेगी।

सायंकाल जब वह कोर्ट से लौटा तो उसको पता चला कि उसकी पत्नी अभी तक नहीं लौटी। अब उसको कुछ चिन्ता लगने लगी। उसने टेलीफोन उठाया और डॉक्टर राय का नम्बर घुमा दिया। टेलीफोन पर बोलने वाला मोहनसागर था। मोहन को जब पता चला कि दास टेलीफोन कर रहा है तो उसने अपना नाम बता दिया, "दास बाबू ! मैं मोहनसागर बोल रहा हूँ।"

"अरे, तुम वहाँ क्या कर रहे हो ?"

"चाचा घर पर नहीं हैं। मैं किसी काम से यहाँ आया था कि टेलीफोन की घंटी बजती सुन यह कहने के लिये उठा लिया कि बैरिस्टर साहब घर पर नहीं हैं। बताइये, बैरिस्टर साहब से क्या काम है ?"

"मुझे बैरिस्टर साहब से कुछ काम नहीं। मैं तो अपनी पत्नी को ढूंढ़ रहा हूँ।"

"ओह ! वह प्रातः साढ़े पाँच बजे यहाँ आयी थी और डाक्टर साहब से कुछ देर बातचीत कर टैक्सी में कहीं चली गयी थी।"

"डॉक्टर साहब कहाँ हैं ?"

"अपने विषय में कोर्ट की कार्रवाई समाचार-पत्रों में पढ़ आगबबूला हो कहीं चले गये हैं। उनके साथ उसके कुकृत्यों का साथी आनन्द भी था।"

"अच्छी बात ! सुनाओ सेठ साहब का क्या हाल है ?"

"उन्होंने अपना कारोबार आरम्भ कर दिया है। काम चालू होने में कुछ समय तो लगेगा ही।"

"और तुम अब क्या करते हो ?"

"मैं दो कार्य कर रहा हूँ। एक तो सेठजी के यहाँ क्लर्की, दूसरा अपने चाचा पर जासूसी।"

दास हँस पड़ा। हँसकर उसने टेलीफोन रख दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

: ३ :

जब से डॉक्टर राय की व्यावसायिक नैतिकता (प्रोफेशनल ऐटिकेट) की जाँच के लिये ट्रिबुनल नियुक्त हुई थी, डॉक्टर राय अपने मित्रों और परिचितों में यह विख्यात कर रहा था कि सरकार विरोधी-संस्था में होने के कारण सरकार उसको बदनाम करने का यत्न कर रही है और मोहिनी का पति इस दुष्कार्य में सरकार की सहायता कर रहा है।

ट्रिबुनल के निर्णय के दूसरे ही दिन दो-तीन बँगला पत्रों में अपने संवाद-दाताओं की ओर से, 'कांग्रेस का कार्य करने से डॉक्टर राय पर आघात' के शीर्षक से लेख निकले। उनके उत्तर में मिस्टर दास ने कुछ अन्य समाचार-पत्रों में, ट्रिबुनल की जाँच की कार्रवाई और ट्रिबुनल का सविस्तार निर्णय छपवा दिया।

इससे डॉक्टर राय को एक बात और सूझी। उसी दिन प्रातःकाल वह अभी सो ही रहा था कि उसका द्वार खटखटाकर चौकीदार ने जगाया। डॉक्टर राय ने पूछा, "क्या है ?" चौकीदार ने बता दिया, "मोहिनी देवी मिलने आयी हैं।"

"आने दो।"

मोहिनी उसके शयनागार में जा रही थी कि मोहनसागर अपने कमरे से निकल शौचादि के लिये ऊपर की मंज़िल पर जा रहा था। उसने मोहिनी देवी को आते देखा, परन्तु इसमें कोई नवीनता न समझ, वह अपने काम पर चला गया।

मोहिनी डॉक्टर राय के कमरे में पहुँची तो कुर्सी पर बैठ, बोली, "मैं घर से भाग आयी हूँ।"

"क्यों ?"

"लड़ पड़ी हूँ।"

"आखिर हुआ क्या है ?"

इस पर मोहिनी ने रात की पूर्ण घटना सुना दी। तदुपरान्त उसने बताया कि वह रात को ही कहकर गयी थी कि अपने टोडी पति से दो-दो बातें करने जा रही है।"

"परन्तु मैंने तुमसे कहा था कि लड़ना नहीं।"

"मैं उस घर में रहना अपना अपमान समझने लगी हूँ।"

"तुम कुछ मूर्ख होती जाती हो मोहिनी ! मान-अपमान के शब्द छोटी बुद्धि वाले लोगों के लिये बने हैं। तुमने उसका अपमान किया और उसने तुम्हारा कर दिया। क्या तुम दोनों बराबर-बराबर नहीं हो गये ?"

'मैंने क्या अपमान किया है दास बाबू का ?"

"उसके अधिकार में मुझको जो भागीदार बना बैठी हो ?"

"परन्तु वह यह नहीं जानता।"

"उस जैसा युक्ति करने वाला व्यक्ति पूर्ण रूप से नहीं तो कुछ-कुछ तो अवश्य ही जान गया होगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"अब तो मैं उसको दो गाली लिखकर आ गयी हूँ।"

"तो यहाँ किसलिये आयी हो ?"

"आपके पास सदा के लिए रहने के लिये।"

"अर्थात् मेरी रही-सही मान-मर्यादा को भी मिट्टी में मिलाने के लिये ?"

इस पर मोहिनी मुख देखती रह गयी। वह विचार करती थी कि वह तो उससे राय करने आयी थी कि वह क्या करे ? उससे लड़ने के लिये नहीं। राय की इस अवहेलना का विचार न कर वह पूछने लगी, "तो आप बताइये कि मैं क्या करूँ ?"

"देखो मोहिनी ! इस सामलदास के मुकदमे में हारने के कारण तथा जेल से छूटने के पश्चात् कोई काम आरम्भ न करने तथा लायसेंस रद्द हो जाने के कारण मैं सर्वथा दिवालिया हो गया हूँ। मैं तो यह आशा लगाये हुए था कि आगामी जेल-यात्रा तक तो तुम से कुछ उधार माँगकर निर्वाह किया जायेगा। अब तुमने वह स्रोत भी, जहाँ से हम दोनों का काम चलने वाला था, बन्द कर दिया है।

"तुम ही बताओ इस परिस्थिति में मैं क्या बता सकता हूँ ? तुमने मेरी सब 'प्लैन' ही बिगाड़ दी है।

"मैं तुमको अपने घर नहीं रख सकता। ऐसा करने से भारी बदनामी होगी। पहले ही जो बदनामी हुई है, उसको मिटाने के लिये तो अभी सफल हुआ नहीं कि तुमने यह नवीन झंझट उत्पन्न कर दिया है।"

"उस चिट्ठी को लिखने के पश्चात् जो मैं पलंग पर रख आयी हूँ, इस प्रकार वापस जाना तो ठीक नहीं। मैं किसी भी मूल्य की नहीं रह जाऊँगी। अतः इस झगड़े से निकलने की कोई सूरत बताइये।"

डॉक्टर राय को एक बात सूझी। उसने पूछ लिया, "कुछ रुपये भी लेकर आयी हो अथवा खाली हाथ ?"

"पाँच-छः सौ तो पर्स में हैं।"

"गनीमत है। कुछ तो समझदारी की बात की है। देखो, अभी यहाँ से सियालदा स्टेशन पर चली जाओ। दार्जिलिंग एक्सप्रेस के छूटने का समय हो गया है। उसमें सीधी दार्जिलिंग चली जाओ और मैं तुम्हारे, पुनः अपने पति के घर में प्रवेश का प्रबन्ध कर दूंगा। तुम ठहरने का पता लिखना।"

मोहिनी ने फिर कहा, "मैं तो आपके पास, सबके सामने रहने के लिये आयी थी।"

"मेरे पास ही क्यों ?"

"तो आप नहीं जानते।"

"वही बर्दवान वाली रात की बात कर रही हो न ?"

"उस एक रात की ही बात क्यों कहते हो ? विश्व-भारती में उस प्रथम भेंट से लेकर कितनी बार आपने मुझको केवल आपकी ही होकर रहने की बात कही है ?"

"वैसा तो मैं अनेकों को कह चुका हूँ। अब तुम ही बताओ किस-किसको इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घर में स्थान दूँगा ?

"मोहिनी ! तुम बहुत ही प्यारी लड़की हो। परन्तु आज की बात से तुम कुछ मूर्ख ही सिद्ध हुई हो।"

मोहिनी गर्दन लटकाये हुए सूटकेस उठाकर कमरे से निकल, घर से बाहर को चल पड़ी। इस समय पुनः मोहन अपने कमरे की ओर जाता हुआ मिला।

मोहिनी ने मकान के नीचे से टैक्सी ली और सियालदा रेल के स्टेशन की ओर चल पड़ी।

दार्जिलिंग में पहुँच न्यू कार्लटन होटल में एक कमरा ले रहने लगी। रेल में बैठी हुई और होटल में पहुँचकर भी वह डॉक्टर राय के व्यवहार के विषय में ही विचार कर रही थी। यद्यपि वह अपने पति में संतुष्ट नहीं थी, परन्तु वह डॉक्टर राम के व्यवहार से तो और भी असंतुष्ट थी।

उसको दो बातें बहुत खटकी थीं। एक तो उसने कहा था कि वह उससे रुपया उधार माँग कर निर्वाह करने का विचार रखता है और उसने तो आय के स्रोत को ही बन्द करने का यत्न किया है।

दूसरी बात उसने यह कही थी कि बीसियों लड़कियों से उसने वचन दिये हैं, वह किस-किसको लाकर अपने घर पर रख सकता है ?

इन दोनों बातों को सुन उसकी आँखों से पर्दा हट गया था। वह समझने लगी थी कि डॉक्टर राय तो सर्वथा गुंडा प्रतीत हुआ है। वह बेईमान और झूठा है।

इस समय उसको अपने पति की याद आ गयी। उसको उससे सर्वथा पृथक् रहते हुए डेढ़ वर्ष से ऊपर हो गया था। यदि डॉक्टर राय की यह बात मान ली जाये कि योग्य वकील होने के नाते वह उसके डॉक्टर राय से सम्बन्ध के विषय में जान गया है, तब तो उसका व्यवहार डॉक्टर राय से सैकड़ों गुणा अधिक सभ्य और नम्र था। उसने उसको एक भी कटु वचन नहीं कहा था।

मोहिनी के मन में परिवर्तन आ रहा था। इस पर भी वह अब इतनी दूर तक चली आयी थी कि वहाँ से बिना कोई बहाना किये लौटना असम्भव नहीं तो कठिन अवश्य था।

उसने दार्जिलिंग से डॉक्टर राय को पत्र लिखा, "नम्बर दस के कमरे में, न्यू कार्लटन होटल में ठहरी हूँ। कलकत्ता के समाचार भेजना।"

इसके उत्तर में डॉक्टर राय ने उसको लिखा—

"डियर डार्लिंग !

"श्रीमान् दास बाबू का टेलीफोन सायंकाल आया था। उन्होंने तुम्हारे विषय में पूछा था। मैंने अपनी अनभिज्ञता प्रकट की है। वे बताते थे कि उनको तुम्हारा मेरे घर साढ़े पाँच बजे आना पता चला है। आगे पता नहीं चलता। इस कारण उनको भारी सन्देह हो रहा है कि मैंने तुम्हें कहीं छुपा रखा है।

"मैंने उनकी सब बातों को हँसी में उड़ा दिया। यूँ तो वह भी हँसते रहे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उनके मुख से यह प्रकट नहीं होता था कि उनको तुम्हारे लापता हो जाने का कुछ अधिक शोक है।

"इस पर भी मैं एक हारे हुए प्रेमी के मनोभावों को समझता हूँ। मैं आशा करता हूँ कि वह मुझ पर किसी प्रकार की चोट करेगा। मैंने अपनी रक्षा का अच्छा प्रबन्ध कर रखा है।

"यह पत्र तुमको सूचनार्थ लिख दिया है जिससे कि तुम सतर्क रहो।

"इस पत्र को जला देना। यह अत्यावश्यक है।"

: ४ :

विमलानन्द मिस्टर दास के यहाँ मुन्शी का काम करता था। वह दास का दूर का सम्बन्धी भी था। मोहिनी के घर से जाने के अगले दिन विमलानन्द पत्रिका का ताज़ा पर्चा हाथ में लिये हुए दास के स्टडी-रूम में आया और दास का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने के लिये खाँसने लगा।

"क्या है?" दास ने पुस्तक पर से ध्यान हटा कर उसकी ओर देखते हुए पूछा।

"यह पढ़ लीजिये।"

दास ने समाचार पत्र लेकर पढ़ डाला। लगभग दो कालम में संवाददाता का वक्तव्य था। ऊपर लिखा था—'कलकत्ता के एक टोडी वकील की बीबी अपने पति से विचार-भेद के कारण घर छोड़ गयी।"

नीचे मोहिनी का नाम लिखे बिना उसके और उसके पति में राजनीतिक विषयों पर मतभेद का वृत्तान्त लिखा था। दास का भी नाम लिखे बिना, उसको कलकत्ता बार का एक प्रमुख वकील जिसने सरकार की ओर से कांग्रेसियों पर मुक़दमे करने का काम लिया हुआ है, लिखा था। दोनों की विचार-भेद के कारण लड़ाई और पत्नी का घर छोड़ लापता हो जाने का वृत्तान्त था।

दास ने पूर्ण वक्तव्य पढ़कर विमलानन्द को समाचार पत्र वापस कर दिया। इसके पश्चात् वह पुनः पुस्तक पढ़ने लगा तो विमलानन्द ने कह दिया, "दादा! यह तो हद हो गयी है?"

"हाँ, परन्तु विमलानन्द! मैं इसको अपने किये से सीमा के पार ले जाना नहीं चाहता। सीमा तक ही रहे तो ठीक है।"

"परन्तु यदि इसको रोकियेगा नहीं तो यह सीमा पार तो जायेगा ही। यह बात यहीं पर रह नहीं सकेगी।"

"हो सकता है। इस पर भी मैं इसको और दूर तक ले जाने का विचार नहीं रखता। साथ ही मैं कर भी क्या सकता हूँ?"

"समाचार-पत्र पर 'डिफामेशन' का दावा कर सकते हैं।"

"इससे तो और भी मान हानि होगी। मैं ऐसा नहीं करूँगा।"

विमलानन्द ने पूछ लिया, "इस पर भी पता तो करना ही चाहिए कि वह कहाँ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है ? मैं समझता हूँ कि वह डॉक्टर राय के घर होगी । पत्रिका का संवाददाता डॉक्टर राय का मित्र है ।"

"मुझको पता है कि वह वहाँ नहीं है । मैं कल वहाँ गया भी था । उसके वहाँ न होने की सूचना एक अन्य स्रोत से भी मिली है ।"

"तो फिर ?"

"कुछ नहीं । अब तुम जाओ । आज वे ढाके आने वाले हैं । उनके आने पर मुझको सूचना देना ।"

विमलानन्द भीगी बिल्ली की भाँति बाहर निकल गया । दास ने मन में निश्चय कर लिया था कि वह स्वयं मोहिनी के पीछे नहीं भागेगा । हाँ, यदि वह लौटकर आई तो उस समय की परिस्थिति के अनुसार आपने व्यवहार का निश्चय कर लेगा ।

ठीक नौ बजे विमलानन्द फिर आया और बोला, "मोहनसागर राय टेलीफोन पर बात करना चाहता है ।" दास टेलीफोन सुनने के लिए कार्यालय में गया । मोहन ने कहा, "दास बाबू !"

"हाँ ।"

"आप कल मोहिनी के विषय में पूछ रहे थे न ? मैंने आपको बता देना उचित समझा है कि वह दार्जिलिंग गयी है ।"

"मोहन ! मैं उसका पता जानने में रुचि नहीं रखता ।"

"आप ठीक ही कर रहे हैं । वह एक-दो दिन में पकड़ी जायेगी । मैं आज पुलिस में, अपने कमरे में झगड़े के विषय में गया था । वहाँ खुफिया पुलिस के इन्स्पेक्टर जनरल के सैक्रेटरी से मेरी जान-पहिचान है और वह बता रहा था कि दो व्यक्तियों के वारण्ट निकल चुके हैं । एक डॉक्टर राय और दूसरी मोहिनी देवी । इस पर मैंने कहा, 'मोहिनी देवी तो लापता है ।' मैंने उसको पत्रिका दिखाई । वह बोला, 'हम मोहिनी देवी का और डॉक्टर राय का सुराग पाँच-छः दिन से रख रहे हैं । हमको विदित है कि वह दार्जिलिंग में न्यू कार्लटन होटल में ठहरी हुई है ।'

"धन्यवाद मोहन ! परन्तु मैं सत्य कहता हूँ कि मुझको उसका पता जानने में कुछ भी रुचि नहीं है ।"

"यदि आपने समाचार-पत्र पर केस करना हो तो मैं इसमें आपकी सहायता कर सकता हूँ ।"

"नहीं, धन्यवाद ।"

"अच्छी बात है । आपने मेरे चाचा को सीधा करने में मेरी बहुत सहायता की है । इसके लिए मैं आपका आभारी हूँ ।"

दास ने टेलीफोन बन्द कर दिया । इस समय ढाके से मिलने वाले लोग आ गये थे । दास ने उनको अपने स्टडी-रूम में बुला लिया ।

आने वालों में एक विधवा युवती थी और एक लगभग उसी आयु का युवक था । ये अपने मुकदमे के कागज़ात एक सप्ताह हुआ, दे गये थे । दास ने उस कागज़ात

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को देखकर ही इसकी वकालत करने का निर्णय करना था। अपना निर्णय बताने के लिए उसने इनको आज का समय दिया हुआ था। जब वे आकर बैठ गये तो दास ने कहा, "यह तो मुझको समझ आया है कि सैशन-कोर्ट में यह मुकदमा भली-भाँति चलाया नहीं गया। इस पर भी इसमें आपको जिताने के लिए पर्याप्त मसाला है।"

दास बाबू के इस कथन को सुन उस स्त्री ने कहा, "तो आप यह केस लेंगे ?"

"हाँ, परन्तु एक काम करना चाहता हूँ। हाईकोर्ट में एक प्रार्थना इस बात की करना चाहता हूँ कि इस केस को वापस भेज दिया जाये, जिससे गवाहों पर पुनः जिरह की जा सके।

"इसके लिए मुझको उन गवाहों से बहुत-सी बातें अपने भेदिये भेजकर पता करनी होंगी। अतः दो हज़ार रुपये तो इस प्रकार के खर्चा के लिये चाहिए।"

"यह हम आपको दे देंगे।"

"तो यह रकम मुन्शी विमलानन्द के पास जमा करा जाइये। एक मास के पश्चात् पुनः आइयेगा। तब मैं हाईकोर्ट में यह प्रार्थना आप द्वारा करवा दूँगा।"

यह मुकदमा एक ज़मींदारी के विषय में था। पन्द्रह-बीस लाख वार्षिक आय की ज़मींदारी थी। बीस वर्ष पूर्व ज़मींदार माधोदास की मृत्यु हो गयी कही जाती थी। उसकी मृत्यु के पश्चात् उसकी पत्नी मालिक बन गयी। अब बीस वर्ष व्यतीत हो जाने पर एक व्यक्ति अपने-आपको ज़मींदार घोषित कर, दावा कर बैठा था। यह केवल धन और भूमि का ही प्रश्न नहीं था। वह तो अपने को मालकिन का स्वामी भी घोषित करता था। ज़मींदारी में से कुछ व्यक्ति ऐसे मिल गये थे, जिन्होंने उसका ज़मींदार होना पहचान लिया था। मृत ज़मींदार की माँ ने भी उस व्यक्ति को अपना पुत्र स्वीकार किया था।

मुकदमा सेशन कोर्ट में उपस्थित हुआ था, परन्तु दास बाबू का विचार था कि दावेदार के साक्षियों पर जिरह पूरी तौर पर नहीं की गयी थी। इसी कारण उनकी साक्षी में छिद्र रह गये थे और इन छिद्रों के कारण मुकदमा वादी जीत गया था। प्रति-वादी, ज़मींदार की विधवा पत्नी ने हाईकोर्ट में अपील की और उस अपील की जीत के लिए दास की सेवाएँ माँगी गई थीं।

दास ने विमलानन्द को ज़मींदारी पर भेज दिया और उसको कहा कि उसे साधना देवी की नौकरानियों को ढूँढ़ना चाहिए, जो इसके चरित्र के विषय में साक्षी कर सकें। साधना की सास के विषय में भी जानकारी करनी चाहिए। क्या उसका साधना के विरुद्ध होने में कुछ कारण है ? साथ ही उसको माधोदास के गुरु गरीबदास का पता करना चाहिए। माधोदास के स्वभाव, शिक्षा-दीक्षा तथा उसके रहन-सहन के विषय में पूरी जानकारी लाने का यत्न करना होगा।

विमलानन्द गया और पच्चीस दिन तक वहाँ रहकर लौटा। उसने अपना पूर्ण वक्तव्य लिखकर दिया।

उसने बताया, "मैं बिहार के 'सर्चलाइट समाचार' पत्र के संवाददाता के रूप

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में वहाँ गया था। वहाँ हरीन्द्र पांडे के मन्दिर में जा पहुँचा। पहले तो पांडेजी महाराज मुझको मुख नहीं लगाते थे, परन्तु जब उनको पता चला कि मैं एक विख्यात समाचार-पत्र की ओर से पूर्ण वृत्तान्त जानने के लिए आया हूँ तो मन्दिर में एक सुसज्जित कमरा मुझको दे दिया। मेरे खाने के लिए हलुवा, पूरी और मोहन भोग इत्यादि आने लगे।

"जिस दिन मैं वहाँ पहुँचा, माधोदास कलकत्ता आया हुआ था। वह दो दिन के पश्चात् आया तो पुजारी हरीन्द्र ने मेरा परिचय कराया। माधोदास महा पाजी व्यक्ति है। वह नित्य मद्य एवं वेश्या का सेवन करता है। मेरे साथ तो उसने बहुत ही अच्छा व्यवहार किया था। वास्तव में यह सब एक योजना के अनुसार था। समाचार-पत्रों में इस मुकदमे की धूम मचानी उसकी योजनानुसार ही है।

"एक यहाँ पर वकील हैं। नाम है जीवनकान्त। वे ही वहाँ की सब योजना को चला रहे हैं।

"जमींदार विद्यानन्द ने दो विवाह किये थे। एक लक्ष्मी देवी से। यह अभी जीवित है। दूसरी पत्नी थी चन्द्रकला। लक्ष्मी की कोई सन्तान नहीं हुई, तब चन्द्रकला से विवाह हुआ। चन्द्रकला से दो पुत्र हुए। इन पुत्रों के होते ही लक्ष्मी अपने पति का घर छोड़कर पृथक् हो गयी। उसके पृथक् होते ही विद्यानन्द का देहान्त हो गया। कहते हैं उसको हैज़ा हुआ था। इसमें भी सन्देह करने वाले वहाँ हैं। चन्द्रकला अपने पति के मरने पर स्पष्ट रूप में कहती थी कि लक्ष्मी के भाई ने उसके पति को विष दिया है। उस समय डॉक्टर ने भी यह प्रमाण-पत्र दे दिया था कि उसका देहान्त हैज़े की बीमारी से हुआ था।

"चन्द्रकला के जीवन-काल तक लक्ष्मी को उनके घर में प्रवेश नहीं मिला। पति के देहान्त के समय चन्द्रकला के लड़कों की आयु पाँच वर्ष और तीन वर्ष थी। जब लड़का कृष्णमोहन ग्यारह वर्ष का हुआ तो चन्द्रकला ने अपने निर्धन सम्बन्धियों में से एक कन्या से उसका विवाह कर दिया। यह साधना देवी थीं। विवाह के दो सप्ताह के भीतर कृष्ण को ज्वर आया और ढाका से एक डॉक्टर उसकी चिकित्सा के लिए बुलाया गया। ज्यूँ-ज्यूँ डॉक्टर चिकित्सा करता गया, कृष्णमोहन अचेत होता गया। तीन दिन की चिकित्सा में उसका देहान्त हो गया।

"कृष्णमोहन के संस्कार के समय विद्यानन्द के सम्बन्धी ही साथ थे। जब चिता जलने लगी तो बहुत वेग की आँधी और वर्षा आई। साथ गये लोग कुछ दूर एक पेड़ के नीचे खड़े हो गये। वर्षा होते-होते रात हो गयी। जब वर्षा थमी तो संस्कार किया गया।

"कुछ लोगों का कहना है कि संस्कार करते समय शव चिता पर नहीं था। दूसरे लोगों का कहना है कि शव था और वह जल गया था। बाबा माधोदास का कहना है कि वर्षा के कारण उसको चेतनता तो हुई, परन्तु उसकी स्मृति नहीं लौटी। वह चिता पर से उठ भाग गया था।

"माधोदास का मस्तिष्क मथुरा में जाकर ठीक हुआ। माधोदास के गुरु गरीब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दास तीर्थयात्रा पर निकले हुए थे । उनको माधोदास पागलों की अवस्था में उसी गाँव में मिला था । वे उसको अपने साथ मथुरा ले आये । मथुरा में जाकर माधोदास का पागलपन तो गया, परन्तु स्मृति नहीं लौटी ।

"कृष्णमोहन की मृत्यु के पश्चात् राधेमोहन, चन्द्रकला के दूसरे लड़के के विवाह का प्रबन्ध होने लगा । उस समय चन्द्रकला का देहान्त हो गया । यह कहा जाता है कि इस मृत्यु में लक्ष्मी का हाथ था । अब राधेमोहन और कृष्णमोहन की विधवा पत्नी पर अधिकार लक्ष्मी का हो गया । वह पुनः जमींदार की हवेली में आकर रहने लगी । ऐसा प्रतीत होता है कि राधेमोहन और साधना देवी की लक्ष्मी की आज्ञा पालन में तत्परता के कारण लक्ष्मी के मन में उनके प्रति वात्सल्यता जाग पड़ी ।

"जब राधेमोहन का विवाह हो गया तो लक्ष्मी ने साधना की हत्या का यत्न कराया । राधेमोहन की पत्नी सुनलिनी लक्ष्मी के भाई की लड़की है । राधेमोहन को अपने माता-पिता एवं भाई के देहान्त की कथा विदित थी । इस कारण वह सतर्क था । सुनलिनी को यह कहा गया कि साधनादेवी के भोजन में एक औषधि मिला दे, परन्तु भूल से वह औषधियुक्त भोजन सुनलिनी को ही मिल गया । वह जब बीमार हुई तो लक्ष्मी ने तुरन्त डॉक्टर को बुलाया और सुनलिनी को बचा लिया गया । सुनलिनी बच गयी, परन्तु उसने उस औषधि की बात अपने पति को बता दी ।

"इस पर राधेमोहन ने लक्ष्मी को अपने घर से निकाल दिया । इसके उपरान्त लक्ष्मी यह विख्यात करने लगी कि राधेमोहन का साधना से अनुचित सम्बन्ध है । परन्तु सुनलिनी का कहना है कि लक्ष्मी मिथ्या आरोप लगा रही है ।

"जमींदार के परिवार की यह परिस्थिति थी, जब माधोदास घूमता हुआ वहाँ आ पहुँचा । वह हरीन्द्र पाण्डे के मन्दिर में आकर ठहरा ।

"सायंकाल जब माधोदास चरस का दम लगाने लगा तो हरीन्द्र पाण्डे भी वहाँ आ बैठा । माधोद्रास ने चिलम पाण्डे के हाथ में दे दी । पाण्डे ने दम लगाकर पूछ लिया, 'बाबा ! कहाँ के रहने वाले हो ?'

'गुरु महाराज मथुरा में रहते हैं ।'

'परन्तु तुम तो एक बंगाली युवक प्रतीत होते हो ?'

"हाँ, आज से बीस वर्ष पूर्व गुरु महाराज तीर्थ-यात्रा करते हुए इसी ओर आये थे कि मैं उनको अर्ध चेतनावस्था में मिल गया । वे मुझको अपने साथ ले गये । गुरु महाराज का कहना है कि मैं पागल था । मेरी चिकित्सा की गयी तो मैं ठीक हो गया । इस पर भी मुझको अपने बचपन की स्मृति नहीं है । कुछ स्वप्नवत् इतना ही समझ में आता है कि मैं एक बहुत बड़े मकान में रहता था । मेरी एक सुन्दर बहुत छोटी-सी बहू थी । बस और कुछ नहीं ।'

"जब माधोदास यह कथा सुन रहा था, हरीन्द्र पाण्डे चरस के दम पर-दम लगा रहा था ।

"माधोदास की कथा सुन हरीन्द्र ने चुटकी बजाई और माधोदास से कहा,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'बाबा ! यदि मैं तुमको तुम्हारी बीबी और जागीर दिलवा दूँ तो मुझको क्या दोगे ?'

'जो कहो।'

'सवा लाख रुपया।'

'मंजूर है।'

"बस षड्यन्त्र बनने लगा। इस षड्यन्त्र में जीवनकान्त वकील का भारी हाथ है। वह इस समय पाँच सौ रुपया मासिक वेतन उन मारवाड़ियों से पाता है जो इस मुकदमे के लिए माधोदास को धन दे रहे हैं।

"साधना देवी की ओर से ढाका के दो वकील मुकदमा लड़ रहे थे। एक हरिमोहन चटर्जी और फरीदुलहक। दोनों वकील जीवनकान्त की बैठक में आते-जाते हैं। कुछ ऐसा प्रतीत होता है कि उनको कुछ घूस देकर मुकदमा ढीला कराया गया है।'

इस वक्तव्य के अन्त में विमलानन्द ने एक सूची उन गवाहों की दी, जो बुलाये जाने चाहिए थे, परन्तु नहीं बुलाये गये। दास बाबू ने भी एक ऐसी सूची तैयार की थी, जिन गवाहों पर भली-भाँति जिरह नहीं हुई थी।

: ५ :

दास बाबू ने एक प्रार्थना-पत्र तैयार किया। उसमें यह माँग की गयी कि अमुक मुकदमे की अपील की सुनवाई से पहले इस मुकदमे में त्रुटियों की पूर्ति के लिए पुनः नीचे की कोर्ट में इसको भेजा जाये। दास का स्पष्ट कथन था कि वकीलों के आलस्य के कारण यह मुकदमा पूर्ण नहीं हुआ। अतः या तो हाईकोर्ट अपनी 'ओरिजिनल साइज' पर इस मुकदमे में रह गयी साक्षियों और प्रमाणों को ले, अन्यथा इसको पुनः सेशन कोर्ट में वापस भेजकर इसमें त्रुटियों की पूर्ति कराए।

इस प्रार्थना में दास ने स्पष्ट लिखा कि लक्ष्मी देवी के पति के देहान्त तथा चन्द्र-कान्ता देवी के देहान्त और फिर सुनलिनी द्वारा साधना देवी की हत्या के प्रयत्न पर माननीय सेशन जज ने प्रकाश डालने की स्वीकृति नहीं दी। साथ ही लिखा कि प्रार्थी का कहना है कि लक्ष्मी देवी के सत्य चरित्र के प्रकट होने से उसके इस मुकदमे में साधना देवी के विरुद्ध साक्षी देने का रहस्योद्घाटन हो जायेगा।

इसी प्रकार पुजारी हरीन्द्र पाण्डे के चरित्र के विषय में साक्षियों को कोर्ट में बुलाने से इन्कार कर दिया गया था। हरीन्द्र पाण्डे के चरित्र का सत्य चरित्र 'रिकार्ड' (लिखित) में आ जाने से उसकी साक्षी का मूल्य का पता चल जायेगा। साथ ही उसके, इस मुकदमे में विशेष रुचि लेने में उसके स्वार्थ का पता भी चल जाता।

इसी प्रकार दास ने इतने उदाहरण दिये कि हाईकोर्ट ने यह घोषित कर दिया कि मुकदमा अधूरा रह गया है। अतः पुनः सुनवाई के लिए सेशन कोर्ट ढाका में भेज दिया जाये।

ज्यूँ ही यह आदेश हाईकोर्ट ने दिया कि दास को स्वयं ढाका जाकर मुकदमे को चलाना आवश्यक हो गया। उन्होंने अपने सब काम कलकत्ते में समाप्त कर दिये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और ढाका जाने को तैयार हो गया।

जिस दिन रात की गाड़ी से दास बाबू ढाका जाने वाले थे, उसी दिन मध्याह्न के समय एक मारवाड़ी सज्जन ढाका के वकील जीवनकान्त के साथ वहाँ आ पहुँचा।

दास ने उनको स्पष्ट कह दिया, "मैं डेढ़ मास के लिए कोई भी मुकदमा नहीं ले सकता।"

"क्यों ?" जीवनकान्त ने साधना देवी के मुकदमे से अनभिज्ञता प्रकट करते हुए पूछ लिया।

"मैं वहाँ सेशन कोर्ट में एक मुकदमा लड़ने जा रहा हूँ। मेरी प्रार्थना पर सेशन कोर्ट ने इस मुकदमे को लगातार एक मास तक लेने का आश्वासन दिया है। अत: मैं एक मास लिये 'बुक' (नियुक्त) हो चुका हूँ।"

जीवनकान्त ने कहा, "इससे तो आपको बहुत हानि होगी ?"

"मैं ऐसा नहीं समझता।"

"क्या मिल रहा है आपको ?"

"यह तय नहीं हुआ। इस पर भी मुझको यह कहा गया है कि मेरी फीस मिल जायेगी।"

"आप क्या फीस लेते हैं ?"

"दो हज़ार रुपया प्रतिदिन के हिसाब से।"

"तो यह साठ हज़ार रुपया आपको कौन देगा ?"

"मुझको विश्वास है कि मिल जायेगा।"

"वह मुकदमा आप जीत नहीं सकेंगे।"

"आप क्या जानते हैं, उस मुकदमे के विषय में ?"

"मैं बहुत कुछ जानता हूँ। पूर्ण गाँव-भर ने माधोदास को कृष्णमोहन ही बताया है।"

"आपका शुभ नाम क्या है ?"

"मुझको जीवनकान्त कहते हैं। मैं ढाका में प्रैक्टिस करता हूँ।"

दास को विमलानन्द की रिपोर्ट में जीवनकान्त की बात स्मरण हो आई। इससे सतर्क हो उसने पूछ लिया, "आपको क्या काम है मुझसे ?"

"ये सेठजी का हाईकोर्ट में एक मुकदमा है। तीन-चार पेशी तो होंगी। इन्कम-टैक्स कमिश्नर के फैसले पर अपील है।"

"एक तो मैं इन्कमटैक्स के मुकदमे करता नहीं। दूसरा, मैंने साधना देवी का पहले से मुकदमा ले लिया है।"

इस पर वह सेठ बोला, "हम इन्कमटैक्स के एक वकील को कर रहे हैं। इस पर भी कोई अच्छी बहस करने वाला वकील साथ होना चाहिए। आप यदि इस कार्य को लें तो हम आपको बीस हज़ार तक देंगे।"

"मैंने साधना देवी का मुकदमा ले लिया है। मैं अब उसको छोड़ नहीं सकता।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"अच्छा एक बात करिये। हम आपको साठ हज़ार रुपया देंगे यदि आप उस मुक़दमे को छोड़ देंगे।"

"आपकी इसमें क्या रुचि है?"

इस पर जीवनकान्त ने कह दिया, "हमारी रुचि तो उस इन्कमटैक्स के मुक़दमे में है। इतना कुछ हम उसी के लिये देना चाहते हैं।"

दास समझ गया कि यह उसको मुकदमा छोड़ने के लिये रिश्वत दी जा रही है। जीवनकान्त के विषय में वह पहले ही जानता था। उसने विचार किया कि वे सीधे रूप में प्रस्ताव रखें तो वह उनको डांटे। जीवनकान्त बहुत ही चतुर आदमी था। अतः दास ने बात समाप्त करने के लिये उठते हुए कहा, "मुझको इसके लिये खेद है कि मैं आपकी सेवा नहीं कर सकता। मैंने रात को ही ढाका जाना है। इस कारण मुझको बहुत काम है। बैठने का भी अवकाश नहीं।"

विवश जीवनकान्त और उसके साथ आया हुआ सेठ उठ खड़े हुए। एकाएक जीवनकान्त दास को एक ओर ले गया। उसने कहा, "तनिक इधर आइये, मैं आपसे एक निवेदन करना चाहता हूँ।"

एक तरफ ले जाकर जीवनकान्त ने कहा, "इन सेठजी का करोड़ों रुपये का व्यापार है। आप इनके प्रस्ताव को मान जाइये। मालामाल हो जायेंगे।

"आपको कुछ अधिक करना भी नहीं होगा। केवल गैर-हाज़िर रहना होगा। शेष हम स्थानीय वकीलों से करा लेंगे।"

"जीवनकान्त! तुमको समझ लेना चाहिए कि मैंने डॉक्टर राय जैसे योग्य वकील का लायसेंस रद्द करा दिया है। कहीं ऐसा न हो कि तुमको भी पीछे पछताना पड़े। अब तुम सीधे यहाँ से चले जाओ, अन्यथा तुम दोनों को पुलिस के हवाले करा दूंगा।"

जीवनकान्त का साहस नहीं हुआ कि एक क्षण के लिये भी वहाँ खड़ा रह सके।

दास ढाका पहुँचा तो उसने विमलानन्द को पृथक् रहकर 'सर्च लाइट' का संवाददाता बन, विरोधी पक्ष की बातों को जानने के लिये कार्य करने की स्वीकृति दे दी। वह केवल रात के समय दास से मिलता और विरोधी पक्ष की सब बातें बता देता। साथ ही वह उन साक्षियों को दास बाबू से मिलने और उसके बयान तैयार करने में सहायता करता।

पैंतालीस पेशियाँ हुईं। आठ सप्ताह तक लगातार मुकदमा चलता रहा। सेशन जज ने पूर्ण मुकदमे की फाइल, बिना टीका-टिप्पणी के हाईकोर्ट में भेज दी।

हाईकोर्ट में बहस हुई और माधोदास को धोखा देने वाला घोषित कर दिया गया।

इसके उपरान्त हाईकोर्ट ने इस मुकदमे की प्रिवि-कौंसिल में अपील की जाने की स्वीकृति भी नहीं दी। माधोदास ने सीधी प्रिवि-कौंसिल के सामने अपील करने की प्रार्थना कर दी। यह प्रार्थना भी रद्द हो गयी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस प्रकार आठ मास के परिश्रम से साधना देवी को पुनः विधवा घोषित किया गया और बाबा माधोदास को शुद्ध छलना।

साधना देवी ने जमींदारी पर अधिकार पाते ही डेढ़ लाख रुपया दास बाबू को दे दिया। यह फीस के प्रतिकार में था। इसके अतिरिक्त दास की धूम पूर्ण भारत-भर में फैल गयी। वह चोटी के वकीलों में गिना जाने लगा।

: ६ :

गांधीजी ने वर्किंग कमेटी की मीटिंग बम्बई में बुलाई। उसमें जाते हुए पंडित जवाहरलाल तो मार्ग में ही पकड़ लिये गए। वर्किंग कमेटी ने यह निश्चय किया कि हिन्दुस्तान के वायसराय से गांधीजी भेंट करें। यदि उन विषयों पर, जिनको बताने के लिए गांधीजी भेंट कर रहे हैं, वायसराय गांधीजी को संतुष्ट न कर सके तो उसी समय से सत्याग्रह आरम्भ कर दिया जाये।

गांधीजी ने वायसराय से तार द्वारा भेंट की स्वीकृति माँगी परन्तु वायसराय ने भेंट करनी स्वीकार नहीं की। गांधीजी अभी यह विचार ही कर रहे थे कि किस प्रकार सत्याग्रह करें कि सब वर्किंग कमेटी के सदस्य पकड़ लिए गये।

इसी सम्बन्ध में डॉक्टर राय, मोहिनी देवी और पचास के लगभग अन्य प्रमुख कार्यकर्ता पकड़कर बन्दी बना लिये गए।

झूठ-मूठ के मुकदमे चलाये गए और दो-दो वर्ष की कैद की आज्ञाएँ सुना दी गई। जब मोहिनी पकड़ी गयी और कलकत्ता के अलिपुर जेल में रखी गयी तो दास बाबू उससे मिलने गया। मोहिनी देवी ने मिलने से इन्कार कर दिया।

तदनन्तर जब मुक़दमा हुआ तो दास बाबू उसकी पैरवी करने वहाँ पहुँचा। इस पर मोहिनी देवी ने उठकर मजिस्ट्रेट को कह दिया, "मैंने किसी वकील को वकालतनामा लिखकर नहीं दिया। मैं अपने मुकदमे में पैरवी करना पसन्द नहीं करती।"

पहले ही दिन जब मुकदमा दायर हुआ, मजिस्ट्रेट ने फ़ैसला सुना दिया—"दो वर्ष की कैद की सज़ा।"

दास बाबू चुपचाप मुकदमा सुनता रहा और दंड हो जाने के बाद उसने मोहिनी से पूछा, "कहो तो अपील कर दूँ?"

"यह सत्याग्रह करने वालों की परम्परा नहीं है।"

दास चुपचाप चला आया। उस समय साधना देवी का मुकदमा उसको मिल चुका था। अतः उसने पूरे ध्यान से उस मुकदमे को लिया। उसमें उसकी सफलता मिली। इस मुकदमे के विषय में कलकत्ता के समाचार पत्रों ने बहुत रुचि दिखाई। नित्य पूर्ण रिपोर्ट समाचार पत्रों में छपती थी। प्रायः नित्य गवाहों पर जिरह प्रकाशित होती थी। हाईकोर्ट में की गयी बहस भी छपी।

मोहिनी देवी इस केस में बहुत रुचि लेती रही। जेल में कलकत्ता का 'स्टेट्समैन' उसको मिलता रहता था। वह उसमें अपने पति का नाम पढ़ती तो अपने उससे सम्बन्ध

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के विषय में विचार करती रहती थी। धीरे-धीरे उसके मन में अपने और अपने पति के व्यवहार में अन्तर स्पष्ट होता जाता था। जब तक साधना देवी के मुकदमे का निर्णय हुआ तब तक वह अपने किये पर पश्चात्ताप करने लगी थी।

इस मुकदमे के पश्चात् भी किसी-किसी मुकदमे में दास का नाम आता रहता था। १९४४ में जेल से छूटते समय मोहिनी देवी सर्वथा बदल चुकी थी। उसके मन में डॉक्टर राय के लिये घृणा भर चुकी थी और वह अपने पति से क्षमा माँगने का निश्चय कर चुकी थी।

परन्तु जब वह जेल से बाहर निकली तो दरवाज़े पर दास बाबू को खड़ा देख, पुन: उसके मन में पुराना अभिमान जाग पड़ा। उसने मन में विचार किया कि जब तक उसका पति घर चलने का आग्रह नहीं करेगा, वह उसके घर नहीं जायेगी।

जेल के दरवाजे तक आई तो दास ने आगे बढ़कर नमस्कार कर दी। मोहिनी बितर-बितर उसका मुख देखने लगी। दास ने उसको अनिश्चित मन देख कहा, "मैं समझता हूँ कि चलना चाहिए।"

"कहाँ ?"

"घर।"

"मैं वहाँ नहीं जा रही।"

"तो कहाँ जा रही हो ?"

"मैं विचार कर रही थी कि अपने पिता के घर ही चलूँ।"

"चलो, वहाँ ही ले चलता हूँ।"

"परन्तु आपकी मोटर में क्यों चलूँ ?"

"जाति के एक नेता होने के अधिकार से।"

मोहिनी ने द्वार के चारों ओर देखा। वह किसी टैक्सी के समीप होने की खोज कर रही थी। टैक्सी कोई दिखाई नहीं दी। दास ने कह दिया, "कोई और गाड़ी नेता-जी को लेने नहीं आयी। इससे जो हाज़िर है, उसी में चलना चाहिए।"

विवश हो मोहिनी गाड़ी में बैठ गयी। उसने विवशता में कह दिया, "तो ले चलिये।"

दास स्वयं गाड़ी चला रहा था। वह अपना सूटकेस गाड़ी की पिछली सीट पर रख दास बाबू के पास बैठ गयी।

"हाँ, तो तुम्हारे पिता के घर पर चलना है ?"

"और जा ही कहाँ सकती हूँ ?" वह अभिमान की परत, जो उसने कृत्रिम रूप में बनाई थी, अब उतरने लगी थी।

दास ने मुस्कराते हुए कह दिया, "एक नेता होने के अधिकार से किसी के भी घर जाकर ठहर सकती हो। एक-एक परिचित के घर एक-एक दिन भी ठहरो तो सारा जीवन सुगमता से कट जायेगा। पिताजी को कष्ट देने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मोहिनी चुप कर गयी। दास ने मोटर नहीं चलाई और मोहिनी के कहने की प्रतीक्षा करता रहा। जब मोहिनी ने कुछ नहीं कहा तो दास बाबू ने कह दिया, "डॉक्टर राय आज प्रातःकाल तक घर नहीं आये थे। अभी वहाँ जाना भी ठीक नहीं रहेगा। कहो तो तुमको तुम्हारे एक भक्त विपिनविहारी दास के घर ले चलूँ ?"

मोहिनी इस कटाक्ष से लज्जित हो रही थी। साथ ही अपनी हीन अवस्था देख उसकी आँखों में आँसू भर आये थे। दास ने उसकी आँखों में तरलता देखी तो मोटर चला दी। मोहिनी ने साड़ी के आँचल से आँखें पोंछ डालीं। कुछ दूर जाते-जाते मोहिनी ने अपने मन पर काबू पा लिया और बोलने का साहस किया। उसने पूछा, तो कहाँ ले जा रहे हैं ?"

"देखिये देवीजी! मैं तो आपको विपिनविहारी दास के घर ले जा रहा हूँ। वहाँ आपको पूरा आराम रहेगा। आपका एक और भक्त भी वहाँ रहता है—हरिमोहन। उसको भी देवीजी के दर्शन हो जायेंगे।"

"वहाँ मिस्टर दास को कष्ट होगा।"

"होगा तो उसका घर छोड़कर कहीं अन्यत्र चले चलेंगे। दास से पूछ लेना। देखें क्या कहता है ?"

"पूछ तो रही हूँ।"

दास भी समझ चुका था कि रस्सी जल चुकी है केवल बल शेष हैं। इससे उसने कह दिया, "दास का कहना है कि आप जैसी पूज्य देश की देवी को वह इन्कार नहीं कर सकता।"

"परन्तु मैं किसी की पत्नी बनकर नहीं रह सकती।"

दास हँस पड़ा। हँसते हुए उसने कह दिया, "इसके लिये चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं। सुना है दास नपुंसक है।"

मोहिनी को अपने पत्र की याद आ गयी। वह चुप कर रही। दास उसको अपने घर ले गया। हरिमोहन इस समय पाठशाला गया हुआ था। नौकरों ने मोहिनी की अनुपस्थिति, उसके जेल जाने और उससे पूर्व भूम्यान्तर्गत होने के लिये समझी थी। एक-दो ने समाचार-पत्र में पढ़ा था और विमलानन्द से उसका अर्थ पूछा था। विमलानन्द ने यह कहकर बात टाल दी थी कि यह सब किसी विशेष प्रयोजन के लिये दिखावा है।

इसका अर्थ नौकर यह समझे थे कि पुलिस को घर से दूर रखने के लिये यह सब कुछ किया गया है।

अतः किसी ने विस्मय प्रकट नहीं किया। प्रत्युत मोहिनी के आने पर सब ने ही प्रसन्नता प्रकट की। दास ने मोहिनी के पिता के घर सन्देशा भेज दिया कि वह छूट आई है। इससे मोहिनी के माता-पिता और बहन-भाई सायंकाल उससे मिलने चले आये।

इससे पूर्व हरिमोहन पाठशाला से लौट आया। वह माँ को देख उससे चिपट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गया। यह ठीक था कि जब से उसने होश सम्भाला था, वह अपनी माँ को प्रायः घर से नित्य अनुपस्थित देखने का अभ्यास रखता था। इस बार वह दो वर्ष अनुपस्थित रही थी और हरिमोहन अब बड़ा होता जा रहा था। उसने कह दिया, "माँ! अब मत जाया करो।"

"क्यों? क्या कुछ कष्ट हुआ है तुमको?"

"हाँ।"

"क्या बाबा मारते रहे हैं?"

"नहीं, बाबा नहीं मारते।"

"तो कौन मारता है?"

"मारता तो कोई नहीं। पर तुम मत जाओ। मेरा तुमसे मिलने को जी बहुत करता है।"

"अच्छा नहीं जाऊँगी। क्या पढ़ते हो?"

"जो कुछ स्कूल में पढ़ाते हैं।"

मोहिनी मुस्कराई और चुप कर रही। सायं की चाय के समय मोहिनी के माता-पिता इत्यादि आ गये। दास अभी कोर्ट से नहीं लौटा था। मोहिनी सबसे गले मिली। जब कुशल समाचार पूछा जा चुका तो पिता ने अपने घर के झगड़े बताने आरम्भ कर दिये। मोहिनी का छोटा भाई इंजीनियर बन गया था। ज्यूँही उसको सात सौ मिलने लगे थे, उसने पृथक् मकान ले लिया था। उसका अभी विवाह नहीं हुआ था। मोहिनी ने उसकी ओर देखकर पूछा—"क्यों कामताकुमार क्या बात है?"

"दीदी! विवाह के लिये एक लड़की जो मैंने पसन्द की है, माताजी पसन्द नहीं करतीं।"

"परन्तु जब तुम माताजी से पृथक् रहते हो तो फिर उनकी स्वीकृति की आवश्यकता ही क्या है?"

"यही तो बात है। वह कहती है कि बिना माँ की प्रसन्नता के वह मेरे घर में नहीं आयेगी।"

इस पर माता ने क्रोध में कह दिया, "भले ही दूसरों के घर जाती रहे। मोहिनी! वह ऐंग्लो-इंडियन है। टेलीफोन के दफ्तर में काम करती है। सुना है वह कामता को पाँव के जूते के तुल्य मानती है।"

मोहिनी ने विचार किया कि वह पहले ही दिन झगड़ों की बातें सुनने नहीं बैठी। उसे चुप देख कामता ने कह दिया, "माँ का घर तो मैंने इसलिये छोड़ा है कि भाभी का परिवार बहुत बढ़ गया है और रजनी भी अपने बच्चों को लिये वहाँ टिकी है। वहाँ रहता हुआ मैं अपनी 'सोशल-लाइफ' निभा नहीं सकता।"

मोहिनी मन में विचार कर रही थी कि वह पिता के घर पर नहीं गयी तो ठीक ही किया है। उसे वहाँ का पारिवारिक जीवन विषम हो रहा प्रतीत हुआ था। रजनी ने कह दिया, "जीजी! तुम्हारे जीजाजी की बदली अंडेमन हो गयी है। मैं वहाँ गयी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं। इससे माँ के घर के सिवा और कोई स्थान ही नहीं है।"

इस समय दास आ गया। स्वाभाविक रूप में घर की बातें बन्द हो गई और दास बाबू की रुचि की बातें होने लगीं।

मोहिनी की माँ मोहिनी को वहाँ से उठा उसके सोने के कमरे में ले गयी। वहाँ जाकर उसने पूछ लिया, "तुम पकड़े जाने से पहले दास बाबू से लड़ पड़ी थीं क्या ?"

"नहीं तो। किसने कहा है तुमको ?"

"समाचार-पत्रों में छपा था। तुम्हारे पिता तो समाचार-पत्र में पढ़कर इतनी लज्जा अनुभव करते रहे कि एक सप्ताह तक घर से निकले ही नहीं। उनका कहना था कि वे घर से बाहर जाते थे तो सब लोग उनको विस्मय में देखते प्रतीत होते थे। जब तुम्हारे पकड़े जाने का समाचार आया तो वे बाहर जाने लगे। तब वे कहते थे कि वह तो तुम्हारे भूम्यान्तर्गत होने के लिए बहाना था।"

: ७ :

अगले दिन डॉक्टर राय छूटा तो मध्याह्न के समय वह मोहिनी से मिलने आया। आने से पहले उसने टेलीफोन पर पूछ लिया, "मैं मिलने के लिये आ सकता हूँ क्या ?"

"अपने मन से पूछ लीजिये। यदि मिलने के लिए आने की रुचि अनुभव करते हैं तो आ जाइये।"

"मेरा यह मतलब नहीं। मैं तो यह पूछ रहा हूँ कि दास बाबू घर पर हों तो फिर किसी अन्य समय आऊँ ? मैं समझता हूँ कि तुमको और मुझको भी बहुत बातें करनी होंगी। यहाँ मेरे घर में तो एक अन्य झगड़ा पड़ गया है। पहले भाई का लड़का मोहन मेरे फ्लैट में एक कमरे पर अधिकार कर लिए हुए था। अब भाई ज्ञानसागर ने मेरा सारा फ्लैट ही एक मारवाड़ी सेठ निरंजनदास को भाड़े पर दे रखा है। मैंने मोहन, अपने भतीजे पर कमरा खाली करने का दावा किया हुआ था। एक वर्ष के झगड़े से भी मैं उसको कमरे से निकाल नहीं सका था। उसका कहना है कि हम भाइयों का बँटवारा हुआ ही नहीं। अब उसी के आधार पर ज्ञानसागर ने सारी फ्लैट ही भाड़े पर दे रखा है। उसका तीन-सौ रुपया मासिक भाड़ा वह पा रहा है।

"मेरे रहने के लिए एक कमरा, जो मेरा शयनागार था, रख छोड़ा है। मैंने ज्ञानसागर से जब यह पूछा कि यह क्या किया है, तो उनके लड़के मोहन ने कह दिया, 'चाचा! तुम प्रैक्टिस तो अब करते ही नहीं और न ही अभी चाची घर ला रहे हो। इसलिए परिवार को तीन सौ रुपये का लाभ हो जाना ठीक समझा गया है।'

'मैं तुम सबको धक्के दिलवाकर घर से निकाल दूँगा।' मैंने क्रोध में कहा।

'चाचा! घर के पुरखा तो ताऊजी हैं। आप उनसे बात कर लें।'

"सो मोहिनी! यह अवस्था है। मैं जब तक अपने रहने के लिए कोई मकान भाड़े पर नहीं ले लेता, तुमको बुला नहीं सकता।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस पर मोहिनी ने कह दिया, "यहाँ तो न बँटवारा हुआ है, न ही उस बँटवारे में झगड़ा। इस कारण आप आ सकते हैं। अभी तो दास बाबू कोर्ट गये हैं। यदि वे यहाँ हुए भी तो आपसे विशेष प्रेम की बात फिर की जा सकेगी।"

डॉक्टर राय प्रेम की बात से फड़क उठा। वह अपनी मोटर में बैठ दास बाबू के घर जा पहुँचा। मोहिनी डॉक्टर राय की प्रतीक्षा कर रही थी।

दोनों ड्राइंग-रूम में मिले। मोहिनी ने स्वास्थ्य समाचार के पश्चात् भविष्य के कार्य-क्रम के विषय में पूछ लिया।

डॉक्टर राय ने कहा, "अभी गांधीजी नहीं छूटे। उन्होंने भूख-हड़ताल की थी। परन्तु सरकार ने उनको इस बार नहीं छोड़ा। जब तक वह छूटकर नहीं आते, तब तक न तो कांग्रेस का ही और न ही अपना कोई कार्यक्रम बन सकता है। मेरी आर्थिक स्थिति बहुत खराब हो गयी है। सम्पत्ति जो पिताजी की थी, पुनः परिवार की साँझी हो गयी है। दोनों बड़े भाई एकमत हो गये हैं कि बँटवारा नहीं हुआ। बँटवारा मैंने रजिस्टर नहीं करवाया था और मेरे सब कागज संदूक में से निकाल गुम कर दिये गये हैं। अब बड़े भाई कहते हैं कि तीन सौ रुपये मासिक परिवार की सम्पत्ति में से मुझको मिलेगा। मैं समझ नहीं सका कि तीन सौ में निर्वाह कैसे करूँगा।"

मोहिनी को राय के घर की बातें सुनने में रुचि नहीं थी। राय को इस सब कुछ बताने में रुचि इस कारण थी कि वह मोहिनी को दास बाबू का घर छोड़ने से मना करने वाला था और अपनी आर्थिक कठिनाई का उल्लेख कर उस सम्मति की भूमिका बाँध रहा था।

मोहिनी ने बात बदल दी। उसने कहा, "इस बार जेल जाने से पूर्व दास बाबू ने कहा था कि मुझको कांग्रेस छोड़ देनी चाहिए। उस समय मुझको यह अपना और देश के बुद्धिशील व्यक्तियों का उपहास-मात्र प्रतीत हुआ था। परन्तु अब दो वर्ष के एकान्तवास और प्रबल चिन्तन से मैं उसी परिणाम पर पहुँची हूँ, जो वह कह रहे थे।"

"क्या विचार किया है तुमने ?"

"मैंने विचार किया है कि काँग्रेस में काम करना, जल-मन्थन के समान है। इसका परिणाम कुछ नहीं निकलेगा।"

"इस विचार का अधार क्या है ?"

"आधार यह है कि गांधीजी और अन्य कांग्रेसी यह सत्याग्रह के आन्दोलन देश की भलाई के लिए नहीं, प्रत्युत अपनी नेतागिरी बनाये रखने के लिए कर रहे हैं।"

"वाह ! इसमें प्रमाण भी है कुछ ?"

"प्रमाण तो है। १९३२ का सत्याग्रह आन्दोलन सर्वथा निरुद्देश्य था। स्वराज्य की रूपरेखा बन रही थी। उसके बनने से पूर्व ही कानून भंग करना, सिवाय इस बात के अन्य किसी बात का सूचक नहीं कि कहीं कोई अन्य, देश में सर्वमान्य नेता न बन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाये।

"इसी प्रकार १९२१ में खिलाफत के विषय को स्वराज्य आन्दोलन में सम्मिलित करना भी यही प्रकट करता है कि मुसलमानों का नेता बनने के लिए एक असम्बद्ध और मानवता के विरोधी विषय को आन्दोलन का उद्देश्य बना लिया था।

"इसी प्रकार साइमन कमीशन के बहिष्कार के आन्दोलन के विषय में कहा जा सकता है। स्वराज्य के विषय में केवल १९२१ का आन्दोलन था, परन्तु उसकी महिमा इसी कारण कम हो गयी थी कि उसके साथ खिलाफत का विषय जोड़ दिया गया था।

"यह तो मान सकती हूँ कि अपना नेतृत्व स्थिर रखने के लिए गांधीजी और अन्य कांग्रेसी अन्य दलों के नेताओं से अधिक चतुर हैं, परन्तु इसका अर्थ यह नहीं निकलता कि कांग्रेसियों के उपाय अधिक सफल हो रहे हैं।"

"तो क्या तुम यह नहीं समझतीं कि जन-जागृति जो पिछले चौदह-पन्द्रह वर्षों में हुई है, वह कितनी लाभकारी रहेगी?"

"इसको जन-जागृति कह सकते हैं क्या? जो कुछ देश में हो रहा है, वह उत्तेजना तो कही जा सकती है, जन-जागृति नहीं। उत्तेजना का अर्थ मैं यह समझती हूँ कि शरीर सक्रिय हो गया है। जागृति, जो समझ और विचार से सम्बन्ध रखती है, किंचित् मात्र भी नहीं है। राजनीतिक, राज्य, देश, जाति और राष्ट्र के विषय में जनता उतनी ही अनभिज्ञ है, जितनी किसी समय थी।"

"मैं समझता हूँ," डॉक्टर राय ने मुस्कराते हुए कहा, "तुम जेल में रहती-रहती थक गयी हो। अच्छा यही होगा कि तुम कुछ मास आराम करो। हो सके तो किसी पहाड़ी स्थान पर चली जाओ। वहाँ पर कुछ समय तक आराम करने से यह 'फ्रस्टरेशन' (उत्साह-हीनता) मिट जायेगी।"

"यही मैं करने जा रही हूँ।"

"कहाँ जाने का विचार कर रही हो?"

"अभी दास बाबू से बात नहीं हुई। देश के उत्तरी भाग में किसी स्थान पर जाने की इच्छा हो रही है।"

"कहो तो मैं भी साथ चलूं?"

"मैं क्यों कहूँ?"

"तुमने टेलीफोन में कहा था कि दास बाबू यहाँ हुए तो विशेष प्रेम की बातें फिर कभी हो सकेंगी। मैं समझता हूँ कि ऐसी बातों के लिये कोई पहाड़ी स्थान ही अधिक उपयुक्त होगा।"

"उनके लिये उपयुक्त स्थान तो यहाँ ही है। दास बाबू अभी कोर्ट से नहीं आये। अतः वे बातें भी हो जायें तो ठीक ही है। सुनिये, मैं समझती थी कि आप मुझसे प्रेम करते हैं। इसी कारण मैंने नमक सत्याग्रह पर जाने से पहले ही दास बाबू की संगत छोड़ी हुई थी। आप प्रेम करने का नाटक करते भी रहते थे, परन्तु इस बार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जेल जाने से पूर्व जब मैं दास बाबू का घर छोड़ आपके घर रहने के लिए पहुँची तो आपके ढोंग का रहस्य खुल गया। तब से मैं जितना भी आपके विषय में विचार करती हूँ, आपको पक्का बेईमान मानती हूँ।"

"ओह ! परन्तु मोहिनी ! यह रहस्योद्घाटन बहुत देरी से हुआ है। अब अपने पति के घर से उसको 'ब्रूट अथवा इम्पोटेंट' कहकर भागने के पश्चात्, तुम उससे वह मान नहीं पा सकतीं, जो एक पत्नी का अधिकार है। दास जैसा समझदार वकील यह जाने बिना नहीं रहा होगा कि तुम मेरी शय्या को सुशोभित कर चुकी हो।

"बताओ, अब क्या कहती हो ?"

"मैंने आपको यही कहने के लिये बुलाया है कि यदि फिर कभी आपने मेरे यहाँ आने अथवा कहीं अन्यत्र मुझसे बात करने का साहस किया तो जूतों से पिटवा कर निकलवा दूँगी।"

"ओह ! इतना मान है मेरा तुम्हारे हृदय में ? मैं जीवन-भर तुम्हारा आभारी रहूँगा। तुम्हारे मन की अवस्था उस पैंडलुम की भाँति प्रतीत होती है, जो एक चरम परिस्थिति से दूसरी चरम परिस्थिति में जाता रहता है। इससे तुम्हारे, पुनः अपने आँचल में, शीघ्र ही आ जाने की प्रतीक्षा में रहूँगा।"

मोहिनी इस लांच्छन का कि उसका मन पेंडुलम की भाँति डाँवाडोल रहने वाला है, का उत्तर देने वाली ही थी कि मिस्टर दास की मोटर के हार्न का शब्द हुआ। डॉक्टर राय ने कहा, "लो तुम्हारे पति देव आ गये हैं। अब मुझको यहाँ से खिसक जाना चाहिए।"

डॉक्टर राय को खड़ा देख मोहिनी भी खड़ी हो गयी। उसने कह दिया, "मैं चाहती हूँ कि हमारी मित्रता पर यह अंतिम पटाक्षेप हो। अच्छा—।"

वह नमस्ते कहने ही वाली थी कि दास बाबू वहीं आ पहुँचे। दास ने डॉक्टर राय से हाथ मिलाया और स्वास्थ्य समाचार पूछ लिया। तदनन्तर मोहिनी से पूछ लिया—"डॉक्टर राय को चाय आदि भी पूछी है अथवा नहीं ?"

उत्तर डॉक्टर राय ने दिया, "भोजन तो घर से ही करके आया था। चाय का अभी समय नहीं हुआ।"

"तो कोई कोल्ड ड्रिंक ठीक रहेगी। बैठिये ! मुझको भी प्यास लग रही है।"

दास ने बैठते हुए घंटी बजा दी और डॉक्टर को बैठने का पुनः आग्रह कर दिया। अतः डॉक्टर बैठ गया। मोहिनी भी बैठ गयी। घंटी की आवाज़ सुन नौकर आया तो उसे 'औरेंज़ स्क्वैश' लाने के लिये कह दिया गया।

नौकर गया तो राय ने माधोदास के मुकदमे की बात चला दी। उसने कहा, "उस माधोदास के मुकदमे की कार्रवाई हम बहुत रुचिपूर्वक पढ़ते रहे हैं। बहस, जो आपने मुकदमे को पुनः जाँच के लिए लोअर कोर्ट में भेजने के लिये की थी, सब बन्दी, जो हमारी बैरक में थे, उसको पढ़कर भाषा पर आपके आधिपत्य का लोहा मान गये थे।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दास ने बताया—"इस मुकदमे ने नौ मास की मेहनत ली है। मेरी मेहनत भी कुछ काम न करती यदि मेरी सहायता के लिए अपना मुंशी विमलानन्द भेदिये का कार्य सफलतापूर्वक न करता।"

"क्या फीस मिली है आपको इस मुकदमे में ?"

"मेरा बिल तो एक लाख पचास हज़ार का था, परन्तु साधना देवी ने सवा लाख तो मुकदमा जीतने के पश्चात् दे दिया था। अब पिछले सप्ताह उन्होंने एक हीरे की अँगूठी, जिसका दाम कलकत्ता के जौहरियों ने तीस हजार लगाया है, भेंट की है।"

डॉक्टर राय इतनी बड़ी फीस की बात सुन दास का मुख देखता रह गया। दास ने कहा, "यह सब कुछ मिला, परन्तु मैं इससे भी अधिक न्याय और समाज की सेवा मानता हूँ, जो मैं इस मुकदमे द्वारा कर सका हूँ।"

"इससे एक जमींदारी तो बच गयी, परन्तु समाज की क्या सेवा हुई ?" डॉक्टर राय का प्रश्न था।

"जिस समाज में न्याय, धन और कुटिलता के संयोग से मोल लिया जाता है, उस समाज का सर्वनाश हुए बिना नहीं रह सकता। मारवाड़ियों के स्वार्थी गुट और साथ ही वकीलों की कुटिलता-भरी सम्मति का भंडा फोड़ मैंने किया है। समाज में न्याय की प्रतिष्ठा बढ़ाई है।"

"एक मुकदमा जीतने से समाज में न्याय की प्रतीष्ठा कैसे रह जायेगी ?"

"बूँद-बूँद से ही जल भरता है।"

"परन्तु जो मुकदमा करने जाते हैं, उनमें से एक पक्ष तो सत्य होता है। यह पता नहीं चलता कि कौन पक्ष सत्य है और कौन पक्ष झूठ। इस कारण दोनों पक्षों की सहायता होनी चाहिए। धन से भी और कानूनी परामर्श से भी। इसमें धन देने वाले और परामर्श देने वालों को निन्दनीय कैसे कहा जा सकता है ?"

"परन्तु डॉक्टर राय ? वह वकील ही क्या हुआ, जो निर्णय नहीं कर सकता कि सत्य पक्ष क्या है और झूठ क्या ?"

"झूठ और सत्य में निर्णय के लिए तो जज नियुक्त हैं।"

"ठीक है अपने मन को सन्तोष देने के लिए विचार तो ठीक है। परन्तु यह सब कुछ उचित नहीं हो रहा।

"मैं तो ऐसा न्यायाधिकरण चाहता हूँ, जिसके न्याय की खोज करने वाले को एक पैसा भी व्यय न करना पड़े। न्याय मोल नहीं बिकना चाहिए।"

डॉक्टर राय ने 'औरेंज स्क्वैश' के लिए धन्यवाद किया और चला गया।

: ८ :

विपिनबिहारी को लाखों रुपये फीस में मिलते देख मोहिनी के सिर में भी बवण्डर उठने लगा था। वह पति की योग्यता पर गर्व करने लगी थी। दूसरी ओर डॉक्टर शान्तिसागर राय सरल सी बात भी नहीं समझ सका प्रतीत होता था। उसने मोहिनी को बताया था कि उसके भाई का लड़का मोहनसागर उसको नाकों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चने चबवा रहा है। वह मन में विचार करती थी कि या तो डॉक्टर राय ने अपने भाइयों से भारी दगा किया है या वह बिल्कुल बुद्धू है और एक कानून न जानने वाले छोकरे को सीधा नहीं कर सका।

डॉक्टर राय और अपने पति के व्यवहार में भी वह अन्तर पाती थी। डॉक्टर राय को विश्वास था कि मोहिनी का पति, राय के साथ उसके सम्बन्ध को जानता है। यदि यह सत्य है तो जो व्यवहार उसने उसके साथ तथा डॉक्टर राय के साथ किया है, वह उसकी सभ्यता और शिष्टता की पराकाष्ठा है। डॉक्टर राय आधा घन्टा भर दास से बातें करता रहा। एक बार भी इस लम्बे काल में दास ने अपनी-किसी गतिविधि अथवा शब्द से अपना रोष प्रकट नहीं किया था। वह यह भी विचार करती थी कि या तो उसका पति सर्वथा बुद्धू है और उसके राय के साथ सम्बन्ध का पता नहीं लगा सका अथवा यह प्रथम श्रेणी का भला आदमी है।

इस विषय में वह और अधिक जानने के लिये उत्सुक थी। डॉक्टर राय के विषय में तो वह निश्चय कर चुकी थी कि वह महा बेईमान है।

अपने पति के विषय में वह कह नहीं सकती थी कि वह उसके विषय में कुछ जानता भी है अथवा नहीं। वह अपने विषय में बात चलाने में भय खाती थी।

इस पर भी बात हुए बिना नहीं रही। उस रात को भोजनोपरान्त सोने के समय मोहिनी ने कह दिया, "मैं अब जेल से छूट चुकी हूँ और आगे फिर जेल जाने का विचार नहीं रखती। अब तो मुझको गर्भ ठहरने से भयभीत होने में कोई कारण नहीं।"

दास ने उसके आशय को समझ पूछ लिया, "डॉक्टर राय ने यह सम्मति दी है तुमको ?"

मोहिनी इस प्रश्न पर भौचक्की हो अपने पति का मुख देखने लगी। दास मोहिनी के मुख पर देखते हुए मुस्करा रहा था। मोहिनी को समझ आया कि यह कथन स्पष्ट रूप में लांछन नहीं है। इस कारण उसने कह दिया, "मैं आपका मतलब नहीं समझी।"

"मेरे इस कहने का मतलब यह है कि तुमको भविष्य में सत्याग्रह आन्दोलन में सम्मिलित न होने की सम्मति क्या डॉक्टर राय ने दी है ?"

"नहीं, यह मेरी अपनी विचार की हुई है। इस बार मैं जेल में पन्द्रह-सोलह अन्य स्त्री कैदियों के साथ रखी गयी थी। वे सब औरतें भी बंगाल के भिन्न-भिन्न स्थानों से सत्याग्रह करके आई थीं। उनका व्यवहार देख मेरे विचारों में भारी परिवर्तन हुआ है। मैं इस परिणाम पर पहुँची हूँ कि गांधीजी के आन्दोलनों ने देश में उत्तेजना तो उत्पन्न की है, परन्तु जागृति नहीं। जागृति से अर्थ मैं यह समझती हूँ कि राजनीति को समझना तथा समाज, धर्म और न्याय के विषय में ज्ञान रखना। इस दृष्टि से हमारे देश की जनता अभी तक अशिक्षित है।

"जेल में कैदी स्त्रियाँ प्रायः कांग्रेस की पदाधिकारी थीं, परन्तु मैंने यह अनुभव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किया है कि वे राजनीति का ए बी सी भी नहीं जानती थीं। बंगाल को अपना देश समझती थीं। बंगाली संस्कृति को देश की संस्कृति से विलक्षण मानती थीं। बंगला भाषा को सबसे श्रेष्ठ भाषा और बंगाली वेषभूषा को देश में सबसे अधिक सभ्य पहरावा मानती थीं। उनके लिये बंगाल के अतिरिक्त अन्य कुछ नहीं था।

'उनमें से पढ़ी-लिखी औरतों को भी यह पता नहीं था कि 'फैडरल-स्टेट' और 'युनिटरी-स्टेट में क्या अन्तर है? राज्य और राष्ट्र में अन्तर से वे सर्वथा अनभिज्ञ थीं।

"घंटों ही वे मुझसे इस बात पर बहस करती रहती थीं कि गांधीजी विदेशों से सम्पर्क न रख कर ठीक रह रहे हैं अथवा गलत कर रहे हैं।

"सबसे विलक्षण और दुःखद बात मुझको, उनमें, यह पता चली कि वे परस्पर एक-दूसरे की वस्तुओं की चोरी करती रहती थीं। एक ढेली गुड के कारण गाली-गलौज की स्थिति हो जाती थी। एक स्त्री तो सिगरेट पीती थी। उसने जेलर के सामने हमारे परस्पर के झगड़े, एक सिगरेट की डिबिया के लिये, बताने स्वीकार कर लिये।

"मैं कभी डॉक्टर राय जैसे पढ़े-लिखे व्यक्ति से भी राजनीति के विषय में बच्चों की-सी धारणाएँ सुनकर, दंग रह जाती हूँ।"

"मेरा यह निश्चित मत बन गया है कि कांग्रेस आन्दोलनों से जागृति तो देश में नहीं आयी। इससे केवल उत्तेजना उत्पन्न हुई है और यह उन्नति की सूचक नहीं हो सकती।"

"मैं तुम्हारे इस अनुभव को शुभ समझता हूँ। दिन-भर का भूला यदि रात को भी घर लौट आये तो अच्छा ही समझना चाहिए।"

"यही तो मैं भी कह रही थी कि मैं घर आ गयी हूँ। अब मैं 'नार्मल लाइफ' साधारण जीवन चलाना चाहती हूँ। यदि आपको आपत्ति न हो तो मैं अब आपके शयनागार में ही सोया करूँ?"

"क्यों, डाक्टर राय ने स्वीकृति दे दी है?"

"उसका इससे क्या सम्बन्ध है?"

"देखो मोहिनी! मेरा दिमाग अभी तक सही है। वह ठीक प्रकार से विचार करता है। कल तुम मेरे घर में आना नहीं चाहती थीं। आयी थीं तो यह घोषण कर कि तुम मेरी पत्नी बनकर नहीं आ रहीं। साथ ही तुम यहाँ उस समय आने को तैयार हुई थीं, जब तुमको यह पता चला कि डॉक्टर राय अभी जेल से नहीं छूटा।

"कल और आज में केवल एक ही घटना घटी है। वह है डॉक्टर राय से तुम्हारी भेंट।

"एक बार पहले भी यह परिवर्तन तुम में हुआ था। नमक सत्याग्रह से पूर्व ही तुमने मेरे शयनागार का त्याग किया था। मुझको भी अपने शयनागार से बाहर कर दिया था। दो वर्ष पूर्व जब डॉक्टर राय पर मुसीबत आई और उसमें मैं कुछ कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सकता था, तो तुम मेरे जीवन को समधुर करने का प्रस्ताव ले कर आयी थीं।"

मोहिनी अपने व्यवहार का ऐसा विश्लेषण सुन विवर्ण मुख, अपने पति की ओर देखती रह गयी। दास ने उसके मुख पर अपने अनुमान को अंकित देख कहना जारी रखा, "आज पुनः वही बात है। प्रातःकाल तक तुम मुझसे तटस्थ रहने में अपना कल्याण मानती थीं। मध्याह्न डॉक्टर राय आया। वह कुछ कह गया है और तुम मेरे साथ सहवास की स्वीकृति नहीं प्रत्युत याचना करने लगी हो?

"तुम मेरे शयनागार में आ सकती हो, परन्तु मुझको उससे बाहर सोना पड़ेगा।"

इस स्पष्ट वक्तव्य से मोहिनी की आँखें डबडबा आयीं। दास जो एक योग्य वकील होने से जानता था कि कैसे धूर्त-से-धूर्त साक्षी को बहकाया जा सकता है, कहने लगा, "सत्य कहता हूँ, मोहिनी! मुझको तुम्हारी आँखों में आँसू देख बहुत दुःख होता है, परन्तु तुम मेरी अवस्था का भी तो ध्यान करो। जब पति को अपनी पत्नी की निष्ठा पर ही संदेह होने लगे तो उसके मन की क्या अवस्था हो सकती है? तुम्हारे विषय में तो सन्देह नहीं, प्रत्युत विश्वास से कह सकता हूँ कि तुम्हारा डॉक्टर राय से उचित सम्बन्ध के अतिरिक्त भी कुछ है।

"ऐसी अवस्था में केवल एक उपाय हो सकता है, जिससे तुम और मुझमें साधारण व्यवहार आ सके। वह है पूर्ण रूप से पति-पत्नी में निरावरण होना। तुम में साहस है क्या कि तुम आद्योपान्त अपने डॉक्टर के साथ सम्बन्ध को पश्चात्ताप के रूप में अपने पति को बता सको? यदि है तो मैं इसको इस बात का सूचक समझूँगा कि तुम उस व्यवहार को बुरा मानने लगी हो। तब ही तो हम अपने व्यवहार अपने पुराने आधारों पर टिका सकते हैं।"

"तो आप मुझसे 'कन्फेशन' (अपराध-स्वीकरण) चाहते हैं?"

"इसलिये नहीं कि मुझको तुम्हें लज्जित करने में कुछ मिलेगा। यह तो तुमको प्रायश्चित के रूप में स्वेच्छा से करना चाहिए। यदि तो मन में अभी तक प्रायश्चित की भावना नहीं बनी और तुम अपने उस काल के व्यवहार को दूषित नहीं मानतीं तो तुम्हारे स्वीकरण की आवश्यकता नहीं।"

मोहिनी यह तो निश्चय कर चुकी थी कि वह अपने पिछले व्यवहार को दुहरायेगी नहीं। परन्तु उसका पति तो उसको सर्वथा नग्न हो, उसके सामने खड़ी हो जाने को कहता था। यूँ तो वह समझ गयी थी कि वह अपनी युक्ति और अनुभव से उसके डॉक्टर राय से सम्बन्ध के विषय में वास्तविक स्थिति को समझ चुका है, परन्तु अब तो वह उससे प्रायश्चित के रूप में पूर्ण विवरण सुनना चाहता है।

कितनी ही देर तक वह मुख लटकाये वहाँ बैठी रही। वह मन में मनन कर रही थी कि किस सीमा तक निरावरण हो। अन्त में वह इस बात को समझ कि दास जैसे व्यक्ति के सामने लुकाव-छिपाव की बात नहीं चलेगी और यदि उसने कुछ भी छुपाने का यत्न किया अथवा अपने व्यवहार को, टेढ़ी-मेढ़ी युक्तियों से उचित बताने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का प्रयत्न किया तो पकड़ी जायेगी। तब जीवन-भर पश्चात्ताप की अग्नि में जलने के अतिरिक्त कुछ नहीं रह जायेगा। इतना विचार कर उसने कहा, "मैं समझती हूँ कि आपका मुझको पश्चात्ताप करने के लिये कहना उचित ही है। मैं आपको अपनी पूर्ण बात बताती हूँ।"

मोहिनी ने अपने उस दिन से, जिस दिन उसने शान्तिसागर से प्रथम भेंट शान्ति-निकेतन में की थी, आज दिन तक, जब उसने डॉक्टर राय को बेईमान कह कर वहाँ से निकल जाने के लिये कहा था, पूर्ण वृत्तान्त, मनोभावों और व्यवहार को बता दिया। इस सब वृत्तान्त को बताते समय वह आँसुओं की अविरल धारा प्रवाहित करती रही थी। दास की आँखें भी भीग रही थीं।

पूर्ण वृत्तान्त बताकर मोहिनी ने कहा, "इस सब कुछ बताने के उपरान्त मेरी पूर्ण इच्छाएँ और कामनाएं शान्त हो गयी हैं। मैं अपने में मृतप्राय अनुभव कर रही हूँ। यूँ कहिये तो मैं आपके अधीन हूँ।"

"ठीक है।" दास ने कहा, "इस भयानक प्रकटीकरण के पश्चात् मन की सब मधुर प्रवृत्तियाँ जीवित रह ही नहीं सकतीं। इस पर भी मैं चाहता हूँ कि तुम आज और भविष्य में भी सदा मेरे कमरे में सोया करोगी। मैं अब तुमको पुनः अपने मन के आवेश में बह जाने की स्वीकृति नहीं दे सकता।"

: ६ :

"देखो मोहिनी!" दास बाबू अपनी पत्नी के साथ उसके भावी राजनीतिक जीवन के विषय में कह रहा था, "मैं आरम्भ से ही गांधीजी के इस सार्वजनिक कानून भंग के आन्दोलन को संशय की दृष्टि से देखता आया हूँ। मैंने १९२१ में वकालत पास की थी। तब गांधीजी अपने पत्र 'यंग इण्डिया' में अपने सत्याग्रह आन्दोलन की व्याख्या किया करते थे।

"मैंने अपने पिता से, जो कलकत्ता हाईकोर्ट के एक सुविख्यात जज थे और लॉ कॉलेज के प्रिंसिपल से, जिनके लिये मेरे मन में बहुत आदर है, यह सुन रखा था कि समाज में उद्योगीकरण के विकास से मानव जीवन विषम होता जाता है। इस विषय जीवन में न्यायप्रियता (धर्म में रुचि) ही मनुष्य की ओर मानव की रक्षा कर सकती है।

"कभी कोई व्यक्तिगत अथवा समाज विषयक घटना ऐसी हो सकती है कि कोई आत्मा उससे तड़फड़ा उठे। उसके कानून भंग करने को क्षम्य माना जा सकता है, परन्तु सहस्रों और लाखों की संख्या में जब कानून भंग करने लगते हैं और बार-बार करते हैं तो कानून भंग करना आत्मा की तड़फड़ाहट का सूचक न रहकर एक उद्देश्य सिद्धि में साधन बन जाता है। यह प्रवृत्ति समाज के विनाश में कारण हो जायेगी।"

"परन्तु जब समाज यह अनुभव करे कि अमुक परिस्थिति असह्य हो गयी है, तब समाज उसके विरुद्ध आन्दोलन क्यों न करे?" मोहिनी का प्रश्न था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"आन्दोलन और विरोध के मैं विपरीत नहीं; परन्तु ये दोनों कानून भंग के पर्याय नहीं हैं। आन्दोलन का उद्देश्य है जागृति उत्पन्न करना। यह तो तुम स्वयं अनुभव कर चुकी हो कि इन सत्याग्रह के आन्दोलनों से जागृति नहीं प्रत्युत उत्तेजना उत्पन्न होती रही है। उत्तेजना समझ को विलुप्त करने वाली होती है। इसके विपरीत जागृति ज्ञान और विचार की प्रोत्साहक है। आन्दोलन का उद्देश्य, मैं जागृति उत्पन्न करना मानता हूँ, विक्षुब्धता नहीं। व्याख्यानों, लेखों, विज्ञापनों, शिक्षा इत्यादि के साधनों से जन-साधारण को ज्ञान कराने का नाम आन्दोलन है।

"विरोध भी कानून भंग का पर्याय नहीं। विरोध धारासभाओं के निर्वाचनों में प्रत्याशी खड़े कर और फिर विपक्षी की बात को धारासभाओं में बहुमत से रद्द कर दिया जा सकता है। जहाँ धारासभाओं के निर्वाचन न होते हों अथवा धारा-सभा के बहुमत के निर्णय माननीय न हों, वहाँ, युद्ध द्वारा विरोध हो सकता है।"

"तो युद्ध कानून भंग करना नहीं ?"

"नहीं; युद्ध के अपने कानून हैं। वे युद्ध की घोषणा के पश्चात् कार्य में आने लगते हैं।"

मोहिनी को अभी भी बात समझ में नहीं आयी थी। उसने कह दिया, "वास्तव में सत्याग्रह भी एक प्रकार का युद्ध ही है। इसके अपने कानून हैं। सत्याग्रह की घोषणा के पश्चात् वे कानून लागू हो जाते हैं।"

दास हँस पड़ा। उसने कहा, "दोनों में अन्तर इतना है कि एक में कुछ निश्चित कानून हैं, जिनका पालन होता है। साधारण काल के कानून स्थगित हो जाते हैं और युद्ध काल के कानून लागू हो जाते हैं। इन कानूनों का भंग करने वाला सैनिक नियमों से सैनिक अधिकारियों द्वारा दंडित हो जाता है, परन्तु सत्याग्रह के समय कानून भंग करना ध्येय रह जाता है। पालन करने के लिए किसी प्रकार के कानून निश्चित नहीं हैं। सत्याग्रही की व्यक्तिगत इच्छा ही सर्वोपरि होती है।

"इसका परिणाम यह होता है कि कानून भंग कर अधिकारी वर्ग को तंग करना मात्र ध्येय बन जाता है। इससे सत्याग्रही का घोर पतन हो जाता है।

"जब तो सत्याग्रह व्यक्तिगत रहे और ध्येय तथा प्रयत्न भी व्यक्ति तक ही सीमित हों, तब तक व्यक्ति कार्य और उसके परिणाम का उत्तरदायी स्वयं रहता है। इसका प्रभाव भी व्यक्ति तक ही सीमित रहता है, परन्तु जब ध्येय और प्रयत्न सार्व-जनिक बन जाता है तो उसका उत्तरदायित्व सामाजिक हो जाता है और उसका प्रभाव भी व्यापक होता है। उदाहरण से रूप में आत्महत्या, व्यक्तिगत रूप में और व्यक्तिगत उद्देश्य के लिए सीमित प्रभाव उत्पन्न करने वाली है, परन्तु यदि आत्महत्या किसी सार्वजनिक उद्देश्य के लिए और बहुत से लोगों द्वारा की जाये तो वह किसी समाज में एक ऐसी प्रथा उत्पन्न कर देगी जो समाज के लिए घातक होगी। ऐसी आत्म-हत्या एक धमकी मात्र बन जायेगी, जो वर्तमान और भविष्य में भी अपना प्रभाव उत्पन्न करने वाली होगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"आत्महत्या करने वाले का उद्देश्य उचित होगा अथवा अनुचित, इसका जानना तो गौण हो जाता है। रह जाती है आत्महत्या और समाज को डरा-धमकाकर अपनी बात मनाना।"

"क्या युद्ध अधिक हानिकर नहीं होता ? सत्याग्रह में तो सहस्रों लोग सम्मिलित हुए हैं और इस आन्दोलन में बहुत कम माल और जान की हानि हुई है।"

"परन्तु अभी तक प्राप्ति भी तो कुछ भी नहीं हुई। १९१९ के सुधार तो सत्याग्रह आन्दोलन की उपज नहीं थे। वे यदि अंग्रेज़ों की भलमनसाहत से न माने जायें तो क्रान्तिकारियों के प्रयत्न से कहे जा सकते हैं।

"१९१९ के पश्चात् महात्मा गांधी द्वारा चलाये तीन वृहत् आन्दोलन हो चुके हैं। इनमें करोड़ों रुपये व्यय हो चुके हैं। सहस्रों युवकों ने अपनी पढ़ाई और नौकरियाँ छोड़ी हैं, परन्तु मिला-मिलाया कुछ नहीं। इनके स्थान यदि कुछ क्रान्तिकारी लोगों को कुछ थोड़ा-सा भी रुपया प्राप्त हो जाता तो मुझको विश्वास है कि अब तक नये सुधार मिल चुके होते।

"नमक सत्याग्रह के पूर्व गांधीजी ने क्रान्तिकारियों को एक खुली चिट्ठी लिखी थी।"

"उनसे गांधीजी ने कहा था कि एक बार उनको भी यत्न कर लेने दो। किसी-न-किसी कारण से क्रान्तिकारियों की कार्य की समाप्ति हुई। इस पर भी इनका सत्याग्रह तो असफल हुआ। इस पर इन्होंने दूसरा सत्याग्रह आन्दोलन चलाया और वह भी असफल ही रहा है।"

दास की यह युक्तियाँ किसी न्यायिक के मस्तिष्क को समझ में तो आ जातीं, परन्तु मोहिनी को ये समझ में नहीं आयीं। वह संशय बुद्धि वैसी की वैसी बैठी रही।

दास समझ रहा था कि बुद्धि और भावना में संघर्ष चल रहा है, जिसमें भावना ही प्रबल सिद्ध हो रही है। इस कारण उसने अपनी पूर्ण बात का निष्कर्ष सुना दिया, "देखो मोहिनी ! यदि तुम स्वराज्य मिलने के पश्चात् तक जीवित रहीं तो यह समझ सकोगी। यह कहना कठिन है कि स्वराज्य-प्राप्ति में कितनी देर लगेगी। गांधीजी के आन्दोलन तो स्वराज्य-प्राप्ति को पीछे और पीछे ही कर रहे हैं। साथ ही इसके कारण गलत ढंग के नेता उभर रहे हैं, जो स्वराज्य की नौका को डुबोये बिना नहीं छोड़ेंगे। यह सत्याग्रह तो कानून भंग का आन्दोलन है। अतः वे सब लोग, जो कानून की महिमा नहीं जानते, इसमें इकट्ठे हो गये हैं और इसके नेता बन गये हैं। इसकी नेता गिरी में कहीं स्वराज्य मिला तो उस समय भी ये कानून की अवहेलना ही करेंगे। यह इनके स्वभाव में है।"

इन परिणामों से मोहिनी की सहमति थी। वह विचार करती थी कि कहीं डॉक्टर राय जैसे आदमी देश में राज्याधिकारी बन बैठे, तो देश का क्या बनेगा ?

इस पर भी वह राजनीति से पृथक् होने पर अपने को बेकार अनुभव करती थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस समय इंग्लैण्ड में हिन्दुस्तान के लिये विधान निर्माण हो रहा था। मोहिनी का कार्य हरिमोहन अपने लड़के की देख-भाल ही रह गया था। हरिमोहन बचपन से ही अपनी दाई की देख-रेख में रह रहा था। इस बार मोहिनी ने उसकी देख-भाल आरम्भ कर दी।

हरिमोहन अब तीसरी श्रेणी में पढ़ता था। वह बँगला भाषा और गणित सीखता था। मोहिनी की, शान्ति-निकेतन में पढ़ते समय चित्रकला में विशेष रुचि रही थी। इस कारण उसने हरिमोहन को भी चित्रकला की शिक्षा देनी आरम्भ कर दी। उसकी सीधी टेढ़ी और गोल रेखाओं को बनाना, सिखाना आरम्भ कर दिया। हरिमोहन ने पूछा था, "माँ! इनसे क्या होगा!"

"तुम चित्रकार बन जाओगे।"

"वह क्या होता है?"

मोहिनी ने समझाने के लिए अपनी कॉलेज के दिनों की ऐलबम निकालकर दिखाई—"देखो! यह क्या बना है?"

"एक बूढ़ा है लाठी लिए चल रहा है।"

"यह चित्र मैंने बनाया है। तुम भी ऐसे चित्र बनाना सीख जाओगे।"

इससे हरिमोहन को प्रोत्साहन मिला और वह नित्य ड्राइंग का अभ्यास करने लगा। तदुपरान्त मोहिनी ने उसको रंग ला दिये। इससे उसकी रुचि इसमें और भी अधिक हो गयी।

इस प्रकार कार्य चल रहा था कि एक दिन मोहनसागर, डॉक्टर राय का भतीजा दास बाबू से मिलने चला आया। दास बाबू कहीं काम पर गया हुआ था। जब विमलानन्द ने बताया कि वकील साहब रात के दस बजे लौटेंगे तो वह निराश लौटने लगा। इस समय मोहिनी हरिमोहन को घुमाकर मोटर में लौटी। मोहिनी ने उसको देखा, परन्तु पहचाना नहीं। अतः वह जब कोठी में जाने लगी तो मोहन ने हाथ जोड़कर नमस्कार कर दी।

मोहिनी ने भी हाथ जोड़ दिये और भीतर जाने लगी तो मोहन ने कह दिया, "आपने मुझको पहचाना नहीं?"

"जी नहीं।"

"मैं मोहनसागर राय, डॉक्टर राय का भतीजा हूँ।"

मोहनसागर का विचार था कि मोहिनी से डॉक्टर राय के सम्बन्ध पूर्ववत ही होंगे। परन्तु मोहिनी ने डॉक्टर राय का नाम सुनते ही माथे पर त्योरी चढ़ा लीं और पूछ लिया, "और डॉक्टर राय का भतीजा यहाँ क्या कर रहा है?"

"मैं दास बाबू से मिलने आया था। पता चला है कि वह कहीं किसी मीटिंग में गये हुए हैं। इस कारण मैं लौट रहा था कि···।"

"क्या काम था उनसे?"

"यदि आपके पास समय हो तो सुना सकता हूँ। कदाचित् इसमें आप कुछ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सहायता कर सकें।"

मोहिनी गम्भीर विचार में पड़ गयी। उसको चुप देख मोहन ने कह दिया, "आप डॉक्टर राय से कहकर हमारी सुलह करा दें। मैं दास बाबू से तो मुकदमे में सहायता लेने आया था।"

"किससे मुकदमा है तुम्हारा ?"

"डॉक्टर साहब से।"

मोहिनी को स्मरण हो आया कि डॉक्टर राय ने जेल से वापिस आने पर बताया था कि उसके भाई के लड़के ने उसकी बैठक इत्यादि पर अधिकार जमा रखा है और उसने केवल एक कमरा उसके लिए छोड़ रखा है। यह स्मरण आते ही उसके मन में पूर्ण परिस्थिति जानने के लिये उत्सुकता जाग पड़ी। उसने कह दिया— "आओ, भीतर आ जाओ।"

वह उसको ड्राइंगरूम में ले गयी। वहाँ उसको बैठाया और पूछने लगी—'तो हाँ! क्या झगड़ा है तुम्हारा डॉक्टर राय से ?"

मोहन ने बताया, "जब डॉक्टर साहब विलायत से लौटे तो हमारे पिताजी व ताऊजी से बाबा की सम्पत्ति का बँटवारा करने को कहने लगे। ताऊजी ने बहुत समझाया। उनका कहना था कि संयुक्त परिवार में उनके बच्चे भी उच्च शिक्षा पा सकेंगे, परन्तु डॉक्टर साहब नहीं माने। इस पर तीनों भाइयों में एक समझौता हुआ। डॉक्टर साहब लाभ के स्थान पर थे। उनका विवाह नहीं हुआ और उनके कोई सन्तान नहीं।

"डॉक्टर साहब की अपनी शिक्षा हो चुकी थी। इस पर भी वे अन्य भाइयों के साथ बराबर हिस्सा माँगते थे। हमारे ताऊजी वृद्ध हैं, पेन्शन पाते हैं। उस पेन्शन पर निर्वाह करते हुए मुकदमा नहीं लड़ा जा सकता था। मेरे पिताजी, दृष्टिविहीन होने के कारण झगड़ा करने से डरते थे। अतः घर पर निश्चय हो गया। तीनों भाइयों में बराबर हिस्सा पाने का निश्चय हुआ।"

"इतना हो जाता तो भी गनीमत थी। परन्तु डॉक्टर राय ने उन मकानों को, जो उनके हिस्से में आये, कम दाम लगाया और जो दूसरे भाइयों के भाग में गये, उनका अधिक दाम लगाया। एक मकान हमारे बाबा पिताजी के नाम लिख गये थे। वह इसलिए कि पिताजी आँखें न होने के कारण अपाहिज थे। चाचाजी महाराज ने इस मकान का दाम एक लाख लगा दिया। पिताजी को वह मकान देकर नकद रुपये में से एक पैसा नहीं दिया।

"जब फैसला हुआ तो मैं स्कूल में पढ़ता था। मैट्रिक पास करने पर मेरी पढ़ाई बन्द हो गई। मैंने जब चाचाजी की यह धोखा-धड़ी समझी तो बलपूर्वक उनके मकान पर कब्ज़ा कर लिया।

"अब डॉक्टर साहब ने अपने दोनों भाइयों पर दावा कर दिया है। ताऊजी ने और पिताजी ने मुझको मुखतारनामा दे दिया है और मैं चाचा से मुकदमा लड़ने की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तैयारी कर रहा हूँ। इस विषय में दास बाबू जी से राय करने आया था।"

"परन्तु दास बाबू तो छोटी अदालत में मुकदमा नहीं लेते।"

"मुकदमा तो मैं स्वयं लड़ूँगा। मैं उनसे केवल कानूनी सहायता लेना चाहता हूँ।"

"तो कल मिल लेना उनसे।"

"तो आप मेरी सहायता नहीं करेंगी ?"

"मैं क्या सहायता कर सकती हूँ ?"

"आप डॉक्टर राय से कहकर घर पर सुलह करा दें।"

"मैं डॉक्टर राय से अब नहीं बोलती।"

"क्यों ? किसी विषय पर झगड़ा हो गया है।"

"हाँ, मेरा उनसे और कांग्रेस से मतभेद हो गया है। इस वर्ष मैं काँग्रेस की चार आना वाली सदस्या भी नहीं बनी।"

"ओह ! तभी, अब आपको वहाँ नहीं देखा।"

"कहाँ ?"

"अपने घर पर। क्षमा करें, मैं कल दास बाबू से मिलूँगा।"

: १० :

अगले दिन मोहनसागर दास बाबू से मिलने आया। उसने अपने मुकदमे का हाल बताकर कहा, "मैं आशा करता था कि मोहिनी देवी जी डॉक्टर राय को सालस डाल लेने के लिए मना लेंगी। आप सालस बन घर पर ही फैसला कर देंगे। परन्तु मोहिनी देवी जी ने मेरी सहायता करने से इन्कार कर दिया है।

"अब आप ही एक ऐसे व्यक्ति हैं, जो हमारी सहायता कर सकते हैं। यदि आप घर पर किसी प्रकार का फैसला न करा सकें तो मैं मुकदमा लड़ूँगा। आपसे सब कानून को समझ मैं अपनी पैरवी स्वयं करूँगा।"

दास भौचक्का हो सुनता रहा। वह मोहन के विषय में बहुत अच्छी सम्मति रखता था। उसको विश्वास था कि यह बालक सफल होगा। उसने केवल यह कहा, "मुकदमा चलने दो। पहली ही पेशी में एक प्रस्ताव कर देना कि तुम सालस डालकर सुलह करने के लिये तैयार हो। तदनन्तर सालस का नाम उपस्थित कर देना।"

"जी, यह तो मैं जानता हूँ। बिना किसी प्रकार के, चाचाजी पर दबाव के, वह न तो सालसी बोर्ड के लिये तैयार होंगे, न ही आपको सालस मानेंगे। इस दिशा में मैं आपकी सहायता चाहता हूँ।"

"वह सब तो अब हो नहीं सकती। मोहिनी देवी, जहाँ तक मैं समझता हूँ, मेरे कहने पर भी डॉक्टर राय से बात करने नहीं जाएँगी।"

"अच्छा, आप यह बताइये कि यदि मैं चाचाजी को, आपको सालस डालने पर विवश कर लूँ तो आप अस्वीकार तो नहीं करेंगे ?"

"परन्तु मैं अपनी सम्मति, कि किसको क्या मिलना चाहिए, दोनों पक्षों की बात

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुनने के पश्चात् ही बताऊँगा।"

"हाँ, उस दिशा में आपसे किसी प्रकार का वचन लेने-देने नहीं आया।"

मोहन गया तो दास ने अपने मस्तिष्क से यह बात निकाल दी। उसको इस बात का विश्वास था कि प्रथम तो राय सालस डालने के लिये तैयार ही नहीं होगा। दूसरा, वह उसको सालस कभी नहीं मानेगा। मोहिनी की घटना और अपने उसके विरुद्ध व्यवहार को स्मरण कर वह समझता था कि डॉक्टर राय उस पर विश्वास नहीं कर सकता।

परन्तु उसके विस्मय का ठिकाना नहीं रहा, जब मोहन के मिलने आने के दस-पन्द्रह दिन पीछे डॉक्टर राय ने टेलीफोन किया। दास ने पूछ लिया, "बताइये, स्वास्थ्य तो ठीक है ?"

"हाँ, स्वास्थ्य तो ठीक है, परन्तु मन ठीक नहीं है।"

"क्यों, क्या कष्ट है ?"

"अपने भाइयों से झगड़ा हो गया है। मैंने तो मुकदमा कर दिया है, परन्तु सब सम्बन्धी और मित्र इस बात पर बल दे रहे हैं कि घर पर सालस डालकर झगड़ा निपटा लूँ।"

"कौन सम्बन्धी हैं, जो आपको इस प्रकार की घटिया बात मानने पर विवश कर रहे हैं ?"

"आपको उनके नाम बताने से क्या लाभ होगा ? इतना ही बताना पर्याप्त होगा कि वे सब, सम्मतिदाता, समझते हैं कि मुझको घर पर झगड़ा निपटाने के लिये कहकर, वे मुझ पर अहसान कर रहे हैं।"

दास की हँसी निकल गयी। हँसकर उसने कहा, "ये सब मूर्ख आपके सम्बन्धी कैसे बन गये ?"

"वे मेरे भाई ज्ञानसागर पर दया कर रहे हैं। आप तो जानते हैं कि वह दृष्टि-रहित है। सब यही कहते हैं कि उसको कचहरी में खराब करने से मेरा भला नहीं हो सकेगा। दास बाबू ! यद्यपि मुझको इन भले-बुरे, पाप-पुण्य और उचित-अनुचित के झगड़े में कुछ भी तत्त्व प्रतीत नहीं होता, तो भी मैं मान गया हूँ कि झगड़ा घर पर ही तय हो जाये।"

"मिस्टर राय !" दास मोहन की चतुराई का अनुमान लगा चकित हो, कहने लगा, "आपका इस प्रकार घर पर ही, एक कानून से अनभिज्ञ और असन्तुलित मन वाले व्यक्ति के हाथ में अपनी किस्मत देने के लिये तैयार होने पर मुझको विस्मय हो रहा है। परन्तु बैरिस्टर साहब ! यह आपके अपने विचार करने की बात है। हाँ, तो बताइये ! मुझे कैसे याद किया है ?"

"मैं आपका नाम सालस के पद के लिये उपस्थित करने वाला हूँ। उपस्थित करने से पूर्व आपकी स्वीकृति लेना चाहता हूँ। मेरा अन्धा भाई ज्ञानसागर तो आपको स्वीकार करने को तैयार नहीं होता। वह अपने श्वसुर को सालस बनाना चाहता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बड़ा भाई सुखसागर तो इस बात पर तैयार हो गया है। मैं ज्ञानसागर के लड़के मोहनसागर को तैयार कर रहा हूँ कि वह आपको सालस मानने के लिये पिता को तैयार करे।"

"परन्तु डॉ० साहब! आप यह सब झगड़ा मेरे सिर पर डालने की क्यों कृपा कर रहे हैं? आखिर मैंने आपका कब कौन अनिष्ट किया है, जो आप मुझको निरर्थक कार्य के लिये अपना कीमती समय देने के लिये प्रस्ताव कर रहे हैं।"

"दास बाबू! आपने अनिष्ट किया है अथवा मेरा भला किया है, यह मैं आपसे बहस करना नहीं चाहता। इतना मैं समझता हूँ कि आप न्याय-बुद्धि रखते हैं। इस कारण आपसे अन्याय की आशा नहीं। आपको कानून की बात समझाऊँगा तो आप समझ सकेंगे। यदि कहीं मिट्टी के माधो, भावुकता से परिपूर्ण, ज्ञानसागर के श्वसुर जैसे व्यक्ति को सालस मान बैठा तो नये सिरे से मुकदमा करना पड़ेगा। देखिये दास बाबू! आपको यह प्रस्ताव मानना ही चाहिये।"

"परन्तु यदि मेरा निर्णय आपकी रुचि के अनुसार न हुआ तो भी आप कचहरी का दरवाज़ा खटखटायेंगे ही?"

"मुझे विश्वास है कि आप इतना अनर्गल निर्णय नहीं करेंगे कि मुझको उसके उपरान्त कचहरी का मुख देखना पड़े।"

"परन्तु मेरे पास समय भी तो नहीं है।"

"दास बाबू! समय तो निकालना ही पड़ेगा। एक साथी वकील की इतनी सहायता तो करनी होगी।"

दास को विस्मय हो रहा था कि यह क्या हो गया है? किस प्रकार मोहन ने डॉ० राय को इतना विवश किया है कि वह उससे मिन्नत करने लगा है? दास, डॉ० राय के प्रस्ताव को मान नहीं रहा था। इसमें कारण यह था कि वह राय से मिन्नत करवाना चाहता था और उसको मनवा लेना चाहता था कि उसका निर्णय उसको स्वीकार होगा।

अन्त में दास ने कह दिया, "अच्छी बात है। यदि आप लोगों ने कुछ अधिक लुकाव-छुपाव नहीं किया और मेरे साथ ईमानदारी का व्यवहार किया तो मैं आपके झगड़े में अपना न्यायोचित निर्णय देने का यत्न करूँगा।"

पर्दे के पीछे क्या-क्या चालें चली गयीं, जिनसे डॉ० राय जैसा आदमी घर पर ही फैसले को मानने के लिये तैयार हुआ है, दास यह जानने के लिये उत्सुक था। अतः जब तीनों भाई और दोनों बड़े भाइयों के चारों लड़के उसके पास आये तो वह मोहन की नीति समझ गया। उसने स्पष्ट कह दिया, "दास बाबू! मैं अपने माता-पिता तथा भाई के साथ यह लिखित वचन कि आपका न्याययुक्त निर्णय स्वीकार करूँगा, इस शर्त पर दे रहा हूँ, कि वह वास्तव में न्याययुक्त होगा। यदि तनिक भी आपने अपने मित्र और सहयोगी वकील की, न्याय से अतिरिक्त माँग स्वीकार की तो मैं उसको मानने पर बाध्य नहीं हूँगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दास समझ रहा था कि मोहन डॉ० राय को उसको मध्यस्थ बनाने के लिये प्रोत्साहित कर रहा है।

"मोहन !" दास ने मोहन की नीति समझते हुए कहा, "यह कौन निर्णय करेगा कि मेरा निर्णय न्यायोचित है अथवा नहीं ?"

"पहले तो मैं स्वयं समझने का यत्न करूँगा। पश्चात् आपसे कहूँगा कि समझा दें। यदि इस पर भी समझने में योग्य न हुआ तो फिर कोर्ट इस बात का निर्णय करेगा कि आपका निर्णय न्याय की दृष्टि से ठीक है अथवा नहीं ?"

"और यदि आपके पिता की हीन अवस्था देख, कुछ उनकी रियायत कर दी तो ?"

"यदि तो कानून रियायत करने को कहता है तो करियेगा अन्यथा ऐसी रियायत की कोई आवश्यकता नहीं।"

इस प्रकार की बातों से मोहन अपने चाचा को मूर्ख बना रहा था। डॉक्टर राय देख रहा था कि उनके दोनों भाई और भाइयों के लड़के दास बाबू पर वह निष्ठा नहीं रखते, जो एक सालस पर रखनी चाहिये।

डॉक्टर राय ने बताया, "एक सप्ताह हुआ कि हम सब जज के सामने उपस्थित हुए तो सब जज ने मुझको डाँटा। उसका कहना था कि मैं घर पर ही फैसला क्यों नहीं कर लेता ? अपने गरीब भाइयों को व्यर्थ में क्यों तंग कर रहा हूँ ? मैंने जब बताया कि मेरे भाई ज्ञानसागर संसार के किसी भी व्यक्ति से अधिक विश्वास अदालत पर रखते हैं तो ज्ञानसागर कह उठे कि उसको अपने श्वसुर निर्मलचन्द्र पर ही विश्वास है।

"इस पर सब-जज ने हँसते हुए कहा, 'निर्मलचन्द्र आपके श्वसुर हैं। वह निष्पक्ष रहेंगे यह कहना कठिन है। साथ ही वह कानून नहीं जानते। इस प्रकार के दीवानी मुकदमे में, सालस बनने के लिये, यदि मैं दास बाबू का नाम सुझाव करूँ तो कैसा रहे ?' इस पर मोहन बोल उठा, 'हमें उन पर विश्वास नहीं। दास बाबू की पत्नी मोहिनी देवी कांग्रेस की प्रमुख नेत्री हैं और डॉक्टर राय भी कांग्रेस के आन्दोलन में कैद भोग कर आये हैं। मुझको राजनीतिक नेताओं की ईमानदारी पर विश्वास नहीं। ये राजनीतिक जीव न्याय, सत्य को राजनीति पर न्योछावर कर देते हैं।'

"तब जज महोदय ने कह दिया, 'दास बाबू राजनीति में किसी प्रकार की रुचि नहीं रखते और मुझको उनकी ईमानदारी पर पूरा विश्वास है। इस कारण आपको उनका नाम सालस के रूप में स्वीकार करने में संकोच नहीं करना चाहिए। इस पर भी यह आप लोगों के विचार करने की बात है। मैं दो सप्ताह का समय देता हूँ कि आप दास बाबू को अथवा किसी और को सालस नियुक्त कर, अदालत में प्रार्थना करें जिससे मुकदमे की लम्बी तारीख दी जा सके।'

"इसके पश्चात् दास बाबू ! मैं इनको बड़ी कठिनाई से समझाकर आपको सालस मानने के लिये तैयार कर लाया हूँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं तो यह समझा था कि आप मुझ पर विश्वास नहीं रखते। इन आपके भाई और भतीजों का मुझको ज्ञान नहीं। हाँ, आपको मुझ पर भरोसा करने में कोई कारण नहीं। सामलदास की घटना के उपरान्त आपने मुझ पर भरोसा किया, इससे मेरी आपके विषय में सम्मति सुधर रही है।"

"दास ! मैं जानता हूँ कि आपने मुझको उस मुकदमे में भारी हानि पहुँचाई है, पर आपकी कानूनी योग्यता का लोहा तो मैं मानता हूँ। मेरी स्थिति ऐसी है कि मैं किसी लम्बे मुकदमे में फँसना नहीं चाहता। इस कारण किसी कानून से अनभिज्ञ को सालस बनाकर मूर्खता करने के स्थान आपको सालस मानने की बुद्धिमत्ता करने को तैयार हो गया हूँ।"

इस पर दास ने सालसनामा लिख दिया। विमलानन्द ने टाइप किया और उस पर सबके हस्ताक्षर हो गये। इस सालसनामा की एक प्रति दास को दे दी गयी और एक प्रति निश्चित तिथि को अदालत में पेश कर दी गयी। साथ ही दास की सालस बनने की स्वीकृति भी अदालत में भेज दी गयी।

दास ने सातों व्यक्तियों से वचन ले लिये। सम्पत्ति की सूची बना ली और उस सब सम्पत्ति को किस प्रकार प्राप्त किया गया, लिख लिया। इसके साथ ही दास ने, कौन कितना चाहता है, यह भी लिख लिया।

डॉक्टर राय तो वर्तमान की अनिश्चित अवस्था में इतना आतुर हो चुका था कि वह अपने भाग को कम करने को भी तैयार था। दास की नीति यह थी कि वह सातों दावेदारों को पृथक्-पृथक् बुलाकर उनको दावे के विषय में कानूनी स्थिति बताता था और उनको समझाता रहता था।

इस प्रकार दो मास के प्रयत्न के उपरान्त दास ने अपना निर्णय लिख दिया। उसने पूर्ण सम्पत्ति का मूल्यांकन किया। इस पर सबको सहमत कराया। तदनन्तर उसने उस सम्पत्ति के बारह हिस्से स्वीकार कराये। दो-दो हिस्से तीनों भाइयों के और एक-एक हिस्सा उनके लड़कों का। शेष दो हिस्से लड़कों के बच्चे के। जब इस बात को सब दावेदार मान गये तो उसने निर्णय लिख दिया।

संयुक्त परिवार की व्याख्या करने में उसने दावेदारों के लड़कों का भाग भी स्वीकार किया। उसका कहना था कि एक संयुक्त परिवार में जिस समय कोई बच्चा पैदा होता है, उसी समय वह संयुक्त परिवार का सदस्य हो जाता है। जिस समय संयुक्त परिवार टूटता है, उस समय उसमें वे सब सदस्य, जो जीवित हैं, हिस्सेदार होते हैं।

अपने निर्णय में उसने इस विषय पर पूरी युक्ति और कानून का हवाला लिख दिया। जब इस निर्णय को सब दावेदारों ने स्वीकार कर लिया तो जज ने दास बाबू को इस परिवार के मुकदमेबाजी में नाश को प्राप्त होने से बचाने पर बधाई दी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तृतीय परिच्छेद

: १ :

सन् पैंतीस आया। 'गवर्नमेंट ऑफ इंडिया ऐक्ट, ब्रिटिश पार्लियामेंट ने पारित करदिया। तदुपरान्त यह भारत में लागू हुआ। इसके अनुसार निर्वाचनों की तैयारियाँ होने लगीं। कांग्रेस ने सन् १९३२ के आन्दोलन की असफलता देख पुनः कोई आन्दोलन आरम्भ करना उचित नहीं समझा। बिना इस बात का निश्चय किये कि कांग्रेस राज्य के नवीन ढंग को स्वीकार करती है, अथवा नहीं, वह निर्वाचन लड़ने के लिए तैयार हो गयी।

दास ने पैंतीस के विधान का कानूनी दृष्टि से अध्ययन किया। कलकत्ता की बार कौंसिल में उस पर एक भारी विवाद भी हुआ। कांग्रेस और उसी विचार के ही समाचार-पत्रों ने इसकी निन्दा की थी। मिस्टर दास का विचार था कि भारत की जनता को इसका स्वागत करना चाहिए। इसका प्रयोग करते हुए, इसमें सुधार लाने का यत्न करना चाहिए। बार कौंसिल में भी इसी आशय पर उसने बहस में भाग लिया था। दास का सन् पैंतीस के विधान को स्वीकार करने के पक्ष में व्याख्यान सबसे अधिक प्रभावशाली रहा। इस कारण विपक्षियों ने दास पर प्रश्नों की बौछार कर दी।

डॉक्टर राय, बार कौंसिल के एक पुराने सदस्य होने के नाते, विशेष निमन्त्रण पर, वहाँ आया हुआ था। प्रश्न करने वालों में प्रमुख था। डॉक्टर ने पूछ लिया, "क्या आप इसको पूर्ण स्वराज्य समझते हैं ?"

"नहीं, इस पर भी इसको १९१९ के कानून से बहुत अधिक अच्छा समझता हूँ। मैंने दोनों विधानों की तुलना कर, दोनों के गुणों को बताया भी है।"

"हमको पूर्ण स्वतन्त्रता को छोड़कर आधी प्राप्त करनी उचित है क्या ?"

"जो भी और जितना भी प्राप्त हो रहा हो, उसको अस्वीकार करना मैं मूर्खता ही मानता हूँ। इसका अनुभव हमको पहले भी हो चुका है। १९२१ में कौंसिलों का बहिष्कार किया गया था, परन्तु इसका अति कटु अनुभव हुआ था। यदि इस बार भी बहिष्कार किया गया तो अनुभव और भी कटु होगा।"

"इस विधान में सबसे दूषित बात राजाओं का भारत में अधिकार मानना है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"रियासतें एक-तिहाई भारत से अधिक हैं। उनका प्रतिनिधित्व भी तो होना चाहिए।"

"परन्तु राजा लोग उनका प्रतिनिधित्व नहीं करते।"

"तो क्या महात्मा गांधी करते हैं? देखिये डॉक्टर राय! इस समय वहाँ निर्वाचन का न तो प्रबन्ध है और न ही वहाँ की जनता अपने प्रतिनिधि चुनने की समझ रखती है। अतः वहाँ के राजा ही वहाँ के प्रतिनिधि होंगे। परन्तु यह सदा ऐसा ही नहीं रह सकता। जिस समय वे भारत के संयुक्त राज्य में सम्मिलित होंगे, उनकी इंग्लैंड के बादशाह से हुई संधियाँ स्वयंमेव रद्द हो जाएँगी। उनकी सेनाएँ भारत की सेना का अंग बन जायेंगी। प्रायः राजे हिन्दू हैं, अतः मुसलमानों की देशद्रोही प्रवृत्ति और भी दुर्बल पड़ जायेगी। भारत में देशभक्तों का इतना प्रबल संगठन बन जायेगा कि अन्तर्राष्ट्रीय तत्व उनके सामने नगण्य रह जायेंगे।"

इस समय एक अन्य ने पूछा, "इस विधान में देश में तीन गुटों की उपस्थिति मान ली गयी है। एक हिन्दू, दूसरे मुसलमान और तीसरे राजा लोग। ये तीनों तत्व परस्पर लड़ेंगे और देश में सिविल-वार हो जायेगी।"

"सिविल-वार की सम्भावना तो तब भी रहेगी, जब पूर्ण स्वराज्य मिलेगा। गृह-युद्ध होगा तो इस कारण नहीं कि १९३५ के विधान में राजा लोगों को भारत के राज्य में अधिकार मिले हैं। यह तो उस विघटनात्मक प्रवृत्ति का परिणाम होगा, जिसको कांग्रेस प्रोत्साहन देती रही है।"

"यह कैसे?"

"यह इस प्रकार कि १९१५ में कांग्रेस ने मुसलमानों का पृथक् प्रतिनिधित्व माना। १९२६ में सरकारी नौकरियों में मुसलमानों के लिए विशेष भाग माना। नार्थ वेस्ट-फ्रेंटीयर सीमा प्रान्त को और सिन्ध को पृथक् प्रान्त माना। इसके अतिरिक्त मुसलमान जनता से पृथक् तथा स्वतन्त्र रूप से सम्पर्क उत्पन्न करने के स्थान, मुस्लिम लीग की मार्फत उसके विषय में बात करना स्वीकार किया। मुसलमानों की साम्प्रदायिक तथा शुद्ध मज़हबी माँग, खिलाफत को कांग्रेस के कार्यक्रम में सम्मिलित किया। कराची कांग्रेस अधिवेशन के समय भारत के फैडरल स्टेट बनाने का प्रस्ताव किया। कांग्रेस ने ऐसी अनेक बातें की हैं, जिनसे वह मुसलमानों का देश पृथक् अस्तित्व मानती रही है और प्रान्तों के राज्य बनाने की प्रवृत्ति बना रही है।

"यदि कांग्रेस देश को और अधिक हानि नहीं पहुँचाना चाहती तो उसको १९३५ के इस विधान को मानकर अपनी भूलों को सुधारने का अवसर ढूँढ़ना चाहिए।"

"परन्तु कांग्रेस तो उनको भूल नहीं समझती?"

"तो ठीक है। इसको मैदान में आ जाना चाहिए और देश से अपने पक्ष में मत प्राप्त करना चाहिए।"

"परन्तु इस विधान के मानने से लाभ क्या होगा?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"प्रथम तो मुसलमान और राजा लोग कांग्रेस के साथ मिलकर काम करना सीखेंगे। द्वितीय, कांग्रेस नेता, जो राज्य करने के सर्वथा अयोग्य हैं, धीरे-धीरे राज्य-कार्य सीख सकेंगे।"

"तो आप कांग्रेस नेताओं को अयोग्य मानते हैं ?"

"अयोग्य न भी कहा जा सके तो भी उन्होंने अभी तक अपने को योग्य सिद्ध करने का कोई अवसर भी तो नहीं दिया। इस कानून से वे राज्य-कार्य चलाने का अनुभव प्राप्त कर सकेंगे।

"मैं तो यह मानता हूँ कि कानून भंग आन्दोलन में नेता वे लोग बने हैं, जो अधिक-से-अधिक बार कानून भंग करते रहे हैं। दूसरे शब्दों में नेता वे लोग बन गये हैं, जिनकी प्रवृत्ति में कानून भंग करना उपस्थित है। ऐसे लोग राज्य-कार्य चलाने के सर्वथा अयोग्य होंगे। इनको पहले अभ्यास करने के लिए यह आंशिक स्वराज्य स्वीकार कर लेना चाहिए। राज्य कानून चलाने के लिए होता है और कानून भंग करने की प्रवृत्ति वाले लोगों के हाथ में राज्य गया तो वे कानून की मिट्टी पलीद करके छोड़ेंगे।

"मुझको कुछ ऐसा समझ आता है कि कांग्रेसी नेता सीखना कुछ नहीं चाहते, परन्तु अधिकार में सब कुछ प्राप्त करना चाहते हैं।"

इस बहस की रिपोर्ट समाचार-पत्रों में छपी तो बंगाल भर में यह विवाद चल पड़ा कि १९३५ का विधान स्वीकार कर उसमें कार्य करना चाहिए अथवा नहीं।

कांग्रेस में विधान न स्वीकार करने वालों में से सबसे अधिक प्रभावशाली पंडित जवाहरलाल थे। १९३१-३२ के आन्दोलन के असफल होने से महात्माजी पंडितजी का विरोध करने के योग्य नहीं रहे थे। जनसाधारण में महात्माजी की धूम थी, परन्तु महात्माजी स्वयं अपने को पंडित जवाहरलाल के अनुगामी बना बैठे थे। पंडित जवाहरलाल न तो महात्माजी जैसी धार्मिक प्रवृत्ति रखते थे, न ही गांधीजी की आर्थिक नीति में विश्वास रखते थे। विदेश नीति में भी, महात्मा गांधी और पंडित जवाहरलाल में मतभेद था। इस पर भी महात्मा पंडित जवाहरलाल को गलत नहीं कह सके। जब-जब भी, उन दिनों किसी विषय पर मतभेद होता, महात्माजी पंडित जवाहरलाल के सम्मुख झुकते से प्रतीत होते।

इस बार भी पंडित जवाहरलाल की चल जाती। महात्मा गांधी तो उनका विरोध करने की क्षमता रखते नहीं थे; परन्तु वे लोग, जो प्रान्तीय विधान सभाओं में और केन्द्रीय सभा में स्थान पा गये, इस विधान की परीक्षा करने के पक्ष में थे।

कांग्रेस ने यह निश्चय किया कि वह अन्य प्रान्तीय विधान सभाओं और केन्द्रीय सभा के लिए अपने उम्मीदवार खड़े करेगी। इसका परिणाम यह हुआ कि वे लोग, जो उच्च आकांक्षाएँ रखते थे, कांग्रेसी अधिकारियों के दरवाजे खटखटाने लगे और कांग्रेस, जिनको उपयुक्त प्रत्याक्षी मानती थी, उनको उम्मीदवार खड़ा होने के लिए प्रोत्साहन देने लगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डॉक्टर राय बंगाल कांग्रेस कमेटी का प्रधान था। वह बंगाल निर्वाचन बोर्ड का भी प्रधान था। अतः जब कांग्रेस टिकट देने का विचार होने लगा तो मोहिनी का नाम भी ध्यान में आया, परन्तु वह टिकट के लिए प्रार्थी नहीं थी। इससे राय को अचम्भा हुआ। उसने कांग्रेस कमेटी के मंत्री सतीशचन्द्र घोष को कहा, "मोहिनीदेवी दास यदि उत्तरपाड़ा क्षेत्र में खड़ी हो जाएँ तो निश्चय ही जीत सकती है।"

"मैं समझता हूँ," मंत्री ने कह दिया, "मिट्टी के माधो को भी कांग्रेस का टिकट मिल गया तो वह भी सफल हो जायेगा। महात्मा गांधी और कांग्रेस का नाम बहुत प्रबल है।"

"इस पर भी कुछ योग्य लोग तो बंगाल विधान सभा में भेजने ही पड़ेंगे। मोहिनीदेवी सी योग्य वक्ता आपको मिलेगी नहीं।"

"उसका प्रार्थना-पत्र भी तो नहीं आया।"

"योग्य लोग प्रार्थना नहीं किया करते। उनको तो हमारी ओर से निमंत्रण जाना चाहिए।"

"तो आप उनसे टेलीफोन पर बात कर लीजिये।"

"नहीं, मेरे कहने से काम नहीं चलेगा। मेरी सम्मति मानिये। आप मिस्टर दास को टेलीफोन करिये और यह कहिये कि उत्तरपाड़ा की सीट हमने मोहिनी देवी के लिए खाली रखी हुई है। हमको वह सीट उन्हें देकर बहुत प्रसन्नता होगी। यह कहियेगा कि यदि वे आज्ञा दें तो हम मोहिनी देवी से निर्वाचन लड़ने की प्रार्थना करने आयेंगे।"

टेलीफोन किया गया और दास ने कह दिया, "इस विषय में मुझको कहने की आवश्यकता नहीं। आप सीधे मोहिनी देवी से बात कर सकते हैं।"

मंत्री सतीशचन्द्र ने कह दिया, "हम आपके अन्तरंग सम्बन्ध के विषय में नहीं जानते। यदि आपने मोहिनीजी को इतनी स्वतन्त्रता दे रखी है कि वे इतना बड़ा कार्य अपने पति की अनुमति के बिना निश्चय कर सकती हैं, तो यह जान हमें प्रसन्नता ही हुई है।

"मैंने तो मोहिनीजी की सेवा में उपस्थित होने से पहले आपको सूचना इस कारण दी है कि आपको परस्पर विचार-विमर्श करने का अवसर मिल सके।

"एक बात मैं और निवेदन करना चाहता हूँ। जब देश अपने योग्य सुपुत्र और सुपुत्रियों का आह्वान करे तो किसी को सेवा से इन्कार नहीं करना चाहिए। कांग्रेस के पार्लियामेंटरी बोर्ड ने मोहिनी देवी को देश की योग्य सुपुत्री समझकर ही यह निमंत्रण जारी किया है।

"हम आपसे आशा करते हैं कि आप मोहिनीजी को अपनी शुभ सम्मति से उत्साहित करेंगे और देश को उनकी योग्यता का लाभ उठाने के लिए सम्मति देंगे।"

"अच्छी बात है। मैं आपकी सम्मति पर विचार करूँगा। इस पर भी आपको यह जान लेना चाहिए कि अन्तिम निर्णय उनका ही है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो मैं कल किसी समय उपस्थित हो जाऊँगा।"

"किस समय ?"

"यदि उनको असुविधा न हो तो सायंकाल आठ बजे आ सकूँगा।"

"मैं कह दूँगा। इस समय तो वह घर पर नहीं हैं। यदि कल सायं आठ बजे का समय असुविधाजनक हुआ तो वे आपको फोन पर कह देंगी। आप नम्बर बता दीजिये।"

उसी रात भोजनोपरान्त दास ने मोहिनी को सतीशचन्द्र, प्रान्तीय कांग्रेस की कमेटी के मंत्री के संदेश के विषय में बता दिया।

"मेरा मन इस झंझट में पड़ने को नहीं करता। निर्वाचन लड़ा जायेगा। रुपया पानी की भाँति बहाया जायेगा और निर्वाचन होने के पश्चात् कौंसिलों का बहिष्कार कर दिया जायेगा।

"दोनों प्रमुख नेता, महात्मा गांधी और पंडित जवाहरलाल नेहरू तो अपना मत पहले ही बता चुके हैं। यह तानाशाहों की-सी नीति मुझको पसन्द नहीं।"

"तो ऐसा करो। निर्वाचन में कांग्रेस टिकट पर खड़ी हो जाओ और अपने क्षेत्र के लोगों को बता दो कि तुम तो सन् १९३५ के विधान पर अमल करने के लिए जा रही हो। तुम यत्न करोगी कि कांग्रेसी नेताओं को भी इसके लिए तैयार करोगी।"

"परन्तु यदि कांग्रेस ने यह निश्चय कर दिया कि कौंसिलों का बहिष्कार करना है तो फिर क्या होगा ?"

"फिर मोहिनी देवी को त्यागपत्र देना होगा। पहले कौंसिल से, पश्चात् कांग्रेस से और रिक्त स्थान पर स्वतन्त्र उम्मीदवार के रूप में पुनः खड़े होकर निर्वाचन लड़ा जायेगा।"

"बहुत धन व्यर्थ में जायेगा ?"

"नहीं मोहिनी ! निर्वाचनों का यह भी एक प्रयोजन है कि देश की वास्तविक राजनीतिक समस्याओं से लोगों को अवगत किया जाये। यदि तुम त्याग-पत्र देकर फिर स्वतन्त्र रूप में सफल हो गयीं तो कांग्रेस के मुख पर चपत लगेगी। तुम यह सिद्ध कर सकोगी कि कांग्रेस देश की वास्तविक प्रतिनिधि संस्था, विशेष रूप से इस विषय में नहीं है।"

मोहिनी इससे गम्भीर विचार में निमग्न हो गयी। उसने विचार कर कहा, "मैं केन्द्रीय असेम्बली की सदस्यता के लिये खड़ी हूँगी।"

"ठीक है।"

"खर्चा बहुत हो जायेगा।"

"चिन्ता नहीं। तुमको अपने विचारों के प्रचार और जनता पर उनकी परीक्षा का अवसर मिलेगा।"

: २ :

डॉक्टर राय मोहिनी को प्रसन्न करना चाहता था। अतः बिना इस बात की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परीक्षा किये कि मोहिनी चार आना वाली सदस्या भी है अथवा नहीं, उसको असेम्बली के निर्वाचन लड़ने के लिए कांग्रेस का टिकट मिल गया।

मोहिनी किसी की आपत्ति से बचने के लिये, टिकट प्राप्त करने और वचन-पत्र पर हस्ताक्षर करने से पूर्व अपने क्षेत्र में कांग्रेस की सदस्या बन गयी।

डॉक्टर राय मोहिनी के क्षेत्र के एक विभाग में से ही प्रान्तीय धारासभा के लिए प्रत्याशी बन गया। इस प्रकार वह मामूली खर्चा करने पर ही निर्वाचन जीतने के लिये अवसर पा गया। केन्द्रीय विधान सभा के पूर्ण क्षेत्र में पाँच प्रान्तीय धारासभा के क्षेत्र थे। इन पाँचों में कांग्रेस का प्रचार और सब कांग्रेस उम्मीदवारों का प्रचार मोहिनी के खर्चे पर होता था।

मोहिनी ने अपने क्षेत्र में पच्चीस हज़ार रुपया व्यय किया और स्वयं अपने पाँचों कांग्रेसी टिकट-धारियों सहित सफल हो गयी। डॉक्टर राय ने अपने निर्वाचन क्षेत्र में अपनी नीति बताते हुए कहा था कि वह तो पूर्ण रूप से कांग्रेस के आदेश को मानेगा। परन्तु मोहिनी सब स्थानों पर और अपने प्रचार साहित्य से यह घोषणा कर रही थी कि वह १६३५ के विधान की, पूर्ण न होते हुए भी, परीक्षा कर, उससे अधिक से अधिक लाभ उठाने के लिये, केन्द्रीय सभा में जा रही है।

इससे डॉक्टर राय को अन्य कांग्रेसी साथियों से कुछ कम मत मिले। मोहिनी के विरोध में एक स्वत्रंत उम्मीदवार था। उसकी जमानत जब्त हो गयी।

चुनावों में कांग्रेस को भारी सफलता मिली। जनसाधारण में यह धारणा बैठ गयी थी कि जो कुछ देश में अच्छी बात हो रही है, वह कांग्रेस के कारण हो रही है। इस ख्याति के भरोसे पंडित जवाहरलाल देश को अपनी ही दिशा में ले जा रहे थे। सन् १६३४ में वह यूरोप गये थे और वहाँ अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति सम्मेलन में श्री मैनन के साथ सम्मिलित हुए थे। बिना कांग्रेस अथवा देश को समझाये कि वे क्या कर रहे हैं, कांग्रेस का सम्बन्ध इस अन्तर्राष्ट्रीय संस्था से वह सम्बन्ध कर आये। यह अन्तर्राष्ट्रीय संस्था कम्युनिस्ट थी और यूरोप के प्रायः देशों के कम्युनिस्ट ही इसमें सम्मिलित थे।

इस प्रकार भारत की प्रमुख राजनीतिक संस्था बिना कम्युनिज़म को समझे, कम्युनिस्ट अन्तर्राष्ट्रीय संस्था से १६३४ में सम्बद्ध हो गई। महात्मा गांधी, या तो जवाहरलाल के इस षड्यन्त्र को जानते ही नहीं थे और यदि जानते थे तो इसकी भयंकरता को समझने की क्षमता नहीं रखते थे।

जनसाधारण तो महात्माजी का रामराज्य प्राप्त करने के लिये कांग्रेस को वोट दे रहा था, परन्तु महात्माजी की ख्याति के आश्रय अपने को ऊँचा करने वाले पंडित जवाहरलाल रामराज्य के स्थान पर राक्षस राज्य स्थापित करने की योजना बना रहे थे।

मोहिनी अपने निर्वाचन क्षेत्रों में यह कह रही थी—"कांग्रेस एक बार ऐसी ही भूल १६२१ में कर चुकी है और पीछे उसको पश्चात्ताप लगा था। अतः मैं आपको

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वचन देती हूँ कि भूल करने से रोकने के लिये मैं वहाँ जा रही हूँ।" स्वर्गीय चितरंजन दास की स्मृति को सामने रख, उसने वोट माँगे और वह सफल हुई। उसके साथ ही उसके प्रान्तीय क्षेत्र के पाँच प्रान्तीय सभा के उम्मीदवार भी सफल हुए।

निर्वाचनों के परिणाम घोषित हो जाने पर देश में सब कांग्रेसी सदस्यों का एक 'कन्वेन्शन' (सम्मेलन) बुलाया गया। उस सम्मेलन का यही विषय था कि १९३५ के इस विधान को रद्द किया जाये अथवा स्वीकार किया जाये।

मोहिनी जब इस सम्मेलन के लिए दिल्ली जाने लगी तो डॉक्टर राय ने उसके साथ चलने का कार्यक्रम बनाना चाहा। इस पर मोहिनी ने डॉक्टर राय को टालने के लिये कह दिया, "मेरा स्वास्थ्य ठीक नहीं। मैं कह नहीं सकती कि जा सकूँगी अथवा नहीं।"

"परन्तु मोहिनी देवी! तुम तो सब कांग्रेसियों के सामने यह प्रस्ताव रखना चाहती हो न, कि कौंसिलों में जाया जाए और इसका पूर्ण लाभ उठाया जाये।"

"ठीक है, परन्तु स्वास्थ्य ठीक होने पर ही तो यह हो सकेगा।"

निराश हो डॉक्टर राय ने अपने लिये सीट बुक करा ली। परन्तु दिल्ली जाकर उसको पता चला कि मोहिनी वहाँ पहले ही पहुँची हुई है। डॉक्टर राय कन्वेन्शन में पहुँचा तो मोहिनी को वहाँ बैठे देख चकित रह गया। वह पंजाब से निर्वाचित सदस्या श्रीमती पार्वती देवी के साथ बैठी थी।

कन्वेन्शन के प्रथम अधिवेशन में कांग्रेस के कुछ प्रमुख नेताओं ने विधान के बहिष्कार की व्याख्या कर दी। उनका कहना था, "हमने २६ जनवरी १९३० को कसम खायी थी कि हम पूर्ण स्वराज्य लिये बिना साँस नहीं लेंगे। यह हमारे ही प्रयत्नों का फल है कि हम स्वराज्य की इस मंज़िल पर पहुँचे हैं। अब तो एक अन्तिम यत्न करना ही शेष है। आओ, सब मिलकर जोर लगा दें और अन्तिम मंज़िल को पार कर लें। यह अन्तिम यत्न यही है कि इस विधान का, जो अत्यन्त भयंकर है, बहिष्कार करें। 'जानबुल' घुटनों के बल आ गया है। थोड़ा धक्का और दें, तो वह धाराशायी हो जायेगा।"

तालियों की गूंज में प्रवक्ता का प्रवचन समाप्त हुआ और फिर एक के पश्चात् दूसरा वक्ता उठ-उठकर नेताओं का समर्थन करने लगा। बंगाल के प्रवक्ताओं में डॉक्टर राय ने भी सर्मथन किया।

इस समय मोहिनी देवी ने अपना नाम लिखकर प्रधान के पास भेज दिया कि वह इस विचार का खण्डन करना चाहती है, जो अभी तक व्यक्त किया जा रहा है।

इस समय तक साढ़े बारह बज चुके थे। प्रधान ने मोहिनी देवी की चिट को पढ़ा और घड़ी में देख कह दिया, "मैं पाँच मिनट मोहिनी देवी को, जो उत्तरपाड़ा निर्वाचन क्षेत्र से केन्द्रीय असेम्बली के लिए निर्वाचित होकर आयी हैं, अपनी बात कहने के लिए देता हूँ।"

मोहिनी देवी उठकर मंच पर आ गयी। उसने कह दिया, "मैं अपनी बात तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पीछे कहूँगी। पहले मैं प्रधान महोदय से यह पूछना चाहती हूँ कि नौ बजे से साढ़े बारह बजे तक अयुक्ति-संगत, ऐतिहासिक दृष्टि से असत्य और देश की आवश्यकताओं से अनभिज्ञता की बातें वक्ता कहते रहे हैं, उनका खण्डन करने के लिये पाँच मिनट वे कैसे पर्याप्त समझते हैं ? यदि वे समझते हैं कि सदस्यों की भूख लगी है तो उनको लंच की छुट्टी दे दी जाये और यह कार्य लंच के पश्चात् ले लिया जाये।"

इस पर एक सदस्य ने कह दिया, "श्रीमती जी अपनी बात कहें। हम दूसरों पर लांछन सुनने नहीं आये।"

"यही तो मेरी बात है कि जो कुछ आप सुनने आये हैं, वह सुनना नहीं चाहते। जो वस्तु आपके मस्तिष्क में पहले डाल दी गई, वह घर से ही सुनकर आये थे।

"मैं तो यह समझती हूँ कि एक पक्ष के उपस्थित करने के लिये साढ़े तीन घंटे का समय पाँच वक्ताओं को दिया गया। प्रत्येक को एक बात ही बार-बार दुहराने के लिये आधा घंटा से कम नहीं दिया गया। अब जो व्यक्ति उनकी बातों को असंगत, असत्य, अनुचित और अनर्थकारी सिद्ध करना चाहता है, उसको पाँच मिनट ?

"मैं तो तब ही अपनी बात कहूँगी, जब मुझको कम-से-कम आधा घंटा अपनी बात कहने के लिए दिया जायेगा। मैं चाहती हूँ कि प्रधान महोदय मुझको लंच के बाद ही समय दें। मैं, जो बातें और जो योजना उपस्थित की गयी है, उसका घोर विरोध करने के लिये समय चाहती हूँ।

"मिस्टर प्रेज़िडेन्ट ! आप मुझको समय देंगे क्या ? यदि नहीं तो मैं आज ही वापस जाना चाहती हूँ। मैं मन में यह समझकर जाऊँगी कि एक-दो व्यक्तियों द्वारा पूर्व निश्चित बात के ऊपर हमारी मुहर लगाने के लिये यह सब आडम्बर किया जा रहा है।"

इस पर मिस्टर प्रेज़िडेंट ने उठकर कहा, "मैंने पाँच मिनट का समय इस कारण दिया था कि यहाँ पर कोई व्यक्ति नहीं है, जो देवीजी का समर्थन करेगा।"

पिछली बेंचों से 'येस ! येस ! ! हम सुनना चाहते हैं।' की आवाज़ें आयीं। इस पर एक अन्य नेता खड़े होकर कहने लगे—"कांग्रेस कमेटी का निश्चित कार्यक्रम ही यहाँ-पास किया जा सकता है ?"

यह बात डॉक्टर राय को भी पसन्द नहीं आयी। उसने उठकर कहा, "मैंने अभी ही कांग्रेस के मत का समर्थन किया है, परन्तु इसका मतलब यह नहीं कि यदि कोई उसके विपरीत अपनी ईमानदारी से सम्मति देना चाहता है, तो वह सुनी भी न जाये। यदि बिना डेलिगेटों की बात सुने, आपने अपनी नीति यहाँ चलानी है तो फिर हमें बुलाने की क्या आवश्यकता थी ? आप आज्ञा भेज देते और हम महाराजाधिराज की आज्ञा का पालन कर देते।"

इस पर कुछ अन्य सदस्य भी कहने लगे—"हम कौंसिलों के बहिष्कार के विरुद्ध हैं। हम इस प्रतीक्षा में थे कि प्रधानजी के पास पहले पहुँचे नामों की सूची समाप्त हो जाए, तब हम बोलेंगे।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विवश हो प्रधान को वह अधिवेशन बन्द कर लंच के लिये छुट्टी करनी पड़ी। मोहिनी देवी को आश्वासन दिया गया कि उसको उचित समय अपने पक्ष का समर्थन करने के लिये दिया जायेगा।

मोहिनी देवी जब पंडाल से निकल रही थी तो डॉक्टर राय उसके साथ-साथ होकर पूछने लगा, "आप कब आयीं ?"

"मैं आज प्रातः हवाई जहाज से यहाँ पहुँची।"

"कहाँ ठहरी हैं ?"

"मेडन होटल में। मिस्टर दास भी साथ हैं।"

"ओह !" इस समय तक वे पंडाल से वाहर आ गये थे। इस समय एक दुबला-पतला पहाडी आकृति का व्यक्ति मोहिनी देवी के पास आया और बोला, "प्रधानजी की इच्छा है कि वे आपसे लंच के समय वास्तविक समस्या पर विचार करना चाहते हैं। आप उनके साथ लंच लेने की कृपा करेंगी क्या ?"

मोहिनी ने सतर्क उत्तर दिया, "मैंने लंच अपने पति के साथ लेने का निश्चय किया हुआ है। मुझको अत्यन्त हर्ष होगा यदि प्रधान महोदय मेरी मोटर में, मेरे साथ लंच लेने की कृपा करेंगे। यदि वे चाहें तो हम लंच के पश्चात् कुछ काल तक एकान्त भी पा जायेंगे।"

वह दुबला-पतला व्यक्ति यह कह, "अभी आप जाइयेगा नहीं मैं प्रधान, महोदय का उत्तर लाकर देता हूँ।" चला गया।

मोहिनी का उत्तर सुन डॉक्टर राय ने कह दिया, "ऐसा प्रतीत होता है कि प्रधान महोदय आप की वाक्शक्ति का रसास्वादन कर आपकी संगत का भी रसास्वादन करना चाहते हैं।"

"आप सबको अपने जैसा ही बेहूदा समझते हैं क्या ?"

"नहीं देवीजी !" डॉक्टर राय ने मुस्कराते हुए कह दिया, "सब संसार आपको उतना ही आकर्षण-युक्त समझता है, जितना मैं समझता हूँ।"

"मेरा विचार है कि आप महा खुशामदी और अनृत भाषी हैं।"

इस समय दास मोहिनी को ढूँढ़ता हुआ वहाँ आ गया। "मोहिनी !" उसने आते ही कहा, "अभी शारदाचरण कह रहा था कि तुमने लंच के बाद भाषण देना है, जिसको सुनने के लिये प्रायः सब सदस्य उत्सुक प्रतीत होते हैं। इससे मैं कहता हूँ कि अब हमें लंच के लिये चल देना चाहिए जिससे हम समय पर लौट सकें।"

"मैंने एक अन्य सज्जन को लंच का निमन्त्रण दे दिया है। उनसे उत्तर की प्रतीक्षा में हूँ।"

दास चुप कर गया। इस पर डॉक्टर राय ने कह दिया, "मोहिनी देवी ! मैं आपको रात के डिनर पर अपने यहाँ आमन्त्रित करता हूँ।"

इस पर दास बाबू ने कहा, "आज रात को हम फेडरल कोर्ट के चीफ जस्टिस सर मौरिस ग्वायर के यहाँ डिनर पर जा रहे हैं। कल रात यदि आप मेडन होटल में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आने का कष्ट करें तो हमको अति प्रसन्नता होगी।"

सर मौरिस ग्वायर का नाम सुन डॉक्टर चुप कर गया। इस पर मोहिनी देवी ने कह दिया, "तो यह निश्चय रहा कि कल डॉक्टर राय हमारे साथ डिनर लेंगे।"

डॉक्टर राय इन्कार नहीं कर सका। इस समय कन्वेन्शन के प्रधान लम्बे-लम्बे पग उठाता हुआ वहाँ आ पहुँचा और मोहिनी से हाथ मिलाकर कहने लगा, "मेरा लंच किसी अन्य के साथ था, परन्तु आपसे अत्यावश्यक विषय पर बात करनी है। इस कारण वहाँ से अपनी 'एन्गेजमेंट' कैन्सिल' कर आपका निमन्त्रण स्वीकार कर रहा हूँ।"

"तो आइये।" दास ने कह दिया।

प्रधान ने इस कहने वाले की ओर प्रश्नभरी दृष्टि से देखा तो मोहिनी ने परिचय करा दिया, "मेरे पति मिस्टर विपिनविहारी दास, ऐडवोकेट कलकत्ता हाई-कोर्ट।"

"ओह!" प्रधान ने हाथ मिलाया और उनके साथ चल पड़ा। डॉक्टर राय वहाँ ही खड़ा रह गया।

: ३ :

"देखिए मोहिनी देवी! मैं आपमें यह विद्रोह की भावना देखकर बहुत प्रसन्न हुआ हूँ। परन्तु यह भावना तो यहाँ के विदेशीय राज्य के प्रति होनी चाहिए, अपने नेताओं के प्रति नहीं।"

"मेरी बात आपको किस नेता के प्रति विद्रोह समझ आया है?"

लंच के पश्चात् मोहिनी और प्रधान के भीतर उस कमरे में बैठ, बात होने लगी थी, जो दास ने अपने रहने के लिये ले रखा था।

"आप आज के वक्ताओं की बात को अयुक्तिसंगत, असत्य और असंगत तथा अनर्थकारी बता रही हैं न? यह विरोध नहीं है क्या?"

"नहीं, यह मतभेद है। हम प्रजातन्त्रात्मक पद्धति को स्वीकार करने वाले भला मतभेद प्रकट करने से कैसे मना किये जा सकते हैं?"

"हमने इस विषय पर वर्किंग कमेटी में बहुत खुलकर बात भी की है।"

"की होगी। मैं तो उसमें हूँ नहीं। मैं भी खुलकर बात करना चाहूँगी।"

"देखिये, महात्मा गांधी इस प्रकार के अधूरे और दूषित स्वराज्य का मानने के विरुद्ध हैं। हम उनकी बात का विरोध नहीं कर सकते।"

"यह मैं गांधीजी की वैसी ही भूल समझती हूँ, जैसी उन्होंने १९२१ में की थी।

"क्या भूल की थी?"

"खिलाफत के मसले को हिन्दुस्तान की माँग बनाकर, तथा कौंसिलों का बहिष्कार करके।"

"उस समय यही उचित था।"

"मैं समझती हूँ कि वह नितान्त भूल थी। उसका फल यही हुआ कि देश में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अधिक साम्प्रदायिक प्रवृत्तियाँ उभर आयी हैं और उनके सम्मुख आप राष्ट्रीय प्रवृत्तियों को दबाने पर विवश हो गये हैं।"

"कैसे दबाया है?"

"कोहाट के दंगे के पश्चात् गांधीजी मुसलमानों का उस दंगे में दोष देखते हुए भी मुसलमानों के स्थान हिन्दुओं को कोसने लगे थे।"

"आप कैसे जानती हैं कि हिन्दू दोषी नहीं थे?"

"उस जाँच कमेटी की रिपोर्ट से, जो गांधीजी ने स्वयं इस कार्य के लिये नियुक्त की थी।"

"वह रिपोर्ट एक पक्षीय थी।"

"आप और गांधीजी घर बैठे जान गये थे? जो स्थान पर जाकर पता कर आये थे, वे एकपक्षीय हो गये और जो इक्कीस दिन तक खाट पर लेटे, व्रत कर रहे थे, वे सर्वपक्षीय हो गये। देखिये श्रीमान्! मैं उनकी वह महान् भूल समझती हूँ और जो वे अब कर रहे हैं, वह भी वसी ही भूल है।"

"यदि भूल थी तो सफलता क्यों मिल रही है?"

"सफलता मिल रही है भारतवासियों को धोखा देने में। वस्तुतः यह सफलता गांधीजी के आन्दोलनों के फल में नहीं है। जैसे आपने अपने आज के भाषण में दो परस्पर-विरोधी बातें कहकर सदस्यों के मनोद्‌गारों को उभारने का यत्न किया है, वैसा ही आप लोग पग-पग पर गलत बात कर, जनता को भ्रम में डालते रहते हैं। यह जो कुछ मिला है, आपके प्रयत्न का फल नहीं है। यह तो नरम दल के कुछ सदस्य जो तीनों राउंड टेबल कान्फ्रेंस में डटकर इंच-इंच भूमि के लिये लड़ते रहे हैं, उनके प्रयत्नों का फल है। आपने इसके सिवाय और किया भी क्या है कि जो वास्तविक स्वराज्य निर्माण कर रहे थे, उनको देश में बदनाम कर अपने को, जो विघटनात्मक कार्य के अतिरिक्त कुछ करना जानते ही नहीं, नेता बनाते रहे हैं।

"देखिये! आपने एक ओर तो यह कहा कि यह जो कुछ मिला है कांग्रेस की वहिष्कार नीति का फलस्वरूप है और अगले ही साँस में यह कह दिया कि यह भयंकर विधान जो बना है, देश के लिये घातक होगा।"

"इसमें परस्पर-विरोधी बात क्या है?"

"मैं समझती हूँ कि आप मेरी बात को ध्यान से सुन नहीं रहे। आपने कहा है कि यह विधान अति भयंकर है। फिर कहा है कि यह आपके प्रयत्नों का फल है। तो आप भयंकर विधान बनाने में सफल हुए हैं न?"

इस समय प्रधान महोदय को निरुत्तर होते देख दास, जो दोनों में यह वाक् युद्ध होते सुन रहा था, बोला, "देखिये! मैं इस हस्तक्षेप के लिये क्षमा चाहूँगा। परन्तु श्रीमान्‌जी से यह जानना चाहता हूँ कि इसमें भयंकरता क्या है?"

"मुसलमानों का सेपरेट रिप्रिज़ेंटेशन (पृथक् प्रतिनिधित्व) इसमें भी है।"

"यह तो आपने ही माना था। आपने लखनऊ में इसको माना था। इसके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपरान्त आपने तो नौकरियों में भी मुसलमानों के लिये पृथक् प्रतिनिधित्व स्वीकार किया था। अब आप इसको भयंकर कैसे कहते हैं ?"

"यह कांग्रेस में हमारे पूर्वजों की भूल थी।"

"नौकरियों के लिये आपके पूर्वजों ने इसको स्वीकार किया था।"

"वह काल गया।"

"परन्तु आप तो कांग्रेस में अभी भी मुसलमानों के साथ विशेष व्यवहार के पक्ष में हैं ?"

"यह गलत है।"

"गलत तो नहीं। आप जमीयतुल-उलेमा के सदस्यों को कांग्रेस में पदाधिकारी बनने से मना नहीं कर रहे। इसके विपरीत हिन्दू महासभा इत्यादि हिन्दू संस्थाओं के सदस्यों के लिये कोई पद प्राप्त करने पर बैन (रोक) लगाये हुए हैं।

"पंडित मदनमोहन मालवीयजी हिन्दू महासभा के स्थापित करने वालों में हैं। यद्यपि १९३० और फिर १९३२ में वे आपकी सहायता के लिये आगे आते रहे। आप मुल्ला-मौलानाओं को तो अपना प्रधान पद दे सकते हैं, परन्तु उनके लिये आपने कभी यत्न तक नहीं किया।"

"खैर, हम असली बात से तो भटक गये हैं। इस विधान में राजाओं को जो अधिकार मिल गया है, वह हम पसन्द नहीं करते।"

"क्या दोष है उनमें ? वे तो आपका राउंड टेबल कॉन्फ्रेंस में समर्थन करते रहे हैं। उनमें से एक की तो गोलमेज़ कॉन्फ्रेंस में आपकी बात का समर्थन करने के कारण अपनी राज्यगद्दी छूटने वाली थी।"

"क्या बात कर रहे हैं आप ? उस राजा का तो नाम भी लेना, जबान को गन्दा करना है।"

"मौलाना मुहम्मदअली इत्यादि से भी अधिक ?"

"देखिये, मैं मोहिनी देवीजी से कह रहा हूँ कि सबकी एक आवाज़ होनी चाहिए। मामूली-सी बातों में बहस आरम्भ कर देने से हमारे शत्रुओं का साहस बढ़ जायेगा और जो भी रियायत हमको मिल रही है, वे उससे भी हाथ खींच लेंगे।"

अब फिर मोहिनी ने बातचीत का सूत्र अपने हाथ में ले लिया और कहने लगी, "आपकी बात कि हमको एक आवाज़ हो बात करनी चाहिए, ठीक ही प्रतीत होती है, और इसीके लिये अर्थात् आवाज़ एक करने के लिये ही तो यह कन्वेन्शन बुलाई गयी है। इसमें जो पक्ष ठीक है, उसको सब स्वीकार कर लें तो आवाज़ एक हो सकती है। अतः यदि बहुमत ऐसा हो कि विधान का प्रयोग करना है, तो आप भी मान जाइये।"

प्रधान महोदय हँस पड़े। हँसकर उन्होंने कह दिया, "बहुमत हमारे पक्ष में ही होगा।"

"तब तो ठीक है। मैं आपकी बात मान जाऊँगी।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं तो इसलिये यहाँ आया था कि 'सेशन' में बहस के विना ही आप समझ लें कि आपका पक्ष दुर्बल है।"

"सो तो मैं समझी नहीं ?"

"अर्थात् आपको नेताओं पर श्रद्धा नहीं रही।"

"हाँ ! अन्ध-श्रद्धा नहीं रही। यदि उन्होंने पहले भूलें न की होतीं तो श्रद्धा बनी रहती, परन्तु सन् १९२० से लेकर आज १९३७ तक, वे बीसियों भयंकर भूलें कर चुके हैं। इस कारण मुझे उन पर अन्ध-श्रद्धा नहीं रही। अब आपकी प्रत्येक बात को स्वीकार करने से पूर्व हम विचार कर समझ लेना आवश्यक मानते हैं।"

प्रधान महोदय उठ बैठे और क्रोध के कारण बिना कुछ कहे, कमरे से बाहर की ओर चल पड़े। दरवाज़े के पास पहुँचकर एकाएक ठहरे और घूमकर कहने लगे, "तो आप नहीं मान रहीं ?"

"मानने से पहले मैं समझना चाहती हूँ। आप समझा नहीं सके। देखिये, रियासतों के प्रतिनिधि आज तो राजा हैं, परन्तु शीघ्र ही वे भी निर्वाचन से चुने जाने वाले हो जायेंगे। विकास की प्रक्रिया सब स्थानों पर चल रही है। रियासतें इससे बची नहीं रह सकतीं। आप यदि इनसे सहानुभूति का व्यवहार करेंगे तो ये लोग भारत के लिये एक महान् शक्ति का स्रोत बन जाएँगे और फिर अराष्ट्रवादी मुसलमानों के मुकाबिले में आपका साथ देंगे ?"

"मैं तो इनका बीज नाश कर दूँगा।"

"तो करिये।" साथ ही मोहिनी ने कलाई पर बँधी घड़ी देखकर कहा, "अब हमको चलना चाहिए। ढाई बज रहे हैं।"

"हाँ।"

इस पर दास ने उठते हुए कह दिया, "चलिये, मैं आपको छोड़ आता हूँ।"

"तो आप अपनी गाड़ी लेकर यहाँ आये हुए हैं ?"

"नहीं, हम आये तो हवाई-जहाज़ से थे। यहाँ होटल से यह गाड़ी भाड़े पर ले ली है। तीस रुपये नित्य मोटर-भाड़ा देना पड़ता है। पैट्रोल इत्यादि अपने पास से डलवाना पड़ता है।"

सम्मेलन में मोहिनी ने विरोध आरम्भ किया। पौन घंटा वह बोली और सबके सब डेलिगेट मन्त्र-मुग्ध हो उसकी युक्तियाँ सुनते रहे। परन्तु जब मोहिनी ने सत्याग्रह आन्दोलनों की निरर्थकता पर कहा तो लोग "नो ! नो !!" कह उठे। इस पर मोहिनी ने सुधारों का पूरा इतिहास सुना दिया। १९०१, १९०९ और १९१९ के सुधार और उनकी व्याख्या कर दी। साथ ही यह कहा, "इन सब सुधारों में महात्मा गांधीजी के सत्याग्रह आन्दोलन का हाथ नहीं हो सकता। १९१९ के पश्चात् स्वाभाविक रूप में सुधार १९२९ में होने चाहिए थे, परन्तु हमारे सत्याग्रह आन्दोलनों ने इनको १९३५ तक स्थगित कर दिया है और अब भी हम अपनी मिथ्या युक्तियों से इसको और अधिक काल तक स्थगित करने जा रहे हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसके उपरान्त मोहिनी ने कांग्रेस के अतिरिक्त देश में अन्य शक्तियों का उल्लेख किया और बताया कि उनका प्रभाव किस दिशा में हो रहा है। उसने कहा—"यह मानना मिथ्या अभिमान है कि हम ही इस देश के रखवाले रह गये हैं और हमारे बिना दूसरों के प्रयत्न व्यर्थ हैं।

"मैं यह चाहती हूँ कि हमारा 'प्रोग्राम' ऐसा होना चाहिए कि क्रान्तिकारी, हम और नरम दल के लोग, सब अपने-अपने ढंग से कार्य करते चले जायें। हम एक-दूसरे की निन्दा करने के स्थान अपने लक्ष्य की ओर बढ़े चलें।

"परमात्मा ने निर्वाचनों में अभूतपूर्व सफलता हमको प्रदान की है। हमको असेम्बलियों में जाकर अपने अधिकारों का प्रयोग कर, देश की अवस्था सुधारने का यत्न करना चाहिए।"

मोहिनी के कथन के उपरान्त बोलने वाले सभी वक्ता मोहिनी का समर्थन करते गये। सायंकाल जब अधिवेशन समाप्त हुआ तो सब सदस्यों को यही प्रतीत होने लगा था कि कौंसिलों में जाकर कार्य करने का निर्णय हो जायेगा।

दूसरे दिन एकाएक एक समझौते का प्रस्ताव उपस्थित हो गया। वह यह था कि प्रान्तीय कौंसिलों में जाकर, उनके कार्य को चलाने का यत्न किया जाए। इसमें गवर्नर जनरल से यह आश्वासन ले लिया जाये कि प्रान्तों के गवर्नर कौंसिलों के काम में हस्तक्षेप नहीं करेंगे। केन्द्रीय कौंसिलों का बहिष्कार किया जाये।"

इस समझौते के प्रस्ताव के पक्ष में सब प्रान्तीय कौंसिलों के निर्वाचित सदस्य, हो गये। उनको भय लग गया था कि यदि उन्होंने समझौता स्वीकार न किया तो कहीं प्रान्तीय कौंसिलों का भी केन्द्रीय कौंसिल की भाँति बहिष्कार न हो जाए।

अतः मोहिनी का प्रस्ताव रद्द हो गया। समझौते का प्रस्ताव बहुमत से स्वीकार हो गया। तदुपरान्त गवर्नर जनरल से इस बात का आश्वासन लेने का यत्न आरम्भ हो गया कि प्रान्तीय गवर्नर कौंसिलों के काम में हस्तक्षेप नहीं करेंगे।

यह आश्वासन मिला और प्रान्तीय मन्त्रिमण्डल बन गये।

: ४ :

मोहिनी ने अपने क्षेत्र में प्रायः सब वोटरों को इस बात से सूचित कर दिया कि वह कांग्रेस की इस नीति से सहमत नहीं कि केन्द्रीय कौंसिलों का बहिष्कार किया जाये। उसने अपनी विज्ञप्ति में, अपने पक्ष में युक्तियाँ दीं और इसके न स्वीकार होने से होने वाली दुर्घटना का उल्लेख किया।

इस विज्ञप्ति के उपरान्त मोहिनी ने अपने निर्वाचन क्षेत्र में कई जलसे किये। उनमें उसने स्वयं उपस्थित होकर अपने मत का प्रतिपादन किया। जब उसके विचार सब पर स्पष्ट हो गये तो मोहिनी ने कौंसिल की सदस्यता से और कांग्रेस दल से त्याग पत्र दे दिया। इस त्याग-पत्र देने पर तो देश भर में, विशेष रूप में बंगाल में भारी चर्चा चल पड़ी। इस चर्चा के दो पक्ष हो गये। एक कांग्रेस के व्यवहार को ठीक बताता था और दूसरा पक्ष इसको देश के साथ द्रोह कहता था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस समय सरकार की ओर से उत्तरपाड़ा क्षेत्र को रिक्त घोषित कर दिया गया और नव-निर्वाचनों का कार्यक्रम बन गया। मोहिनी ने स्वतन्त्र रूप में निर्वाचन लड़ने की घोषणा कर दी। उसने अपने नामज़दगी के पर्चे दाखिल किये और क्षेत्र में काम करने लगी।

बंगाल कांग्रेस कमेटी ने एक नवयुवक को मोहिनी के विरोध में खड़ा कर दिया। मोहिनी ने इस बार अपने क्षेत्र में घर-घर पहुँचकर, अपने कांग्रेस से त्याग-पत्र देने का अभिप्राय समझाया। इस बार विज्ञापन, प्रचार-साहित्य और एजेण्टों ने बहुत काम किया। मोहिनी पहले से भी अधिक मतों से निर्वाचित हो गयी।

इस नव-निर्वाचन में डॉक्टर राय और अन्य चारों प्रान्तीय धारासभा के सदस्यों ने मोहिनी के विरुद्ध कार्य किया। वे कांग्रेस के उम्मीदवार के लिये कार्य कर रहे थे, परन्तु मोहिनी के पक्ष में सी० आर० दास तथा अन्य स्वराजिस्ट नेताओं के वक्तव्य थे। वे वक्तव्य विस्तार से लोगों को बताये गये। उनमें वह स्पष्ट किया गया कि कांग्रेस, कौंसिलों का बहिष्कार कर भूल कर रही है।

मोहिनी का इस चुनाव में चालीस हज़ार रुपया व्यय हुआ। मतगणना के उपरान्त मोहिनी के गृह पर निर्वाचन क्षेत्र के प्रमुख सहायक और कांग्रेस विरोधी तक मोहिनी को बधाई देने एकत्रित हो गये।

डॉक्टर राय भी बधाई देने आया। मोहिनी बहुत से लोगों से घिरी हुई अपनी कोठी के ड्राइंग-रूम में बैठी हुई थी। डॉक्टर राय ने आते ही कह दिया, "मोहिनी देवी! बहुत-बहुत बधाई हो।"

"हाँ, ईश्वर का धन्यवाद है कि जनता ने मेरे विचारों का समर्थन किया है।"

"आपके निर्वाचन-क्षेत्र के अधिकांश मतदाताओं ने आपके विचार को स्वीकार किया है, परन्तु वे बेचारे प्रायः अनपढ़ और निर्धन लोग हैं। आपके धन ने उनको आपके अनुकूल विचार करने पर विवश कर दिया है।"

"ओह!" मोहिनी को इस आक्षेप के पीछे किसी प्रकार से छिपे षड्यन्त्र का आभास हो गया। इस पर भी उसने मुस्कराते हुए कहा, "ठीक है। कांग्रेस क्षेत्रों में तो प्रायः सब पढ़े-लिखे और धनी मतदाता ही होते हैं।

"देखिये डॉक्टर साहब! आपके विचार के लोग क्या कहते हैं? 'वंग वाणी' समाचारपत्र से आपका घना सम्बन्ध है। वह लिखता है—'हमको खेद से लिखना पड़ता है कि मोहिनी देवी का प्रबल प्रचार, उसके क्षेत्र के मतदाताओं को मूर्ख बनाने में सफल हुआ है।'

"और यही बात आप कह रहे हैं। हाँ, आप समाचारपत्र से भी एक पग और आगे चले गये हैं। आपने प्रचार के स्थान पर धन कह दिया है।"

"जितना कांग्रेस का देश में प्रचार है, उसको देखते हुए ही समाचारपत्र ने यह लिखा है और मैंने यह बात कही है। खैर! मैं तो केवल आपको बधाई देने आया था।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"इसके लिये धन्यवाद।"

"परन्तु अगले चुनावों में हम आपको सफल होने नहीं देंगे।"

"डॉक्टर राय ! इस बार भी तो आपने कुछ कम नहीं किया।"

अन्य उपस्थित लोग हँसने लगे। मोहिनी देवी ने यह बात बदलने के लिये, बैरा को, जो बधाई देने वालों को चाय आदि पिला रहा था, पुकारकर कहा, "विनय ! डॉक्टर साहब को भी चाय पिलाओ न।"

इसी रात मोहिनी ने अपने पति से कहा, "आपने रुपया पानी की तरह बहाकर मुझको सफल तो बना दिया है, परन्तु मुझको ऐसा प्रतीत होता है कि डॉक्टर राय इत्यादि परेशान करने की योजना बना रहे हैं।"

"कैसे जाना है ?"

"डॉक्टर राय आये थे और उनकी बातों से यह प्रतीत होता था कि वे इस अपनी सफलता पर ताव खा रहे हैं।"

"देखो मोहिनी ! मैंने तो यह सब धन इस कारण व्यय कर दिया है कि कांग्रेस के प्रचार का थोथापन सिद्ध कर दूँ। इस आयोजन में यह धन और तुम साधन बन गयी हो। यदि अब 'परेशानी' हुई तो मेरे उद्देश्य, अर्थात् कांग्रेस के सिद्धान्तों के थोथापन को और अधिक प्रकट करने का एक अन्य अवसर मिल जाएगा।"

"इस व्यर्थ की सी बात के लिये आपके गाढ़े पसीने की कमाई बहती देख, मुझको बहुत दुःख हो रहा है।"

दास हँस पड़ा। हँसकर उसने कहा, "इतने से व्यय से मेरा दिवाला नहीं निकलने वाला। यह राजसी कार्य है। इसमें धन तो खर्च होता ही है। बात यह है कि भ्रामक-प्रचार से कांग्रेस ने देश में एक मिथ्या वातावरण बना दिया है। उसमें वे लोग, जो देश में वास्तविक कार्य कर रहे हैं, धकेलकर दीवार के साथ कर दिये गये हैं। जो लोगों को भड़का कर, उनके मनोद्गारों को उभारकर, पागल बनाने की क्षमता रखते हैं, वे नेता बन रहे हैं। इससे देश का कल्याण होने वाला नहीं है।"

"कौन हैं वे, जो देश के लिये वास्तविक कार्य कर रहे हैं ? कम-से-कम मैं तो नहीं हूँ।"

दास हँस पड़ा। मोहिनी विस्मय में अपने पति का मुख देख रही थी। दास ने कहा, "कम-से-कम तुमने एक सेवा तो की है। दो लाख मतदाताओं के कान में तुमने यह संदेश पहुँचा दिया है कि बहिष्कार निर्माण कार्य नहीं है। यह नकारात्मक कार्य देश का कुछ भी भला नहीं कर सकता।

"देखो मोहिनी ! मेरा यह दृढ़ मत है कि यदि देश उसी नीति पर चलता रहता, जो १९०१ से १९१९ तक चली थी, अर्थात् एक ओर क्रान्तिकारी बलपूर्वक राज्य का तख्ता उलटने का यत्न करते और दूसरी ओर देश के विद्वान्, देश के शासकों से बातचीत करते, तब निःसंदेह १९३५ का विधान १९२९ में ही बन जाता और १९३९ में पूर्ण स्वराज्य मिल जाता।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"परन्तु देश के मुसलमान और अन्य जातियों के लोग भी हैं, जो देश में स्वराज्य का विरोध कर रहे हैं।"

"इतने बड़े देश में राष्ट्र विरोधी तत्त्व निःशेष तो हो नहीं सकते। भूल यह हो रही है कि उन तत्त्वों के साथ हमारा व्यवहार ऐसा है, जैसे वे देश के महापुरुष हैं। मिस्टर जिन्ना से तो ऐसा व्यवहार होना चाहिए मानो वह एक देशद्रोही हो। हमको मुसलमानों से सीधा सम्पर्क स्थापित कर, जिन्ना को 'बाई-पास' कर देना चाहिए था। इसी प्रकार डॉक्टर अम्बेदकर को छोड़, कहे जाने वाले अछूतों से सीधा सम्पर्क स्थापित करना चाहिए था। इन दोनों और इसी प्रकार के अन्य देशद्रोही तत्त्वों को नेता मानने का अपराध कांग्रेस का ही है।

"यदि गांधीजी जैसे तुष्टिकरण करने वाले लोग, भारत के राजनीतिक गगन पर न आते तो निःसंदेह न जिन्ना होते न मुहम्मद अली न शौकत अली। हमको तो देश से प्रेम करने वालों को संगठित करना था न कि देश के शत्रुओं को देश में महान् पुरुष मान, उनसे समझौता करना। यही भूल कांग्रेस कर रही है।"

मोहिनी को अपने पति की बातों से साहस बँध गया था। वह पौन लाख रुपया लगभग दो निर्वाचनों में व्यय कर निरुत्साहित हो रही थी। जिसके परिश्रम का धन व्यय हुआ था, उसको ही यह कहते सुन मोहिनी का साहस बढ़ गया।

प्रश्न यह था कि यह सब व्यय दिखाया जाये अथवा नहीं? दास का कहना था कि पाई-पाई लिखकर भेज देनी चाहिए। उसका मत यह था कि इस प्रकार यह सिद्ध हो जायेगा कि किसी को रिश्वत नहीं दी गयी, किसी का मत नहीं खरीदा गया। किसी को शराब, चर्स, भाँग नहीं पिलायी गयी। सबका-सब रुपया केवल प्रचार में और वह भी सिद्धांतात्मक प्रचार में व्यय हुआ है। इसको छिपाकर रखने की आवश्यकता नहीं।"

"परन्तु," मोहिनी का कहना था, "यह खर्चा तो उस सीमा से अधिक है, जो सरकार ने बाँधी है।"

"मैं जानता हूँ। सरकार तुम्हारे निर्वाचन को रद्द कर देगी।"

"जी।"

"तो बहुत लालसा है कौंसिल चैम्बर में जाकर बैठने की?"

"मैं तो यही कहती रही हूँ कि कौंसिलों को जो अधिकार मिले हैं, उनका प्रयोग करने के लिये हमें कौंसिलों में जाकर कार्य करना चाहिए।"

"यह ठीक है, परन्तु झूठ बोल, गलत हिसाब बनाकर अधिकार प्राप्त करने से क्या कल्याण की आशा करती हो तुम?"

"पर यह तो कानून है?"

"मूर्खों का बनाया हुआ। तुमने कानून तोड़ा है। स्वेच्छा से नहीं। निर्वाचनों पर उचित खर्चा करते हुए ही कानून टूटा है। तब उसको स्वीकार करना चाहिए। शेष कानून बनाने वालों और चलाने वालों की बुद्धिमत्ता पर छोड़ देना चाहिए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
मैं समझता हूँ कि इस प्रकार निर्वाचन रद्द करा देने से तुम देश की अधिक सेवा कर सकोगी। मेरी सम्मति मानो, ठीक-ठीक खर्चा लिखकर कह दो कि इतने बड़े क्षेत्र में किसी प्रकार भी, निर्वाचन कार्य के लिये इससे कम खर्चा हो नहीं सकता।

"इलेक्शन कमिश्नर तुम्हारा निर्वाचन रद्द कर देगा। मैं तुम्हारा मुकदमा करूँगा और कदाचित् यह पहला मुकदमा होगा जो मैं हारूँगा। इस पर भी मैं ऐसी हार को विजय समझता हूँ।"

"मैं तो यह कहती हूँ कि पहले आपने मुझको सफल बनाने के लिये इतना व्यय किया। अब मेरे इलेक्शन रद्द कराने के लिये आप उपाय बता रहे हैं और फिर उस पर मुकदमा लड़ने के लिये आप पुन: धन और समय व्यय करने की बात कह रहे हैं। यह तो शक्ति का भारी अपव्यय हो जायेगा।"

"मोहिनी! मैं ऐसे कार्य में शक्ति का व्यय करना एक कल्याण का कार्य मानता हूँ। इस पर भी मैं अपने देश के केन्द्रीय विधान सभा की एक सदस्या को सम्मति ही तो दे सकता हूँ। उसको न तो आदेश दे सकता हूँ, न देना चाहता हूँ।"

दास बाबू के इस सुझाव पर तो मोहिनी बहुत परेशानी अनुभव करने लगी। वह अभी इस विषय पर कोई निर्णय नहीं कर सकी थी। उसकी बुद्धि कहती थी कि ठीक-ठीक जो खर्चा हुआ है, सब बता देना चाहिए। न बतायेगी तो कानून भंग करेगी और दास बाबू के अनुसार कानून भंग करना न केवल अपनी आत्मा का हनन करना है, अपितु यह पूर्ण जाति में पतन का कारण भी हो सकता है।

इस पर भी उसका मन कहता था कि इतनी भागदौड़ के उपरान्त वह सदस्या बन पायी है। उसने यह सब परिश्रम इस कारण किया है कि वह कौंसिल में जाकर अपने विचारों के अनुसार देश के राज्य को चलाने का यत्न कर सकेगी। परन्तु दास बाबू कहता था कि इस प्रकार धोखाधड़ी से कौंसिल में गये लोग देश का क्या कल्याण कर सकेंगे? उनका पाप उनके सिर पर बैठा हुआ, उनको सत्य बोलने से रोकेगा और उनके कथनों को प्रभावित करता रहेगा।

कई दिनों के मानसिक संघर्ष के उपरान्त उसने अपने पति के कहने के अनुसार हिसाब भेजने का निश्चय कर लिया। उसने अपने हिसाब बनाने वाले को ठीक-ठीक हिसाब बनाने का आदेश दे दिया। कुल खर्चा उनतालीस हज़ार पाँच सौ अस्सी रुपये दस आने छ: पाई हुआ था। इसमें से कागज़, छपाई, बँटवाई, डाक तथा जलसों इत्यादि में ही तीस हज़ार के लगभग लग गया था। छ: हज़ार रुपये पैट्रोल, मोबिल आयल और मोटर की मरम्मत पर व्यय हुए थे। तीन नौकर रखे गये थे। तीन हज़ार रुपया उनके वेतन का व्यय था। इस प्रकार यह उनतालीस हज़ार का व्यय लिखकर साथ ही यह टिप्पणी लिखकर भेज दी गई कि इसमें एक पैसा भी ऐसा व्यय नहीं, जो अनुचित हो। कानून से स्वीकृति खर्चे से यह अधिक है, परन्तु इतने बड़े निर्वाचन-क्षेत्र में, ढाई लाख मतदाताओं को, निर्वाचन लड़ने के उद्देश्य से अवगत करने के लिये यह आवश्यक था कि कई बार विज्ञप्तियाँ निकाली जायें और उनको सब वोटरों के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पास पहुँचाया जाये। अभी तो यह व्यय बहुत कंजूसी से किया गया है, इसी कारण कम खर्चा हुआ है। अन्यथा यह एक लाख तक साधारण-सी बात थी।

: ५ :

मोहिनी को देश की सेन्ट्रल कौंसिल में उपस्थित होने का निमन्त्रण आया, परन्तु वह समझती थी कि शीघ्र ही उसके निर्वाचन रद्द होने की आज्ञा आने वाली है। अतः वह दिल्ली नहीं गयी।

इन दिनों डॉक्टर राय मोहिनी से मिलने आया। आने से पूर्व उसने टेलीफोन से पता किया था कि वह कलकत्ता में है अथवा नहीं। यद्यपि उसको मोहिनी के कलकत्ता होने पर बहुत अचम्भा हुआ था, इस पर भी उसको इस बात की प्रसन्नता हुई कि उसे अपने काम के लिये दिल्ली जाने की आवश्यकता नहीं पड़ी।

परन्तु वह अपना विस्मय प्रकट किये बिना नहीं रह सका। जब वह आया तो मोहिनी और दास चाय ले रहे थे।

"आइये डॉक्टर साहब! आप भी चाय लेंगे?"

"वह तो लूंगा ही। परन्तु मोहिनी देवी! आप अभी दिल्ली नहीं गयीं? मैंने टेलीफोन इसलिये किया था कि आपका दिल्ली का पता पूछ लूँ और वहीं आपसे मिलने चलूं।"

"क्यों, क्या काम पड़ गया है मुझसे?"

"बात यह है कि अब आप केन्द्रीय सभा की सदस्या निर्वाचित हुई हैं। आपका नाम और यश बहुत हुआ है। मैं उस नाम और यश से कुछ लाभ उठाना चाहता था।

"मैंने कुछ मित्रों की सहायता से एक बीमा कम्पनी चालू करने की योजना बनाई है। मेरे सब मित्र यह चाहते हैं कि आपके नाम कुछ 'प्रेफरेन्शल' हिस्से लिख दिये जायें और आपको अपने डायरेक्टरों में सम्मिलित कर लें।"

"अर्थात् आप मेरे नाम को खरीदने आये हैं?"

"नहीं, इसको इस प्रकार कहना चाहिए कि आपकी ख्याति के आश्रय हम अपनी कम्पनी को जन-जन में विख्यात करना चाहते हैं। कम्पनी चल निकलने से बंगाल के उद्योगीकरण में भारी लाभ होगा। अभी तक कलकत्ता का समूचा व्यापार और उद्योग मारवाड़ियों के अधीन है। हम इसको, कुछ अंशों में, उनके हाथों से निकालने में सफल हो जायेंगे।"

"आपको कुछ देना नहीं पड़ेगा। केवल हिस्से खरीदने के फार्म पर हस्ताक्षर करने होंगे। हम कुछ हिस्से आपके नाम ऐलॉट कर देंगे, जिसका दाम हम अपने पास से चन्दा इकट्ठा कर दे देंगे।"

मोहिनी तो इस प्रस्ताव को सर्वथा बेहूदा समझती थी। वह समझती थी कि इस प्रकार दान-दक्षिणा में ये हिस्से लेने तो अपने लिये तथा अपने पति के लिये अपमान की बात हो जायेगी। साथ ही अपना नाम इस प्रकार देना अन्य हिस्से खरीदने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वालों तथा इस कम्पनी में बीमा कराने वालों को धोखा देने के तुल्य हो जायेगा।

साथ ही वह विचार कर रही थी कि अब एक-दो दिन में उसका निर्वाचन रद्द होने वाला है। इस रद्द होने के पश्चात् तो डॉक्टर राय को उसकी आवश्यकता नहीं रहेगी। अतः उसने बात स्पष्ट कर देने के लिए कहा—"देखिये! मेरा इस निर्वाचन में चालीस हज़ार के लगभग व्यय हो गया है। कानून से जो खर्चा होना चाहिए था, वह पन्द्रह हज़ार था। परन्तु मैंने उनतालीस हज़ार पाँच सौ अस्सी रुपये दस आने छः पाई का हिसाब बनाकर भेजा है। मैं शीघ्र ही यह आज्ञा पाने वाली हूँ कि मेरा निर्वाचन रद्द कर दिया गया है। ऐसी अवस्था में मैं आपकी कम्पनी की नेकनामी के स्थान पर बदनामी का कारण ही हो सकूँगी।"

"परन्तु ऐसा आपने क्यों किया? ऐसा करना तो सरासर कानून के विरुद्ध है।"

"कानून का विरोध तो खर्चा करने से हुआ है। रिटर्न्ज़ में लिखकर देने से तो कानून की पाबन्दी ही हुई है।"

"मोहिनी देवी! यह तो आपने गज़ब कर दिया। दुनिया में सबका खर्चा नियत से अधिक होता है, परन्तु ऐसा कोई भी नहीं, जो कम न दिखाता हो।"

"ठीक है डॉक्टर साहब! कांग्रेस के टिकट पर सफल होने वाला कोई भी व्यक्ति नहीं, जो किसी सिद्धान्त के लिये कांग्रेस से त्याग-पत्र दे दे। मैंने दिया है और मैंने यह भी किया है।"

"तब तो कम्पनी वालों को अपने प्रस्ताव पर पुनः विचार करना होगा।"

"हाँ, एक बात और भी सुनते जाइये। दो-दो बार निर्वाचन लड़ने पर भी मैं अभी इतनी निर्धन नहीं हुई कि आपकी कम्पनी से दान-दक्षिणा में कुछ हिस्से ले लूँ। यदि मेरे मन में यह विचार आया कि मुझको आपकी कम्पनी के कुछ हिस्से लेने हैं तो मैं उनको उनके बाज़ार के भाव पर खरीदने में कठिनाई नहीं समझती।"

"ठीक है। हमने अपना प्रस्ताव तो इसलिये किया था कि हम एक सेन्ट्रल लेजिस्लेचर की सदस्या का नाम अपने डायरेक्टरों में रख, अपनी कम्पनी की शोभा बढ़ाना चाहते थे। अब यह बात तो रहेगी नहीं। इस विषय में आपसे फिर बात करूँगा।"

इतना कह, एक प्याला चाय पी, डॉक्टर राय उठकर चला गया। जब वह कोठी से चला गया तो मोहिनी और दास खिलखिलाकर हँस पड़े।

दास इस पूर्ण बातचीत में, जो डॉक्टर राय और मोहिनी में हुई थी, चुप बैठा रहा था। वह इस विषय में मोहिनी को स्वतन्त्रता से अपना मार्ग पाने देना चाहता था। मोहिनी के उत्तर से वह बहुत प्रसन्न था। हँसी उसको डॉक्टर राय की निराशा देखकर आयी थी।

मोहिनी ने हँसकर कहा, "दुनिया कितनी स्वार्थी है! यही महानुभाव निर्वाचन में मेरा जी-जान से विरोध करते थे। मेरे सफल होने पर अपनी निराशा और रोष

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकट कर आये थे और कदाचित् विपक्षी को मेरे विरुद्ध पटीशन करते न देख, मेरी स्थिति का लाभ उठाने के लिये मुझको टिप (भिक्षा) देने आये थे। अब मुझको अपने सत्य पर आरूढ़ रहने के विचार से डिगा न सकने पर, गर्दन लटकाये चल दिये हैं।"

साथ ही इस विचार से वह गम्भीर हो गयी। वह मन में विचार करती थी कि वह कैसे आदमी के सम्मोहन में फँस गयी थी। उसको अपने पूर्व के व्यवहार पर घृणा आने लगी थी।

दास ने कह दिया, "मैं समझता हूँ कि राय की कम्पनी के इतने हिस्से खरीदने चाहियें कि न केवल तुम डायरेक्टर बन सको, प्रत्युत मैनेजिंग डायरेक्टर भी।"

"इससे क्या होगा ?"

"तुम्हारी दिल्ली कौंसिल में न जा सकने की निराशा कुछ तो कम हो ही जायेगी।"

"मुझको निराशा नहीं है। वास्तव में अब मैं अपने नैतिक आचरण पर गर्व अनुभव कर रही हूँ।"

"इसके अतिरिक्त भी मैं समझता हूँ कि तुम्हारे लिये कोई काम तो ढूँढ़ना ही चाहिए। खाली बैठे-बैठे तो तुम्हारे मस्तिष्क में जंग लग जायेगा।"

मोहिनी को इन दिनों अन्य बातों पर विचार करना था। वह चाहती थी कि उसके निर्वाचन के रद्द किये जाने की आज्ञा घोषित होते ही उसे अपने विचार उस आज्ञा पर विख्यात करने चाहियें। वह अपना वक्तव्य तैयार कर समाचारपत्रों के सम्पादकों तथा मालिकों से मिल रही थी।

इस समय इलेक्शन कमिश्नर का टेलीफोन दास को आया। दास ने फोन उठाया तो कमिश्नर ने कहा, "दास बाबू! मैं आपसे अपने घर पर आज सायंकाल मिलना चाहता हूँ।"

दास समझता था कि किस सम्बन्ध में बुलाया जा रहा है। इस पर भी उसने कह दिया, "मैं यदि साढ़े पाँच बजे आ जाऊँ तो कैसा रहेगा ?"

"पाँच बजे ही आ जाइये और चाय मेरे यहाँ लीजियेगा। हाँ, यदि मिसेज़ दास भी आ सकें तो बहुत अच्छा होगा।"

"यह 'ऑफिशल काल' समझूँ अथवा 'सोशल'।"

"दोनों। परन्तु मि० दास! मैं इस विषय पर इस समय टेलीफोन पर बात करना नहीं चाहता। पाँच बजे ही ठीक रहेगा।"

दास ने मोहिनी को बताया कि इलेक्शन कमिश्नर के घर उसकी शाम के पाँच बजे चाय है। तब मोहिनी विस्मय में दास बाबू का मुख देखने लगी।

"मैं समझता हूँ कि तुम्हारे निर्वाचन के खर्चे के विषय में ही बात होने वाली है।"

"इसमें बात क्या होनी है ?"

"चलना चाहिए। मैं भी तुम्हारे साथ चाय पीने के लिये जाऊँगा।"

"बहुत विचित्र है!"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"वैचित्र्य इसमें कुछ भी नहीं। मुझको कदाचित् इसलिये बुलाया जा रहा है कि मैं तुमको खर्चा अधिक दिखाने के परिणामों से अवगत करा सकूँ।"

"इस सबकी आवश्यकता नहीं थी। मैं मूर्ख नहीं हूँ।"

"मेरा विचार है कि हमको अभी हवाई महल नहीं बनाने चाहियें। उनकी बात सुनकर, जैसा उचित समझना, कह देना। जहाँ तक मेरा सम्बन्ध है, मैं तो राय देने वाला ही हूँ। मैं तुमको किसी भी बात के लिये विवश नहीं करना चाहता।"

सायंकाल पति-पत्नी, दोनों कमिश्नर के बँगले पर जा पहुँचे। कमिश्नर, जो एक स्कॉटिश ज़मींदार का पुत्र और कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी का ग्रेजुएट मिस्टर कार्टल था, अपनी पत्नी सहित उनके स्वागत के लिये वहाँ तैयार बैठा था।

परस्पर परिचय के उपरान्त सब उठ ड्राइंग-रूम में चले गये। वहाँ चाय के लिये सामान लगा था। चारों चाय पर जा बैठे।

जब मिसेज़ कार्टल चाय बना रही थी, मिस्टर कार्टल ने बात आरम्भ कर दी। उसने कहा, "मिसेज़ दास के 'रिटर्न्ज़' मेरे पास पहुँचे हैं। वे मेरे लिये जहाँ आश्चर्य का कारण हुए हैं, वहाँ निराशा के भी।"

"निराशा क्यों हुई है?" मोहिनी का प्रश्न था।

"आपने जब कांग्रेस का बहिष्कार किया था और वह भी एक असूल के अधीन तो सब अंग्रेज़ अधिकारी आपसे प्रसन्न थे। हम विचार कर रहे थे कि आपको किसी एक उत्तरदायित्व के पद पर नियुक्त कर दें। अभी विचार हो ही रहा था कि आप कांग्रेस के विरोध में निर्वाचन लड़ने को तैयार हो गयीं। हम लोग अपनी योजना को स्थगित कर, निर्वाचन के फल की प्रतीक्षा करने लगे।

"आप बहुमत से सफल हुई तो हमारा विचार था कि हम केन्द्रीय सरकार को, आपके त्याग और तपस्या का प्रतिकार दिलाने के लिए कहें।

"परन्तु आपके व्यय का जोड़ देख तो मैं और यहाँ के गवर्नर महोदय आश्चर्य-चकित रह गये हैं। मुझसे उन्होंने कहा है कि मैं आपसे इस विषय पर बात करूँ।"

मोहिनी चुपचाप बैठी कमिश्नर महोदय की बात सुन रही थी। कमिश्नर इतना कह, ध्यान से मोहिनी के मुख पर अपने कथन की प्रतिक्रिया देखने लगा। मोहिनी चुप थी। उसे चुप देख कमिश्नर ने आगे कहा, "मैं आपसे यह कहना चाहता हूँ कि हम कानून की अवहेलना नहीं कर सकते। कानून इस विषय में बिलकुल स्पष्ट है। एक प्रत्याशी को केन्द्रीय विधान सभा के निर्वाचन में पन्द्रह हज़ार से अधिक व्यय नहीं करना चाहिये। करने वाले के निर्वाचन को रद्द करने के अतिरिक्त हमारे पास अन्य कोई मार्ग नहीं है।"

मोहिनी अभी भी चुप थी। दास मिसेज़ कार्टल को बता रहा था, "मैं तो अपनी पत्नी श्रीमती मोहिनी देवी से 'हैड ऐण्ड टेल' (पूर्ण रूप में) प्रेम में हूँ।"

"हाँ।" उसने कह दिया, "ऐसा होना ही चाहिए। वह अति सुन्दर है।"

"मैंने इसके निर्वाचन में अभी-अभी चालीस हज़ार रुपया व्यय किया है। यदि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह चाहे तो मैं इसकी प्रसन्नता के लिये लाखों और व्यय कर सकता हूँ।"

"परन्तु हमारी सूचना है कि प्रायः कांग्रेसी लोग चरित्र में ढीले हैं। हमको यह विस्मय होता है कि उनकी संगत में रह कर भी आपकी पत्नी अपना सौन्दर्य और चरित्र स्थिर रख सकी है।"

दास समझ रहा था कि वह डॉक्टर राय इत्यादि के चरित्र की ओर संकेत कर रही है। उसको विस्मय इस बात पर हो रहा था कि ये अंग्रेज़ अधिकारी अपने विरोधियों की कैसी छोटी-छोटी सी बातों का पता रखते हैं। अतः दास ने उसका समाधान करने के लिये कह दिया, "मेरा विचार है कि आपकी खुफिया पुलिस के लोग सुनी-सुनाई बातों से, जो प्रमाणित नहीं होतीं, आपके कान भरते रहते हैं।

"यूँ तो आज देश अथवा समाज का कोई अंश ऐसा नहीं, जिसमें दो-चार काली भेड़ें न हों। परन्तु इससे पूर्ण समाज अथवा पूर्ण देश को पतित नहीं समझा जा सकता। मुझको निजी रूप में इसका अनुभव है। पिछली बार जब मोहिनी ने अपने-आपको 'अरेस्ट' (पकड़े जाने) के लिये तैयार कर लिया, तो मेरी इच्छा से उसने घर से चले जाने का निश्चय किया। मैंने उसको दार्जिलिंग भेज दिया। उसके एकाएक घर से चले जाने पर एक समाचारपत्र ने उसका मुझसे झगड़ा सिद्ध करने का यत्न किया।"

"तो यह बात सत्य नहीं थी न ?"

"मेरा अपनी पत्नी से कभी झगड़ा नहीं हुआ। हमारा परस्पर राजनीतिक विषयों पर मतभेद अवश्य रहा है, परन्तु हमने एक-दूसरे पर अपने विचार थोपने का कभी भी यत्न नहीं किया।"

जब ये दोनों पृथक् में परस्पर बातचीत कर रहे थे, मिस्टर कार्टल मोहिनी को कह रहा था, "मैं चाहता हूँ कि आप इन कागज़ात को वापस ले जायें और इनको काट-छाँट कर, कानून के अनुसार कर पुनः मुझको दे जायें। शेष मैं सब ठीक कर दूँगा।"

"परन्तु श्रीमान् ! मेरा वास्तव में इतना ही खर्च हुआ है।"

"कानून का पेट भरने के लिये झूठ लिखना ही पड़ेगा।"

"मेरे लिये यह अति कठिन समस्या है।"

"परन्तु मोहिनी देवी ! सब दुनिया ऐसा कर रही है। कांग्रेस का भारत भर में एक भी ऐसा सदस्य नहीं, जो कानून से स्वीकृत खर्चे से निर्वाचन जीत सका हो। यदि आज पंडित जवाहरलाल भी निर्वाचन लड़ते तो वे भी पन्द्रह हज़ार में नहीं जीत सकते।"

"आपके कहने का अर्थ यह है कि यह कानून गलत है ?"

"मुझको इंग्लैण्ड का भी अनुभव है। वहाँ पर भी, जहाँ पूर्ण जनता पढ़ी-लिखी है और समाचारपत्र पढ़ती है, जहाँ घर-घर जाकर 'कनवेसिंग' (प्रचार) करने की आवश्यकता बहुत कम है और लोग निर्वाचनों में अपने प्रत्याशी को मतदान स्वेच्छा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और सुविचार से देते हैं, वहाँ पर भी निश्चित राशि से अधिक व्यय होता है और लोग झूठे हिसाब देते हैं।"

"तो क्या मतलब समझूँ इस बात का ?"

"मतलब सीधा है। सब दुनिया ऐसा कर रही है। यही युगधर्म मानना चाहिए। आप अपने हिसाब को ठीक कर मुझको प्राइवेट रूप में दे जाइये। वैसे तो हिसाब दाखिल करने की तारीख बीत चुकी है।"

"मुझको बहुत खेद है और मैं क्षमा चाहती हूँ कि मैं ऐसा नहीं कर सकूँगी। मैंने जो लिखना और कहना था, वह सब उस परचे पर लिख दिया है। मैं उसको बदलने का विचार नहीं रखती। मुझसे झूठ बोला नहीं जाता।

"इस पर भी मैं आपका धन्यवाद किये बिना नहीं रह सकती। आपकी मेरे साथ हमदर्दी और मेरी भलाई की कामना ने मेरे मन पर बहुत गहरा प्रभाव उत्पन्न किया है। मैं आपकी कृतज्ञ हूँ।"

"तो मुझको विवश हो आपके निर्वाचन को रद्द करना पड़ेगा।"

"मैं आपको नहीं कह सकती कि आप कानून का पालन न करें।"

कमिश्नर ने एक बार पुनः यत्न करने के लिये दास का ध्यान अपनी ओर करते हुए कह दिया, "मिस्टर दास ! मैं अभी आपकी पत्नी को कह रहा था कि वे अपने 'रिटर्न्ज़' कानून के मुताबिक कर दें। परन्तु यह नहीं मान रहीं।"

"क्या कहती हैं ये ?"

"ये कहती हैं कि ये झूठ नहीं बोल सकतीं।"

"यह इनकी अपनी आत्मा की बात है। मैं इसमें दखल नहीं देना चाहता।"

"दास बाबू !" कमिश्नर ने स्पष्ट भाषा का प्रयोग करते हुए कहा, "राजनीति एक गन्दी नाली है। जो इसकी गन्दगी से ओत-प्रोत नहीं हो जाते, वे इस गन्दी नाली में नहीं रह सकते। मुझको कुछ ऐसा समझ आ रहा है कि मोहिनी देवी की राजनीतिक क्षेत्र में मृत्यु हो जायेगी।"

"मुझको इससे अति प्रसन्नता होगी। ये राजनीतिक क्षेत्र को छोड़, मेरे घरेलू क्षत्र में अधिक ध्यान दें सकेंगी।"

"बहुत स्वार्थी हैं आप मिस्टर दास !"

"मैं इनको विवश नहीं कर रहा। इस पर भी यदि ये स्वेच्छा से मेरे जीवन को अधिक मधुर बनाने के लिये अपने जीवन में कुछ परिवर्तन लाती हैं, तो मैं उसका स्वागत ही करूँगा।"

इसके उपरान्त कुछ कहने-सुनने को नहीं रहा।

: ६ :

घर लौटते हुए दास ने कहा "मोहिनी ! सरकारी अधिकारी कांग्रेस को अपना शत्रु समझते हैं और शत्रु के शत्रु को मित्र मानते हैं। इसी कारण ये कानून की अवहेलना कर भी तुम्हारी सहायता करने को तैयार हो गये हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं समझती थी, परन्तु मैं बताना चाहती थी कि न मैं कांग्रेस को अपना शत्रु मानती हूँ न ही इनको अपना मित्र।"

"मैं समझता हूँ कि मिस्टर कार्टल तुम्हारा आशय भली-भाँति समझ गये होंगे।"

"मुझको एक बात का भारी खेद है कि ये लोग जो यहाँ कानून की स्थापना के लिए आये हुए हैं, अपने स्वार्थों के लिए कानून की अवहेलना करने लगते हैं।"

"मुझको तो देश में कानून की अवस्था देखकर अचम्भा हो रहा है। ये अधिकारी जानते हैं कि सब लोग झूठे हिसाब लिखकर भेजते हैं। इस पर भी वे इस कानून में कोई संशोधन नहीं करना चाहते।

"यही कारण है कि भारत में अंग्रेज़ी राज्य की जड़ें उखड़ रही हैं। साथ ही इन्होंने यहाँ के सभी लोगों को झूठ बोलने वाला बना दिया है। देश में लगभग ढाई हज़ार उम्मीदवार कौंसिलों और केन्द्रीय विधान-सभा के लिए खड़े होते हैं। ये देशभर में फैले हुए हैं और जनता के प्रतिनिधि हैं। प्रायः सबने झूठे हिसाब बना कर दिये हैं। मैं इसका यह अर्थ समझता हूँ कि देशभर में झूठे, पद-लोलुप, पाप-पुण्य में विश्वास न रखने वाले देश के नेता बन गये हैं। भगवान् हमारे देश की इनसे रक्षा करे।

"मैं इस बात को मानता हूँ कि जहाँ कानून की अवहेलना होती है, वहाँ सुख-शान्ति नहीं रह सकती। कानून धर्म का दूसरा नाम है। मारा हुआ धर्म-प्राणी को मार कर ही रहता है।

"इसके साथ ही एक बात और है। जहाँ धर्म-शास्त्री इतने मूढ़-बुद्धि हों कि अधर्म को धर्म मान लें और धर्म का मार्ग संकुचित कर दें, जिससे भले लोग भी उस पर न चल सकें, वहाँ भी सर्वनाश हुए बिना नहीं रह सकता।"

मोहिनी को राजनीति से ग्लानि अनुभव हो रही थी। उक्त भेंट के दो दिन उपरान्त यह घोषणा कर दी गयी कि मोहिनी देवी ने अपने निर्वाचन में सीमा से अधिक धन व्यय किया है। इस कारण उसका निर्वाचन रद्द किया जाता है।

मोहिनी ने इस बात के गज़ट में प्रकाशित होते ही समाचार-पत्रों में अपना पूर्ण वृत्तान्त छपवा दिया। उसने बताया कि—"ढाई लाख मतदाताओं में तीन-तीन पैसे का बुक-पोस्ट लिफाफा एक बार डालने का खर्चा ग्यारह हज़ार सवा सात सौ रुपया होता है। क्या एक प्रत्याशी बिना एक बार भी अपने मतदाताओं को अपने उद्देश्य को सूचित किये, उनसे मत माँग सकता है? ऐसी अवस्था में कौन व्यक्ति है, जो केवल पन्द्रह हज़ार में अपना पूर्ण इलैक्शन लड़ सकता है। मैंने बहुत विचारोपरान्त अपना पूर्ण खर्चा, जो उनतालीस हज़ार से कुछ ऊपर बना था, लिख दिया है।

"कानून चाहता है कि निर्वाचन लड़ने वाला व्यक्ति झूठ बोले अथवा अपने मतदाताओं को बताए बिना निर्वाचन लड़ने लगे और मत माँगता फिरे।

"मैंने सत्य-सत्य अपना खर्चा लिखाया है और सत्य के लिए ही मुझको दंडित किया गया है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मोहिनी का वक्तव्य प्रकाशित हुआ, तो उससे मोहिनी के प्रशंसकों की संख्या बढ़ी ही थी। इस पर भी उसको मूर्ख कहने वाले भी थे। उसको मूर्ख कहने वालों में प्रायः कांग्रेसी लोग थे। डॉक्टर राय भी उनमें से एक था।

कमिश्नर की विज्ञप्ति और मोहिनी का वक्तव्य पढ़ कर डॉक्टर राय मोहिनी को टेलीफोन करने के प्रलोभन को रोक नहीं सका। इधर टेलीफोन सुनने वाला दास स्वयं था।

डॉक्टर राय ने पूछ लिया, "मोहिनी देवी कहाँ हैं ?"

"वे हरिमोहन को लेकर बनारस गयी हैं।"

"क्यों ?"

"उसकी माता तीर्थ-यात्रा करने जा रही थीं। उसने भी कुछ दूर तक साथ जाना उचित समझा है।"

"परन्तु उनका वक्तव्य तो समाचार-पत्रों में छपा है ?"

"हाँ, वह वक्तव्य वह तैयार कर लिफाफों में बन्द कर रख गयी थीं। उनके निर्वाचन के रद्द होने की सूचना गजट में छपते ही हमने वे लिफाफे डाक द्वारा समाचार-पत्रों को भेज दिये थे। वह छप गया है।"

"मोहिनीजी का वक्तव्य कुछ अधिक संतोष देने वाला नहीं। उससे एक बात प्रकट होती है कि वे निर्वाचन कार्य करना नहीं जानतीं। सब मतदाताओं को पत्र डालने की कभी आवश्यकता पड़ती ही नहीं।"

"इसका निर्णय तो खड़े होने वाले उम्मीदवार ही कर सकते हैं कि उसने सब मतदाताओं के पास पहुँच करनी है अथवा नहीं। जब तो कोई पार्टी की ओर से खड़ा होता है, तब तो कुछ प्रचार-कार्य पार्टी कोश में से किया जाता है। परन्तु एक स्वतन्त्र उम्मीदवार के लिए सब कुछ स्वयं ही करना पड़ता है।"

"पार्टी के बिना कोई उम्मीदवार निर्वाचन लड़े ही क्यों ?"

दास बाबू हँस पड़ा। हँसते हुए उसने कहा, "अभी तुम लोगों का राज्य हुआ नहीं। हो जायेगा तो फिर यह भी कानून बना देना कि निर्वाचन केवल पार्टियाँ ही लड़ सकती हैं। साथ ही यदि रूस वालों की बात मान ली जाये तो केवल एक ही पार्टी को उम्मीदवार खड़े करने का अधिकार रह जाये।"

डॉक्टर ने भी हँसते हुए कहा, "जो अवस्था मतदाताओं की इस देश में है, उससे तो रूस वालों की बात ही ठीक है।"

"अर्थात् कांग्रेस के पाँच-दस नेता ही सर्वेसर्वा हो जायें।"

"क्या हानि है ?"

"इससे एक बात तो हो जायेगी कि आपको न तो निर्वाचनों में धन व्यय करने की आवश्यकता रह जायेगी और न ही हिसाब-किताब दिखाने की। एक बात करनी पड़ेगी। वह यह कि कांग्रेस पार्टी के नेताओं की खुशामद कर पार्टी का टिकट हासिल करना। इसको हासिल करने के लिए जीवन-भर नेताओं की हाँ में हाँ मिलानी पड़ेगी।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यह डैमोक्रेसी बकवास है। इससे जनता का राज्य नहीं बनता। इससे तो पैसे वालों का राज्य हो सकता है।"

"परन्तु पैसे वालों का राज्य तो हुआ नहीं। हाँ, झूठ बोलने वालों का राज्य हो जायेगा। कांग्रेस का प्रत्याशी, जिसको पन्द्रह प्रतिशत भी मत नहीं पड़ेंगे, वह निर्वाचित घोषित हो जायेगा, यद्यपि उसने हिसाब देने में झूठ बोला है।"

अब डॉक्टर राय पुनः हँस पड़ा। हँसकर उसने कहा, "यह आप सिद्ध नहीं कर सकते कि उसका हिसाब ग़लत है। इस कारण आपका कहना सत्य नहीं कहा जा सकता।"

"ठीक है, परन्तु यह बात तो अदालत में चलती है न। घर पर तो जैसे मैं जानता हूँ, वैसे ही आप भी जानते हैं कि सत्य कौन बोल रहा है।"

"मैं तो मोहिनी देवी से सहानुभूति प्रकट करना चाहता था।"

"वे एक सप्ताह के उपरान्त आज आयेंगी। तब उनसे सहानुभूति प्रकट कर लीजियेगा। मैं तो यह जानने के लिए उत्सुक था कि आपकी बीमा कम्पनी का क्या हुआ?"

"हिस्से बिक रहे हैं।"

"कौन ब्रोकर नियुक्त किया है?"

"घोषाल ब्रदर्स! हम यह कम्पनी बंगालियों की बनाना चाहते हैं। इसी कारण एक बंगाली ब्रोकर ढूँढ़ निकाला है, परन्तु वह संतोषजनक कार्य नहीं कर रहा। दो मास में, एक लाख हिस्सों में से केवल दस हज़ार से कुछ ही ऊपर बिके हैं।"

"किसी मारवाड़ी दलाल के हाथ में दिया जाता तो अब तक सारे हिस्से बिक चुके होते।"

"हाँ, परन्तु वह यह कम्पनी, जो बंगालियों के लाभ के लिए खोली गयी है, सब मारवाड़ियों के हाथ में दे देता। पाँच हज़ार के हिस्से तो सानियाल चौधरी के हैं। हम चाहते थे कि उनको मैनेजिंग डायरेक्टर बना लेते।"

"मैं पूछता हूँ कि बंगालियों के लिए ही आपके मन में इतनी सहानुभूति कब से उमड़ पड़ी है?"

"जब से एक बंगाली के घर में जन्म लिया है।"

"परन्तु आप तो कांग्रेस के नेता हैं और कांग्रेस पूर्ण भारत का हितचिन्तन करती है न?"

"हाँ, प्रत्यक्ष में तो ऐसा ही प्रतीत होता है, परन्तु वास्तव में कुछ और ही है।"

"क्या है?"

"सब अपने-अपने प्रान्त की डुग्गी पीट रहे हैं। कांग्रेस का नेतृत्व बंगालियों के हाथ में था। तब बाबू सुरेन्द्रमोहन बैनर्जी, विपिनचन्द्रपाल, श्री अरविन्द घोष, महर्षि देवेन्द्रनाथ ठाकुर और सैकड़ों अन्य बंगाली नेता बन रहे थे।

"अब नेतृत्व गुजरातियों के पास तथा आगरा, अवध वालों के पास है और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समाचार-पत्रों में उनका नाम ही दिखाई देता है। बंगाली नाम कहीं देखने में नहीं मिलता।"

"अब बंगाल में है ही कौन, जिसका नाम लिया जा सके ?"

"बाबू सुभाषचन्द्र बोस और शरदचन्द्र बोस तो हैं ही।"

"उनमें अवश्य कुछ हीन भावना है। वे गांधीजी से सहमत न होते हुए भी उनके पीछे ही चलते हैं।"

"क्या करें ? गांधीजी की सर्वसाधारण में ख्याति बहुत प्रबल है।"

"यह ख्याति क्या बोस बाबू के लिए ही है। पंडित जवाहरलाल के लिए नहीं है ?"

"पंडित जवाहरलाल तो गांधीजी के अनुयायी ही हैं।"

"किस बात में ?"

"शोर मचाने में।"

दास की हँसी निकल गयी। हँसकर उसने कहा, "मैं आपसे सहमत नहीं। पं० जवाहरलाल जनता में अपने को गांधीजी का अनुयायी प्रकट करते हैं, परन्तु वर्किंग कमेटी में वे गांधीजी की नहीं मानते, प्रत्युत ऐसा प्रतीत होता है कि गांधीजी पंडितजी की मानते हैं।"

"ऐसी धोखाधड़ी कोई बंगाली नहीं कर सकता।"

"देखो राय ! मेरा कहना मानो, किसी मारवाड़ी ब्रोकर को हिस्से बेचने का काम दे दो। एक महीने में ही काम चल निकलेगा।"

"और अपना टिकट स्वयं ही कटा लूँ। मैं कम्पनी में सेक्रेटरी बनना चाहता हूँ।"

"सुभाषचन्द्र बोस को मैनेजिंग डायरेक्टर बना लो तो काम जल्दी हो जायेगा।"

'और कहीं बम्बबाजी में पकड़े गये तो कम्पनी भी गयी।"

उसी दिन दास बाबू ने घोषाल कम्पनी वालों को टेलीफोन कर घर पर बुला लिया। जगदीशचन्द्र घोषाल कम्पनी का मालिक, आया तो दास बाबू ने पूछ लिया, "भवानी बीमा कम्पनी के शेयर के विषय में क्या प्रगति है ?"

"बिना किसी मारवाड़ी दिमाग के काम चलेगा नहीं। डॉक्टर राय, जो कम्पनी के सेक्रेटरी बनने वाले हैं, बीमा कम्पनी का ए, बी, सी, भी नहीं जानते।"

"कितने हिस्से बेचने के लिए शेष हैं ?"

"अभी बिके ही कहाँ है ? दस हज़ार से कुछ ऊपर बिके हैं। उनमें से पाँच हज़ार तो सानियाल चौधरी जी ने ही लिये हैं। मुझको यह आज्ञा है कि हिस्से बंगालियों के अतिरिक्त किसी को नहीं देने।"

"मेरा विचार इस कम्पनी के कुछ हिस्से खरीदने का है।"

"आज्ञा करिये।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"दस हज़ार मोहिनी देवी के नाम। दो हज़ार हरिमोहन के नाम और दस हज़ार मेरे नाम। मैं समझता हूँ कि पाँच हज़ार मेरे भाई विमलानन्द के नाम भी।"

"हो जाएँगे।"

"हिस्से बेचकर ही डॉक्टर राय को पता चले कि ये मैंने खरीदे हैं।"

"जैसे आज्ञा।"

दास ने एकदम सत्ताईस हज़ार हिस्से खरीद लिये और इनके मूल्य का दस प्रतिशत, दो लाख सत्तर हज़ार का चेक काटकर दे दिया।

जब मोहिनी बनारस से लौटी तो सत्ताईस हज़ार हिस्सों के सर्टिफिकेट आये हुए थे। जब दास ने मोहिनी को दिखाये तो उसने परेशानी अनुभव करते हुए कहा, "क्या डॉक्टर राय फिर आया था ?"

"नहीं! यह मैंने स्वेच्छा से खरीदे हैं। मैं चाहता हूँ कि तुम मैनेजिंग डायरेक्टर बन सको।"

"क्या होगा इससे ?"

"भारत में उद्योगीकरण की गति तेज कर सकोगी। यह देश का वास्तविक कल्याण होगा।"

इससे मोहिनी चुप कर गयी।

: ७ :

दास ने अपने मित्रों और सम्बन्धियों में लगभग साठ हज़ार हिस्से और बिकवा दिये। घोषाल कम्पनी तो इस कार्य को थर्ड क्लास मानती थी। वह एकाएक हिस्से बिकते देख चकित रह गई। सबसे बड़ी बात यह थी कि जितने भी ग्राहक दास द्वारा आये थे, सब-के-सब बंगाली थे।

कम्पनी का प्रस्ताव करने वालों की एक मीटिंग में घोषाल बाबू से पता चला कि सत्तर हज़ार से ऊपर हिस्से बिक चुके हैं, तो सब बहुत प्रसन्न हुए। वह सूची जिसमें हिस्से खरीदने वालों के नाम थे, जब सुनाई गयी तो डॉक्टर राय का मुख उतर गया।

सानियाल चौधरी ने पूछ लिया, "डॉक्टर! उदास प्रतीत होते हो ?"

"मैं इन सबको जानता हूँ। ये सब मिस्टर दास को मैनेजिंग डायरेक्टर बना देंगे।"

"तो यह शोक करने की बात है क्या ?"

"शोक तो नहीं है, परन्तु मैं आपसे बहुत आशा लगाये हुए था।"

"दास बाबू क्या तुम्हारी सहायता नहीं करेंगे ?"

"बहुत कम आशा है।"

"मैं समझता हूँ कि जहाँ तक तुम्हारे काम का सम्बन्ध है, वह अब पक्का हो जायेगा। मोहिनी देवी तो तुम्हारी 'कोलीग' रही हैं। इससे तुम्हारी वह भी सहायता करेंगी।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मोहिनी से सहायता की आशा की जाती सुन वह हँस पड़ा। इस समय उसकी हँसी विकराल थी। चौधरी इस हँसी का अर्थ नहीं समझ सका। डॉक्टर राय ने बात बदल दी।

दास बाबू ने कमिश्नर के निर्णय, जिससे मोहिनी का निर्वाचन रद्द किया गया था, की हाईकोर्ट में अपील कर दी। इस अपील के होने से हाईकोर्ट ने कमिश्नर को आज्ञा जारी कर दी कि वह हाजिर होकर बताये कि क्यों उसका निर्णय रद्द न कर दिया जाये।

अभी मुकदमे की तैयारी दोनों ओर से हो रही थी कि भवानी बीमा कम्पनी के हिस्सेदारों की प्रथम बैठक हो गयी।

मोहिनी अपने थैले में साठ हज़ार के हिस्सेदारों की 'प्रोक्सी' (मत प्रयोग की स्वीकृति) लिये हुए मीटिंग में बैठी थी। विमलानन्द भी वहाँ पर उपस्थित था। दास बाबू नहीं आया था।

कम्पनी का काम आरम्भ करने के लिये डायरेक्टरों का निर्वाचन हुआ। मोहिनी मैनेजिंग डायरेक्टर बनाई गयी। चार अन्य डायरेक्टर बनाये गये। उन चारों में एक चौधरी सानियाल था। दूसरा सेठ निरंजनदास था। तीसरा बाबू अमुलघोष, एक बंगाली ठेकेदार था और चौथा विपिनविहारी दास था।

इसके उपरान्त सानियाल चौधरी ने बताया कि प्रस्तावकों ने डॉक्टर राय को सेक्रेटरी बनाने का निश्चय किया था, उसको स्वीकार किया जाये। सर्वसम्मति से यह प्रस्ताव स्वीकार हो गया।

कम्पनी का कार्य आरम्भ करने के लिये पचास हज़ार का बीमा मोहिनी देवी ने और उतनी-उतनी रकम का डायरेक्टरों ने कराया। सब की डॉक्टरी परीक्षा पहले ही हो चुकी थी।

तदनन्तर हिस्सेदारों ने भी बहुत से फार्म भर कर दिये और अगले दिन यह घोषणा की गयी कि बंगालियों के लाभ के लिये बंगालियों की कम्पनी भवानी बीमा कम्पनी, खोली गयी है।

सब बंगाली समाचारपत्रों में इसकी चर्चा हुई। मोहिनी देवी ने कम्पनी के प्रचार के लिये संवाददाताओं की प्रेस-कॉन्फ्रेंस बुलाकर उनको खूब खिलाया-पिलाया और कम्पनी के उद्देश्यों का वर्णन कर दिया। मोहिनी ने व्याख्या से बताया कि वह इस कम्पनी से क्या आशा रखती है।

इसका परिणाम यह हुआ कि मोहिनी और भवानी बीमा कम्पनी कई दिन तक समाचार-पत्रों में चर्चा का विषय बने रहे। जब यह चर्चा शिथिल होने लगी तो समाचार-पत्रों में विज्ञापन दिया जाने लगा।

इस प्रकार जिस दिन हाईकोर्ट में मोहिनी की अपील की सुनवाई होनी थी, मोहिनी भवानी कम्पनी के काम में सर्वथा लीन हो चुकी थी। उसको तो यह भी स्मरण नहीं रहा था कि आज उसके मुकदमे की पेशी है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दास ने प्रातः के अल्पाहार से उठते हुए कहा, "मोहिनी ! कोर्ट चलोगी ?"

"ओह ! आज तारीख है क्या ?"

"हाँ, तुमने मुझको अनेकों मुकदमे जीतते देखा है। चलो, आज एक हारने वाला मुकदमा भी देख लो।"

दास ने केवल एक पुस्तक हाथ में ली और मोहिनी को साथ ले कोर्ट में जा पहुँचा। निर्वाचन ठीक है, ऐसा घोषित करने की कृपा की जाये, की प्रार्थना करते हुए उसने बहस की।

दास ने बताया, "कानून स्पष्ट है। किसी भी व्यक्ति को पन्द्रह हज़ार रुपये से अधिक खर्च करने से मना किया गया है। मेरा निवेदन है कि यह कानून अस्वाभाविक, डैमोक्रैटिक सिद्धान्तों के विपरीत और मानव के ज्ञान प्राप्त करने के अधिकार को कम करने वाला है।

"निर्वाचन में खड़े होने वाले उम्मीदवारों के विचार, उनकी कार्यविधि और देश की वर्तमान समस्याओं में उनके सुझाव जानने का मतदाताओं को अधिकार है। यदि यह अधिकार है तो यह ज्ञान को कौन प्राप्त कराये ?

"मान लीजिये आज चीन तिब्बत पर आक्रमण करता है। भारत सरकार तिब्बत की रक्षा नहीं करती। खड़े होने वाले उम्मीदवारों में से एक की सम्मति है कि सरकार की यह नीति देश के लिये घातक है। तो वह प्रचार तो करेगा ही।

"ऐसा सन् १६०४ में हुआ था। यह फिर भी हो सकता है। मैं यह निवेदन करना चाहता हूँ कि उस उम्मीदवार को अपनी नीति मतदाताओं को बताकर, उनसे राय लेने का अधिकार है। मतदाताओं को प्रत्येक उम्मीदवार से उसकी सम्मति इस विषय में जानने का अधिकार है।

"यह कानून, रुपये के खर्चे में सीमा और वह भी सर्वथा कम सीमा, बाँध कर मतदाताओं के अधिकारों को कम करता है और उम्मीदवारों को अपने कर्तव्य को ईमानदारी से पालन करने में बाधा बनता है।

"मोहिनी देवी के निर्वाचन-क्षेत्र में ढाई लाख से ऊपर मतदाता हैं। यदि दो बार निर्वाचनों से पहले इन मतदाताओं को उम्मीदवार अपनी विज्ञप्ति भेजें तो ऐसा करने में केवल डाक-व्यय तेईस हज़ार चार सौ छत्तीस रुपये व्यय हो जाते हैं। यदि कोई उम्मीदवार इन सब वोटरों को छोटे-छोटे जलसों से, पोस्टरों द्वारा अथवा स्वयं मिलकर कुछ बताना चाहे तो और भी अधिक खर्चा होगा।

"अतः मेरा निवेदन है कि यह कानून डैमोक्रेसी में मतदाताओं के अधिकारों को कम करने वाला है। इस कारण अमान्य है। मेरी प्रार्थना है कि हाईकोर्ट इस कानून को अव्यावहारिक घोषित कर दे।

"यदि खर्च पर किसी प्रकार की पाबन्दी हो तो वह खर्च की मद्दों पर होनी चाहिए। उदाहरण के रूप में शराब पिलाने, चरस-भंग खिलाने अथवा अन्य ऐसे कामों में धन व्यय करने पर प्रतिबन्ध होना चाहिए, जिन को मत प्राप्त करने के लिये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
रिश्वत का नाम दिया जा सके।

"सूचना देना और ज्ञान-वृद्धि के उपायों पर प्रतिबंध नहीं होना चाहिये।"

चीफ-जस्टिस ने पूछ लिया, "तो गरीब आदमी निर्वाचन नहीं लड़ सकता।"

"गरीब व्यक्ति पार्टियों में सम्मिलित होकर अपना खर्चा कम कर सकता है। वह चन्दा इकट्ठा कर खर्चे के लिये रुपया प्राप्त कर सकता है।

"परन्तु खर्च करने पर प्रतिबंध, यह बताये बिना कि किस प्रकार के खर्चे पर प्रतिबंध है, अन्याय हो जायेगा।

"मोहिनी देवी ने अपने खर्चे तीन मद्दों में ही किये हैं। प्रचार के लिये, पत्र, विज्ञापन, डोंडी, जलसे, जलूस इत्यादि। दूसरा वोटरों से मिलने के लिये जाने पर मोटर खर्चा। इसमें भी मोटर अपनी थी। केवल पेट्रोल, मोबिल-आयल और एक-आध बार मोटर मरम्मत का खर्चा है। तीसरे एजेन्ट नियुक्त करने का खर्चा।

"यह तीनों प्रकार के खर्चे अनुचित नहीं कहे जा सकते। अतः मोहिनी देवी ने कोई खर्चा नाजायज़ नहीं किया।

"इस कारण कमिश्नर महोदय का निर्णय आधारभूत न्याय के विपरीत होने से गलत है।"

इसके उपरान्त ऐडवोकेट जनरल जो कमिश्नर की ओर से सरकारी खर्चे पर उपस्थित हुआ था, अपना वक्तव्य देने लगा। उसका कहना था कि कानून कानून है। हाईकोर्ट को उसके अनुसार ही निर्णय देना चाहिए।

चीफ जस्टिस ने पूछ लिया, "मानो सरकार कानून बना देती है कि जनसंख्या अधिक हो रही है और देश में भोजन कम है। अतः पचास वर्ष से ऊपर के सब लोगों को जीने का अधिकार नहीं। यदि एक इकावन वर्ष का बूढ़ा हाईकोर्ट में आकर यह कहता है कि यह कानून मानव अधिकारों के विपरीत है, इस कारण यह अमान्य है तो क्या होईकोर्ट उसकी बात को न माने और कानून को कानून कहकर चुप कर रहे?"

"हाँ, मी लार्ड! कानून बनाना, बदलना, अथवा परिवर्धन करना और रद्द करना विधान सभा का काम है, हाईकोर्ट का नहीं।"

"कानून को उचित-अनुचित बताना हाईकोर्ट का अधिकार है अथवा नहीं?"

"भारत के वर्तमान विधान के अनुसार हाईकोर्ट को कानून के विपरीत निर्णय देने का अधिकार नहीं। वह कानून के विषय में अपनी सम्मति दे सकता है।"

दास ने उत्तर का प्रत्युत्तर दिया और अंत में हाईकोर्ट की बैंच ने यह निर्णय दे दिया—

"कानून के अनुसार प्रत्याशी को पन्द्रह हज़ार से अधिक खर्चा नहीं करना चाहिए। हाईकोर्ट इस कानून के अनुसार कमिश्नर की आज्ञा को रद्द नहीं कर सकता।

"मोहिनी देवी का यह कहना विचारणीय अवश्य है कि निर्वाचनों में सीमा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केवल उचित-अनुचित खर्चे की होनी चाहिए, धन-राशि की नहीं। इस पर विचार करने से यह अनुभव होता है कि धन-राशि पर सीमा बाँधने से निर्वाचन का प्रथम और अत्यावश्यक कार्य, कि लोगों को समझा-बुझाकर मत माँगा जाये, भी पूरा नहीं होता। कितना किसको समझाना चाहिये, इसका निर्णय कोई सरकारी अधिकारी नहीं कर सकता। यह तो समझाने वाले और समझने वाले के अपने-अपने निर्णय करने की ही बात है।

"परन्तु कानून के अन्दर यह छिद्र देखना और निकालना विधान सभा और गवर्नर जनरल महोदय का काम है। हाईकोर्ट तो केवल इस छिद्र की ओर संकेत कर सकता है।

"अतः हम मोहिनी की अपील को अस्वीकार करते हैं।"

यह ठीक था कि इस बार दास बाबू हार गया था, परन्तु उसने राज्य की ओर से मानव कार्यों पर सीमा बाँधने के सिद्धान्त को भारी धक्का पहुँचाया था।

समाचारपत्रों में कानून के सिद्धान्तों के इस विषय में लेख छपे। लिखने वालों की सबसे बड़ी युक्ति यही प्रतीत होती थी कि यदि ऐसी सीमा न बाँधी गयी तो निर्धन निर्वाचन नहीं लड़ सकेगा।

दास बाबू ने इस सबके उत्तर में अपनी युक्ति यह दी, "निर्वाचनों का, एक प्रजातन्त्रात्मक राज्य में, उद्देश्य यही है कि मतदाता समझ-बूझकर सम्मति दें। किसी भविष्य में एक निर्धन के निर्वाचन लड़ने की सम्भावना पर देश के मत-दाताओं के अत्यावश्यक अधिकार की हत्या करनी तो ठीक नहीं।"

दास बाबू का कहना था कि "निर्धन तो इस प्रतिबन्ध में भी निर्वाचन, सुचारु रूप में, नहीं लड़ सकते। अब भी अधिकांश लोग सीमा से अधिक व्यय करते ही हैं। झगड़ा व्यय करने पर नहीं था, झगड़ा तो व्यय किये धन को निर्वाचन कमिश्नर के सम्मुख प्रकट करने का था। कोई झूठ बोले, अथवा न बोले प्रश्न यह था।

"परन्तु यदि यह मान भी लिया जाये कि निर्वाचन लड़ने वाले ईमानदार हैं और वे न तो सीमा से अधिक व्यय करते हैं और न ही कुछ खर्चा छुपा कर रखते हैं, तो क्या निर्धनों के नाम पर, इस कानून के औचित्य को सिद्ध करने वाले यह मानते हैं कि भारत में निर्धन-से-निर्धन के पास भी पन्द्रह हज़ार रुपये हैं ?"

: ८ :

मोहिनी को पहले ही अपने निर्वाचन रद्द किये जाने का विश्वास था। इससे हाईकोर्ट के निर्णय पर उसको शोक नहीं था। इस मुकदमे में जहाँ यह प्रभाव हुआ कि लोग ब्रिटिश राज्य के न्यायाधिकरण को युक्ति और सिद्धान्त-रहित मानने लगे थे, वहाँ दास बाबू की मुकदमा लड़ने की ख्याति बहुत बढ़ गयी थी। सरकारी अधिकारी, जज, वकील और पढ़े-लिखे जनसाधारण प्रायः सभी यह समझने लगे थे कि बंगाल ने एक बहुत ऊँचे दर्जे का वकील पैदा किया है।

मोहिनी तो अपनी बीमा कम्पनी के काम में लग गयी। दास अपने व्यवसाय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में धन उत्पन्न करने में लगा रहा। अब मोहिनी नियमपूर्वक नित्य कम्पनी के कार्यालय में जाती थी और वहाँ डॉक्टर राय से सम्पर्क में आने लगी थी।

यद्यपि दोनों में कभी सम्बन्ध था और डॉक्टर राय अभी भी अविवाहित था, परन्तु पिछली घटनाओं के कारण न तो मोहिनी के मन में, उसके लिये कभी मधुर विचार उत्पन्न हो सका, न ही डॉक्टर राय को कभी साहस हो सका कि वह पुनः अपने मन पर उसके सम्मोहन का उल्लेख करे।

कार्यालय में प्रायः कम्पनी के काम के अतिरिक्त अन्य बातें नहीं होती थीं। न ही ऐसी बात की आवश्यकता अथवा उपयोगिता समझी जाती थी। डॉक्टर राय मोहिनी से बहुत सतर्क तथा भयभीत रहता था। वह कम्पनी में से कई प्रकार के उचित-अनुचित लाभ उठा रहा था और उनसे वह अपनी राजनीतिक कार्य में अधिक समय देने में हुई हानि की पूर्ति कर रहा था।

परन्तु नित्य-नित्य सम्पर्क में आने और अन्य सामाजिक कार्यों में तथा अवसरों पर मेल-जोल से, बात हुए बिना नहीं रह सकी। डॉक्टर राय और मोहिनी दोनों सानियाल चौधरी के पुत्र के विवाह पर बधाई देने गये हुए थे। बारात मोटरों में समधियों के गृह पर पहुँची। मोहिनी और राय एक ही गाड़ी में सवार होकर गये थे।

उस दिन मोहिनी अति प्रसन्न थी। वह हँस-हंसकर बातें कर रही थी। उस समय डॉक्टर राय मोहिनी की हँसी के उठ रहे फुव्वारे देख अपने मन का भय और संयम टूटता अनुभव करने लगा था।

बात तो मोहिनी के प्रसन्नावस्था के कारण आरम्भ हुई, परन्तु पहुँचती-पहुँचती दोनों के प्राचीन सम्बन्ध के विषय पर जा पहुँची।

"युवा-अवस्था में," डॉक्टर राय का कहना था, "मनुष्य की बुद्धि कुछ दूर तक जाने की शक्ति नहीं रखती।

"होना तो यह चाहिये कि जैसे युवावस्था में शरीर के अन्य अंग बलशाली होते हैं, वैसे ही बुद्धि भी बलवान् और अधिक दूर तक जाने वाली हो, परन्तु होता इससे उलट है।"

"यह इसलिये कि बुद्धि यंत्र शरीर के अन्य अंगों के समान भौतिक नहीं है। यह तो प्रकृति की अति सूक्ष्मावस्था है, जो पंच भूतों के बनने से भी पहले की है। ज्यों-ज्यों मनुष्य बूढ़ा होता जाता है, शरीर का पंच भौतिक ढाँचा ढीला पड़ता जाता है। अतः पंच भूतों के बनने से पहले की प्रकृति की अवस्था अधिक और अधिक बनती जाती है। इसी कारण वृद्धावस्था में बुद्धि अधिक तीक्ष्ण और दीर्घ होती जाती है।"

डॉक्टर राय, जिसने किसी दर्शन-शास्त्र को पढ़ना तो दूर, कभी हाथ लगाकर भी नहीं देखा था, बितर-बितर मुख देखता रहा। वह इस वक्तव्य को किंचित् मात्र भी समझ नहीं सका।

डॉक्टर राय को कुछ भी न समझते देख मोहिनी पुनः खिलखिलाकर हंस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पड़ी। डॉक्टर ने पूछ लिया, "आप हँसी क्यों हैं ?"

"आपका 'ब्लैंक' (भाव-विहीन) मुख देखकर। क्या विचार कर रहे थे आप ?"

"मैं विचार कर रहा था कि वह मोहिनी देवी, जिससे मैं एक दिन शान्ति-निकेतन में, एक लताकुंज में मिला था, अधिक बुद्धिशील थी अथवा आज की मोहिनी, जो दास बाबू के आवास में बन्दी हो रहती है, अधिक संवेदनात्मक बुद्धि और आत्मा रखती है ? मुझको तो वह वेला जीवनभर की सर्वोत्तम, समधुर और सरस प्रतीत हो रही है।"

"यह आज क्या भूत सवार हो रहा है आपके मन पर ?"

"हाँ, भूत तो है ही। भूतकाल की बात को ही भूत कहते हैं।"

"बीती बातों पर अनावश्यक रूप में विचार तो अत्यन्त हानिकर होता है। यह प्रगतिशीलता का विरोधी है और आप तो अपने को प्रगतिशील कहते हैं ?" यह कहते हुए मोहिनी मुस्करा दी।

"मैं प्रगतिशील हूँ, सामाजिक समस्याओं पर विचार करते हुए, परन्तु अपने जीवन के अतीत काल की बातों और अनुभवों की स्मृति का तो प्रगतिशीलता के साथ कोई सम्बन्ध नहीं।"

डॉक्टर राय के उसको भूतकाल की बातों का स्मरण कराने से मोहिनी गम्भीर हो गयी। उसकी हँसी विलीन हो गयी। वह अपने मन में उठ रहे द्वन्द्व को दबाने का यत्न करने लगी।

मोहिनी के मन में शान्ति-निकेतन की राय से प्रथम मिलन की बात की स्मृति अत्यन्त मधुर तथा कटु, रुचिकर तथा अरुचिकर सुखदायक तथा दुःख का विषय बन रही थी।

उसके पूर्ण शरीर में एक प्रकार की अनुभूतियों से झंकार-सी उत्पन्न हो रही थी। साथ ही दूसरे प्रकार के अनुभवों से मन में ग्लानि उत्पन्न हो रही थी। इन द्वन्द्वों में वह मन की अनिश्चित, अस्थिर और असंयत अवस्था का अर्थ समझने में अपने प्रसन्नता के वातावरण को भूल गयी थी।

डॉक्टर राय ने उसके मन की अवस्था का अनुमान लगा, उस अवस्था में काष्ठा उत्पन्न करने के लिये कह दिया, "मैं तो उस दिन की स्मृति के कारण किसी भी लड़की से विवाह करने के लिये अपने मन को तैयार नहीं कर सका। अब मैं चालीस वर्ष की आयु का हो रहा हूँ और हिन्दुस्तानी समाज में रहते हुए विवाह करने की आयु से ऊपर समझा जा रहा हूँ। अब जीवन में वे मधुर स्मृतियाँ ही तो रह गयी हैं, जो मेरे इस जीवन का आश्रय हैं।"

इस समय मोहिनी को डॉक्टर राय के कथन में असत्य की गन्ध आने लगी थी। उसको घटनाओं का एक अन्य रूप दिखाई दे गया। इस कारण वह सतर्क हो गयी। उसको इस पूर्ण भावुकता में कृत्रिमता दिखाई देने लगी। उसके मन में उठ रहे द्वन्द्वों में कटुता, अरोचकता और दुःख का भाव प्रबल हो गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माथे पर त्योरी चढ़ाकर मोहिनी ने कहा, "यह सब बकवास है। डॉक्टर! मैं यह अच्छी तरह जानती हूँ कि आप स्त्री से सम्पर्क केवल शरीर का कार्य समझते हैं अन्यथा विवाह के लिये आए अवसर आपने ठुकराये न होते।

"अब मेरे मन की बात भी सुन लीजिये। मैं आपसे सम्पर्क को अपने जीवन की एक कटु और दुःखकारक भूल मानती हूँ। जब-जब भी मैं अपने पति के न्याययुक्त और सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार को स्मरण करती हूँ, तो आपके साथ व्यतीत किये काल को अपने पूर्ण जीवन पर विष घोलता अनुभव करती हूँ।

"मैं समझती हूँ कि आज के उपरान्त हमको उस गये काल की बातों को स्मरण कर जीवन को दुर्भर नहीं बनाना चाहिये।"

"तो आपको उस जीवन की बात दास बाबू के समक्ष प्रकट होने का भय नहीं लगता?"

"नहीं, इस कारण कि वे मेरे जीवन की पूर्ण कथा को जानते हैं।"

"उस लता कुंज वाली बात को भी?"

"हाँ।"

"विश्वास नहीं आता।"

"इसलिये कि आप एक आत्मा-विहीन शरीर मात्र हैं। इस कारण शरीर पर मन तथा आत्मा के प्रभुत्व का भास आपको कभी हुआ ही नहीं। वे सब कुछ जानते हुए भी मेरे साथ वह व्यवहार रखते हैं, जो कोई भी पुरुष अपनी धर्मपरायण-स्त्री के साथ रख सकता है।"

राय मुस्कराया और चुप कर रहा। उसी रात मोहिनी ने अपने पति से कहा, "कम्पनी की मैनेजिंग डायरेक्टर पद की नियुक्ति के समय भी मैंने कहा था कि डॉक्टर राय अति दुष्ट प्रकृति रखता है। मेरा उससे अधिक काल तक सम्पर्क, उसको उच्छृङ्खल बना सकता है। आज मैं अनुभव करती हूँ कि मेरा अनुमान ठीक ही था।"

इतना कह उसने उस दिन की बातचीत, जो डॉक्टर राय से हुई थी, अक्षराक्षर अपने पति को बता दी। दास पूर्ण वृत्तान्त जानकर बोला, "मैं यही तो देखना चाहता था कि मेरी मोहिनी के मन पर कितना मेरी शिक्षा और व्यवहार का प्रभाव पड़ा है। मैं तुम्हारे व्यवहार से इस परिणाम पर पहुँचा हूँ कि तुम दिन-प्रतिदिन मेरे अधिक और अधिक समीप होती जाती हो।

"देखो मोहिनी! मैं यह शरीर नहीं हूँ। ऐसे ही जैसे मैं यह कोठी नहीं हूँ, जिसमें रहता हूँ। ये दोनों मेरे हैं, परन्तु मैं इनमें से एक भी नहीं हूँ। यदि मेरी इस कोठी की दीवार कहीं से टूट जाये तो मैं उसकी मरम्मत करवा लेता हूँ। इसी प्रकार यदि यह शरीर कहीं से बिगड़ जाये और विकृत व्यवहार करने लगे तो मैं इसको ठीक कर लेता हूँ। अब तुम भी ऐसा ही करने लगी हो। इससे मैं तुम और अपने में बहुत ही सामीप्य अनुभव करने लगा हूँ।"

मोहिनी इससे उत्साहित ही हुई थी। परन्तु डॉक्टर राय इससे उलट विचार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करता था। वह मोहिनी के, उस दिन की वार्त्तालाप को शान्ति से सुनने को, मोहिनी के अपने प्रति कठोर व्यवहार को नरम हो रहा अनुभव कर रहा था। इस कारण वह फिर लम्बी-चौड़ी आशाएँ बाँधने लगा था।

बीमा-कम्पनी को खुले दो वर्ष हो चुके थे। दो करोड़ से ऊपर का 'बिज़नेस' कम्पनी को मिल चुका था। दो वर्ष के कार्य को देख कम्पनी ने प्रत्येक जीवन-बीमा पर बीस प्रतिशत बोनस घोषित कर दिया था।

इससे कम्पनी का कार्य और भी वेग से होने लगा था। इसका परिणाम यह हो रहा था कि डॉक्टर राय की आर्थिक स्थिति सुधर रही थी।

धन की प्राप्ति तो अवांछनीय नहीं है। यह एक अत्यावश्यक वस्तु मनुष्य की प्रकृति के कार्य करने में सहायक हो जाती है। जहाँ दास और मोहिनी के पास धन के आने से वे सैकड़ों निःसहाय, अपाहिज और प्रतिभाशाली विद्यार्थियों के लिये आश्रय बन रहे थे, वहाँ धन के प्रभाव से डॉक्टर राय मन में कलुषित योजनाएँ बनाने में यत्नशील हो गया।

इन योजनाओं से उसके मस्तिष्क में मोहिनी के लिये पुनः मधुर भावनाएँ प्रस्फुटित होने लगी थीं।

डायरेक्टर्ज़ की मीटिंग थी। कारणवश कोई डायरेक्टर भी नहीं आया था। मीटिंग हाल में मैनेजिंग डायरेक्टर और सेक्रेटरी थे। मीटिंग में उपस्थित करने के लिये सब कागज़ तैयार थे।

सामने दीवार के साथ लगी घड़ी में समय देखकर राय ने कह दिया, "प्रतीक्षा का समय तो व्यतीत हो गया है।"

मोहिनी ने कह दिया, "एक-दो बातें अत्यावश्यक हैं। कुछ काल तक और प्रतीक्षा कर लें। कदाचित् सेठ निरंजनदास आ जायें तो कोरम होने पर कार्य हो सकेगा।"

डॉक्टर राय ने इस अवसर से लाभ उठाकर कह दिया, "मोहिनी देवी! कम्पनी का कार्य तो उन्नति कर ही रहा है।"

"हाँ।"

"और हम भी आर्थिक दृष्टि से उन्नति कर रहे हैं।"

"यह बहुत ही प्रसन्नता का विषय है।"

"मैं कभी मन में सोचता हूँ कि यदि इस गये-गुज़रे काल में भी हम अपने साधनों को एकत्रित कर लें तो बहुत कुछ कर सकते हैं।"

"कैसे इकट्ठे कर लें?"

"पिछले दो वर्ष में अपने वेतन और कमीशन का मेरे पास पाँच लाख रुपया एकत्रित हो गया है। मैं आपकी आय और सम्पत्ति का अनुमान भी लगा रहा हूँ। मेरा विचार है कि आपके पास बीस-पच्चीस लाख से कम नहीं होगा।

"इतना धन कोई भी दम्पति लेकर यूरोप चला जाये तो बहुत मज़े से जीवन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यतीत हो सकता है। स्विट्ज़रलैंड के एक होटल में जीवन-पर्यन्त आनन्द से रहा जा सकता है।"

मोहिनी समझ रही थी कि यह बागे-अदन का साँप हव्वा को फुसला रहा है। इस पर भी उसने धैर्य से काम लिया और कहा, "यदि इतने धन-सम्पद् को रखने वाली कोई बीवी मिल जाये तो मेरा विचार है आप कृत-कृत्य हो जायेंगे ?"

"वह तो मिली हुई है। थोड़ा उसके अनुकूल होने की बात है। देखो मोहिनी! मैंने इस बीमा-कम्पनी में काम करने की योजना इसी निमित्त बनायी थी। यदि तुम भी अपने कानून के अनुसार हिसाब बना कर देतीं तो इस समय तुम दिल्ली की कौंसिल की सदस्या होतीं। मैं यहाँ लाखों कमा लिये होता और फिर एक दिन हम दोनों यूरोप में स्विट्ज़रलैंड चले जाते और शेष जीवन सुख से व्यतीत कर लेते।"

"तो यहाँ आपको कुछ दुःख हो रहा है क्या ?"

"बहुत अधिक! जब धन नहीं था तो उसके अभाव में, मैं अपनी प्रियतमा को यह प्रस्ताव नहीं कर सका था, जो अब कर रहा हूँ। अब ईश्वर की कृपा से मेरे पास पर्याप्त धन है और यदि तुम कहा मानो तो तुम्हारा और अपना मिलाकर तो इतना हो जायेगा कि उसके कभी समाप्त होने का भय ही नहीं रहेगा।"

मोहिनी खिलखिलाकर हँस पड़ी। वह समझ रही थी कि यह मूर्ख इतना भी नहीं समझ रहा कि जो मेहनत और युक्ति से जीते हुए निर्वाचन को सत्य पर बलिदान कर सकती है, वह इस झूठे के साथ मिलकर अपने देवता स्वरूप पति के साथ क्यों दगा करेगी ? उसको समझ नहीं आ रहा था कि यह व्यक्ति कानून में डॉक्टरेट कैसे पा गया है ? इसको तो दो और दो-चार भी गिनने नहीं आते।

मोहिनी को हँसते देख डॉक्टर राय समझा कि तीर ठिकाने लगा है। उसकी आँखों के सामने स्विट्ज़रलैंड की किसी सुन्दर झील के किनारे पर, किसी सुन्दर बँगले में मोहिनी के साथ जीवन की शेष घड़ियाँ व्यतीत करने का चित्र घूम गया। उसने समझा कि मनोवैज्ञानिक काष्ठा का काल आ गया है।

मोहिनी एक सोफा पर बैठी थी। डॉक्टर राय कुछ दूर एक गद्देदार कुर्सी पर बैठा था। एकाएक वह उठा और मोहिनी के समीप बैठ, उसकी कमर में हाथ डाल, उसे अपनी ओर घसीटने लगा तो मोहिनी की हँसी रुक गयी। उसने अपने दाहिने हाथ से बलपूर्वक एक चपत उसके मुख पर दे मारी।

डॉक्टर राय इससे निराश नहीं हुआ। उसने मुख पर लगी चपत की ओर ध्यान न देते हुए, उसको बलपूर्वक अपने अंग लगा, उसका मुख चूम लिया। मोहिनी ने यह स्थिति देख, उसके होंठ पर इतने जोर से काटा कि डॉक्टर राय की चीख निकल गयी। उसकी पकड़, जो कमर में हाथ डालने से बनी थी, छूट गयी। उसने हाथों से मोहिनी के मुख को पीछे हटाने का यत्न किया तो थोड़ा-सा होंठ का टुकड़ा कट आया। वहाँ से रक्तधारा प्रवाहित होने लगी।

राय के होंठ का माँस मोहिनी के मुख में आ गया। वह उसने थूक दिया। राय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का कुर्त्ता और धोती रक्त से लथपथ हो गये थे। रक्त को रोकने के लिए वह साथ वाले गुसलखाने में भाग गया।

मोहिनी के मुख और दाँतों में भी रक्त लगा था। उसने अपने बैग में से रूमाल निकाला और पोंछ लिया। राय अभी गुसलखाने में ही था कि मोहिनी ने 'प्रोसीडिंग-बुक' में यह लिख कि "मीटिंग कोरम के अभाव में स्थगित कर दी गई है।" और नीचे हस्ताक्षर कर, कमरे से निकली और अपनी मोटर में सवार हो सीधी घर जा पहुँची।

: ६ :

दास को यह विदित था कि मोहिनी कम्पनी के डायरेक्टर्ज़ की मीटिंग में गयी है। वह उसके रात के भोजन के समय ही आने की आशा करता था। उसको आज कुछ काम नहीं था। इससे वह बर्टरेंड रस्सल का 'सोशियलिज़्म' पढ़ने बैठ गया था। ज्यों-ज्यों वह पढ़ता जाता था, मन में विचार कर रहा था कि जिस देश में यह फिलॉसोफर माना जाता है, उस देश के ज्ञान-विज्ञान को हम आदर्श मान, उसके पीछे भाग रहे हैं। इस विचार से वह काँप उठा। उसके रोंगटे खड़े हो गये।

उसके मन में अपने लड़के हरिमोहन का विचार आ गया। वह विचार कर रहा था कि हरिमोहन अब बारह वर्ष का हो गया है। यह अभी से अंग्रेज़ी की छोटी-छोटी पुस्तकें पढ़ने लगा है। वह समय दूर नहीं, जब यह भी इसी प्रकार की अयुक्ति-संगत, समाज और व्यक्ति का विकृत रूप दिखाने वाली पुस्तकें पढ़ेगा। तब वह क्या समझेगा?

यह हरिमोहन का दुर्भाग्य था कि उसकी अपनी कोई बहिन नहीं है। उसको किसी भी लड़की को, उस आदर के साथ जो एक भाई का अपनी बहिन के प्रति होता है, देखने का अभ्यास नहीं है। तब वह समाज में कितना भयंकर जीव बन सकता है!

इतना विचार करते ही उसको कँपकँपी उठ आई। वह मन में विचार करता था, यदि उसका बस चले तो अपने लड़के को अंग्रेज़ी भाषा और साहित्य से ही वंचित रखे, परन्तु देश की वर्तमान परिस्थिति में यह सम्भव नहीं था। अंग्रेज़ी साहित्य की बाढ़ भारत में आ रही थी। वह भला कैसे उसको रोक सकता था? वह विचार करता था कि हरिमोहन को भारतीय परम्पराओं के विचारों के दुर्ग में सुरक्षित कर दे। इस बात पर वह मनन ही कर रहा था कि मोहिनी की मोटर का कोठी में आने का शब्द हुआ। मोटर ड्योढ़ी में ठहरी और मोहिनी पीत मुख ड्राइंग-रूम में आयी तो दास ने उसकी अस्त-व्यस्त अवस्था को स्टडी-रूम में बैठे ही देख लिया। मोहिनी ने दास को बैठे देखा, तो वहाँ चली आयी। उसने स्टडी-रूम का द्वार बन्द कर दिया और टूटे वृक्ष की भाँति वह दास के ऊपर गिर पड़ी।

दास इसका अर्थ नहीं समझ सका। मोहिनी चुपचाप आँखों से अविरल आँसू बहा रही थी। दास के मन में आया कि कुछ दुर्घटना हो गयी है। कदाचित् डॉक्टर राय ने कुछ उच्छृङ्खला की है। इस प्रकार विचार कर, दास ने मोहिनी की पीठ पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हाथ फेरते हुए पूछा, "क्या बात है मोहिनी ! क्या हुआ है ?"

इससे मोहिनी और भी विह्वल हो रोने लगी। दास उसके सिर पर और पीठ पर प्यार दे रहा था। उसने उसकी ठुड्डी को हाथ से उठाकर उसका मुख चूम लिया और कस कर अंग के साथ लगा लिया।

बहुत कठिनाई से वह उसको चुप करा सका। जब मोहिनी चुप हुई तो उसने स्टडी-रूम का द्वार खोल कर नौकर को ठंडा पानी लाने को कहा। वह मोहिनी को पीने के लिए दिया गया।

"आज क्या बात हुई है मोहिनी ?"

"या तो मैं मैनेजिंग डायरेक्टर रहूँगी या राय सेक्रेटरी रहेगा। अब वह मेरे साथ बैठ कर काम नहीं कर सकता।"

"क्यों ? यही तो पूछ रहा हूँ।"

"उससे टेलीफोन कर पूछिये। मैंने तो कहा भी था कि वह अच्छा आदमी नहीं है।"

दास ने मोहिनी से पूछने के स्थान राय को फोन करना उचित समझा।

डॉक्टर राय के घर पर टेलीफोन किया तो सूचना मिली कि वह अस्पताल में दाखिल हो गया है। उसका 'ऐक्सीडेण्ट' हो गया था।

"किस अस्पताल में है ?"

"विभूतिदेवी सैनिटोरियम में।"

दास ने वहाँ का टेलीफोन नम्बर देख, टेलीफोन मिलाया। वहाँ से समाचार मिला कि डॉक्टर राय पाँव फिसल जाने से चोट खा गया है। उसका होंठ कट गया है और बहुत रक्त बहा है। इस समय वह क्लोरोफार्म से अचेत है और उसका घाव सिया जा रहा है।"

जब कुछ समझ नहीं आया तो दास ने मोहिनी से पूछा, "क्या हुआ है ? उसका तो 'ऑपरेशन' हो रहा है।"

"तो वह मरा नहीं ?"

"तो तुमने मारने का यत्न किया था ?"

"नहीं, उसने बलपूर्वक मेरा मुख चूमने का यत्न किया था। मैंने उसके होंठ पर काट लिया। उसने पीड़ा से व्याकुल हो अपना मुख पीछे को खेंचा तो उसके होंठ का टुकड़ा कट कर मेरे मुख में रह गया। वह भाग कर गुसलखाने में गया तो मैं उसके माँस का टुकड़ा थूक, इधर भाग आई हूँ।"

दास कुछ देर तक इस पर विचार करता रहा। विचार कर उसने कहा, "तो तुम रो क्यों रही थीं ?"

"इसलिये कि मैं नरमाँस-हारी राक्षसी बन गयी अनुभव करती हूँ। यह मैं अपने पतन की पराकाष्ठा मानती हूँ।"

"मैं समझता हूँ कि तुम उलटे ढंग से विचार कर रही हो। बात यूँ है कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुम्हारा किसी राक्षस से युद्ध हो गया था और तुमने उस राक्षस को, उसके ही अस्त्र-शस्त्रों से पराजित किया है। जैसे नाखून, दाँतों, मुक्कों आदि से वह लड़ा था, तुमने भी उसी प्रकार उससे युद्ध कर उसको परास्त किया है।

"मोहिनी ! मैं तो तुम्हारे आज के संघर्ष का यह रूप समझा हूँ। मानव राक्षसों से युद्ध कर राक्षस नहीं हो जाते।

"सुना है कि वह राक्षस क्लोरोफार्म सुँघा कर अचेत कर दिया गया है और उसके होंठ को सिया जा रहा है।

"मैं पुनः टेलीफ़ोन कर उसका समाचार जानना चाहूँगा। तुमको चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं।"

दास ने पुनः फोन किया तो पता चला कि उसका घाव तो सी दिया गया है और अब उसमें "ब्लड-बैंक' से रक्त का संचार किया जा रहा है।

दास ने पूछा, "कुछ जान का तो भय नहीं ?"

"नहीं, इस पर भी बिस्तर से बाहर निकलने तक एक सप्ताह तो लग ही जायेगा।"

उसी रात को पुनः फोन करने पर विदित हुआ कि डॉक्टर राय शान्ति से सो रहे हैं।

अगले दिन दास और मोहिनी उसको मिलने के लिये 'नर्सिंग होम' में गये, तो डॉक्टर राय खाट पर पड़ा था, मुख पर पट्टी बँधी थी और वह बोल नहीं सकता था।

राय ने मोहिनी को देखा तो मुख दूसरी ओर कर आँखें मूँद लीं। दास उसकी खाट के पास एक स्टूल पर बैठ गया। मोहिनी दस मिनट तक वहीं खड़ी उसको देखती रही। तदनन्तर दोनों एक भी शब्द बोले बिना, वहाँ से चले आये।

मोहिनी कम्पनी के कार्यालय में पहुँची तो उसने देखा कि कमेटी रूप में रजिस्टर और अन्य मीटिंग के कागज़ वहाँ पर वैसे ही पड़े रहते हैं। मोहिनी ने डॉक्टर राय के स्टैनो को बुलाकर अस्थायी सेक्रेटरी के रूप में का करने का आदेश दे, उसको सब कागजात समेट सुरक्षा में रखने को कह दिया।

सोफ़ा के समीप मांस का एक टुकड़ा, जो अब काला पड़ गया था और सिकुड़ कर बहुत छोटा रह गया था, पड़ा मिला। मोहिनी ने उसको उठाकर लैवेटरी में जा, नाली में बहा दिया।

कार्य चलने लगा। एक सप्ताह के उपरान्त डॉक्टर राय इस योग्य हुआ कि वह उठकर किसी से बातचीत कर सके। डॉक्टर राय ने फोन पर मोहिनी को कहला भेजा, कि वह अपने कार्य के विषय में उसको कुछ बतलाना चाहता है।

मोहिनी अपने साथ दास बाबू को लेकर आयी। डॉक्टर ने पूछा, "तो क्या मैं अपनी बात तुम्हारे पति के सामने ही कहूँ ?"

"हाँ, मैंने पहले भी आपको कहा था कि मेरी कोई बात मेरे पति से छुपी हुई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं है।"

"तो सुनो। मैं अपने मन को, तुमको देख वश में नहीं रख सकता। इस कारण मैं यह अनुभव करता हूँ कि कम्पनी की नौकरी छोड़ दूँ।"

मोहिनी ने कहा, "आपके मन का संतुलन तो जेल में जाकर ठीक हो जायेगा। मैंने अस्थायी रूप में दास बाबू के मुन्शी विमलानन्द को सेक्रेटरी नियुक्त कर दिया है। उसे अभी तक सात 'फ्रॉड' के मामले दिखाई दिये हैं। उनकी जाँच पुलिस के पास जा चुकी है। शीघ्र ही आपको उनकी जवाबदेई करनी होगी।"

डॉक्टर राय का वह होंठ, जो कट जाने से उसके मुख को कुरूप कर रहा था, इस समय फड़कने लगा। कुछ विचार कर उसने कहा, "तो जो कुछ तुमने मुझको कुरूप करने में किया है, उस पर संतोष न कर, यह कुछ और करने लगी हो।"

"वह तो मेरी और आपकी निजी बात थी, परन्तु यह तो कम्पनी के धन की बात है। इसमें मैं न तो आपकी सहायता कर सकती हूँ और न ही विरोध।"

"मैं यह चाहता हूँ कि पहले घर पर ही जाँच कर ली जाये। यदि मैं सन्तोष-जनक उत्तर न दे सकूँ, तब ही पुलिस तक जाया जाये।"

"बात तो वही होगी, परन्तु आपको पाँच लाख की जमानत देनी होगी। यदि आप घरेलू जाँच में ही लापता हो जायें तो हिस्सेदारों और बीमा कराने वालों के समक्ष मैं दोषी सिद्ध हो जाऊँगी।"

"पाँच लाख तो बहुत अधिक है। यदि आप कहें तो पचास हज़ार का जामिन पैदा कर सकता हूँ।"

"डायरेक्टरों ने पाँच लाख निश्चय किया है।"

"इतना बड़ा जामिन मेरे पास नहीं है।"

"तो मैं मजबूर हूँ।"

राय ने अति दीनता के भाव में दास की ओर देखा। दास ने कह दिया, "मैं भी तो एक डायरेक्टर हूँ। पाँच लाख की राशि हमने सर्वसम्मति से निश्चय की है।"

"तो मेरे लिये हवालात में जाने के अतिरिक्त कोई उपाय नहीं?"

"एक बात हो सकती है। आपके भाई ज्ञानसागर का लड़का मोहन आपका इतनी बड़ी रकम के लिये जामिन हो सकता है।"

"उसके पास इतना धन कहाँ से आया?"

"सेठ निरंजनदास के साथ वह व्यापार करता रहा है। मैं समझता हूँ कि यदि वह चाहे तो आपकी रक्षा कर सकता है।"

"तो मैं सायंकाल तक उसको तैयार कर लूँगा।"

"यदि तो सायंकाल तक हवालात में नहीं रहना तो तुरंत निश्चय कर बताओ। आज विमलानन्द आपके सब कागज़ात लेकर सब-जज के पास गया हुआ है और सम्भव है कि वह पुलिस लेकर इधर ही आ रहा हो।"

राय इस सूचना से घबरा गया। इस पर दास ने कह दिया, "मैं समझता हूँ कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मोहन अपने चाचा की रक्षा के लिये जामिन बनाना स्वीकार कर लेगा। परन्तु वह चाहेगा कि पाँच-लाख की कीमत के कागज़ात उसके पास जमानत के रूप में रख दिये जायें।"

"पर मेरे पास इतना है कहाँ ?"

"कहो तो उसको यहाँ बुला लूँ ?"

राय इस प्रस्ताव को सुन संशय-दृष्टि से दास को देखता रहा। दास ने कहा, "अभी कुछ मिनट का समय है। विचार कर लो।"

इतना कह वह उठ खड़ा हुआ। मोहिनी भी उसके साथ ही उठ पड़ी।

डॉक्टर राय मन में इच्छा कर रहा था कि वह चले जायें तो फिर विचार करे कि उसने क्या करना है? अतः वह चुपचाप बैठा रहा। दास और मोहिनी उसके कमरे से बाहर निकल गये।

डॉक्टर राय ने यह समझा कि वह अब नर्सिंग होम से भाग सकता है। अतः वह पलंग पर से उठ, अपने कपड़े पहन, कमरे से निकला तो कमरे के दरवाज़े पर एक पुलिस के सिपाही को खड़ा देख चकित रह गया। उसने एक क्षण में वहाँ से भागने का निश्चय कर बिना सिपाही की ओर ध्यान दिये, चला जाना चाहा, परन्तु वह सिपाही भी उसके साथ-साथ चलने लगा। डॉक्टर राय खड़ा हो, उसकी ओर देखने लगा। इस पर उसने बताया, "मेरी ड्यूटी आप पर लगी हुई है। मैंने यह देखना है कि आप लापता न हो जायें। वैसे आप बंदी नहीं हैं। आप जहाँ चाहें जा सकते हैं। मैं तो केवल आपके साथ-साथ रहूँगा।"

डॉक्टर राय नर्सिंग होम के बाहर निकल आया। वहाँ एक अन्य सिपाही उसके दूसरी ओर चलने लगा। राय ने टैक्सी बुलाई और उसमें सवार होने लगा तो दोनों पुलिस के सिपाही भी उसी टैक्सी में उसके दोनों ओर बैठ गये।

टैक्सी वाले ने पूछा, "किधर चलना है?"

एक सिपाही ने डॉक्टर से पूछ लिया, "आप किधर जाना चाहते हैं?"

"जहाँ तुम लोग ले चलो।"

"तो चलो थाने।"

"नहीं-नहीं! मैं वापिस नर्सिंग होम में ही चलूँगा।"

टैक्सी वाले ने टैक्सी घुमा दी और दो मिनट में ही नर्सिंग होम में ले आया। वहाँ पहुँच राय पुनः अपने कमरे की ओर चल पड़ा। एक सिपाही नर्सिंग होम के द्वार पर ही रह गया और दूसरा अन्दर जाकर उसके कमरे के द्वार पर खड़ा हो गया। डॉक्टर राय हताश होकर कमरे में पहुँचा और पलंग पर लेट गया।

दस मिनट में दास बाबू और मोहिनी मुस्कराते हुए कमरे में आये तो राय को औंधे मुख लेटे देख पूछने लगे, "क्या निश्चय किया है?"

"मोहन को बुलाइये।"

दास ने आवाज दी तो मोहन कमरे में आ गया। राय समझ गया कि सब कुछ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दास ने पहले ही प्रबन्ध कर रखा है। परन्तु क्या वह उसकी रक्षा के लिए यह कर रहा है अथवा कम्पनी के धन की रक्षा के लिये, इसके निर्णय के लिये समय नहीं था।

मोहन ने आते ही कहा, "चाचा ! बताओ। क्या काम है मुझसे ?"

मैंने तुमको नहीं बुलाया।"

"टेलीफोन तो यहीं से गया था कि तुम एक मुसीबत में फंस गये हो और तुमको मेरी सहायता की आवश्यकता है। बाहर सिपाही खड़ा देख भी कुछ यही समझ में आया था।"

"मोहिनी देवी को जानते हो ?"

"हाँ।"

"यह मेरे विरुद्ध कोई मुकदमा बना रही हैं। उसके लिये पाँच लाख की जमानत की आवश्यकता है। दास बाबू कहते हैं कि तुम इतनी बड़ी ज़मानत दे सकते हो।"

"हाँ, दे तो सकता हूँ," मोहन ने गम्भीर होकर कहा, "परन्तु तुम्हारा क्या भरोसा ? इधर मैं जमानत दूँ, उधर तुम हवाई जहाज में सवार हो इटली जा पहुँचो। तब मैं क्या करूँगा ?"

"तुम क्या चाहते हो ?"

"बैंक और किरायेदारों के नाम पत्र कि तुम्हारी सम्पत्ति में से पहले मेरी जमानत का दाम पूरा किया जाये।"

"परन्तु मेरे पास पाँच लाख की कीमत की जायदाद नहीं है।"

"तो घर पर नगद तिजोरी में रखी होगी। पाँच लाख नकद अथवा बैंक इत्यादि में जमा, यहाँ ढेर कर दो और मैं जमानत दे सकता हूँ। कहो तो तुम्हारी सहायता भी कर दूँगा।"

"क्या सहायता कर दोगे ?"

"यदि तुम निर्दोष हुए तो तुमको छुड़ा दूंगा।"

"यह तो मैं स्वयं भी कर सकता हूँ। मोहन ! मैं बैरिस्टर हूँ। तुम से अधिक अच्छी तरह मैं अपनी सहायता स्वयं कर सकता हूँ।"

"तो ठीक है, कर लो। इस पर भी मुझको संदेह है कि चाचा राय असली बैरिस्टर हैं। एक बार पहले भी मैंने चाचा को हराया था। इस बार भी तुम कुछ नहीं कर सकोगे। सीधे जेल में जाकर शान्ति अनुभव करोगे।"

राय चुप कर रहा। कुछ देर तक मोहन चाचा का मुख देखता रहा, तत्पश्चात वह उठकर बोला, "चाचा ! यदि मेरी सेवाओं की तुमको आवश्यकता नहीं, तो मैं चलता हूँ। जब आवश्यकता हो बुला लेना।"

"मोहन ! मैं वचन देता हूँ कि मैं भागकर छुप नहीं जाऊँगा। मैं तुमको विश्वास दिलाता हूँ कि मैंने कोई अनियमित बात नहीं की, जिससे मुझको भारत छोड़ने की कुछ आवश्यकता हो। तुम मेरे जामिन बन जाओ तो मैं जीवनभर तुम्हारा कृतज्ञ रहूँगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मोहन इस बात का उत्तर विचार कर रहा था कि विमलानन्द कोर्ट के वारंट, जिसमें डॉक्टर राय को पकड़ने का आदेश था, लेकर वहाँ आ पहुँचा। डॉक्टर राय को पकड़ने के लिये पुलिस भी साथ थी।

यह देख दास ने कह दिया, "अब तो हम आपकी वह सहायता, जो हम करना चाहते थे, नहीं कर सकते। हमारा विचार था कि विमलानन्द के साथ ही हम आपको लेकर सब-जज के पास जायेंगे और आपकी ज़मानत वहाँ देकर आपको घर ले जायेंगे, परन्तु आपने निर्णय करने में देर कर दी। अब तो आप पुलिस के अधीन हैं। वह जब आपको मैजिस्ट्रेट के सम्मुख उपस्थित करेगी, तब ही ज़मानत की बात हो सकेगी।"

: १० :

डॉक्टर राय और मोहिनी के परस्पर झगड़े के अगले दिन, मोहिनी ने आवश्यक बैठक बोर्ड ऑफ डायरेक्टर्ज़ की बुला ली थी और उसमें अस्थायी रूप में विमलानन्द को सेक्रेटरी नियुक्त करा दिया था। दास बाबू ने विमलानन्द को डॉक्टर राय की कार-गुजारी में जाँच की आज्ञा दे दी।

विमलानन्द को वकीलों की मुन्शी-गिरी करते हुए बीस वर्ष हो चुके थे और वह इस काम के लिए कुशल व्यक्ति सिद्ध हुआ। उसने दो दिन में ही सात ऐसे मामले ढूंढ़ निकाले, जिनमें कम्पनी को लाखों का धोखा दिया गया था।

दास और मोहिनी, राय से इसीलिए मिलने गये थे कि यदि वह अनुकूल हो तो उसको जमानत से बाँध सब विषयों पर घर पर ही बातचीत कर ली जाये। परन्तु राय की अनिश्चितता ने समय पर कुछ करने नहीं दिया।

अगले दिन पुलिस ने डॉक्टर राय को मैजिस्ट्रेट के समक्ष उपस्थित किया तो उसके भाई, ज्ञानसागर तथा सुखसागर के आग्रह पर मोहन ने चाचा की पाँच लाख की जमानत भर दी।

डॉक्टर राय ने अपने बयान में यह कहा कि ये जितने मामले हैं, सुझाने पर सुलझ सकते हैं। नये सेक्रेटरी को वास्तविक ज्ञान न होने के कारण, यह बात अदालत तक पहुँच गयी है।

इसके उत्तर में कम्पनी के वकील ने कह दिया, "यदि डॉक्टर राय को उचित जमानत से बाँध कर सुरक्षित कर लिया जाये तो कम्पनी के डायरेक्टर, डॉक्टर राय को अपनी सफाई का अवसर देने के लिए तैयार हैं।"

इस पर जमानत हो गयी। सब-जज की अदालत में भी यही बात कह कर दो मास की तारीख ले ली गयी।

इस विषय में और चाहे कुछ हुआ अथवा नहीं, परन्तु डॉक्टर राय मोहिनी का जानी-दुश्मन हो गया। डॉक्टर राय प्रत्येक मामले में डायरेक्टरों के सामने मोहिनी को बीच में फँसाने का यत्न करने लगा। मोहिनी की ओर से सफाई में विमलानन्द सहायता कर रहा था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दो मास में सब मामले साफ नहीं हुए। डायरेक्टरों की ओर से सेठ निरंजन दास, दास बाबू और सानियाल चौधरी जाँच कर रहे थे। दो मास के पश्चात् दो मास के लिए और अवधि ले ली गयी।

सात मामलों में से पाँच में डॉक्टर राय दोषी सिद्ध हुआ। दो में उसके दोष में संदेह प्रतीत हुआ। इस जाँच के परिणामस्वरूप कम्पनी का, लगभग तीन लाख रुपये के घाटे का अनुमान लगाया गया।

राय ने इतना रुपया कम्पनी के पास जमा कर दिया। इसपर कम्पनी की जाँच समिति ने यह रिपोर्ट लिख दी कि राय ने जान-बूझकर कम्पनी के डायरेक्टरों को गलत बताकर कम्पनी को तीन लाख हानि पहुँचाई है। अब डॉक्टर राय ने वह तीन लाख रुपया कम्पनी को दे दिया है। ऐसी अवस्था में यदि अदालत उचित समझे तो संकेतक दण्ड देकर डॉक्टर को छोड़ दे। कम्पनी को इसमें आपत्ति नहीं होगी।

इस विषय में सब-जज ने जाँच समिति की रिपोर्ट को पढ़ा और पढ़कर निर्णय दे दिया, "न्याय का पेट छः मास का कठोर दण्ड देकर भर सकता है।"

अदालत के इस निर्णय पर न तो डॉक्टर ने अपील की, न ही कम्पनी ने। परिणाम यह हुआ कि साढ़े पाँच मास की जेल भोगकर डॉक्टर राय छूट सका।

इसके पश्चात् डॉक्टर राय को कम्पनी के सेक्रेटरी पद से हटा दिया गया और वह बेकार हो गया।

इस समय सन् १६३६ आ गया था। जर्मनी का मित्र राष्ट्रों के साथ द्वितीय युद्ध आरम्भ हो गया था। कांग्रेस ने कौंसिलों को छोड़ दिया और युद्ध में भारत के सम्मिलित होने का विरोध करने लगी। इस पर भी महात्मा गांधी के नेतृत्व में कांग्रेस ने युद्ध-कार्य का अभी विरोध आरम्भ नहीं किया था।

सुभाषचन्द्र बोस युद्ध प्रयास का सक्रिय विरोध करने के पक्ष में थे। अतः बंगाल सरकार ने बोस बाबू पर कई मुकदमे चला दिये। डॉक्टर राय इस विषय में बोस बाबू का समर्थक था।

वह बोस बाबू के साथ कांग्रेस से त्याग-पत्र देकर फारवर्ड ब्लाक में सम्मिलित हो गया। अब बोस के पकड़े जाने पर, वह कम्युनिस्ट पार्टी में सम्मिलित हो गया। उस समय कम्युनिस्ट पार्टी भारत सरकार का युद्ध-कार्यों में विरोध का कार्यक्रम बना रही थी। सरकार को इस बात का पता चल गया और बहुत से कम्युनिस्ट 'डिफैन्स आफ इंडिया-ऐक्ट' के अधीन पकड़ लिए गये। उनमें डॉक्टर राय भी एक था। परन्तु डॉक्टर क्षमा माँग कर बाहर आ गया।

इस समय मोहिनी के निर्वाचन-क्षेत्र में से, मोहिनी के निर्वाचन में लग्न से कार्य करने वाला एक व्यक्ति मोहिनी की सहायता लेने आया। इस व्यक्ति का नाम था कमलेश शास्त्री। वह इस क्षेत्र में अच्छा प्रभाव रखता था।

उसने मोहिनी से कहा, "मोहिनीजी! मेरे पड़ोस में एक साहित्य-लेखक है। उसने एक कहानी लिखकर मेरा भारी अपमान किया है। मैं उस पर अपमान करने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का मुकदमा करना चाहता हूँ।"

मोहिनी उसको अपने पति के पास ले गयी। परिचय के उपरान्त मोहिनी ने कहा, "आप इनकी सहायता कर दीजिए। इन्होंने मेरे निर्वाचन में मेरी भारी सहायता की थी।"

दास ने जब शास्त्रीजी की ओर प्रश्नभरी दृष्टि से देखा तो शास्त्री ने एक मासिक पत्रिका, जिसका नाम 'तरंगिनी' था, का एक अंक निकाल कर दास बाबू के हाथ में दे दिया।

दास ने वह लेख पढ़ा, जिस पर शास्त्रीजी को आपत्ति थी। लेख का शीर्षक था—'मोटेराम शास्त्री'। यह एक कहानी थी। इसमें एक पुजारी के जीवन की पृष्ठ-भूमि बनाकर हिन्दू आचार-व्यवहार की खिल्ली उड़ाई गयी थी।

कहानी में मोटेराम शास्त्री को एक अनपढ़, अनभिज्ञ पुजारी प्रकट किया गया था। इस पर भी पुजारी होने से स्त्री वर्ग पर शास्त्रीजी का भारी प्रभाव था। वह जब कथा कहता था तो राम और सीता के वन-गमन का संवाद ऐसी रस-पूर्ण भाषा में वर्णन करता था कि सुनने वाली स्त्रियाँ आँसू बहाने लगती थीं।

इन स्त्रियों पर प्रभाव के कारण ही मोटेराम शास्त्री राजनीतिक निर्वाचनों में सहायता कर सके थे। एक चतुर प्रत्याशी ने शास्त्रीजी को घर पर बुलाकर खूब खिलाया-पिलाया और मोटी-सी दक्षिणा देकर अपने पक्ष में कर लिया।

मोटेराम शास्त्री अपने यजमानों के घर घूम-घूमकर, स्त्री-वर्ग पर अपने प्रभाव का प्रयोग कर, उनके द्वारा मतदाताओं को विवश करने लगा कि वे उस प्रत्याशी को मत दें, जिसने उसको भोजन खिलाया था और एक मोटी दक्षिणा दी थी।

कई घरों में कलह-क्लेश फैल गया और स्त्रियाँ पतियों का बहिष्कार करने लगीं। ज्यों-ज्यों निर्वाचन समीप आते गये, शास्त्रीजी के कथा कहने के ढंग में रस बढ़ता गया और स्त्रियों का दबाव भी अपने पतियों, भाई-बहिनों और पिताओं पर बढ़ता गया।

परिणाम यह हुआ कि वह प्रत्याशी भारी बहुमत से जीत गया।

इस कहानी का अन्त हुआ शास्त्रीजी के एक अपनी भक्तिनी के साथ अनुचित व्यवहार में रंगे-हाथ पकड़े जाने पर। इसमें शास्त्रीजी की पत्नी, जो वर्षों से विधवा समान रहती थी, अपने पति के चरित्र का भंडा फोड़ने में सफल हुई थी।

कहानी पढ़कर दास की हँसी निकल गयी। दास ने शास्त्रीजी के भरकम शरीर को देखा और उसकी कहानी, कहानी के नायक मोटेराम शास्त्री से तुलना की। फिर कुछ विचार कर बोला, "हाँ, शास्त्रीजी! बताइये! मैं आपके लिए क्या कर सकता हूँ?"

"मैं इस लेखक और पत्रिका के सम्पादक पर 'डिफैमेशन' का दावा करना चाहता हूँ।"

"मेरी सम्मति है कि आप यह न करिये।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"क्यों ?"

"इसलिये कि अभी तो इस कहानी के कितने पढ़ने वाले आपसे परिचित हैं, और कितने अपरिचित हैं, कहा नहीं जा सकता। आपका नाम-धाम तो इसमें लिखा नहीं। दावा करने पर सैकड़ों मुहल्ले के बाहर और भीतर जान जायेंगे कि मोटेराम शास्त्री आप ही हैं। इसमें जो सत्य है, वह तो है ही, जो कुछ असत्य है वह भी सत्य मान लिया जायेगा। मुकदमा होगा, प्रान्त-भर के समाचार-पत्रों में मुकदमे का सविस्तार वृत्तान्त छपेगा और पढ़ने वाले, आप पर लिखे लांछनों को सत्य मान लेंगे।

"मैं समझता हूँ कि मुकदमा करने से अपकी बदनामी बढ़ेगी, कम नहीं होगी। इस कारण मोहिनी देवी के सहायक होने के नाते मैं आपको यह सम्मति नहीं दे सकता कि आप इस झंझट में पड़ें।"

"दास बाबू ! मैं आपकी फीस देने को तैयार हूँ। मैं चाहता हूँ कि मुकदमा हो और इस लेखक को दण्ड मिले।"

"तो आपको विश्वास है कि उसको दण्ड हो जायेगा ?"

"हाँ, मुझको एक उच्च सरकारी अधिकारी ने बताया है कि यह लेखक कम्युनिस्ट है और इसको इस अपराध का पूरा दण्ड मिलेगा।"

"देखिये शास्त्रीजी ! उस अधिकारी की बात पुरानी हो गयी है। आज के ही समाचार-पत्र में है कि जर्मनी ने रूस पर आक्रमण कर दिया है। ब्रिटिश सरकार ने रूस को अपने मित्र राष्ट्रों में सम्मिलित कर लिया है। अब भारत में कम्युनिस्ट सरकार के मित्र, सहायक और समर्थक माने जायेंगे। परिणाम यह होगा कि कोई भी सरकारी अधिकारी, किसी कम्युनिस्ट के विरुद्ध इसलिये नहीं हो सकता कि वह कम्युनिस्ट है।

"रही मुकदमे की बात। वह आप जीत नहीं सकेंगे। उसमें आपको सिद्ध करना पड़ेगा कि कहानी आपके विषय में है। इससे आप अपनी करनी से ही अपने को बदनाम कर लेंगे।"

कमलेश शास्त्री मुख लटकाये लौट गया। परन्तु इस विषय ने दास बाबू का अभी पीछा नहीं छोड़ा। शास्त्रीजी के जाने के दो मास के उपरान्त मोहनसागर, डॉक्टर राय का भतीजा, एक युवक को साथ लिये हुए दास बाबू से मिलने आया। युवक का नाम था निशनाथराय।

मोहन ने दास बाबू से उसका परिचय कराया—"दास बाबू ! ये हैं निशनाथ राय। हमारे दूर के सम्बन्धी हैं। इसी सम्बन्ध के कारण इसने चाचाजी के कहने पर मोहिनी जी के विरुद्ध निर्वाचन कार्य किया था। दुर्भाग्य से यह लेखक हैं और कहानियाँ लिखा करते हैं। इन्होंने एक 'मोटेराम शास्त्री, के शीर्षक से कहानी लिखी थी। इनके पड़ोस में एक कमलेश शास्त्री हैं। उन्होंने इस कहानी को आधार बनाकर इन पर मानहानि करने का दावा कर दिया है।

"हम आपसे इस मुकदमे में राय करने आये हैं। यह युवक अति निर्धन है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आपसे हम यह चाहते हैं कि मुकदमे में वे बातें बता दीजिये, जो कहने योग्य हैं। अतः वह वकील किये बिना स्वयं मुकदमा लड़ने का विचार रखता है।"

दास ने मोटेराम शास्त्री का नाम सुना तो सब समझ गया। उसने बताया, "देखो निशनाथ ! मेरे पास कमलेश शास्त्री आया था। उसने निर्वाचनों में मोहिनी की बहुत सहायता की थी। इसके अतिरिक्त वह मुझको फीस देने को भी कहता था। परन्तु मैंने उसको मुकदमा करने से मना कर दिया था। मैंने उसको यह भी समझाने का यत्न किया था कि यह मुकदमा चल नहीं सकता। ऐसा प्रतीत होता है कि उसको मेरे कथन पर कुछ विश्वास नहीं आया और वह किसी अन्य वकील के चंगुल में फँस गया है, और यह मुकदमा कर बैठा है।

"परन्तु कमलेश तुम्हारे विरुद्ध क्यों है ? मुझको इस मुकदमे में कोई रहस्य पर्दे के पीछे छुपा हुआ प्रतीत होता है।"

दास के इस अनुमान से मोहनसागर हँसने लगा। हँसकर बोला, "आप में यह ईश्वर की दी हुई प्रतिभा है कि आप मानव-प्रकृति को खूब समझते हैं। वास्तव में इस मुकदमे के पीछे, इस मुकदमे से असम्बद्ध एक रहस्य है।

"एक बात जिसको बता देना ठीक रहेगा, वह यह है कि हमारे चाचाजान जेल से छूट आये हैं और उनकी लायसेंस रद्द होने की अवधि समाप्त हो गयी है। उन्होंने अपना लायसेंस दोबारा जारी करवा लिया है। वे ही कमलेश की ओर से मुकदमा कर रहे हैं। जेल से छूटने और लायसेंस प्राप्त करने के पश्चात् यह पहला मुकदमा उनको मिला है।"

"अच्छा, ऐसा करो। दावे का परचा तुम यहाँ छोड़ जाओ। मैं इसको पढ़कर जवाबदावा बना रखूंगा। उसमें ऐसा लिख दूंगा कि तुमको खेद है कि कमलेश शास्त्री ने अकारण इस कहानी को अपनी कहानी माना है। वास्तव में यह उसके विषय में नहीं है।"

इस पर निशनाथ और मोहन, दोनों राज़ी हो गये।

दास ने जवाबदावा लिखकर दे दिया। उसमें दास ने लिखा—"मैंने केवल साहित्यिक दृष्टिकोण से निर्वाचनों की बुराइयों को प्रकट करने के लिये एक काल्पनिक कहानी लिखी है। इस कहानी का प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में किसी प्रकार का भी सम्बन्ध कमलेश शास्त्री और उनके चरित्र से नहीं है।

"मैं यह घोषणा करता हूँ कि मेरी कहानी का पात्र मोटेराम शास्त्री, कमलेश शास्त्री नहीं है। इस पर भी यदि शास्त्रीजी, अथवा उनका कोई साथी इस कहानी और शास्त्रीजी में किसी प्रकार का सम्बन्ध पाते हैं, तो मैं बिना किसी प्रकार की शर्त और मीन-मेख के शास्त्री जी से क्षमा माँगता हूँ। मेरा उनको बदनाम करने का कोई प्रयोजन नहीं था।"

इस जवाबदावे को निशनाथ ने स्वयं सब-जज की अदालत में उपस्थित होकर दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिस दिन यह मुकदमा था, उस दिन एक अन्य मुकदमे के सम्बन्ध में, दास बाबू अदालत में आया हुआ था। वह बार-रूम में बैठा था। वहाँ कमलेश शास्त्री डॉक्टर राय को मुकदमा समझा रहा था। वह डॉक्टर राय को कह रहा था, "इस उच्छृङ्खल युवक को आप दण्ड दिलवा देंगे तो मैं आपकी फीस के अतिरिक्त पाँच सौ रुपया आपको दूँगा।"

डॉक्टर राय और कमलेश शास्त्री को घुल-घुलकर बातें करते देख, दास बाबू उठकर राय के पास चला आया। उसने डॉक्टर राय को पुनः बार-रूम में बैठ सकने पर बधाई दी। दास बाबू एक कुर्सी पर बैठा तो कमलेश कुछ घबराया। उसको विदित नहीं था कि दास को उसके निशनाथ पर मुकदमा करने का ज्ञान है।

दास ने बैठते ही कहा, "शास्त्री जी! नहीं माने न आप। मुकदमा करने का निश्चय कर ही लिया है?"

"जी! अभी तो विचार ही कर रहा हूँ। डॉक्टर साहब कहते हैं कि इस लेख से अपमान किया सिद्ध हो सकता है। अब ये ही मेरा मुकदमा चलायेंगे।"

"क्यों डॉक्टर साहब! आप किस बिन्दु पर इसमें शास्त्रीजी के जीतने की आशा करते हैं?"

"यह मेरा रहस्य है। मैं अभी बताना नहीं चाहता।"

दास बाबू हँस पड़ा। उसने कमलेश से कहा, "शास्त्रीजी! आपने मोहिनी के निर्वाचनों में सहायता की है और इस कहानी के लेखक ने कांग्रेस के प्रत्याशी डॉक्टर राय की सहायता की थी। कहीं ऐसा न हो कि ये आपके, निर्वाचनों में कांग्रेस के विरोध का बदला ले लें। आपका मान बचाने के बहाने आपको और भी बदनाम कर दें।"

राय के माथे पर त्योरी चढ़ गयी। दास हँस पड़ा और उठ कर वहाँ से चला गया।

इस समय मुकदमा पेश हुआ। निशनाथ ने अपना वक्तव्य अदालत के सामने उपस्थित कर दिया। जज ने निशनाथ का वक्तव्य पढ़ा और उसको स्पष्ट और उचित समझ डॉक्टर राय ने कहा, "मैं समझता हूँ कि लेखक ने बिना शर्त के क्षमा माँग कर बात ही समाप्त कर दी है। अतः आप मुकदमा वापस ले लीजिये।"

डॉक्टर राय ने कहा, "हमको तारीख दी जाये, जिससे हम इस क्षमा को पढ़ कर अपनी सम्मति बना सकें।"

: ११ :

जब तारीख लेकर डॉक्टर राय अदालत से बाहर आया और कमलेश शास्त्री को विदा कर बार-रूम में पहुँचा, तो वहाँ दास बाबू के पास निशनाथ और मोहन को खड़ा देख समझ गया कि इस सब में दास बाबू का भी हाथ है। अतः वह दास बाबू के पास जाकर कहने लगा, "दास! पर्दे के पीछे छुपकर सम्मति देने से क्या लाभ होगा? मैदान में आ जाओ तो बात बने।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं मुकदमा चलवाने के हक में नहीं हूँ। दूसरों के मुकदमा करने पर, अपनी रक्षा करने वालों की सहायता के पक्ष में हूँ।

"देखो, मैं फिर कहता हूँ कि फीसों के प्रलोभन में मुकदमे लड़ाना ठीक नहीं।"

"परन्तु दास ! यह मेरा सम्बन्धी अवश्य है, परन्तु यह शास्त्री की पत्नी को तंग करता रहता है। इस कारण इसको थोड़ा दण्ड देने के विचार से मैं यह कर रहा हूँ। इसमें मुझको कुछ लाभ हो जाये तो हानि क्या है ?"

डॉक्टर की बात पर निशनाथ, मोहन और दास तीनों हँसने लगे। निशनाथ ने कहा, "दास बाबू ! यह लांछन सत्य नहीं है। सत्य बात तो यह है कि शास्त्री जी की स्त्री हमको तंग करती रहती है। शास्त्रीजी को व्यर्थ हम पर सन्देह हो रहा है। हम तो उसको बड़ी भाभी तथा माँ तुल्य ही मानते हैं।"

निशनाथ का जवाबदावा पढ़कर डॉक्टर राय ने शास्त्री को सम्मति दी, "मेरा विचार है कि आप यह क्षमा-याचना स्वीकार कर लें। यह दास बाबू की लिखी हुई है। यदि स्वीकार नहीं की तो वह मुकदमा करने आयेगा। उस हालत में वह तुम पर जिरह करेगा और तुम वह जिरह सहन नहीं कर सकोगे।"

"परन्तु यह कंगला निशनाथ दास बाबू की फीस कहाँ से देगा ?"

"निशनाथ का मित्र मोहन उसका खर्चा दे सकता है।"

यह सुन कमलेश शास्त्री मान गया और निश्चित दिन मुकदमे का निर्णय हो गया।

इसके कई दिन पीछे की बात है कि डॉक्टर राय कलकत्ता हाईकोर्ट के बार-रूम में बैठा दास बाबू को बता रहा था—"निशनाथ शास्त्री की पत्नी को भगाकर ले गया है।"

दास इस समाचार को सुन चकित रह गया। उसने राय को कहा, "उसको पकड़वा क्यों नहीं देते ?"

"शास्त्री का यह तीसरा विवाह है। उसकी पहली दो पत्नियाँ मर चुकी हैं। शास्त्री स्वयं चालीस वर्ष की आयु का है और चार बच्चों का बाप है। पिछले वर्ष वह देहात से एक गरीब ब्राह्मण की लड़की को विवाह कर ले आया था। निशनाथ शास्त्री का पड़ोसी है और पार्टी का सदस्य है। वह उसकी पत्नी को लेकर पार्टी की मीटिंग में जाने लगा था। शास्त्री ने अपनी पत्नी को मना किया तो वह उसको डाँटने लगी। वह बेचारा चाहता था कि निशनाथ को दण्ड हो जाता तो वह अपनी पत्नी को उसके प्रभाव से निकाल लेता।

"इस मुकदमे के पश्चात् तो पति-पत्नी में नित्य झगड़ा रहने लगा था। अब पन्द्रह दिन से दोनों लापता हैं। शास्त्री ने पुलिस में रिपोर्ट लिखवाई है, परन्तु पता नहीं चल रहा है।"

"सुना है आप भी अब कम्युनिस्ट हो गये हैं ?"

"परन्तु मैं उन जैसा कम्युनिस्ट नहीं, जो दूसरों की पत्नियों को भगाता फिरूँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दास बाबू ने उसको अपने विषय में याद दिलाने के लिए कह दिया, "राय ! अब तुम्हारा होंठ तो ठीक हो गया है ?"

"हाँ, जेल का डॉक्टर मेरा मित्र था। उसने मेरा 'ऑपरेशन' कर मेरी जाँघ के माँस का एक टुकड़ा यहाँ जोड़ दिया है। इस पर भी चिह्न तो रहेगा ही।"

"खैर ! दूसरों की बीवियों को वरगलाने का चिह्न तो लगभग मिट गया है। अब तुम निःशंक होकर कह सकते हो कि इस बात का प्रमाण नहीं है।"

राय मुस्कराकर चुप रहा।

दास ने कह दिया, "अब तो तुम शास्त्री के स्थान पर निशनाथ की सहायता ही करोगे ?"

"क्यों ?"

"इस कारण कि वह तुम्हारा पार्टी-भाई है।"

"देखो दास ! इसमें राजनीति का कोई सम्बन्ध नहीं। मैं समझता हूँ कि एक ओर मानव प्रकृति अपना मार्ग बना रही है और दूसरी ओर समाज के कृत्रिम बंधन टूट रहे हैं। मैं प्रगतिवादी हूँ। मैं विवाह युवक-युवतियों में ही होना मानता हूँ। जहाँ ऐसा सम्बन्ध नहीं, वह अप्राकृतिक है और टूटना ही चाहिये। मैं निशनाथ की ही सहायता करूँ, यह आवश्यक नहीं। इसमें पार्टी के सदस्य होने की बात नहीं।"

"तब तो ठीक है। मेरी शुभकामना तुम्हारे साथ है।"

उस दिन बात समाप्त हो गयी, परन्तु शान्त नहीं हुई। इसके कुछ दिन उपरान्त दास अपने स्टडी-रूम में बैठा एक मुकदमे के विषय में अध्ययन कर रहा था कि मोहन आया और कहने लगा, "दास बाबू ! निशनाथ को छुड़ाना होगा।"

"कौन निशनाथ ?"

"वह युवक लेखक। जिस पर 'मोटेराम शास्त्री' लेख लिखने पर मुकदमा किया गया था।"

"उसको क्या हुआ है ?"

"वह पाँच दिन हुए पकड़ा गया है।"

"क्यों ?"

"कमलेश शास्त्री की पत्नी को भगा ले जाने के अपराध में।"

"तो क्या वह भगा नहीं ले गया था ?"

"नहीं, दास बाबू ! वह ऐसा लड़का नहीं है।"

"परन्तु तुम उसकी इतनी सहायता क्यों कर रहे हो ?"

"उसकी माँ मेरी माँ की सहेली है। वास्तव में मेरी माँ ने ही उसकी सहायता के लिये मुझको कहा है। निशनाथ की माँ विभूति देवी कल आयी थीं और बताती थीं कि पुलिस निशनाथ को पकड़कर ले गयी है। वारंट में उस पर कमलेश शास्त्री का यह आरोप लिखा था कि उसकी पत्नी को भगाकर ले गया है। पुलिस ने कुछ प्रमाण उपस्थित किये हैं, जिनसे सन्देह होता है। इस पर भी मैं जानता हूँ कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह कार्य उसने नहीं किया।"

"तो क्या शास्त्री की पत्नी उसके घर से नहीं मिली ?"

"जी नहीं। आपकी सूचना के लिये मेरा यह कहना है कि कम्यूनिस्ट पार्टी के कार्यालय की भी तलाशी ली गयी थी। वहाँ से शास्त्री की पत्नी का सुराग नहीं मिला।

"कल पुलिस उसको रिमांड के लिये मैजिस्ट्रेट के सामने उपस्थित करेगी। मैं चाहता हूँ कि उसकी जमानत हो जाये।"

"कौन देगा उसकी जमानत ?"

"मैं दूँगा।"

"और मेरी फीस ?"

"वह भी मैं दे दूँगा।"

"परन्तु यदि किसी समय भी मुझे पता चला कि वह उस औरत के 'अगवा' का अपराधी है, तो उस समय मुकदमा छोड़ दूँगा।"

"दास बाबू ! मुझको विश्वास है कि यह काम उसका किया नहीं है।"

"तो किसका किया है ?"

"दास बाबू ! मैं फीस निशनाथ को छुड़ाने के लिये दे रहा हूँ न कि किसी अन्य को फँसाने के लिये।"

"मुझे दाल में कुछ काला प्रतीत होता है।"

"जब कुछ दिखाई देगा, तो अपनी नीति निश्चय कर लेंगे।"

"तो ऐसा करो, पाँच सौ रुपया अभी जमा करा दो। शेष पीछे विचार कर लेंगे। उसके वारंट की नकल भी ले आओ।"

जब दास अदालत में पहुँचा तो डॉक्टर राय कमलेश शास्त्री की ओर से वहाँ पर उपस्थित था। उसे देख दास को उसका वाक्य—'मैं प्रगतिवादी हूँ। मैं युवक-युवतियों के विवाह में विश्वास करता हूँ'—स्मरण हो आया। दास ने अदालत में अपनी माँग उपस्थित कर दी—"मुकदमा अभी संदेह के स्तर से ऊँचे नहीं पहुँचा। इस कारण बन्दी को जमानत पर छोड़ देना चाहिये।"

डॉक्टर राय ने और सरकारी वकील ने जमानत का विरोध किया। इस पर मैजिस्ट्रेट ने कह दिया, "क्या पुलिस एक भी ऐसी बात बता सकती है, जिससे निशनाथ के औरत के अगवा करने की ओर संकेत होता हो।"

सरकारी वकील का कहना था, "संकेत ही नहीं, विश्वास भी प्रतीत होता है। परन्तु उन प्रमाणों को अभी उपस्थित करने का अवसर नहीं आया।"

"ऐसी अवस्था में, मैं पाँच हज़ार की जमानत और पाँच हज़ार के मुचलके पर बन्दी को छोड़ता हूँ।"

दास बाबू की कोर्ट में इतनी ख्याति थी कि जज और मैजिस्ट्रेट उसके किसी पक्ष में आकर खड़े होते ही समझने लगते थे कि वह पक्ष न्याय का होगा। दास की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
ख्याति-मात्र से ही आया मुकदमा जीता गया समझा जाता था।

अदालत से निकलते ही राय ने दास को बधाई देते हुए कहा, "इस बार भी हम गलत पक्ष ले रहे हैं। जिधर मुझको होना चाहिए था, उधर आप हैं और जिधर आपको होना चाहिए था, उधर मैं हूँ।"

"यह हुआ कैसे ? आप तो कह रहे थे कि आप निशनाथ की रक्षा करेंगे ?"

"हाँ, परन्तु मुकदमा तो पुलिस लड़ रही है। मैं तो केवल अपनी फीस बटोर रहा हूँ।"

"बहुत घटिया काम कर रहे हो। वेश्याएँ भी तो यही करती हैं। उनके लिये कोई चोर-डाकू हो अथवा भले घर का युवक, विचारणीय नहीं होता। उनके लिये भी विचारणीय बात तो फीस ही होती है। यह तो बहुत बुरी बात है, डॉक्टर राय!"

"दोनों में भारी अन्तर है। परन्तु यदि आपकी युक्ति मान भी ली जाये तो आपमें और मुझमें कुछ भारी अन्तर प्रतीत नहीं होता। वेश्याएँ तो वेश्याएँ ही हैं। वे तो बिना प्रेम के, केवल धन के लिए ही अपना समर्पण करती हैं। कोई भला पुरुष हो अथवा चोर-डाकू, यह देखना उनका काम नहीं।"

"तब तो एक विवाहित पत्नी भी, जो अपने पति से निर्वाह के लिए धन प्राप्त करती है, वेश्या हो जायेगी। मैं आपकी इस बात को नहीं मानता। मैं तो यह समझता हूँ कि विवाह-बन्धन परस्पर समागम को कानून से स्वीकार करता है। इसमें प्रेम हो अथवा न हो। प्रेम तो एक निज के विचार की बात है। विवाह समाज की ओर से स्वीकृत विधान है। इसी प्रकार हमारा अपने मुवक्किल से सम्बन्ध वैधानिक तब है, जब हम किसी निर्दोष की सहायता के लिये आते हैं। फीस लेना तो वैसे ही हो जाता है, जैसे कोई पत्नी अपने और बाल-बच्चों के लिये, अपने पति से धन पाती हो।"

"यह सब वागाडम्बर है, दास! धन के लिये आत्म-समर्पण वेश्या करे अथवा विवाहिता, कोई अन्तर पैदा नहीं होता।"

"तो आपका मतलब यह है कि वकील, जब भी फीस लेकर मुकदमा करने आता है, वेश्या का काम करता है ?"

"बिल्कुल! विवाह सम्बन्ध में भी मेरा यह मत है कि जहाँ तक वासना-तृप्ति का सम्बन्ध है, प्रेम हो तो ठीक है, अन्यथा विवाहित पति-पत्नी में अथवा अविवाहित व्यक्तियों में सम्बन्ध वेश्या-वृत्ति ही है।"

दास को कुछ ऐसा समझ आया कि राय 'युरोपियन सोसायटी' (आदर्श समाज) की ओर संकेत कर रहा है। उसको डायोनीसियस और प्लैटो की कथा स्मरण हो आयी।

वास्तव में प्रेम को वह पति-पत्नी सम्बन्ध से एक पृथक् की वस्तु मानता था। पति-पत्नी का सम्बन्ध एक सामाजिक व्यवहार है। सम्भोग एक सामाजिक अधिकरण के अधीन है। प्रेम वासना-तृप्ति से एक सर्वथा पृथक् वस्तु है। प्रायः लोग किसी से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वासना-तृप्ति में रुचि को प्रेम का नाम देते हैं। यह रुचि प्रेम नहीं होती। यह रुचि प्रायः अस्थायी होती है। प्रेम मन की एक स्थायीं अवस्था है। किसी से वासना-तृप्ति में रुचि को फारसी का शब्द 'इश्क' प्रकट करता है। प्रेम इससे भिन्न है। आशिक और माशूका का लक्ष्य वासना-तृप्ति ही होता है। प्रेम का उद्देश्य एक-दूसरे की सेवा और सुख-सुविधा पहुँचाना होता है।

दास इन विचारों में लीन था कि राय कमलेश शास्त्री के साथ अपनी मोटर में बैठकर चला गया। इस समय मोहन जमानत इत्यादि की कार्रवाई पूरी कर निशनाथ को लिये हुए वहाँ आ पहुँचा। दास ने निशनाथ के धन्यवाद का उत्तर देते हुए कहा, "यदि तुम चाहते हो कि मैं इस मुकदमे को आगे करूँ, तो तुम आज सायं-काल आकर मुझसे मिल लेना। मैं कुछ बातें समझना चाहता हूँ।"

मोहन निशनाथ को लेकर चला गया। दास अभी भी विचार कर रहा था कि मोहन और निशनाथ का क्या सम्बन्ध हो सकता है ? क्या उसका कथन कि दोनों की माताएँ परस्पर सहेली हैं, सत्य है ? क्या इसी कारण से दोनों में इतना विश्वास और सहयोग है। इसी विषय में वह अपना संशय निवारण करना चाहता था और उसने इसीलिये निशनाथ को बुलाया था।

सायंकाल निशनाथ ने अपनी पूर्ण कथा दास बाबू को बता दी। उसने कहा, "यह ठीक है कि मोहन की माँ और मेरी माँ परस्पर सहेली हैं, परन्तु हमारी घनिष्ठता में यह कारण नहीं। मोहन की माता का देहान्त हो चुका है।

"मुझको कमलेश शास्त्री के पड़ोस में रहते हुए आज दस वर्ष हो गये हैं। जब हम इस मकान में आये थे तो मैं उस समय बालक मात्र था। शास्त्रीजी मुझसे स्नेह करते थे और मेरी आर्थिक सहायता भी करते थे।

"जब शास्त्रीजी का यह तीसरा विवाह हुआ तो मेरे और शास्त्रीजी के सम्बन्धों में मोहन विघ्न बन गया। इसका, शास्त्री की पत्नी कामिनी से कैसे और कहाँ से सम्बन्ध बना, मैं नहीं जानता। मुझको यह स्मरण है कि एक दिन मैं शास्त्रीजी के घर गया हुआ था कि मोहन वहाँ आ पहुँचा। शास्त्रीजी ने उसका परिचय कराया—'यह एक समृद्ध व्यापारी हैं और मेरे यजमान हैं।'

"उस दिन से ही शास्त्रीजी की पत्नी कामिनी का मेरे से व्यवहार सुहृदयपूर्ण होने लगा। इस समय मैंने मोटेराम शास्त्री की कथा लिखी तो उनको संदेह हो गया कि मैंने उनकी हँसी उड़ाई है। इसी समय शास्त्रीजी को यह भी संदेह होने लगा कि उनकी पत्नी का मुझसे देवर-भाभी के अतिरिक्त भी कोई सम्बन्ध है।

"मैंने उनको समझाया भी कि ऐसी कोई बात नहीं, परन्तु उनकी पत्नी का व्यवहार मेरे कथन का विरोध करता रहा। मैं जब भी उनके घर जाता, तो वह मुझसे पृथक् में देश-विदेश की बातें सुनने के लिये आ बैठती। शास्त्रीजी को इन बातों में रुचि नहीं होती थी।

"एक दिन शास्त्रीजी ने कह दिया कि मैं उनके घर में न आया करूँ। मैंने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाना छोड़ दिया, परन्तु कामिनी छत पर से कूद हमारे घर आने लगी। मैंने उसको मना किया तो उसने कहा कि उसका पति सर्वथा नपुंसक है। इसी से वह ईर्ष्या करता है। वास्तव में वह सति-साध्वी है।

"इसके पश्चात् शास्त्रीजी ने मानहानि का मुकदमा किया। हमें पता चला कि कामिनी और शास्त्रीजी में बोल-चाल बंद हो गयी है। वे उसको हमारे घर में आने से मना करते थे और कामिनी उनको गालियाँ देती थी।

"मुकदमे का फैसला आपकी कृपा से हो गया। इस पर भी कामिनी और शास्त्री में सन्धि नहीं हो सकी। मुझको इसमें कोई कारण प्रतीत नहीं हो सका। इन दिनों वह हमारे घर पर नहीं आती थी और न ही मैं शास्त्रीजी के घर जाता था।

"इस बीच में मोहन और डॉक्टर राय शास्त्रीजी से बहुत मेल-जोल बनाये हुए थे। एकाएक कामिनी लापता हो गयी। शास्त्रीजी का मुझ पर सन्देह बना हुआ था। अतः वह हमारे घर पर आये। मैं घर पर नहीं था।

"पीछे क्या हुआ, मैं नहीं जानता। एक दिन पुलिस आई और मुझको पकड़-कर ले गयी। माँ मोहन से सहायता माँगने गयी थी और मोहन ने आपसे कहकर मेरी सहायता की है।

"मैं अभी-अभी मोहन के घर से होकर आया हूँ। उसकी बातों से मुझको कुछ ऐसा पता चला है कि वह कामिनी का पता जानता है और उसके लापता होने में उसका कुछ सम्बन्ध अवश्य है।"

यह सब सुन दास भौचक्का हो मुख देखता रह गया। कुछ काल तक विचार कर उसने कहा, "निशनाथ! यदि तुम सत्य कहते हो तो मैं तुम्हारी सहायता करूँगा। परन्तु यह याद रखना कि यदि तुम इस विषय में दोषी हुए तो तुमको फँसाये बिना नहीं छोड़ूँगा।"

"मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि मैंने जो कुछ कहा है, वह अक्षराक्षर सत्य है।"

"तो पता करो कि कामिनी कहाँ है। मोहन ने तुम्हारे लिये पाँच सौ रुपया मेरी फीस दी है और पाँच हज़ार की जमानत भी दी है। उसकी इस रुचि में क्या कारण है ?"

: १२ :

जब मुकदमा उपस्थित हुआ तो नये-नये तथ्य प्रकट होने लगे। शास्त्री के बयान हुए और उस पर दास ने जिरह की। उस जिरह में शास्त्रीजी ने बताया, "जब से मैंने निशनाथ पर मान-हानि का दावा किया है, यह सत्य है कि वह हमारे घर नहीं आया और न ही मेरे ज्ञान में कामिनी कभी उसके घर में गयी है। परन्तु मोहन मुझको कहा करता था कि उसने निशनाथ के साथ, कामिनी को घूमते देखा है।"

"मोहन तुम्हारे घर में किस काम से आता था ?"

"मोहन और मोहन की माँ मेरे यजमान हैं। मोहन यज्ञ तथा पूजा-पाठ कराया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करता है। इस कारण उसका मेरे घर में आना-जाना रहता है।"

"डॉक्टर राय तुम्हारे घर में किस मतलब से आता था ?"

"मान-हानि के मुकदमे में उसकी फीस के कुछ रुपये रहते थे। वह मैं अभी दे नहीं सका था। वह उनको माँगने आया करता था।"

"वह रुपये तुमने अभी दिये हैं अथवा नहीं ?"

"वह तो दे दिये हैं, परन्तु इस नये मुकदमे में उसकी फीस दिन-प्रतिदिन बढ़ रही है।"

"तुमको यह क्यों सन्देह हुआ कि कामिनी के अगवा करने वाला निशनाथ है और अन्य कोई नहीं ?"

"पुलिस की फाइल में एक चिट्ठी है। वह कामिनी के हाथ की लिखी है। चिट्ठी में उसने निशनाथ से मिलने और उसके सम्मुख एक योजना रखने का प्रस्ताव किया है।"

"यह चिट्ठी आपको कहाँ से मिली है ?"

"जिस दिन वह लापता हुई थी, उस दिन यह चिट्ठी सीढ़ियों में गिरी पाई गई थी। मेरा अनुमान है कि जाते समय वह यह चिट्ठी डाक में डालने के लिये ले जा रही थी। वह हलबुली से वहीं गिर गयी प्रतीत होती है।"

"चिट्ठी पर पता लिखा था ?"

"हाँ, वह निशनाथ का पता था।"

"उसको किसी स्थान पर मिलने को लिखा है क्या ?"

"नहीं; केवल यह लिखा है कि मुझको अवश्य मिलो। ऐसा अनुमान है कि वे किसी निश्चित स्थान पर पहले मिलते थे। इसी कारण मिलने के स्थान के विषय में लिखने की आवश्यकता नहीं समझी गयी।"

दास ने वह चिट्ठी निकलवाकर पढ़ी। उसमें लिखा था, "निश भैया ! मैं इस जीवन से मुक्ति पाने के लिए छटपटा रही हूँ। मैं तो बहुत कम पढ़ी-लिखी औरत हूँ। तुमने मुझको बहुत-सी बातें बताकर, मेरे ज्ञान चक्षु खोल दिये हैं। इस कारण मैं अब इस अंतिम पग पर भी तुमसे विचार करना चाहती हूँ। तुम अवश्य मुझसे मिलने का यत्न करो। मैं सदा तुम्हारे अहसान में दबी रहूँगी।"

दास ने वह चिट्ठी पढ़ी और पूछा, "इस पर कोई तारीख नहीं लिखी ?"

"नहीं; मेरा अनुमान है कि जल्दी के कारण वह लिखना भूल गयी है।"

"इस पत्र से क्या आपको यह विदित नहीं होता कि वह पग, जो वह उठाने वाली थी और जिसके विषय में निशनाथ से राय करना चाहती थी, उसके घर से लापता होने के साथ सम्बन्ध नहीं रखता ?"

"मुझको कुछ ऐसा प्रतीत ही हुआ था, परन्तु उसी सायंकाल मैं निशनाथ की माँ से मिलने गया और वहाँ पता चला कि निशनाथ प्रातः का गया लौटकर नहीं आया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"निशनाथ उसके एक मास पश्चात् लौटा था। तब तक पुलिस को कुछ अन्य प्रमाण भी मिले हैं, जिससे पुलिस को निशनाथ पर संदेह दृढ़ हो गया। इन प्रमाणों के विषय में पुलिस ही बतायेगी।"

दास ने इच्छा प्रकट की कि वह डॉक्टर राय पर भी जिरह करना चाहता है। इस पर मैजिस्ट्रेट ने इस कार्य के लिए तारीख निश्चित कर दी।

दास अभी तक निश्चय नहीं कर सका था कि कामिनी क्यों, किस कारण और किसकी राय से लापता हुई है। उसको कामिनी की चिट्ठी का यह अर्थ समझ नहीं आया था, जो कमलेश शास्त्री ने निकाला था।

सायंकाल निशनाथ, दास के पास आया तो दास ने पूछ लिया, "निशनाथ! कामिनी का पत्र तुमने देखा है?"

"जी हाँ। परन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि यह पत्र बहुत पहले का लिखा हुआ है। एक बात आपने नहीं देखी कि लिफाफे पर पता उसके हाथ का नहीं है।"

यह बात दास की दृष्टि से छूट गयी थी। वास्तव में वह कामिनी के लेख को पहचानता नहीं था। इस कारण वह चिट्ठी की लिखाई और लिफाफे पर की लिखाई में अन्तर नहीं जान सका। उसने निशनाथ से पूछा, "तो वह लिखाई शास्त्रीजी की है क्या?"

"नहीं, शास्त्रीजी की लिखाई मैं पहचानता हूँ। मेरा विचार है कि लिफाफे पर कामिनी की लिखाई की नकल करने का यत्न किया गया है। परन्तु उस यत्न करने पर भी अन्तर रह गया है। वह मैं चाहता हूँ कि आप अपनी बहस में बताने का यत्न करेंगे।"

निशनाथ अभी बता ही रहा था कि कमलेश शास्त्री आ गया। दास उससे कभी न मिलता, यदि निशनाथ भी वहाँ उपस्थित न होता। इस पर भी कमलेश के आने का कारण जानना आवश्यक था। इस कारण औपचारिक बातों को छोड़कर दास ने सीधे ही पूछ लिया—"हाँ, शास्त्रीजी! कैसे आना हुआ?"

"मैं अभी डॉक्टर राय की बैठक से आ रहा हूँ। उनका कहना है कि मैंने व्यर्थ में उसके नाम को कामिनी के लापता होने के साथ जोड़ दिया है। यदि मैं कह देता कि डॉक्टर राय मेरे घर पर नहीं आता तो उसके बयानों की माँग नहीं हो सकती थी।"

"परन्तु," दास ने कहा, "मुझको तो एक स्वतन्त्र स्रोत से यह पता चला है कि डॉक्टर राय न केवल तुम्हारे घर ही जाया करता था, प्रत्युत तुम्हारी पत्नी उसको चाय-पानी भी पिलाया करती थी।"

"यह तो मैं औपचारिक बात मानता था।"

"हाँ, यह भी एक औपचारिक बात ही है कि एक युवा स्त्री बूढ़े पति का घर छोड़कर भाग जाये।"

"तो आपका विचार है कि डॉक्टर राय का इसमें हाथ है?"

"मैं कैसे जान सकता हूँ? मेरे पास इस विषय में सत्य बात जानने का एक ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपाय है। यदि उसमें तुम मेरी सहायता कर सको तो मैं किसी निर्णय पर पहुँच सकूँगा।"

"बताइये, मैं क्या सहायता कर सकता हूँ ?"

"मोहन, डॉक्टर राय और निशनाथ के वे सब पत्र, जो उन्होंने कभी भी आपको अथवा कामिनी को लिखे हों, मुझको दिखाइये। मैं उनमें उनके भाव जानने का यत्न करूँगा।"

"कामिनी से न तो डॉक्टर राय का, न ही मोहन का पत्र-व्यवहार था। मेरी जानकारी में वे जब भी मिलते थे, मेरी उपस्थिति में ही मिलते थे। हाँ, इन दोनों का पत्र-व्यवहार मुझसे है। इस पर भी घर के सम्बन्ध में उन पत्रों में कुछ नहीं।"

"आप दिखा तो दीजिए। साथ ही अपनी पत्नी के सामान की तलाशी ले लें। कदाचित् उसमें से कोई वस्तु मिल जाये, जिससे हमारा मार्ग-दर्शन हो सके।"

"डॉक्टर राय ने आपसे यह पूछने के लिए, मुझको यहाँ भेजा है कि आप उनके ब्यान दिलवाने की माँग वापस नहीं ले सकते क्या ?"

"ले सकता हूँ। यदि वह मुझसे, जो कुंछ वह जानता है, स्वयं यहाँ आकर बता जाये।"

"मैं यह कह दूंगा। परन्तु उसने तो यह कहा है कि वह कामिनी के लापता होने पर कोई प्रकाश नहीं डाल सकता।"

"दो बातें करिये। एक तो डॉक्टर राय के औपचारिक अथवा काम-धंधे के पत्र, जो आपको आते रहे हैं, दिखा दीजिए। दूसरी बात यह कि डॉक्टर राय को कहिये कि वह मुझसे मिल ले।"

जब कमलेश चला गया तो निशनाथ ने पूछा, "आपको इस विषय में डॉक्टर राय पर सन्देह है क्या ?"

"मैंने कामिनी को देखा नहीं। उसके विषय में हम कुछ कह भी सकते नहीं। दूसरों की बातों से ही हम अनुमान लगा सकते हैं। दूसरों में डॉक्टर राय और मोहन प्रमुख हैं। उनका सम्पर्क कामिनी से रहा है। इनसे ही पता चल सकता है कि वह किसी अन्य से भी सम्पर्क रखती थी अथवा नहीं ?"

इस बात के दो दिन के पश्चात् डॉक्टर राय आया। दोनों पृथक् बन्द कमरे में चले गये। डॉक्टर राय ने अपने को बयान देने से बचाने में कारण बता दिया। उसका कहना था, "बहुत कठिनाई से मैंने वकालत करने का लायसेंस लिया है। मुझको इसके पुनः छिन जाने का भय लग गया है। न जानें आप क्या पूछें और उसकी विवेचना बोर्ड क्या करे। मैं वकालत छोड़ना नहीं चाहता।"

दास ने उसकी ओर मुस्कराते हुए पूछ लिया, "तो आप शास्त्रीजी की पत्नी को उसे लौटा क्यों नहीं देते ?"

यह प्रश्न इतना अचानक पूछा गया था कि डॉक्टर राय भौचक्का हो दास का मुख देखता रह गया। डॉक्टर राय ने यत्न से अपने चित्त को संतुलित करते हुए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कह दिया, "यह झूठ आपको किसने बताया है।"

दास ने उसके प्रश्नों की ओर ध्यान न देते हुए कहा, "यदि कामिनी शास्त्रीजी के पास नहीं रहना चाहती, तो घर पर उसका शास्त्री से फैसला कराया जा सकता है। यदि वह किसी अन्य की पत्नी बनकर रहना चाहती है तो यह भी प्रबन्ध हो सकता है। इस पर भी यदि वह मुझसे राय पूछे तो मैं उसको शास्त्रीजी के घर में जाकर ही रहने के लिए कहूँगा।"

"परन्तु इस बस में मैं कहाँ और कैसे आ गया हूँ ?"

दास ने डॉक्टर की बात की अवहेलना करते हुए कहा, "आपने विवाह नहीं किया और आपकी आयु विवाह करने योग्य नहीं रही। इससे मेरा विचार है कि अब आप किसी उचित आयु की स्त्री को घर पर रख लें। यदि आपका मन कामिनी पर रीझ गया है, तो मैं उसके विषय में भी निर्णय करा सकता हूँ।"

डॉक्टर राय इस समय तक अपने मन पर काबू पा चुका था। अब वह समझने लगा था कि दास उसको बहकाने के लिए ये सब बातें कर रहा है। अतः वह खिलखिलाकर हँस पड़ा।

दास ने अपने माथे पर त्योरी चढ़ाकर कहा, "तो आप यह समझते हैं कि मैं यह सब बिना प्रमाण के कह रहा हूँ ?"

"हाँ, मैं यह समझता ही नहीं, प्रत्युत यह जानता भी हूँ कि आप मुझको अपराधी समझकर भूल कर रहे हैं ?"

"मैंने आपको अपराधी नहीं कहा। यदि एक वृद्ध की पत्नी आपके साथ रहना पसन्द करे तो यह अपराध कैसे हो गया ?"

"परन्तु दास बाबू ! मैं कामिनी के विषय में कुछ नहीं जानता। उन सब प्रमाणों से जो अभी तक मिले हैं, निशनाथ ही अपराधी सिद्ध हो रहा है।"

"उसको अपराधी सिद्ध करने का केवल एक ही प्रमाण सामने आया है, परन्तु यह प्रत्यक्ष है कि उस पत्र के लिफाफे पर पता आपकी हस्तलेख में लिखा है। इस रहस्य के पता चलने के पश्चात् ही मैं यह सब कुछ आपसे कह रहा हूँ।"

"यह सिद्ध करना सहज नहीं दास बाबू !"

"सिद्ध करने की कठिनाइयों को मैं समझता हूँ, परन्तु मैं तो समझने की बात कह रहा हूँ। एक बार कोई बात समझ ली जाये तो प्रमाण पता करने का यत्न किया जा सकता है। इसी कारण आपके सौगन्धपूर्वक वक्तव्य और उस पर जिरह की आवश्यकता पड़ गयी है।

"कोर्ट में बयान न देने की आपकी इच्छा जानने के पश्चात् ही यह कह रहा हूँ कि घर पर बातचीत कर ली जाये।"

"मैं एक बात आपसे कहना चाहता हूँ कि कामिनी के विषय में मैं कुछ भी नहीं जानता और न ही उसके निवास-स्थान के विषय में मुझको कुछ ज्ञान है।"

"अच्छी बात है, तब आपसे अदालत में बात होगी।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डॉक्टर राय उठकर जाने लगा तो दास ने कह दिया, "एक बात तो अभी बता ही सकते हैं। क्या आप आगामी कांग्रेस आन्दोलन में भाग लेंगे?"

"इसका वर्तमान विषय से क्या सम्बन्ध है?"

"यदि आप आने वाले सत्याग्रह आन्दोलन में जेल-यात्रा करने वाले हैं तो क्या आप कामिनी को पीछे वेश्या-वृत्ति के लिए छोड़े जा रहे हैं?"

"क्या कोई स्त्री वेश्या-वृत्ति किसी दूसरे के कहने अथवा करने से करती है?"

"किसी दूसरे के बनाये गए वातावरण के प्रभाव में यह कार्य स्वीकार होता है। वह वातावरण कम्युनिज़्म और प्रतीची जीवन-मीमांसा बना रही है और आपने कामिनी को उस वातावरण में ले जाकर बैठा दिया है।"

"नहीं दास! तुम कम्युनिज़्म के विषय में कुछ नहीं जानते। यह एक आर्थिक ढाँचा है। शेष तो दल के प्रत्येक व्यक्ति की अपनी-अपनी बात है। कम्युनिज़्म के इस ढांचे में पतिव्रता स्त्रियाँ भी हैं और पूर्णरूप से श्रेष्ठ शान्तिप्रिय पुरुष भी।"

"तो कम्युनिज़्म का आधार जड़वाद नहीं है? क्या आप लोगों की, इतिहास की विवेचना, जड़वादी नहीं?"

"यह कैसे? हम तो यह समझते हैं कि इन्द्रिय-सुख ही पूर्ण मानव-इतिहास की धुरि है।"

"और मैंने क्या कहा है? इन्द्रियाँ शरीर का अंग हैं। शरीर पार्थिव है। आत्मा और मन इन्द्रियों पर नियन्त्रणकर्त्ता नहीं हैं। तो फिर इन्द्रिय-सुख का बलिदान करने वाला किसी भी अवस्था में कोई नहीं है। इसी को जड़वाद कहते हैं।

"राय! तुमने उस बिचारी को जड़वादियों के वातावरण में ले जाकर बैठा दिया है। तुम कहीं वहाँ से जेल चले गये, तो उस बिचारी का रखवाला कोई रह जायेगा क्या?"

"ऐसा प्रतीत होता है कि निशनाथ ने तुमसे सहायता लेने के लिए कोई कहानी बनाकर सुना दी है। यह पूर्ण कहानी बताओ तो मैं उसमें के छिद्र बता सकता हूँ।"

"तो बैठ जाओ। सुन लो।" दास ने उसको बैठने का संकेत करते हुए कहा।

जब डॉक्टर राय बैठ गया तो दास ने कहा, "निशनाथ विश्वस्त कम्युनिस्ट नहीं। वह अभी उम्मीदवार मात्र है।

"इस कारण वह उन सब बातों को जानता नहीं, जिनसे पूर्ण रहस्य का ज्ञान हो सके। वह यह जानता है कि पार्टी में डॉक्टर राय की बहुत मान-प्रतिष्ठा है। इससे उसका अनुमान है कि डॉक्टर राय कदाचित् 'रिलायेबल' (विश्वस्त) कम्युनिस्टों में से है।

"कामिनी को एक मोटर लेने आयी थी। पार्टी के पास मोटर नहीं है। कदाचित् पार्टी का एक ही सदस्य है, जिसके पास मोटर है। यह बात जब लिफाफे पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पता लिखने वाले की हस्तलिपि से मिला दी जाये तो कामिनी को भगा ले जाने का ज्ञान होता है।

"कम्युनिस्ट पार्टी के कार्यालय की तलाशी का सुझाव उसी मोटराधिपति का था अर्थात् वह जानता था कि कामिनी वहाँ नहीं है। इससे यह अनुमान गलत नहीं कि उसके छिपाये जाने का ज्ञान उस मोटराधिपति को है।"

"ये सब निराधार कल्पनाएँ हैं।"

"अच्छा देखो, यदि मुकदमे की आगामी पेशी तक कामिनी शास्त्री के घर पर पहुँच गयी तो आपकी साक्षि नहीं कराऊँगा। कामिनी की मोटर चलाने वाले का ज्ञान तो हो गया है। उसकी भी साक्षि नहीं कराऊँगा।"

डॉक्टर राय ने उठते हुए कहा, "दास! आपको तो खुफिया पुलिस का अधिकारी बन जाना चाहिये। उस महकमा के लोग ही इस प्रकार की बेहूदा बातें कर सकते हैं।"

"इस पर भी उनसे पकड़े हुए लोग प्रायः दंड पा जाते हैं।"

डॉक्टर राय ने और अधिक कहना उचित नहीं समझा। वह वहाँ से चला गया।

उसी सायंकाल कामिनी कमलेश शास्त्री के घर पहुँच गयी। शास्त्री ने उसको घर से निकाल दिया। इस पर वह ड्योढ़ी में बैठ गयी और बोली, "अब तो आ गयी हूँ। मारो चाहे पीटो। यहाँ से वापस कहाँ जाऊँ?"

यह हल्ला सुन मुहल्ले के लोग एकत्रित हो गये और वहाँ भीड़ लग गयी। निशनाथ इस भीड़ के एकत्रित होने का कारण जानने के लिये आगे वढ़ पूछने लगा, "कामिनी भाभी! गयी कहाँ थीं तुम?"

"नरक-कुंड में, परन्तु अब वहाँ से आ गयी हूँ। शास्त्रीजी जो प्रायश्चित बतायेंगे, सो करूँगी।"

"बताया तो है?" शास्त्रीजी ने कह दिया, "जाओ, गंगाजी में डूब मरो।"

निशनाथ ने कहा, "परन्तु भाभी! पहले पुलिस में तो रिपोर्ट लिखा जाओ, जिससें मैं मुक्त हो सकूं।"

"परन्तु पुलिस वाले कौन भले आदमी हैं, जो मेरे घर वाले से अधिक अच्छा व्यवहार करेंगे?"

"शास्त्रीजी!" निशनाथ ने कहा, "अब यह आई है तो इसको दोनों वकीलों के पास ले जाओ, जिससे कम-से-कम यह मुकदमा समाप्त हो जाये।"

"बताओ कामिनी! चलोगी? डॉक्टर राय के पास चलो। जैसा वह कहे, वैसा करना।"

"मैं चलने को तैयार हूँ। यदि उसका कहा तुम भी मानने का वचन दो।"

"मैं तो किसी की बात मानने के लिये तैयार नहीं। यह तो अदालत से मुकदमा उठाने के लिये कह रहा हूँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"अच्छा चलो।"

: १३ :

डॉक्टर राय की सम्मति थी कि कामिनी के मैजिस्ट्रेट के सामने बयान हो जाने चाहिएँ। मैजिस्ट्रेट के सामने जाने से पूर्व इसको थाने में अपनी रिपोर्ट कि वह इतने दिन तक कहाँ रही है, अभी लिखा देनी चाहिए।

"मैं थाने में नहीं जाऊँगी।"

"तो जहाँ मन करे जाओ।" शास्त्री ने क्रोध में कह दिया।

इस पर निशनाथ ने कहा, "कल दोनों वकील इसको मैजिस्ट्रेट के सामने उपस्थित कर दें। वहाँ यह बयान दे दे। तत्पश्चात् इसको स्वतन्त्र कर छोड़ दिया जाये।"

"परन्तु निशनाथ का वकील क्या चाहेगा? कैसे पता चले?"

"उससे टेलीफोन कर पूछ लिया जाये।"

"तुम करो। मैं उससे बात करना नहीं चाहता।" डॉक्टर राय का कहना था।

निशनाथ ने टेलीफोन किया। दास का कहना था कि शास्त्री और कामिनी दोनों यहाँ आ जाएँ तो वह बात सुनकर अपनी सम्मति दे सकता है। हो सके तो डॉक्टर राय भी आ जाये, जिससे उसको भी पता चल सके कि हम इस विषय में क्या करना चाहते हैं।

विवश चारों दास बाबू के घर पहुँच गये। दास बाबू का स्पष्ट प्रश्न था, "तुम शास्त्री के घर में रहना चाहती हो अथवा नहीं?"

"रहने के लिये ही तो वहाँ गयी थी।"

"तो तुमको अपने लापता होने का पूर्ण वृत्तान्त उसे बताना होगा।"

"वह तो बताती ही। परन्तु सभी बातें सबके सामने नहीं बताई जा सकतीं।"

"पहले वे बातें तो बताओ, जो तुम सबके सामने अथवा अदालत में कहना चाहोगी।"

"वह तो बहुत ही कम है।

"निशनाथ दास मेरे भाई के स्थान पर रहा है। निशनाथ का मित्र मोहन मेरा प्रमी रहा है। मैं समझती थी कि शास्त्रीजी हमारे सम्बन्ध को जानते हैं।

"डॉक्टर राय मेरी ओर केवल प्रेम-भरी दृष्टि से देखा करते थे। परन्तु इन्होंने यह कभी नहीं बताया कि उनकी प्रेम-दृष्टि किस उद्देश्य से है।

"मोहन चाहता था कि मैं अपने पति का घर छोड़ दूँ। इस विषय में मैं निशनाथ से राय करना चाहती थी। एक पत्र, उसको इस विषय में राय लेने के लिये, मैंने लिखा था। परन्तु डाल नहीं सकी।

"एक दिन मोहन आया और मुझको कह गया कि रात के बारह बजे एक मोटर मकान के नीचे खड़ी मिलेगी। उसमें बैठ जाऊँ तो वह मुझको उसके पास ले जायेगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं नियत समय पर, जब शास्त्रीजी गहरी नींद सो रहे थे, मकान से उतरी और मोटर में बैठ गयी। मोटर चली तो डॉक्टर राय के घर जा पहुँची। यह मैं नहीं जानती कि यह सब कैसे हुआ?

"डॉक्टर राय ने मुझसे सम्पर्क बनाना चाहा, परन्तु मैं नहीं मानी। इस पर डॉक्टर साहब ने मुझको वहाँ से निकाल कर एक अन्य स्थान पर भेज दिया। वहाँ बहुत से युवक और कई युवतियाँ आती-जाती थीं।

"वहाँ वे परस्पर खाते-पीते और वासना-तृप्ति करते थे। मैं वहाँ अपने को बचा कर नहीं रख सकी, परन्तु कुछ ही दिनों में उनकी बातें विचित्र प्रतीत होने लगीं। उनमें से एक उर्मिला नाम की लड़की मुझसे बहुत हिल-मिल गयी थी। वह ही मुझको उन लोगों के विचार बताती थी। उर्मिला का कहना था कि इन्द्रिय-सुख ही संसार में परमसाध्य वस्तु है और यह सब कुछ उनके यहाँ प्राप्य है।

"दो मास में ही मेरा वहाँ आने वाले प्रायः सभी युवकों से सम्बन्ध हो गया था। एक दिन एकाएक मुझको एक मोटर में बैठा कर पुनः डॉक्टर राय के घर लाया गया।

"उसी सायंकाल मुझको एक टैक्सी में बैठाकर शास्त्रीजी के घर पहुँचा दिया गया।"

जब कामिनी कह चुकी तो दास ने पूछ लिया, "तुम उनको पहचान सकोगी, जिनसे तुम्हारा सम्बन्ध बना था?"

"हाँ।"

"तुम पर किसी ने बलात्कार किया है?"

"नहीं, एक-आध बार डॉक्टर राय ने बल प्रयोग का यत्न किया था, परन्तु वह कर नहीं सका। उस मकान में तो मेरी आँखों के सामने ऐसा वासनामय व्यवहार किया जाता था कि मैं उसमें बह गयी।"

"तुमको विदित है कि वह घर कहाँ है?"

"इतने बड़े नगर में मैं यह जान नहीं सकी कि किधर से किधर ले जायी गई थी।"

"उस मकान से तुमको कभी बाहर ले जाया गया था?"

"उर्मिला के साथ एक-दो बार गयी थी, परन्तु मार्ग स्मरण नहीं कर सकी।"

दास ने डॉक्टर राय की ओर देखकर पूछा, "अब कहो मिस्टर राय! क्या कहते हो?"

"मैं कहता हूँ कि यह बिलकुल झूठ बोलती है। यह किसी वेश्याओं के कटरे में चली गयी है और वहाँ से ऊब कर घर वापस आ गयी है।

"यह कहानी तो निशनाथ की पढ़ाई मालूम होती है। वह कहानियाँ बनाना खूब जानता है।"

"डॉक्टर साहब! बात तो बहुत अच्छी बनी प्रतीत होती है, परन्तु वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिफाफा पर लिखा पता कैसे समझा सकोगे ?"

"लेख पहिचानना सुगम नहीं। जब तक मेरे लेख से उस लेख का पचहत्तर प्रतिशत मिलान नहीं होता, तब तक कोई परिणाम निकाला नहीं जा सकता।"

"ऐसी अवस्था में मैं कामिनी के बयान कल मैजिस्ट्रेट के सामने करवा दूँगा। आपको एक बार तो हथकड़ी लग जायेगी।"

"तो करके देख लो। इस पर भी मैं एक प्रस्ताव रख सकता हूँ। कामिनी मेरे पास नौकरी कर ले। तब इसको न तो शास्त्रीजी की रोटियाँ पकाने की आवश्यकता रहेगी, न ही पुन: उस वेश्यागार में जाने की, जहाँ से वह चली आयी हैं।"

"नौकरी ही क्यों ?"

"इसलिये कि विवाह तो इसका शास्त्रीजी से हो चुका है। वह टूट नहीं सकता। दूसरा विवाह यह कर नहीं सकती। अत: इसके लिये मेरी नौकरी करने के अतिरिक्त अन्य कोई उपाय नहीं रहा।"

"एक उपाय है, परन्तु वह तो इसको भगा ले जाने वाले को दण्ड मिल जाने के बाद ही प्रयोग में लाया जा सकेगा।"

"तनिक मुझको भी बता दीजिये।"

"वह यह है कि अपराधी को दण्ड मिल जाये तो फिर हम उसको इससे विवाह करन पर विवश करेंगे।"

"और पहले विवाह का क्या होगा ?"

"वह इसके विवश कर भ्रष्ट किये जाने पर, परस्पर समझौते से टूट जायेगा और दूसरा विवाह मान्य हो जायेगा। ऐसा उदाहरण है। हाईकोर्ट का निर्णय भी है।"

डॉक्टर राय नहीं माना। इसके पश्चात् शास्त्रीजी को आग्रह किया गया कि वह इसको, कल मैजिस्ट्रेट के सामने बयान होने तक, घर में रखे।"

अगले दिन जब कामिनी का बयान हुआ तो उस पर प्रेज़िडेन्सी मैजिस्ट्रेट ने डॉक्टर राय को दस हज़ार की जमानत हाज़र करने की आज्ञा दे दी। मोहन के वारंट जारी हो गये और कामिनी से पूछा गया कि वह कहाँ रहेगी ? उसने जब कहा कि अपने पति शास्त्रीजी के घर पर, तो शास्त्रीजी ने आपत्ति नहीं की।

डॉक्टर राय की ज़मानत हो जाने के पश्चात् पुन: दास बाबू के घर पर गोष्ठी हुई। इस बार की गोष्ठी विशेष रूप से डॉक्टर राय के आग्रह पर हुई।

मोहन ने बताया कि वह अदालत में इस विषय पर और प्रकाश डालने वोला है। उसने अपने बयान की रूपरेखा बताई।

मोहन ने बताया, "कमलेश शास्त्री से मेरा बहुत पुराना परिचय है। मैं अभी दस-बारह वर्ष का ही था कि शास्त्रीजी को जानता था। मेरे जानते-जानते शास्त्री जी के तीन विवाह हुए। यह तीसरी पत्नी कामिनी उनके घर में तब आई थी, जब मैं बाईस वर्ष का युवक हो चुका था। मैं तबसे कामिनी से प्रेम करने लगा था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस विवाह के पश्चात् मेरा शास्त्री जी के घर आना-जाना अधिक हो गया। मुझको यह जानकर हर्ष हुआ कि कामिनी भी मुझको पसन्द करती है। हम परस्पर मिलते रहते थे।

"निशनाथ का मुझसे परिचय शास्त्रीजी के घर पर हुआ। वह भी शास्त्रीजी से खूब हिला-मिला हुआ था। निशनाथ शास्त्रीजी के बड़े लड़के को पढ़ाता भी था।

"जब निशनाथ ने 'माटेराम शास्त्री' की कहानी लिखी तो कामिनी ने ही उस कहानी को पढ़कर शास्त्रीजी को सुनाया। जब उसने 'मोटेराम शास्त्री जी' की रूपरेखा का वर्णन पड़ा तो स्वयं बहुत हँसी। उसकी हँसी पर शास्त्री चिढ़ गया। उसने अपनी पत्नी को ही अपनी हँसी उड़ाते देख, निशनाथ पर मुकदमा कर दिया।

"कामिनी के आग्रह पर ही मैंने निशनाथ की सहायता की और उसको छुड़ाया। जब मेरे निशनाथ की सहायता करने पर शास्त्रीजी रुष्ट हुए तो कामिनी ने उनको मनाया। इससे शास्त्री जी को सन्देह हो गया कि उसकी पत्नी का प्रेमी निशनाथ है और उसकी पत्नी उसको बचाने में रुचि रखती है।

"निशनाथ तो छूट गया, परन्तु उसका शास्त्रीजी के घर आना मना हो गया। इससे मुझको, कामिनी की संगति का और भी अधिक अवसर मिलने लगा। शास्त्री जी के सन्देह को बनाये रखने के लिये, मैं कभी-कभी कह दिया करता था कि मैंने निशनाथ के साथ कामिनी को देखा है। इस पर शास्त्रीजी कामिनी को पीटने लगे। जब यह पिटाई सीमा से अधिक हो गयी तो कामिनी ने शास्त्रीजी का घर छोड़ने का निश्चय कर लिया। मैंने उसके लिये एक मकान और एक नौकरानी का प्रबन्ध कर दिया था। यह भी निश्चय था कि वह मेरी पत्नी के रूप में रहेगी।

"जबसे शास्त्री जी ने निशनाथ पर मान-हानि का मुकदमा किया था, डॉक्टर राय शास्त्रीजी के घर आने लगे थे। किसी प्रकार डॉक्टर राय को यह पता चल गया कि अमुक समय कामिनी को मेरी मोटर लेने आयेगी। उसने पाँच मिनट पहले अपनी मोटर भेज, उसको लापता कर दिया। मैं स्वयं मोटर लेकर आया था। जब मेरी मोटर पहुँची थी तो राय की मोटर चल पड़ी थी। मैंने चाचाजी की मोटर का नम्बर पढ़ा था, परन्तु मुझको यह विदित नहीं था कि उसमें कामिनी को ले जाया जा रहा है। मैं घर गया। पक्षी उड़ चुका था। मुझको तुरन्त सन्देह हुआ कि चाचाजी ही कामिनी को ले गये हैं। मैं चाचाजी के घर पहुँचा। परन्तु कामिनी वहाँ नहीं थी। मैं यह जानने का यत्न करता रहा कि उसने कामिनी को कहाँ रखा है ? परन्तु यह जान नहीं सका।

"जब मुझको यह पता चला कि निशनाथ पर कामिनी के भगा ले जाने का सन्देह है, तो मैंने उसको निर्दोष जान, उसकी सहायता की।

"कामिनी के विषय में मुझको कभी सन्देह होता था कि डॉक्टर राय उसको कहीं रखे हुए हैं और कभी अपनी आँखों पर, जिनसे राय की मोटर का नम्बर पढ़ा था, सन्देह होने लगता था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यह तो मेरे वारंट, जब मुझको मिले और मैंने उसका कारण जाना तो सब कुछ कह देने के लिये तैयार हो गया हूँ।"

शास्त्री, मोहन, डॉक्टर राय और कामिनी, जिसको वह घर पर पत्नी के रूप में रखने के लिये तैयार हो गया था, का मुख देख-देख पसीना हो रहा था। वह उस षड्यन्त्र को, जिससे निशनाथ को बदनाम कर फँसाने का यत्न किया जा रहा था, समझ घबरा गया। वह इस नवीन परिस्थिति में अपने व्यवहार का निश्चय नहीं कर सका। जब दास ने शास्त्री से पूछा, "अब क्या करोगे?" तो उसने कह दिया, "मैं तो अपने को पूर्ण रूप से मूर्ख बनाया गया अनुभव करता हूँ। मुझको मूर्ख बनाने में डॉक्टर राय ने सबसे बड़ा भाग लिया है। अतः मैं नहीं जानता कि मैं क्या करूँ? अधिक से अधिक मैं अपनी ओर से वकील खड़ा नहीं करूँगा। पुलिस जाने और मोहन इत्यादि जानें। मैं इसमें हस्तक्षेप नहीं करूँगा।"

"शास्त्रीजी! मैं पूछ रहा हूँ कि पत्नी के साथ क्या व्यवहार करोगे?"

"मैंने पिछले कई दिन से, उसके प्रेममय व्यवहार को देखकर उसको क्षमा कर दिया था। परन्तु उस समय और अब की बात में भेद पड़ गया है।

"मैं तो," शास्त्री नें कुछ विचारकर पुनः कहा, "कामिनी को पूर्ण स्वतंत्रता देना चाहूँगा। जैसे भी और जहाँ भी वह रहना चाहे, रह सकती है।"

जब सब कामिनी की ओर देखने लगे तो उसने कह दिया, "मैंने भारी भूल की थी। यदि मेरे पति मुझको घर पर रखने में आपत्ति नहीं करते तो मैं उनके पास ही रहूँगी।"

"परन्तु," शास्त्रीजी ने कह दिया, "यदि फिर, वैसा ही करना है, जैसा पीछे किया है, तो अभी ही चली जाओ।"

"अब वैसी भूल नहीं करूँगी।"

"परन्तु मुकदमे का क्या होगा?" दास का प्रश्न था।

इस प्रश्न का उत्तर डॉक्टर राय ने दे दिया, "पुलिस से मैं निपट लूंगा। मेरा वहाँ कुछ तो प्रभाव है। मुकदमा फाइल हो जायेगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

167926
Gurukula Kangri (Deemed to be University) Haridwar

चतुर्थ परिच्छेद

: १ :

हरिमोहन बचपन से ही माँ के लाड़-प्यार से वंचित रहा था। पैदा होते ही उसके लिये एक दायी रख दी गयी थी। वह उसको बाजारी दूध पिलाने लग पड़ी थी। मोहिनी पहले तो अपने स्वास्थ्य को सुरक्षित रखने के लिये और पीछे राजनीतिक कार्य में संलग्न रहने के कारण, अपने लड़के की ओर ध्यान नहीं दे सकी।

हरिमोहन जब शिशु-मात्र था तो उसकी माँ दिन में एक-आध बार उसको बुलाकर देख लेती थी। वह उसको साफ-सुथरा और साफ कपड़ों में देख संतोष कर लिया करती थी। ज्यों-ज्यों वह बड़ा होता गया, मोहिनी अधिक और अधिक सार्वजनिक कार्यों में व्यस्त रहने लगी और इतना भी करने के लिये उसको अवकाश नहीं मिलता था। तत्पश्चात् वह डॉक्टर राय के सम्मोहन में फँसी तो बच्चे को देखे सप्ताह भी व्यतीत हो जाने लगे।

इस समय दास बाबू ने अनुभव किया कि बच्चे की माँ बच्चे को भूलती जा रही है। इस कारण उसने इस ओर ध्यान देना आरम्भ कर दिया। परन्तु वह उतना कुछ न तो कर सकता था, न ही कर सका, जितना करना माँ का अधिकार और कर्तव्य था। वह प्रातः-सायं जब अल्पाहार लेने लगता तो उसको बुलाकर सामने बैठा लेता। उसको आहार लेने में सहायता देता और बस। उसका कार्य ऐसा था, जो उसके पूर्ण ध्यान की माँग करता था।

पहली बार जब मोहिनी साइमन-कमिशन के सम्बन्ध में पकड़ी गयी तो हरिमोहन दो वर्ष का था। उसके बाल-मन पर माता की वात्सल्यता के अभाव का प्रभाव हो रहा था, यद्यपि प्रत्यक्ष में वह स्वस्थ, प्रसन्न और संतुष्ट प्रतीत होता था।

वह पिता को बाबा कह कर पुकारने लगा था। परन्तु उससे उसको नैसर्गिक भय और तटस्थता अनुभव होती थी। उसकी दायी, जब उसको कहती—'चलो बाबा के पास।' तो वह उसके सामने आने में उत्साह अनुभव करता प्रतीत नहीं होता था।

साइमन-कमिशन के सम्बन्ध में तो कुछ लम्बे काल के लिये जेल में नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहना पड़ा, परन्तु उस समय तक मोहिनी का डॉक्टर राय से सम्बन्ध वन चुका था। अतः वह न केवल अपने पति को, प्रत्युत अपने बच्चे को भी भूल रही थी।

दूसरी बार नमक आन्दोलन के सम्बन्ध में वह जेल गयी तो हरिमोहन चार वर्ष का हो चुका था। अब वह स्वेच्छा से कोठी में भागता फिरता था। इस पर भी दायी के कहने के कारण और कुछ अपने बन गये स्वभाव के कारण, वह उधर जाना पसन्द नहीं करता था, जिधर उसका पिता बैठा होता था। माँ तो उसके लिये किसी प्रकार का भी आकर्षण अनुभव नहीं करती थी।

माँ को जब अपने बच्चे से तथा उसके पिता से तटस्थ रहने की भूल का ज्ञान हुआ, तब हरिमोहन आठ वर्ष का हो चुका था। वह कान्वेन्ट स्कूल में पढ़ने लगा था और अकेला रह पढ़ने और अपने मन के हवाई किलों में रहने का स्वभाव बना चुका था। अतः अब जब मोहिनी उसको बुलाती, "हरि, बेटा हरि! इधर आना।" तो वह कह दिया करता—"मम्मी! स्कूल का काम कर रहा हूँ।" इस प्रकार वह माँ के पास आने से बच जाता। वास्तव में उसके मन में अपने माता-पिता के प्रति किसी प्रकार का लगाव ही उत्पन्न नहीं हो रहा था।

जितना वह घर में शान्त और माता-पिता से दूर रहता था, उतना ही स्कूल में वह अपने पढ़ने वाले साथियों से हेल-मेल, लड़ाई-झगड़ा तथा शरारतें करने में तेज़ रहता था। उसकी श्रेणी में सात लड़कियाँ और दस लड़के थे। सब के सब हरिमोहन की उपस्थिति को अनुभव करते थे।

सब में प्रिय होने पर भी हरिमोहन का प्रभाव श्रेणी की एक लड़की मृणालिनी गुप्ता पर सबसे अधिक था। वह हरिमोहन से एक वर्ष छोटी होने पर भी उसकी श्रेणी में थी। उसका मस्तिष्क अपनी आयु से अधिक तीव्र होने के कारण, वह पढ़ने-लिखने में हरिमोहन और कई लड़कों से अधिक अंक लेती थी। परन्तु शारीरिक निर्बलता के कारण वह सबसे डरती रहती थी। कुछ लड़के उसको डरा-धमका कर, उसके पैसों से अपने खाने की वस्तुएँ लेते रहते थे। परन्तु जब हरिमोहन को इस बात का पता चला तो उसकी रक्षा का भार उसने अपने ऊपर ले लिया। यह प्रथम कारण था मृणालिनी के हरिमोहन के व्यवहार से प्रभावित होने का। धीरे-धीरे हरिमोहन का प्रभाव उस पर बढ़ता ही गया।

जब ये दोनों छठी श्रेणी में पहुँचे और लड़कों में यौन आकर्षण बनने लगा तो श्रेणी के लड़के लड़कियों के आगे-पीछे चक्कर काटने लगे। लड़कियाँ भी लड़कों की संगत में अधिक रस अनुभव करने लगीं।

स्कूल की मेट्रन लड़कियों को लड़कों से पृथक् रहने और तटस्थ रहने की प्रेरणा देने लगी, परन्तु इसका प्रभाव उलटा ही होने लगा। लड़कियाँ चोरी-चोरी लड़कों से मिलने का यत्न करने लगीं। मृणालिनी भी इस प्रतिक्रिया की शिकार हुई।

हरिमोहन को स्कूल से घर ले जाने के लिये गाड़ी आती थी। इन दिनों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मृणालिनी उसकी गाड़ी में ही घर जाती थी। उसके पिता कालीचरण गुप्त का घर मार्ग में ही पड़ता था। अतः धीरे-धीरे मृणालिनी के मन में हरिमोहन से रक्षा किये जाने से उत्पन्न प्रभाव कृतज्ञता और तत्पश्चात् मैत्री में परिणित हो गया। जब स्कूल की मेट्रन उसको बताने लगी, लड़कों के साथ सटकर नहीं बैठना चाहिए, उनसे दूर खड़े होकर बात करनी चाहिए, लड़कों के साथ बातें करते समय व्यर्थ में हँसना नहीं चाहिए, तो मृणालिनी हरिमोहन को बता देती कि मेट्रन उसको क्या कहती है। हरिमोहन को अनुभव होने लगा था कि लड़कियों से हाथ मिलाने अथवा उनसे सटकर बैठने में अधिक रस आता है। इस कारण वह मेट्रन के कथन का अर्थ अपने विचार और अनुभव के अनुसार लगाता था।

एक दिन मृणालिनी ने मेट्रन की बात बताकर पूछ लिया, "हरि ! वह ऐसा क्यों कहती है ?"

"उसी से पूछना था।"

"पूछा था। वह कहती थी कि हर एक लड़के में शैतान रहता है। यदि लड़कियाँ लड़कों के साथ अधिक रहें तो वह शैतान लड़कियों में भी घुस जाता है और वह उनको अपने घर, जो नरक में है, पकड़ कर ले जाता है।"

"तो तुमने पूछा नहीं कि लड़कों को वह पकड़कर क्यों नहीं ले जाता ?"

"पूछा था। वह कहती थी कि लड़के लड़कियों से अधिक बलशाली होते हैं और वह उनको पकड़कर नहीं ले जा सकता। इस पर मैंने पूछ लिया कि क्या लड़के शैतान से भी अधिक बलवान होते हैं तो वह बोली, 'हाँ।' मेरा दूसरा प्रश्न था, 'यदि हम दो-तीन लड़कियाँ इकट्ठी रहें तो हम भी उसको पीट लेंगी।' मेट्रन का कहना है कि 'हाँ, इकट्ठे रहने से उसको भगाया भी जा सकता है। इसमें शर्त यह है कि लड़का एक हो और लड़कियाँ अधिक हों।"

"यह बात मुझको समझ नहीं आयी। क्या एक-एक लड़के में एक-एक शैतान रहता है और जब दो-तीन लड़के इकट्ठे हो जाते हैं तो उनके भीतर रहने वाले शैतान भी इकट्ठे हो जाते हैं ?"

हरिमोहन मृणालिनी से अधिक समझदार था। वह आयु में भी उससे बड़ा था और लड़कों से बातचीत करने के कारण बहुत बातें समझता था। इस पर भी वह उन सब बातों को, जो वह लड़कों से सुनता था, मृणालिनी को बताना नहीं चाहता था। इस कारण उसने कह दिया, "मेट्रन ठीक ही कहती होगी, मुझको पता नहीं।"

"क्या तुम में भी शैतान रहता है ?"

"होगा। ज़रूर होगा।"

"वह तुम से कुछ कहता है ?"

"हाँ, कहता प्रतीत तो होता है, परन्तु मुझको उसकी बातें अभी समझ नहीं आतीं।"

"तब तो मुझको तुमसे दूर रहना चाहिये।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हाँ।"

"परन्तु मेरा चित्त करता है कि मैं तुमसे प्यार करूँ।"

हरिमोहन को न तो माँ ने ही कभी प्यार किया था और न ही उसकी कोई बहिन थी। जब वह छोटा था, और अभी वह स्कूल में भरती नहीं हुआ था, तब उसकी दायी उसको छाती से लगाकर उसका मुख चूमा करती थी। वह इससे बहुत सुख अनुभव करता था, परन्तु अब तो वह भी उससे प्यार नहीं करती थी। सदा उसको दूर खड़े होकर ही बातें करने को कहती थी। तब के अनुभव को वह लगभग विस्मरण कर चुका था। अब मृणालिनी को यह कहते सुन कि उसका चित्त उससे प्यार करने को कहता है तो उसके मस्तिष्क में बवण्डर उठने लगा। उसने कह दिया, "चित्त तो मेरा भी करता है, परन्तु···।"

"परन्तु क्या?"

"यही कि मेरे भीतर का शैतान कहीं तुममें न चला जाये और तुमको पकड़-कर नरक में न ले जाये।"

"पीटर कहता था कि मेट्रन झूठ बोलती है। उसमें कोई शैतान नहीं है। वह कहता था कि उसके पिताजी सदा उसकी माँ से प्यार करते हैं और उनमें से कोई भी नरक में नहीं गया।"

"मेरे माता-पिता तो कभी प्यार नहीं करते। हाँ, मेरी दायी सुमति मुझसे प्यार किया करती थी। अब वह भी नहीं करती।"

"मेरा जी तुमसे प्यार करने को करता है।"

"कैसे करोगी?"

"जैसे मेरी माँ मुझसे करती है?"

"कैसे करती है?"

"तो तुम्हारी माँ तुमसे प्यार नहीं करती?"

"मुझको स्मरण नहीं।"

"तो मैं तुमको बताऊँगी।"

उस दिन मृणालिनी हरिमोहन के साथ उसके कमरे में गयी और उससे गले मिल, उसका मुख चूमकर उसको प्यार कर आयी। हरिमोहन को यह बहुत ही भला प्रतीत हुआ।

: २ :

समय व्यतीत होता गया। आयु बढ़ने के साथ संसार का ज्ञान और उसके प्रति उत्तरदायित्व का ज्ञान होता गया। अब हरिमोहन को कॉन्वेन्ट स्कूल से निकाल कर भट्टाचार्य हाईस्कूल में भरती करा दिया गया। मृणालिनी लेडी कर्जन गर्ल्ज़ हाईस्कूल में भरती हो गयी। इस पर भी दोनों का परस्पर मेल-जोल बना हुआ था।

हरिमोहन मृणालिनी को मिलने प्रायः उसके पिता के घर जाया करता था। कालीचरण गुप्ता भी वकील था और बहुत ही स्वतन्त्र विचार का व्यक्ति था। उस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घर के स्वतन्त्र वातावरण का प्रभाव हरिमोहन पर हुए बिना नहीं रहा।

हरिमोहन में संकोच और लज्जा का भाव, जो उसके अपने घर के विशेष वातावरण के कारण बना था, मिटने लगा।

सन् १६४२ के दिन थे। इस समय तक हरिमोहन और मृणालिनी कॉलेज में भरती हो गये थे। दोनों में प्रेम बन चुका था और दोनों इस बात को जानते थे कि उनका विवाह होगा।

मृणालिनी अधिक स्वतन्त्र विचार रखती थी। वह निपट जड़वाद को स्वीकार कर चुकी थी। विज्ञान की विद्यार्थिनी होने के कारण वह शरीर विज्ञान के विषय में बहुत कुछ जानती थी। अतः मन में समागम की उत्कट इच्छा रखते हुए भी, अब वह हरिमोहन से उचित अंतर पर रहने लगी थी। इससे पूर्व तो उनका परस्पर मेल-जोल काफी अधिक था। अब हरिमोहन उससे मेल-मुलाकात को अधिक उत्सुक रहता था। इस मेल-मुलाकात को सीमा में रखने में बहुत हाथ मृणालिनी का ही था।

कालीचरण के घर के वातावरण का एक और अंग था। कालीचरण कम्युनिस्ट था। उसका सम्पर्क एम० एन० राय से हुआ, जो उन दिनों, मज़दूरों में शान्ति रखने में, अंग्रेज़ी सरकार की सहायता कर रहा था।

सन् १६४० में जब रूस और जर्मनी की सुलह थी, प्रायः कम्युनिस्ट भारत सरकार के युद्ध सम्बन्धी प्रयास में बाधा डालने का यत्न कर रहे थे। इस समय एम० एन० राय अंग्रेज़ी सरकार की सहायता के लिए आगे चला आया और भारत सरकार उसकी धन से सहायता करने लगी।

इन्हीं दिनों कालीचरण उसके सम्पर्क में आया था। यूँ तो कम्युनिज़्म के विषय में वह पहले भली-भाँति परिचित था, परन्तु एम० एन० राय के विचारों को सुनकर वह मन में एक नवीन स्फूर्ति उत्पन्न हुई अनुभव करने लगा था। एक दिन उससे विस्तृत विचार-विनिमय करने के लिये उसने उसको घर पर चाय का निमंत्रण दे दिया।

चाय पर मृणालिनी तथा हरिमोहन भी उपस्थित थे। कालीचरण नें बात आरम्भ करते हुए पूछा—"इंग्लैण्ड में अभी तक राज्य परिवार की सत्ता उपस्थित है। वहाँ का रईस वर्ग अभी भी राजनीति में टाँग अड़ाने की शक्ति रखता है। वहाँ के प्रायः लोग सरमायादारी में विश्वास रखते हैं। उस देश में चर्चिल जैसे निर्धन वर्ग के घोर विरोधी प्राइममिनिस्टर हैं। ऐसी अवस्था में आप अंग्रेज़ों की सहायता कर, क्या मानवता की प्रगति को रोक नहीं रहे?"

"देखिये गुप्ताजी! इंग्लैंड की स्वतन्त्र समाज को हम अपने प्रचार से प्रभावित कर सकते हैं। जहाँ विचार स्वतन्त्रता है, वहाँ हम अपने विचारों का प्रचार कर सकते हैं और जहाँ पहले ही तानाशाही है, वहाँ तो तलवार के आश्रय ही घुसा जा सकता है।"

इस पर हरिमोहन ने एक प्रश्न पूछ लिया, "रूस में विचार स्वतन्त्रता है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथवा नहीं ?"

"नहीं।"

"तो वहाँ भी यदि कोई घुसना चाहे तो तलवार के आश्रय से ही घुस सकेगा क्या ?"

"परन्तु वहाँ किसी को घुसने की आवश्यकता ही क्या है ?"

"जो आवश्यकता रूस को जर्मनी इत्यादि देशों में घुसने की है।"

"रूस तो एक प्रगतिशील देश है। प्रगतिशील विचारों को प्राचीन रूढ़िवादी समाज में जाने की आवश्यकता तो है, पुरानी गली-सड़ी बातों को रूस जैसे उन्नत देश में जाने की आवश्यकता नहीं।"

"परन्तु यह कौन निश्चय करेगा कि रूस एक प्रगतिशील देश है और जर्मनी नहीं ?"

"मनुष्य उन्नतिशील प्राणी है। यह निरन्तर प्रगति कर रहा है। इस कारण जो पुराना है, वह सब घटिया है। नवीन व्यवस्था सदा पुरानी से उन्नत होगी।"

"परन्तु हम तो अपने प्रोफेसरों से अधिक योग्य नहीं। इससे निरन्तर उन्नति करने की बात अप्रमाणित हो जाती है।"

"जब तुम अपने प्रोफेसर जितना पढ़ जाओगे और उस जितना अनुभव प्राप्त कर लोगे, तब तुम उससे अधिक योग्य हो जाओगे। तुम्हारे प्रोफेसर के अनुभव भी तुम्हारे होंगे और तुम्हारे अपने भी।"

युक्ति से बात ठीक प्रतीत हुई, परन्तु मन-ही-मन हरिमोहन इसमें कहीं भूल समझ रहा था। उसने तुरन्त कह दिया, "यह सर्वथा सत्य नहीं हो सकता। यह अनुभव से असत्य सिद्ध हुआ है।"

एम० एन० राय ने बात बदल दी। उसने कालीचरण से पूछ लिया, "इस लड़के का परिचय ?"

"यह विपिनविहारी दास, कलकत्ता के एक विख्यात वकील का लड़का, हरिमोहन दास है।"

"ओह ! तुम्हारे पिताजी प्रतिक्रियावादी आदमी हैं। मैं आशा करता हूँ कि तुम वैसे नहीं होओगे।"

यद्यपि हरिमोहन ने अपने पिता से कभी विचार-विनिमय नहीं किया था, इस पर भी अपने पिता को प्रतिक्रियावादी कहा जाना उसको पसन्द नहीं था।

उसने पूछ लिया, "प्रतिक्रियावादी तो संसार के सब प्राणी हैं। ऐक्शन का रिऐक्शन होता है। क्रिया तथा प्रतिक्रिया दोनों साथ-साथ चलती हैं। इसमें कौन क्या है और उचित है, कैसे कहा जा सकता है ?"

"इसको इतिहास बतायेगा। जो पुरानी अवस्था की ओर जाता है, वह अवांछनीय है और जो नवीनतम की ओर जायेगा, वह उचित है।"

इसका अर्थ हरिमोहन यह समझा कि वे एक गोलाकार रेखा में घूम रहे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुराने और नये एक-दूसरे के पीछे भाग रहे हैं। जो पिछड़ जाते हैं, वे आगे जाने वाले को अपने पीछे पाते हैं और उनको पिछड़ा हुआ पाते हैं।

जब हरिमोहन ने यह उदाहरण दिया तो मिस्टर राय ने बात फिर बदल दी। उसने कहा, "मैं भारत में सोशियलिज़्म का प्रसार चाहता हूँ, परन्तु उसको रूस के अधीन नहीं चाहता।"

कालीचरण ने पुनः वार्तालाप का सूत्र अपने हाथ में लेकर पूछा, "आप क्या इस बात में विश्वास रखते हैं कि हमको अहिंसात्मक उपायों का प्रयोग करना ही पड़ेगा?"

"हाँ! एक समय वैसा करना होगा, परन्तु वह समय अभी नहीं आया।"

"कल आयेगा?"

"जब देश के मजदूर संगठित हो जायेंगे, तब क्रान्ति काल आ जायेगा। हम जनरल स्ट्राइक की घोषणा कर देंगे और फिर देश में व्यवस्था भंग कर, राज्य अपने हाथ में ले लेंगे।"

"तो मज़दूरों के हाथ में सत्ता चली जायेगी?"

"हाँ।"

"परन्तु मज़दूर तो प्रायः अयोग्य, अशिक्षित, असभ्य और मूर्ख होते हैं। राज्य उनके हाथ में तो अनर्थकारी होगा।"

"मजदूरों में नेता पैदा होंगे और वे राज्य-कार्य चलायेंगे।"

इस पर हरिमोहन ने पुनः पूछ लिया, "क्या मज़दूर का बेटा मज़दूर ही होगा?"

"हाँ।"

"अर्थात् मज़दूर भी ब्राह्मणों की भाँति कोई जाति है?"

एम० एन० राय इस लड़के के प्रश्नों को फूहर समझता था, परन्तु उत्तर देने में कठिनाई अनुभव करता था। इससे प्रश्न का उत्तर देने के स्थान उसका मुख देखने लगा। हरिमोहन को इससे कुछ ऐसा समझ आया कि उसकी आपत्ति को राय समझा नहीं। अतः उसने पुनः कहा, "क्षमा करें। मैं अपने आशय को समझा नहीं सका। मैं यह कह रहा था कि किसी मज़दूर का बेटा जब समझदार, योग्य और विद्वान् हो जायेगा तो वह मज़दूर तो रहेगा नहीं। इससे उसके राज्य को आप मज़दूरों का राज्य कैसे कहते हैं?"

"वह मज़दूरों का प्रतिनिधि होगा।"

"परन्तु वहाँ पर फ्री निर्वाचन तो होंगे नहीं। फिर जो खड़ा हो गया, वह हो गया। मज़दूरों का प्रतिनिधि है अथवा नहीं, कौन निश्चय से कह सकता है?"

"ये निर्वाचन तो धोखे की टट्टी हैं। इससे योग्य व्यक्ति का चुनाव प्रायः असम्भव है।"

"तो मज़दूरों के राज्य में नेता कैसे चुना जाता है?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"उनको पार्टी चुनती है।"

"पार्टी में कौन होते हैं और वे नेता का निर्वाचन कैसे करते हैं ?"

"पार्टी में सब एक-दूसरे के कार्य को देखते हैं और अंत में नेताओं की योग्यता की परख करते रहते हैं।"

"और यदि पार्टी की नीति ही अशुद्ध हो तो अशुद्ध नेता देश का सत्यानाश नहीं कर देंगे क्या ?"

"नहीं, वे नहीं करेंगे।"

हरिमोहन हँस पड़ा। उसने हँसते हुए कहा, "वे अवश्य ही सत्यानाश करेंगे।"

"कैसे ?"

"जैसे वे नहीं करेंगे।"

इस पर मृणालिनी ने कह दिया, "हरिमोहन एक योग्य वकील का पुत्र होने से तर्क करने में बहुत योग्य है। मिस्टर राय! आप किसी मज़दूर को नहीं समझा रहे।"

राय हँस पड़ा। हँसकर उसने कहा, "जीवन-संघर्ष इसको ठीक कर देगा। प्रजातन्त्र-पद्धति के निर्वाचन, कौंसिलें, स्वतन्त्रता और मानव-अधिकार सब वागाडम्बर हैं।

"देखो बालक! अधिकार हैं—खाने को रोटी, रहने को मकान, पहनने को वस्त्र, और पुरुष को स्त्री की प्राप्ति।"

"यदि इनकी प्राप्ति में बाधा हो तो क्या किया जाये ?"

"उसके लिये ही तो क्रान्ति की, हिंसात्मक क्रान्ति की आवश्यकता रहती है।"

"पशु यही तो करते हैं।"

अब बात कालीचरण ने बदल दी। उसने कहा, "हर्र हैस इंग्लैंड में गया है। सुना है वह हिटलर और अंग्रेज़ों में सुलह करा, रूस के विरुद्ध युद्ध की घोषणा करना चाहता है।"

"हाँ, सुना है।"

"मान लो हिटलर की अंग्रेज़ों से सुलह हो जाती है, तब आपका व्यवहार क्या होगा ?"

"यूँ तो अभी बताना अति कठिन है। मेरी सिद्धान्तात्मक बात तो यह है कि जिस व्यवहार से सोशियलिज़्म का प्रसार होगा, मैं वही करूँगा।"

"क्या आप सोशियलिज़्म का प्रचार रूस की सहायता के बिना भी सम्भव समझते हैं ?"

"हाँ, रूस में, बिना किसी की सहायता के हुआ है ?"

"यह तो गलत बात है। यह बात अब विख्यात हो चुकी है कि जब कैसर ने दो मोर्चों पर युद्ध करने में कठिनाई समझी तो उसने रूस के ज़ार से पृथक् में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संधि कर लेनी चाही। परन्तु रूस का ज़ार अपने मित्र-राष्ट्रों को धोखा देना नहीं चाहता था। इस कारण रूस के अन्दर असन्तोष फैलाने के लिये स्विट्‌जरलैंड से लेनिन को करोड़ों रुपये देकर क्रान्ति करने के लिए भेजा गया। असन्तुष्ट सिपाहियों को जर्मन धन से बहका कर क्रान्ति की गयी थी।

"मि० राय! क्या यह सत्य नहीं कि जब आप मास्को में थे, भारत में तथा अन्य एशियाई देशों में क्रान्ति के लिये धन भेजते थे?"

"वह बात दूसरी थी। हम समझते हैं कि यहाँ के मज़दूर जब संगठित हो जायेंगे, तब यहाँ बलपूर्वक क्रान्ति सम्भव हो जायेगी।"

"संगठन के लिये धन की आवश्यकता रहती है। यही आप सब रूस में रहते हुए कर रहे थे। चीन में भी तो रूस, धन और शस्त्रास्त्र से विद्रोहियों की सहायता करता रहा है।"

यद्यपि एम० एन० राय किसी का भी समाधान नहीं कर सका, इस पर भी उसका नाम इतना था कि उसकी निरुत्तर होना, नीति से चुप रहना मान लिया गया।

: ३ :

हरिमोहन के मन की अवस्था विचित्र थी। वह कालीचरण के घर से एम० एन० राय की बातें सुन-सुनकर उसका भक्त था, परन्तु पैतृक सम्पत्ति के रूप में प्राप्त कानूनी प्रतिभा के कारण वह उसकी, युक्ति का उत्तर न दे सकने पर विस्मय कर रहा था।

आज, जब राय चला गया तो मृणालिनी ने हरिमोहन से पूछ लिया, "अब किधर जा रहे हैं?"

"सीधा अपने घर जाऊँगा।"

"मैं भी चलूँ आपके साथ?"

"हाँ, क्यों नहीं?" हरिमोहन ने घड़ी में समय देखकर कहा, "अभी तो आठ बजे हैं।"

"आपको घर छोड़ चली जाऊँगी।"

दोनों चल पड़े। मार्ग में बातचीत एम० एन० राय के कथन पर चल पड़ी। मृणालिनी ने कह दिया, "मुझको वह जंचा नहीं।"

"हाँ! सबसे बड़ी बात यह है कि जब तो इनका दल बल का प्रयोग करे तो ठीक और जब दूसरे बल प्रयोग करें, तो जालिम। इन्होंने जर्मन धन की सहायता से अपने राजा के विरुद्ध क्रान्ति की, उसकी और उसके परिवार की हत्या की। उसके साथ सहस्रों अन्य लोगों को मौत के घाट उतार दिया। यह ठीक हुआ और जब ज़ार अपनी सेना के बल पर किसानों और उस काल के बागियों पर जुल्म करता था, तो वह ज़ालिम था। मुझको यह फिलौसोफी समझ नहीं आयी।

"विशेष रूप में जब राज्य करने वाले नेता ही होंगे। ज़ार रूस का नेता था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस कारण कि वह राज्य परिवार में उत्पन्न हुआ था। लेनिन, स्टालिन रूस के नेता बन गये, इस कारण कि उनकी पार्टी के दस-पाँच आदमी उनके गुण गाते रहते हैं। शेष प्रचार से प्रभावित होते हैं।

"ज़ार के जमाने में ज़ार के विरुद्ध बात करना विद्रोह था। अब स्टालिन के काल में स्टालिन के विरुद्ध आँख झपकनी भी देश-द्रोह है।

"मृणालिनी! मुझको तो कुछ भी समझ नहीं आया।"

"एक बात मुझको पसन्द आयी है। वह है उसकी व्याख्या कि अधिकार है खाना, पहनना तथा रहना। बकझक करना अधिकार नहीं।"

हरिमोहन हँस पड़ा। उसने कहा, "देखो मृणालिनी! तुम्हारे पिता ने एक कुत्ता पाल रखा है, 'टीपू'। उसको खाने को भोजन, रहने को स्थान और सर्दी-गर्मी के बचाव के लिए सामान मिल जाता है। ऋतु में उसको एक कुतिया से भी मिला देते हैं। यदि ऐसा ही मनुष्य के लिए हो जाये तो ठीक है क्या ?"

"मैं समझती हूँ कि यदि समाज में सब के लिये अथवा बहुसंख्यकों के लिये यह प्रबन्ध हो जाये तो एक भारी सफलता है।"

"अर्थात् यदि पृथ्वी पर बसे दो अरब मानवों के लिये रोटी, कपड़ा, मकान और यौन-सम्बन्ध का प्रबन्ध हो जाये तो ठीक हो जायेगा ?"

"हाँ और मानव करता ही क्या है! इन्हीं वस्तुओं की प्राप्ति के लिये ही तो यह सब झगड़ा है।"

हरिमोहन मृणालिनी के मुख पर प्रश्नभरी दृष्टि से देखने लगा। मृणालिनी समझ रही थी कि वह क्या देख रहा है। ऐसे ही अवसरों पर हरिमोहन कह दिया करता था कि—"हमको तो यह सब-कुछ प्राप्त है, फिर हम क्यों दाँत कटकटाकर पुस्तकों को रट रहे हैं।"

इस पर वह कहा करती थी, "हम समाज के उद्धार के लिये यहसब कर रहे हैं।"

"हमारा समाज से क्या सम्बन्ध है ? यदि वर्तमान व्यवस्था बनी रहे, अंग्रेज़ यहाँ के राजा हों, सेना उनकी आज्ञा का पालन करती रहे तो क्या हानि है ?"

"आखिर," हरिमोहन का प्रश्न होता था—"एम०एन० राय के गवर्नरजनरल होने से अथवा लार्ड अर्विन के गवर्नर जनरल न होने से मुझको क्या? मेरी रोटी, कपड़ा, मकान आदि सुरक्षित हैं। मरने के पश्चात् न मैं रहूँगा, न मेरी सम्पत्ति। न किसी वस्तु की लालसा रहेगी, न ही आवश्यकता। मेरा अस्तित्व ही नहीं रहेगा। फिर मुझको क्या कि कौन जीता है अथवा मरता है ?"

इस उत्तर को सुन मृणालिनी निरुत्तर हो जाया करती थी—"यदि सब-कुछ जड़ ही है, जन्म से पूर्व तथा मरण के पश्चात् 'मैटर' (प्रकृति) मैटर में मिल जाता है, तो जब तक जो सुख मिले, क्यों न लिया जाये ? यह झगड़ा, फसाद, जेल, गोली आदि क्यों चलाई जाये ?

सबसे बड़ी बात यह थी कि कोई यदि भूखा मरता है तो मरे। वे क्यों चिन्ता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करें ? उनका दूसरों से क्या सम्बन्ध है, जो उनका पेट भरने के लिये वे स्वयं दुःख और कष्ट का निमंत्रण दें ?

इस प्रकार एक बंद गली की भाँति उनकी बुद्धि यहाँ पहुँच आगे मार्ग नहीं पाती थी।

इस प्रकार बातें करते-करते वे हरिमोहन के घर के बाहर जा पहुँचे। वहाँ खड़े-खड़े मृणालिनी विदा माँगने लगी। हरिमोहन ने कहा, "आओ भीतर। जलपान करती जाओ।"

"प्यास तो लगी है, परन्तु तुम सीमा भंग करने लगते हो।"

"मैं यही विचार किया करता हूँ कि किस कारण सीमा बाँधे हुए हैं हम ?"

"हम पढ़ाई कर रहे हैं, इसलिए।"

"पढ़ाई क्यों कर रहे हैं ?"

"ज्ञानवृद्धि के लिए।"

"क्या होगा ज्ञान-वृद्धि से ? कुछ काल तक जीने के पश्चात् हम मर जाएँगे, तब क्या होगा ? तब यह ज्ञानवृद्धि निरर्थक हो जायेगी। तब न ज्ञान रहेगा, न ज्ञान-वान् हरिमोहन।"

"हम संसार में ख्याति प्राप्त करेंगे। सब हमारी ओर देखकर हमारी प्रशंसा करेंगे। हमारा मान-आदर करेंगे और हमको हमारे ज्ञान के कारण ऊँची पदवी पर नियुक्त करेंगे।"

"देखो मृणालिनी ! यदि तो तुमसे पृथक् रहने की तपस्या का फल, कुछ मुझमें विशेषता उत्पन्न करने वाला होता है, जो मुझे अन्य प्राणियों से श्रेष्ठ बनाने वाली हो, तब तो मैं इस कठोर यंत्रणा को सहन करने में लगा रहूँ और यदि इससे मुझको कुछ विशेष वस्तु प्राप्त नहीं होनी तो मैं इसमें लाभ नहीं समझता।

"धन-दौलत की मुझको इच्छा नहीं। हमारे पास जीवन-भर के लिये पर्याप्त है। ख्याति को मैं, जो कुछ वर्ष के पश्चात् शून्य के समान हो जाने वाली है, प्राप्त कर क्या करूँगा ? मेरे मरने के पश्चात् लोग नाम लेंगे, मेरा पूजन करेंगे, मेरी स्मृति में भवन तथा मन्दिर बनायेंगे, इससे मुझको क्या ? मैं तुम्हारे साथ सुखवास को क्यों छोड़ूँ ?"

मृणालिनी हँस पड़ी। हँसकर कहने लगी, "यही युक्ति तुम सदा देते हो। पर मैं इस युक्ति से सदा अप्रभावित रहती हूँ।"

"हाँ, तुम यह कठोर तपस्या कर रही हो और मुझसे करा रही हो, बिना जाने कि क्यों ?"

मृणालिनी लौट जाना चाहती थी। यद्यपि वह आत्मा-परमात्मा के अस्तित्व पर विश्वास न करने से हरिमोहन की युक्ति का उत्तर नहीं दे सकी थी, इस पर भी उसका मन कहता था कि नहीं, अभी नहीं। इससे वह बिना उत्तर दिये घूमी तो दास बाबू और मोहिनी की मोटर द्वार पर आ खड़ी हुई। दास ने दोनों को खड़े देख लिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वे जानते थे कि दोनों इकट्ठे पढ़ते हैं और परस्पर बहुत मेल-जोल रखते हैं। अतः मोटर से उतर, दास बाबू ने पूछ लिया, "यहाँ खड़े-खड़े क्या कर रहे हो ? भीतर नहीं गये क्या ?"

"देरी हो गयी है, बाबा !" मृणालिनी ने कह दिया।

"आओ, पानी अथवा कॉफ़ी पी लो। फिर ड्राइवर तुमको छोड़ आयेगा।"

मृणालिनी के उत्तर की प्रतीक्षा किये बिना मोहिनी ने मोटर-ड्राइवर को कह दिया, "अभी मोटर नहीं रखना। इनको कालीचरणजी के घर तक छोड़ने जाना है।"

सब अन्दर चले गये। ड्राइंग-रूम में पहुँचकर दास बाबू ने हरिमोहन से पूछा, "भोजन करोगे ?"

"आज इनके पिता के घर पर एक बहुत बड़े व्यक्ति चाय पर आये हुए थे। वहाँ पर पेट भर खा लिया है।"

"कौन थे वे ?"

"श्री एम० एन० राय।" मृणालिनी ने कहा।

"ओह ! इतने बड़े हैं वे कि जिन्होंने उनको फाँसी पर चढ़ा देने की आज्ञा दे रखी है, उनकी ही प्रशंसा करते रहते हैं।"

"आओ, कुछ तो खा ही सकोगे।" मोहिनी ने मृणालिनी को कह दिया।

सब मेज़ के चारों ओर कुर्सियों पर जा बैठे।

जब बैरा भोजन परसने लगा तो दास बाबू ने पूछ लिया, "तो ये रूस से निर्वासित···क्या कहते थे ?"

उत्तर हरिमोहन ने दिया, "कहते थे कि आप प्रतिक्रियावादी हैं। मृणालिनी के पिताजी ने जब मेरा परिचय कराया तो वे बोले कि आपको जानते हैं और आप ऐसे हैं ?"

दास बाबू और मोहिनी हँस पड़े। दास ने हँसते हुए कहा, "मैं अपनी जान लिये भागा नहीं फिर रहा। इस कारण उसके विचार से प्रतिक्रियावादी हूँ। देखो हरि ! यदि भारत सरकार तुमको भारत से निकाल दे और तुम्हारे कहने पर भी तुम्हारी सुनवाई न हो तो तुम भारत सरकार और उसकी नीति की प्रशंसा करोगे क्या ?"

"परन्तु पिताजी !" मृणालिनी ने कहा, "उस देश में कानून दूसरा है। किसी का व्यक्तिगत कोई अधिकार नहीं। इससे जब कोई उनकी समाज को छोड़ता है, तो वह बागी माना जाता है।"

"यह प्रश्न का उत्तर नहीं, मृणालिनी ! तुमने देश और राज्य के स्थान समाज शब्द प्रयोग कर दिया है। बात तो वही रही। जिस समाज में न्याय के लिये कोई स्थान नहीं, तुमको अपनी सफाई देने का भी अधिकार नहीं, उस समाज की तुम प्रशंसा कैसे कर सकते हो ?"

"उस समाज में अन्य बातें तो प्रशंसनीय हैं ही।"

"हो सकती ही नहीं। कारण यह कि आधारभूत सिद्धांत ही अशुद्ध हैं। मनुष्य का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यक्तित्व नगण्य है। समाज ही सब कुछ नहीं है। यह तो ऐसा है, जैसे एक मकान में लगी ईंटें, गारा आदि कुछ नहीं, परन्तु मकान ही सब कुछ है। ऐसा मकान टूक-टूक हो गिर जायेगा।

"देखो मृणालिनी ! यदि तुम अपना सर्वस्त्र भी न्योछावर कर समाज का निर्माण करो और वह समाज जो तुम्हारे लिये कुछ न करे, तो तुम कैसा अनुभव करोगी ?"

"परन्तु सोवियत स्टेट तो अपने नागरिकों के लिये सब प्रकार की सुख-तुविधा का प्रबन्ध करती है।"

"इतना कि तुमको विचार कर ठीक और ग़लत का निर्णय करने की भी स्वीकृति नहीं देती। यहाँ तक कि तुम कैसा वस्त्र पहनो, इसका निर्णय भी सरकार करती है। वह सरकार क्या है ? वह है देश के आठ-दस व्यक्ति, जो सुप्रीम कौंसिल में हैं।

"हम अपने विचार करने की स्वतंत्रता, उन विचारों के प्रसार की स्वतंत्रता और अपने साथी-संगी ढूँढ़ने की स्वतंत्रता किसी भी सुख-सुविधा पर न्योछावर करना नहीं चाहते।"

"रोटी, कपड़ा, मकान के मुकाबले में भला विचारों की क्या कीमत है ?"

"वही कीमत है, जो एक मनुष्य को किसी कुत्ते, बिल्ली से भिन्न बताती है। हम विदेशियों के राज्य में रहते हुए अपने पर राज्य करने वालों की प्रत्येक बात पर विचार करते हैं और उसके गुण-अवगुणों का वर्णन करते हैं। इसमें लाभ यह होता है कि हम अपना, अपने इष्ट मित्रों का, अपने नगर तथा देश के निवासियों का पथ-प्रदर्शन करते हैं। हम इंग्लैण्ड के राजा तथा राज्य पर टीका-टिप्पणी करते हैं। हम उनके अपने विषय में व्यवहार की आलोचना करते हैं। विरोध करते हैं।

"और वहाँ अपना राज्य होते हुए भी, शासित शासकों के विषय में एक शब्द भी नहीं कह सकते।"

"प्रश्न तो यह है।" मृणालिनी का कहना था, "कि इन बातों की आवश्यकता ही क्या है ?"

"यह बात तो उनसे पूछो न, जो अंग्रेज़ी राज्य प्रणाली की निन्दा करते नहीं थकते। जब विचार करने और विचार की बात का प्रचार करने की आवश्यकता ही नहीं, तो फिर किसी बात की निन्दा की क्या आवश्यकता है ? सोवियत राज्य प्रणाली अच्छी है अथवा बुरी, वे जानें, परन्तु उनको यह कहने की क्या आवश्यकता है कि गांधी जी गलत हैं अथवा अमरीका की राज्य-प्रणाली गलत है।

"मिस्टर राय से पूछना था कि रूस वाले यहाँ लाखों रुपये भेज, लोगों को यह किसलिये बताते हैं कि यहाँ की राज्य-प्रणाली गलत है।"

उत्तर हरिमोहन ने मुस्कराते हुए दिया, "यह बात हुई थी। इस पर उनका कहना था कि यह बात दूसरी है।"

"कैसे दूसरी है ? बात तो एक ही है। जब वे यह कहते हैं कि इंग्लैंड और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अमेरिका में प्रजातन्त्रात्मक राज्य होने से सुख, शान्ति नहीं है तो यह विचार की हुई बात के प्रचार के लिये लाखों रुपये भेजते हैं। यह क्या विचार प्रचार नहीं है? यदि हम उनकी बात को ग़लत सिद्ध करने की बात करते हैं तो कह देते हैं कि यह दूसरी बात है?"

हरिमोहन हँस पड़ा। उसने बताया, "जब इनके पिता ने यही बात कही तो वे चुप कर रहे थे।"

"इस पर भी वे बड़े आदमी हो सकते हैं क्या?

"देखो हरि! बात यह है कि मार्क्सवाद जड़वाद की एक शाखा मात्र है। जड़वादी, मनुष्य और मिट्टी के ढेले में अन्तर नहीं मानते। इस आधारभूत भूल के कारण उनका यह अयुक्तिसंगत कथन और व्यवहार है।

"हम मानते हैं कि प्राणी में, विशेष रूप में मनुष्य में, इस शरीर के अतिरिक्त आत्मा और मन भी है। जैसे शरीर को सुख और आराम चाहिए, वैसे ही मन को विकास की और आत्मा को आनन्द की प्राप्ति चाहिये।

"मन का विकास बिना विचार स्वातंत्र्य के प्राप्त नहीं हो सकता। आत्मा का आनन्द संसार के बन्धनों से मुक्त हुए बिना नहीं हो सकता। इन बन्धनों से मुक्त होने के लिये हम ज्ञान-विज्ञान की पढ़ाई करते हैं। साथ ही इनमें उन्नति करते हैं।"

जिस बात की वे मार्ग में चर्चा कर रहे थे, पुनः उनके सामने उपस्थित हो गयी। जिस बन्द गली में पहुँचकर, अपना मार्ग नहीं पा रहे थे, वह मार्ग आगे खुलता प्रतीत होने लगा।

इस पर मृणालिनी ने पूछ लिया, "तो हमको कुछ प्रश्नों का उत्तर ढूँढ़ने के लिये आत्मा-परमात्मा के अस्तित्व का पक्ष लेना चाहिए?"

"ऐसा नहीं मृणालिनी! किसी प्रश्न का उत्तर ढूँढ़ने के लिये आत्मा के अस्तित्व को मानने की आवश्यकता नहीं। आत्मा का अस्तित्व तो सृष्टि-क्रम, इसकी उत्पत्ति इत्यादि से सिद्ध होता है। एक बार शरीर में किसी चेतन-शक्ति की उपस्थिति मान लेने से और उस चेतन-शक्ति के जन्म से पूर्व तथा पश्चात् होने को मान लेने से संसार के प्रायः सब प्रश्न समझ में आने लगते हैं।"

: ४ :

हरिमोहन मृणालिनी को अपने पिता की मोटर में छोड़ने गया तो मृणालिनी ने कह दिया, "आपके पिताजी की बात मान लेने से एक लाभ तो हो जायेगा।"

"क्या?"

"आपका बार-बार का आग्रह कि हमको सीमा का बन्धन तोड़ देना चाहिए, टाला जा सकता है। हमने अपनी पढ़ाई करनी है। इस कारण नहीं कि हमने नौकरी कर शारीरिक सुख-सुविधाओं के लिये धन कमाना है, प्रत्युत इस कारण कि हमको आत्मोन्नति और आत्मानन्द प्राप्त करने के लिये ज्ञान-विज्ञान की शिक्षा प्राप्त करनी है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हरिमोहन हँस पड़ा। उसने कहा, "यह तो एक नवीन बाधा हमारे जीवन में उपस्थित हो गयी है। इस पर विचार करना होगा।"

कालीचरण गुप्त का घर आया तो मृणालिनी उतरकर घर में चली गयी। हरिमोहन अनेकानेक विचारों में लीन घर लौट आया। उसको अपने पिता के कथन का अर्थ यह समझ आया था कि शारीरिक सुख-सुविधा के अतिरिक्त भी कुछ-न-कुछ उपलब्ध करने योग्य है।

मृणालिनी घर पर पहुँची तो उसके माता-पिता उसकी प्रतीक्षा में बैठे थे। उसे आते देख माँ ने पूछ लिया, "कहाँ गयी थी मृणालिनी ?"

"हरिमोहन के साथ उसके घर तक चली गयी थी। वहाँ उनके माता-पिता मिल गये। वे भोजन करने का आग्रह करने लगे। भूख तो नहीं थी, परन्तु उनका आग्रह टाल नहीं सकी। कुछ खाना ही पड़ा।

"अब उनकी माँ ने यहाँ तक आने के लिये मोटर दे दी तो उसमें सवार हो आ गयी हूँ।

"हम यह विचार कर रहे थे," मृणालिनी की माँ लक्ष्मीदेवी ने कह दिया, "कि तुम्हारा सम्पर्क हरिमोहन से दिन-प्रतिदिन बढ़ रहा है। तनिक सोच-विचार कर ही चलना चाहिये। तुम उतने धनी बाप की बेटी नहीं हो, जितने धनी का वह बेटा है। कहीं ऐसा न हो कि तुमको जीवन भर हाथ मलने पड़ें।"

"माँ ! मैं समझी नहीं। वास्तव में तो हरि से मेरा मेल-जोल पहले से बहुत कम है। जब हम कॉन्वेंट स्कूल में पढ़ते थे, तब तो वह कई बार हमारे घर पर ही सो जाता था। हम इकट्ठे पढ़ते और खेलते थे। अब तो मुझको रात देरी तक उसके साथ जाने में संकोच होता है !"

इस पर कालीचरण ने पूछ लिया, "क्यों संकोच होता है ?"

"लोग ठीक नहीं समझते। आप भी तो वही बात कह रहे हैं ?"

"लोग क्या कहते हैं और क्यों कहते हैं ?"

मृणालिनी का मुख लज्जा से लाल हो गया। इस पर भी अपने माता-पिता को, अपना मुख देखते हुए पा उसने कह दिया, "वे क्या कहते हैं, सो तो मैं जानती नहीं।

"इस पर भी पिताजी ! हमारा परस्पर वचन हो चुका है कि हम पति-पत्नी बन जीवन चलायेंगे।"

"यदि वचन हो चुका है तो हरि के माता-पिता को विदित हो जाना चाहिए, जिससे किसी प्रकार का पीछे झगड़ा न कर सकें।"

"वे झगड़ा क्यों करेंगे ?"

"बहुत बड़े कानूनदान हैं। न जाने क्या मीन-मेख निकालने लगेंगे।"

"मैं अभी उनको कहने में संकोच अनुभव करती हूँ।"

"इसमें संकोच की क्या बात है ?"

"हम अभी एफ०ए० में पढ़ते हैं। अभी हमारी आयु विवाह की है भी नहीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हम अभी अपने सम्बन्ध में बड़ों को वचन-बद्ध करना नहीं चाहते।"

"तो फिर उसके साथ घूमना-फिरना बन्द कर दो। हमको यह सब पसन्द नहीं।"

मृणालिनी चुप कर रही। उसने कुछ उत्तर नहीं दिया।

"तो ठीक है।" माँ ने कह दिया, "आज से तुम उनके घर नहीं जाओगी।"

"और यदि वह हमारे घर में आये तो?"

"एकान्त में उसके पास नहीं बैठोगी।"

"माँ! तुमने कुछ बुरी बात मेरे विषय में सुनी है अथवा देखी है क्या?"

"मैं बुरी अथवा अच्छी बात के लिये नहीं कह रही। मैं नहीं चाहती कि तुम कहीं विवाह से पहले ही माँ बन जाओ।"

"ऐसा क्यों होगा?" हमारा सम्बन्ध सदा पवित्र रहा है।"

"इसमें पवित्र-अपवित्र की बात नहीं मृणालिनी! यह एक सामाजिक बात है, जो आज की अस्वाभाविक समाज में पसन्द नहीं की जाती।" कालीचरण का कहना था।

"परन्तु आप अपने को क्या समझते हैं, अस्वाभाविक अथवा स्वाभाविक?"

"मैं अपने को कुछ भी समझूं। इतना तो स्पष्ट ही है कि हमको इस अस्वाभाविक समाज में रहना है।"

"देखिये पिताजी! मैं यह मानती हूँ कि मुझे उसके घर नहीं जाना चाहिए। परन्तु मैं यह अपने साथ अन्याय समझती हूँ कि अकारण मुझको उससे मिलने से मना किया जाये। वह हमारे घर में आयेगा तो मैं उसको निकाल नहीं सकती। भले ही उस समय घर में कोई हो अथवा न हो?"

"मैंने तुमको सचेत कर दिया है। इस पर भी यदि कुछ खराबी हुई तो मैं किसी प्रकार की सहायता नहीं कर सकूंगा।"

बात समाप्त हो गयी। मृणालिनी और हरिमोहन के सम्बन्धों में यह अन्तर आया कि हरिमोहन के कहने पर भी अब मृणालिनी ने उसके घर जाना बन्द कर दिया।

इस समय युरोपीय युद्ध की परिस्थिति में एक परिवर्तन आ गया। रूस पर हिटलर ने आक्रमण कर ही दिया था और मित्र राष्ट्रों ने रूस को अपने में सम्मिलित कर लिया था। इसके साथ ही अब जापान ने अमेरिका और मित्र राष्ट्रों के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी। इस प्रकार युद्ध में पासा पलट गया।

भारत में भी पासा पलटा। कम्युनिस्टों ने भारत सरकार की सहायता करने का वचन दे दिया। वे जेलों से छोड़ दिये गए और बड़े-बड़े अलाउँस लेकर मज़दूरों को युद्ध कार्य में संलग्न रखने के लिये प्रचार करने लगे। बहुत से कम्युनिस्ट सरकार की सेना में भरती कराने का काम करने लगे।

इस पर भी कम्युनिस्टों की आवश्यकता सरकार के पक्ष में तब बढ़ी जब सर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्टैफर्ड क्रिप्स का भारत के राजनीतिक नेताओं को मनाने का प्रयत्न असफल हुआ और गांधीजी भारत में 'क्विट इंडिया' आन्दोलन चलाने की चर्चा करने लगे।

भारत सरकार को, युद्ध-कार्य को चालू रखने के लिये, कारखानों के मज़दूरों का गांधीजी के प्रभाव से पृथक् रखना आवश्यक हो गया। इस कार्य में कम्युनिस्ट सहायक हो गये। सरकार ने कम्युनिस्टों को मज़दूरों में काम करने की खुली छुट्टी दे दी।

कम्युनिस्टों को एक और लाभ हुआ। युद्ध काल में रूस से कुछ विशेष सहायता आ नहीं सकती थी। अतः भारत सरकार की सहायता से उनका काम न केवल चलता ही रहा, प्रत्युत अभूतपूर्व उन्नति करने लगा।

'क्विट इंडिया' आन्दोलन के समय, यद्यपि सर्वसाधारण पर कम्युनिस्टों का प्रभाव नहीं पड़ा, परन्तु मज़दूर वर्ग पर इनका प्रभाव बहुत पड़ा। 'भारत छोड़ो' आन्दोलन के असफल होने के साथ-साथ जनसाधारण में भी कम्युनिस्टों का संगठन फैलने लगा।

इस बीच मृणालिनी पढ़ाई के साथ-साथ मज़दूरों में काम करने लगी। वह कलकत्ता के ट्राम संचालकों की यूनियन की प्रधान बन गयी। हरिमोहन को भी नगर की भंगी यूनियन में कार्य करने का अवसर मिलने लगा।

हरिमोहन कॉलेज से छुट्टी पाते ही भंगियों की बस्तियों में चला जाता, वहाँ नगर की सफाई में लगे हुए भंगियों को संगठित करने तथा उनमें प्रचार करने का यत्न करता था।

सरकार की ओर से इस कार्य के लिये धन मिल रहा था। वह धन हरिमोहन भंगियों में बाँटता रहता था। कम्युनिस्टों के प्रभाव से गांधीजी का भारत छोड़ो आन्दोलन शीघ्र ही निःशेष हो गया।

अभी तो गांधीजी के मस्तिष्क में आन्दोलन की रूपरेखा बन भी नहीं पायी थी कि कार्य-कारिणी ने बम्बई में आन्दोलन चलाने का निर्णय कर दिया और प्रायः नेतागण पकड़ लिये गए। पीछे रह गये जन-साधारण, जिनको न तो क्रान्ति चलाने के ढंग का ज्ञान था, न ही जिनको यह पता था कि इस आन्दोलन के सफल होने पर क्या होना है।

कांग्रेस में कुछ लोग प्राचीन क्रान्तिकारी विचारों के भी सम्मिलित हो चुके थे। जब उन्होंने 'भारत छोड़ो' आन्दोलन को शान्त होते देखा तो वे भूम्यान्तर्गत हो तोड़-फोड़ का कार्य करने लगे। परन्तु गांधीजी के इस प्रकार के आन्दोलन की निन्दा ने, इन प्रयत्नों को पनपने नहीं दिया।

पन्द्रह बीस दिन में आन्दोलन शान्त हो गया और देश में कम्युनिस्ट, सरकार की सहायता करते हुए, अपना संगठन सुदृढ़ करने में लग लये।

हरिमोहन भंगियों की यूनियन बनाने और उसमें दस सहस्र के ऊपर भंगियों को सम्मिलित करने में सफल हो गया।

हरिमोहन और मृणालिनी के संगठन कार्य में लग जाने से इनको परस्पर मिलने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग्रौर परिवार के सदस्यों से मेलजोल का ग्रवसर बहुत ही कम रह गया था।

हरिमोहन सायं ग्राठ बजे यूनियन के कार्य से छुट्टी पाकर प्रायः पार्टी कार्यालय में जाता था। वहाँ उसको पार्टी की भिन्न-भिन्न विषयों में नीति का पता चलता रहता था।

वह प्रायः रात के दस बजे घर पर पहुँचता। वहाँ दूध पी, वह कॉलेज के काम में लग जाता था। रात के एक-दो बजे तक पढ़ाई का काम कर वह सुबह ग्राठ बजे तक सोता ग्रौर फिर भाग-दौड़ करता हुग्रा नित्य कार्यों से छुट्टी पा, ब्रेक-फास्ट ले कॉलेज को चला जाता।

इन दिनों मोहिनी बीमा-कम्पनी के कार्य में अपना पूर्ण समय दे रही थी। भवानी बीमा-कम्पनी बंगालियों की ग्रपनी बीमा-कम्पनी समझी जाती थी। ग्रतः इसमें बीमा कराने वाले छोटे-बड़े सब रुचि रखते थे। प्रतिवर्ष कम्पनी के धन को बंगाल में, विशेष रूप में बंगालियों के उद्योग धन्धों को उन्नति देने के लिये प्रयोग का विवरण छापा जाता था। इससे बंगालियों के लिये इस बीमा-कम्पनी में सहयोग देना एक जातीय काम समझा जाने लगा था।

सन् १९४३ में बीमा कम्पनी को खुले पाँच वर्ष हो चुके थे। इन पाँच वर्षों में बीस करोड़ रुपये, बीमा कराने वालों की मृत्यु हो जाने पर दिये जा चुके थे। लगभग बीस करोड़ के बीमे चालू थे। इन पर लगभग दो करोड़ प्रतिवर्ष प्रीमियम (वार्षिक भुगतान ग्राता था। सब प्रकार के खर्चे निकालकर डेढ़ करोड़ रुपये की प्रतिवर्ष बचत हो रही थी ग्रौर यह डेढ़ करोड़, कम्पनी की सम्पत्ति बन रही थी। इसके ग्रतिरिक्त सरकारी जमानत कराने के पश्चात् साठ-सत्तर लाख के लगभग पूँजी के रूप में उद्योग-धन्धों में लगाया जा सकता था।

इससे कलकत्ता में विशेष रूप में ग्रौर बंगाल में साधारण रूप में कई नवीन कारखाने ग्रौर व्यापार की कम्पनियाँ खुलने लगी थीं।

इस सब समय डॉक्टर राय भारत सरकार की सहायता से मजदूर संगठन में लगा हुग्रा था। वह कुछ ग्राय तो वकालत से भी कर लेता था। इसके ग्रतिरिक्त बीमा कम्पनी के सेक्रेटरी होने के दिनों में पैदा किया धन उसके पास था।

इस बीच में कई बार डॉक्टर राय ग्रौर दास बाबू में कचहरी में संघर्ष हुग्रा था। जब-जब भी डॉक्टर राय हेराफेरी से कुछ स्वार्थ सिद्ध करना चाहता ग्रौर दास बाबू को पता चलता, वह भरसक यत्न करता, जिससे डॉक्टर राय की स्वार्थ सिद्धि से किसी ग्रन्य को हानि न पहुँचे।

कमलेश शास्त्री की पत्नी का मुकदमा तो दास बाबू की ग्राँखें खोलने वाला सिद्ध हुग्रा था। दास बाबू विचार करता था कि यह मानसिक विकृति जब कानून का संरक्षण पा जाती है तो ग्रनर्थकारी हो सकती है।

इस समय एक ग्रौर घटना घटी। दास बाबू को कलकत्ता हाईकोर्ट का जज बना दिया गया। दास की स्वीकृति प्राप्त कर ही इस नियुक्ति की घोषणा की गयी थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस नियुक्ति का बंगाली समाज ने हार्दिक स्वागत् किया।

परन्तु मिस्टर दास को निरंतर उन्नति करते देख डॉक्टर राय ईर्ष्या से जल-भुन गया।

: ५ :

विश्व-व्यापी युद्ध में पासा पलट रहा था। हिटलर एक महाभिमानी, जातीय संकीर्णता में फँसा हुआ शासक था। उसने जातीय आत्माभिमान को उभारकर तथा प्रथम युरोपीय युद्ध के पश्चात् इंग्लैंड और फ्रांस के व्यवहार को स्मरण करा जर्मनी को जातीय निर्माण के कार्य में लगा दिया था। जब वह जर्मन जाति का निर्विवाद रूप में नेता मान लिया गया और जर्मन के विद्वान् व्यक्तियों का सहयोग उसको प्राप्त हो गया तो जातीय निर्माण कार्य आरम्भ हुआ।

भूल इस बात में हुई कि न तो नेता और न ही उसके सलाहकार इस बात को समझ सके कि जाति में कौन-सी त्रुटि थी, जिस कारण जर्मनी की हार हुई थी।

नाज़ी नेता के मस्तिष्क में यही बात आई कि युद्ध सामग्री के प्रचुर मात्रा में निर्माण को ही जातीय निर्माण मानना चाहिए। अत: जाति की पूर्ण सम्पत्ति और शक्ति शस्त्रास्त्र निर्माण में व्यय होने लगी। जाति में स्वाभिमान, जो मूर्खता की सीमा तक पहुँचा हुआ था, कम करने का कुछ भी यत्न नहीं किया गया।

प्रथम जर्मन युद्ध में जन-धन का ह्रास तो हुआ था, परन्तु युद्ध जर्मन भूमि से बाहर रहने के कारण देश के उद्योग-धंधे नष्ट नहीं हुए थे। अत: जब हिटलर के नेतृत्व में पूर्ण जाति ने उठने का प्रयत्न किया तो देश की भट्टियाँ और कारखाने चलने लगे और पाँच वर्ष में ही शस्त्रास्त्र और युद्ध सामग्री के विचार से जर्मनी पृथ्वी भर के देशों में सबसे अधिक बलशाली हो गया।

१९३८ में हिटलर की आँखों के सामने अभिमान और संकीर्णता का रंग गहरा हो गया। उसने बलपूर्वक विस्तार की योजना बना डाली।

अभिमान सदा विनाश की ध्वजा ऊँची किये चलता है। युद्ध आरम्भ हो गया। युद्ध दो मोर्चों पर आरम्भ हो गया। आक्रमण करने की सुविधा के विचार से तटस्थ देश पोलैंड, बैलजियम तथा नार्वे को मलियामेट कर दिया गया। कुछ अन्न-अनाज की सुविधा के लिए रूस जैसे देश पर भी आक्रमण कर दिया गया।

यह विनाश का श्रीगणेश था। जापान, चीन में फैल रहा था और चीन के बहुत से भाग को पद-दलित कर भी संतोष नहीं कर सका। प्रशान्त सागर के कुछ द्वीपों, मलाया, इण्डोचायना और बर्मा इत्यादि पर प्रभुत्व प्राप्त करने के लिए वह भी युद्ध में सम्मिलित हो गया।

इससे अभिमान, स्वार्थ और मूर्खता की पराकाष्ठा हो गयी और अभिमान का सर नीचा करने के लिए मित्र राष्ट्रों की विजयारम्भ हुई। इसका श्रीगणेश जापान का आसाम की सीमा पर रोके जाने से हुआ। दूसरी ओर इटली की प्रथम पराजय इरिटीरिया में हुई। इसके साथ ही हिटलर की सेनाओं को स्टालिनग्राड में रोक लिया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गया।

तदुपरान्त पराजय-पर-पराजय होते हुए सन् पैंतालिस के आरम्भ में बर्लिन में मित्र राष्ट्रों के झण्डे गाड़ दिए गये। जापान पर दो ऐटम बम्बों ने युद्ध का अन्तिम निर्णय कर दिया।

इस पूर्ण युद्ध की विडम्बना यह रही कि हिटलर—रूस की समाजवादी सरकार का विरोधी रूस के साथ मैत्री कर बैठा। हिटलर अपनी पुस्तक में अंग्रेज़ों की प्रशंसा करता-करता उनसे युद्ध में भिड़ गया। चर्चिल—स्टालिन तथा वोलशिविक राज्य का घोर विरोधी, स्टालिन के साथ मैत्री करने पर विवश हो गया। स्टालिन अमेरिका का घोर निन्दक उसकी सहायता माँगने पर विवश हो गया और अमेरिकी तथा इंग्लिश टैंकों से ही बढ़ती हुई जर्मन सेना का मुख मोड़ सका।

उस काल की घटनाओं पर विचार करने वाला और उन घटनाओं पर विचार सिद्धान्तों का अनुशीलन करने वाला केवल यही मानेगा कि यूरोप और अमेरिका तथा जापान और रूस पागलों का समूह मात्र था। सब अपने ही को नष्ट-भ्रष्ट करने में लगे हुए थे। इसमें कारण यह था कि उन्नति के मिथ्या अर्थ लिए जा रहे थे। टेक्निकल (औद्योगिक) उन्नति को मानव की उन्नति माना जा रहा था। मनुष्य के मन को मशीनों का दास बनाया जा रहा था और अहंकार को जातीय मान-प्रतिष्ठा का बिन्दु माना जा रहा था।

१९४५ में जब युद्ध शान्त हुआ, संसार के सब कहे जाने वाले उन्नत देश विनाश के दाह से कोयला हो चुके थे और नेकी और मानवता को स्थापित करने के प्रयास में एक भयंकर दैत्य कम्युनिज़म का पालन-पोषण करने वाले सिद्ध हुए थे।

चियांगकाई शेक के चीन को जापान के पंजे से निकालकर रूस के हाथ में दे दिया गया। इस सौंपने में अमरीका जैसा कम्युनिस्ट विरोधी देश सहायक हो गया। जापान भर में अमरीका ने अपना प्रभुत्व स्थापित कर जापानियों की धर्म की प्रवृत्ति को कम्युनिस्टों के पंजे में फंसाने का प्रयास कर दिया। युरोप से पोलैंड की स्वतन्त्रता के लिये आरम्भ हुआ युद्ध पोलैंड का कम्युनिस्टों की दासता देने वाला सिद्ध हुआ। हंगरी, रूमानिया व यूगोस्लाविया सब-के-सब कम्युनिस्ट दैत्य के दाँतों में चले गये।

भारत में भी यही हुआ। अंग्रेज़ कांग्रेस के आन्दोलन को निस्तेज करने के लिये कम्युनिस्टों को बढ़ावा दे बैठे। गांधीजी अपनी सामयिक सफलता पाने के लोभ में एक ओर पंडित जवाहरलाल जैसे नास्तिक और कम्युनिस्ट को सिर पर चढ़ा बैठे और दूसरी ओर मुसलमानों की बातों को मान, देश के बँटवारे का आयोजन बना बैठे।

अंग्रेज़ कम्युनिस्टों के हाथ में पूर्वी युरोप को देकर भारत, वर्मा, चीन और अन्य पूर्वी एशिया के देशों को कम्युनिस्टों को भेंट करने का विचार करने लगे।

इस समय विपिनविहारी दास कलकत्ता हाईकोर्ट में जज नियुक्त हुआ। दास बाबू का वकालत करने का पूर्ण काल उसकी प्रतिभा को देख चमकाने वाला सिद्ध

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुआ था। अपना पूर्ण अनुभव और ज्ञान वह अपने इस पद पर लोक-कल्याण में प्रयोग करने का विचार रखता था।

डॉक्टर राय ने जब समाचार पत्रों में दास की नियुक्ति का समाचार पढ़ा तो वह भयंकर हँसी हँसने लगा। उस समय वह नगर की पाँच मज़दूर यूनियन के प्रतिनिधियों के साथ भावी कार्य की योजना बना रहा था।

पाँच यूनियनें थीं, ट्राम संचालकों की, मोटर-बस ड्राइवर तथा कंडक्टरों की, नगर के भंगियों की, बिजली के कारखाने के कर्मचारियों की तथा रिक्शा, ठेला चलाने वालों की।

भंगी यूनियन का प्रधान हरिमोहन और ट्रामचालकों की यूनियन की नेत्री मृणालिनी देवी, दोनों वहाँ बैठे थे। विचारणीय विषय यह था कि जिस दिन दिल्ली में सुभाष बोस की राष्ट्रीय सेना के अफसरों पर मुकदमा आरम्भ हो, कलकत्ता में विशेष रूप में और बंगाल में साधारण रूप में हड़ताल करा दी जाये।

डॉक्टर राय कह रहा था—"साथियो ! अब लोहा गरम है। देश ब्रिटिश राज्य पर एक भरपूर हाथ से चोट करने वाला है। यह चोट घातक सिद्ध होगी। अतः हमको इस अवसर से लाभ उठाकर देश का नेतृत्व गांधी जैसे प्रतिक्रियावादियों के हाथ से छीन कर अपने हाथ में ले लेना है।"

इसके पश्चात् यह प्रबन्ध होने लगा कि एक दिन के लिये हड़ताल इतनी पूर्ण हो कि यह नगर मृतप्राय: कर दिया जाये, जिससे सरकार और लोगों को यह पता चल जाये कि कम्युनिस्ट कितनी बड़ी शक्ति हैं। अतः वे ही देश के नेता, जनता के रक्षक और भावी शासक होने के योग्य हैं।"

कार्य-पद्धति का निश्चय करते समय मृणालिनी ने पूछ लिया, "हड़ताल के समय यदि महात्मा गांधी हड़ताल बन्द करने की सम्मति प्रकट करें तो फिर क्या करना चाहिए ?"

"कठिनाई गांधीजी की नहीं। हमारे मज़दूर वर्ग में गांधीजी को ब्रिटिश राज्य का एजेंट समझा जाता है। मुश्किल पंडित नेहरूजी की है। उनका ऊँचे-ऊँचे शब्दों में बोलना, प्रगति की बातें करना और अन्तर्राष्ट्रीय विषयों पर हमारे जैसे भाव प्रकट करना, मज़दूरों पर भारी प्रभाव रखता है।

"यदि वह बोल उठे तो हमको तनिक नीति से काम लेना होगा। हमको यह बात प्रसारित कर देनी चाहिए कि पंडित जवाहरलाल हमारे इस आन्दोलन को पसन्द करते हैं और यदि वह कुछ सार्वजनिक रूप में कहत हैं तो वह हमसे सम्बन्ध नहीं रखता। वास्तव में वह वस्तुस्थिति के अनुकूल न होने से मानने योग्य बात नहीं है।"

इसके पश्चात् एक तिथि निश्चित् हो गयी, जिस दिन आज़ाद हिन्द फौज के अफसरों पर मुकदमा आरम्भ होना था और कलकत्ता में हड़ताल की घोषणा कर दी गयी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक हड़ताल कमेटी बना दी गयी। डॉक्टर राय उसके प्रधान बन गये। स्थान-स्थान पर जलसे किये गये और जलूस निकाल कर हड़ताल को पूर्ण सफल बनाने के लिये प्रबन्ध होने लगे।

डॉक्टर राय भिन्न-भिन्न स्थानों के जलसों में व्याख्यान देते रहे और समाचार पत्रों में वक्तव्य छापते रहे। हड़ताल के एक दिन पूर्व एक बहुत बड़ा पोस्टर नगर के सब भागों में लगाया गया। इस पोस्टर पर लिखा था, "देश की मान-रक्षा के लिये, मनुष्य के, बुराई के विरुद्ध विद्रोह करने के अधिकार की सुरक्षा के लिये और अपने देश को स्वतन्त्र कराने के जन्मसिद्ध अधिकार के लिये, हड़ताल मुकम्मिल होनी चाहिए।

"देश के साथ प्रेम करने वालों को इस हड़ताल का विरोध नहीं करना चाहिये।

"जो विरोध करेगा, भगवान उनकी सुध लेगा।"

पोस्टर के नीचे डॉक्टर राय के हस्ताक्षर थे।

हड़ताल लगभग पूर्ण थी। पूर्ण नगर का कारोबार ठप्प हो गया था। दुकानें बन्द थीं, दफ्तर कर्मचारियों के अभाव में वांय-वांय कर रहे थे। यातायात क साधन नहीं रहे थे। स्टेशन पर कर्मचारियों की कमी के कारण रेल-गाड़ियां रुकी खड़ी थीं।

मध्याह्न तक सब कुछ शान्तिपूर्वक चलता रहा। सायंकाल परेड मैदान में जलसा करने का प्रबन्ध था। नगर भर के लोग वहाँ जाना चाहते थे, परन्तु यातायात न होने से जलसे पर जाने वालों के लिये साधन नहीं थे।

कुछ सरल-बुद्धि कर्मचारियों ने ट्राम और बसें चलाने का विचार किया। कुछ दूसरे कर्मचारियों ने इसको हड़ताल भंग करने का प्रयास समझा। जब ये ट्राम-गाड़ियाँ यात्रियों को ले चलने लगीं तो हड़तालियों ने ट्राम पर पत्थर फेंके, ट्राम में बैठे यात्रियों ने उनको समझाने का यत्न किया, परन्तु कौन सुनता था? ड्राइवर ट्रामगाड़ियों को पटरी पर छोड़कर भाग गये और लोगों ने उनको आग लगानी आरम्भ कर दी।

पचास ट्राम-गाड़ियाँ, बीस बसें और कई टैक्सियाँ जलाकर भस्म कर दी गईं। जलसा हुआ और उसमें उन कर्मचारियों की, जिन्होंने ट्राम-गाड़ियाँ चलाने का यत्न किया था, खूब निन्दा की गयी।

उस जलसे में यह भी घोषणा कर दी गयी कि हड़ताल दो दिन और जारी रहेगी।

इसके पश्चात् पुलिस ने 'डिफेन्स आफ इंडिया' ऐक्ट के अधीन डॉक्टर राय, हरिमोहन, मृणालिनी और कुछ अन्य हड़ताल कराने वालों को पकड़ लिया।

: ६ :

अगले दिन बहुत से कर्मचारियों ने, जो कम्युनिस्टों की अन्तरंग नीति को नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समझते थे, काम पर जाने का यत्न किया, जिस पर कम्युनिस्ट विचारधारा को समझने वालों ने उनके काम पर जाने का विरोध किया। इस प्रकार स्थान-स्थान पर विरोध हुआ, झगड़े हुए, छुरे चले, बम्ब चले, सरकार और गैर-सरकारी सम्पत्ति को नष्ट किया गया। बहुत स्थानों पर आग लगने और लूट-मार की वारदातें हुईं।

पुलिस को कई स्थानों पर गोली चलानी पड़ी। सैकड़ों लूट-मार करते पकड़े गये। बहुत कठिनाई से सायंकाल तक शान्ति स्थापित हो सकी।

एक और दिन लोग भयभीत होने के कारण काम पर नहीं जा सके। चौथे दिन काम-धन्धा चलने लगा। इस सब घटना में लगभग साठ-सत्तर लाख रुपये की हानि का अनुमान लगाया गया।

'डिफेन्स ऑफ इंडिया ऐक्ट' के अधीन पकड़े गये नेताओं में जब हरिमोहन और मृणालिनी का नाम छपा तो मोहिनी ने चिन्तित भाव में पति से कहा, "यदि आप इस समय जज न बने होते तो आपसे आशा कर सकती थी कि हरि को इस झमेले से निकाल देते।"

"यह कैसे कहती हो, मोहिनी! मैं समझता हूँ कि उसको अपराध का बहुत कम दण्ड मिल रहा है। मुकदमा चलता तो लूट और डाकाज़नी का मुकदमा होता। उस हालत में उसको सात वर्ष का कठोर दण्ड दिया जा सकता था। अब तो एक वर्ष आनन्द और आराम के जीवन के पश्चात् वह नेता बन छूट जायेगा और कहीं पुत्र में इतनी बुद्धि हुई, जितनी माँ में थी, तो वह भी जेल के एकान्त में रहते हुए कुछ सीखकर ही निकलेगा।"

मोहिनी समझ गयी कि माँ की ममता न्यायदृष्टि को धुंधला कर रही थी। वह चुप कर गयी।

इस पर भी बात शान्त नहीं हुई। पाँच हड़ताली नेताओं की ओर से हाईकोर्ट में 'हैबियस कार्पस' की पटीशन हुई। यह पटीशन हाईकोर्ट की फुल बैंच के सामने उपस्थित हुई। इस बैंच में दास भी एक जज था।

चीफ जस्टिस ने दास की नियुक्ति से पूर्व उससे पूछा था कि उसका लड़का भी पटीशन करने वालों में है। क्या वह इस बैंच में बैठना स्वीकार करेगा?

दास का स्पष्ट उत्तर था—"यदि मुझको इस बैंच में नियुक्त किया गया तो मैं अपने कर्तव्य का पालन करूँगा।"

नियुक्ति हो गई और पटीशन सुनने की तिथि निश्चित हो गयी। मोहिनी को जब पता चला कि उसका पति अपने पुत्र की पटीशन सुनने के लिये नियुक्त हुआ है तो वह डर गयी। वह अपने पति के विचार पहले ही सुन चुकी थी।

उसने एक बार यत्न करना अपना कर्तव्य समझा। उसने पूछा, "आपने इस बैंच में बैठने से इन्कार क्यों नहीं कर दिया?"

"नियुक्ति से पूर्व चीफ जस्टिस ने मुझसे पूछा था कि मैं इन्कार करूँगा अथवा नहीं। मेरा उत्तर था कि मैं अपना कर्तव्य पालन करूँगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"इस पर चीफ जस्टिस ने कहा कि उसको मेरी न्यायबुद्धि पर सन्देह है। इस कारण मुझको इस बेंच में काम करना चाहिये।

"मैं समझता हूँ कि कल मेरी न्यायबुद्धि की परीक्षा है। मैं आशा करता हूँ कि मैं परीक्षा में सफल हूँगा।"

अगले दिन कोर्ट में मोहिनी उपस्थित थी। डॉक्टर राय उसे देख, उसको हाथ जोड़ नमस्कार कर कहने लगा, "तो आप अपने न्याय-मूर्ति के न्याय का नमूना देखने आई हैं।"

मोहिनी को यह कटाक्ष अति अप्रिय लगा। इस पर भी उसने मुस्करा कर चुप रहना ही ठीक समझा। हरि और मृणालिनी भी वहाँ पर थे। वे दोनों लज्जित हो भूमि की ओर देख रहे थे। मोहिनी ने पूछ लिया, "हरि! तबीयत तो ठीक है?"

"नहीं माँ!"

"क्या कष्ट है?"

"मैं द्विविधा में फँसा हूँ। क्षमा माँग लूँ अथवा न? मुझको तो जो कुछ हड़ताल में हुआ है, उसकी आशा नहीं थी।"

"किस बात की आशा करते थे तुम?"

"हमारा उद्देश्य केवल मात्र सरकार के कार्य का, जो वह आई० एन० ए० के अफसरों के विरुद्ध मुकदमा कर रही है, विरोध करना था। परन्तु लोगों ने तो इसको मज़दूरों और पैसे वालों में संघर्ष समझ लिया था।"

"परन्तु यह क्षमा किससे माँग रहे हो?"

"हाईकोर्ट की बेंच से।"

"हाईकोर्ट के जज क्षमा करने के लिये नियुक्त नहीं हैं। क्षमा माँग कर व्यर्थ में अपना अपमान मत कराओ।"

"तो क्या करूँ?"

"केवल एक बात कर सकते हो कि मुकदमा आरम्भ होने से पूर्व खड़े होकर यह कह दो कि तुमने यह पटीशन भूल से कर दी थी। वास्तव में तुम अनुभव करते हो कि पुलिस ने तुमको पकड़कर ठीक ही किया है।"

हरिमोहन गम्भीर विचार में निमग्न खड़ा रहा। इस समय बंदियों को कोर्ट-रूम में ले जाया गया। बाहर दो-तीन सौ भिन्न-भिन्न यूनियनों के सदस्य खड़े उनकी जय-घोष कर रहे थे।

पटीशन करने वालों को जजों के सम्मुख बैठा दिया गया। उनके दाहिनी ओर इनके वकील कालीचरण गुप्ता खड़े हो पटीशन की व्याख्या करने वाले थे। मोहिनी तथा कुछ अन्य लोग दर्शकों की बेंच पर बैठे थे।

कालीचरण ने अपना वक्तव्य देने के लिये कहना आरम्भ किया। उसने कहा, "मी लार्ड......।"

इसी समय हरिमोहन ने खड़े होकर कह दिया, "मी लार्ड! विद्वान् वकील के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वक्तव्य के पूर्व मैं एक निवेदन करना चाहता हूँ। मुझको कहने की स्वीकृति दी जाये।"

"कहो!"

चीफ जस्टिस ने कहा।

"मैं इस पटीशन करने के समय, अपने कहे वाक्यों का परिणाम नहीं जानता था। आज जब मैं कोर्ट में लाया गया हूँ, तो मुझको कुछ समाचारपत्र पढ़ने को मिले हैं और हड़ताल के दिन तथा उसके अगले दिन, जो कुछ हड़तालियों ने किया है, उसका ज्ञान हुआ है। इस सबको पढ़कर मैं इस परिणाम पर पहुँचा हूँ कि मेरा अपने छूटने के लिये पटीशन करना सर्वथा भूल है। पुलिस मुझको पकड़कर बन्दी बनाने में ठीक ही कर रही है।

"अतः मैं अपनी पटीशन वापस लेता हूँ और ऑनरेबल कोर्ट को जो कुछ कष्ट मेरे कारण हुआ है, उसके लिये क्षमा चाहता हूँ।"

इतना कह वह बैठ गया। इस पर तो जज, सबके सब दास बाबू का मुख देखने लगे। कालीचरण गुप्ता भी इस युवक के मस्तिष्क की विकृति पर आश्चर्य-चकित रह गया था।

चीफ जस्टिस ने प्रश्नभरी दृष्टि से दास बाबू की ओर देखा तो उसने हरिमोहन को सम्बोधन कर कहा, "तो तुम यह स्वीकार करते हो कि तुम्हारे करने से ही यह लूट-मार, जो समाचारपत्र में वर्णन की गयी है, हुई है।"

"हाँ, मैं अनुभव करता हूँ कि अनिच्छित रूप में मैं उस सबके लिये जिम्मेदार हूँ।"

"इस स्वीकृति का अर्थ समझते हो? इसके अर्थ हैं कि तुम इस सब लूट-मार और आग लगाये जाने के अपराधों की जिम्मेदारी अपने ऊपर लेते हो।"

"मैंने निवेदन किया है कि अनजाने में मेरे कार्य इस परिणाम को पैदा करने वाले सिद्ध हुए हैं।"

इस समय चीफ जस्टिस ने कह दिया, "मैं आज्ञा देता हूँ कि हरिमोहन की पटीशन फाइल कर दी गई है। उसको कोर्ट से हटा दिया जाये।"

पुलिस उसको ले गयी। इसके पश्चात् कालीचरण ने पटीशन स्वीकार के लिये बहस की।

मृणालिनी और अन्य साथियों की पटीशन स्वीकार कर ली गयी। परन्तु डॉक्टर राय की पटीशन अस्वीकार हो गयी। उसके विषय में यह निश्चय किया गया कि उसको छोड़ देने से पुनः फसाद होने की सम्भावना है।

हरिमोहन के विरुद्ध मुकदमा चलाया जाये अथवा उसको छोड़ दिया जाय, इस विषय पर सरकारी अधिकारियों में विचार-विमर्श होता रहा। इस विचार का परिणाम दो सप्ताह बाद निकला और उसको भी 'डिफेंस आफ इंडिया एक्ट' के अधीन बन्दी रखने में कोई लाभ नहीं समझा गया। पुलिस का विचार था किसी के विरुद्ध भी लूट-मार तथा आग लगाने का आरोप सिद्ध नहीं किया जा सकेगा। अतः मुकदमा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं चलाया गया।

हरिमोहन घर आया तो सीधा माँ के पास पहुँचा। मोहिनी बैठी एक पुस्तक पढ़ रही थी। उसने हरि को देखा तो उठकर गले से लगा प्यार देने लगी। जब सुख-समाचार जाना जा चुका तो मोहिनी ने बताया, "तुम्हारे उस दिन के कोर्ट में वक्तव्य से तुम्हारे पिता बहुत प्रसन्न हैं। जाओ, उनसे मिल लो। वे इस समय स्टडी-रूम में हैं।"

इस समाचार से हरि का उत्साह बढ़ गया। वह मृणालिनी इत्यादि के छूट जाने से अपने मन में उत्साहहीनता अनुभव कर रहा था। वह समझता था कि सब लोग और उसका पिता, उसको मूर्ख समझते होंगे। अब माँ के ऐसा कहने पर वह स्टडी-रूम के बाहर जा खड़ा हुआ।

दास ने उसे देखा तो अपने स्थान से उठ, उसका हाथ पकड़कर भीतर ले गया। "ओह, तुम आ गये हो ?"

"हाँ बाबा ! मुझको डिफेंस आफ इंडिया ऐक्ट से छुटकारा मिल गया है। पर अभी नहीं कह सकता कि मुझ पर कोई अन्य आरोप लगा कर मुकदमा किया जा रहा है अथवा नहीं ?"

"तुमको उससे भय लग रहा है क्या ?"

"भय तो नहीं। इस पर भी अपने किये पर लज्जा लग रही है।"

दास ने उसको अपने सामने बैठाया और कह दिया, "मैं तुम्हारे व्यवहार से बहुत प्रसन्न हूँ।"

"सत्य बाबा !" हरि ने मुस्कराते हुए पूछ लिया। इस समय मोहिनी भी वहाँ आ गयी थी और हरि के पास सोफा पर बैठ गयी थी। दास ने पुत्र के प्रश्न का उत्तर दिया, "तुम्हारी युक्ति ठीक थी अथवा गलत थी, इस विषय में मत-भेद हो सकता है, परन्तु तुम्हारे कथन में ईमानदारी की बू आती थी और उससे हाईकोर्ट की पूरी बैंच तुम्हारे लिये मान और प्रतिष्ठा रखती थी। पीछे वे सब, मुझको तुम जैसा पुत्र पाने के लिये बधाई देते थे।"

"मेरी युक्ति में त्रुटि थी क्या ?"

"हाँ,! तुमको यह कहना चाहिये था कि जो कुछ अगले दिन हुआ, वह तुम्हारी इच्छा और योजना के अनुसार नहीं था। इस पर भी तुम अपने कथन के ऐसे परिणामों के निकलने से यह अनुभव करते हो कि पुलिस ने तुमको 'डिटेन' (जेल में रोक रखने) करने में भूल नहीं की। अतः तुम यह 'हैबियस कार्पस' की पटीशन वापस लेने की प्रार्थना करते हो।

"इस पर भी मैं समझता हूँ कि तुमने अपनी भूल को स्वीकार कर, अपने में एक वीर आत्मा का परिचय दिया है। मैं तुम्हारे व्यवहार से फूला नहीं समाता।

"परन्तु यह हुआ कैसे ? तुमको अपनी भूल का ज्ञान कैसे हुआ ?"

"जेल में मैं डॉक्टर राय के साथ ही रखा गया था। पकड़े जाने के दूसरे ही दिन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरी डॉक्टर राय से बात-चीत हुई तो मुझको पता चला कि यह ट्रामों को आग लगाना, दुकानें लूटना और छुरे घोंपने आदि की योजना हड़ताल से कई दिन पहले की बन चुकी थी। डॉक्टर राय का कहना था, 'इस प्रकार के बलवे करा कर, मैं मज़दूरों को क्रान्ति करने का अभ्यास करा रहा हूँ। एक दिन ऐसा आयेगा कि ये बलवे इतने उग्र हो जायेंगे कि रोके नहीं जा सकेंगे। तब क्रान्ति हो जायेगी और मज़दूरी करने वालों का राज्य हो जायेगा।'

"मेरा प्रश्न था, 'यह तो नियन्त्रण-हीनता पैदा कर देगा। एक बार नियन्त्रण भंग करने का स्वभाव पड़ा तो फिर लोगों को किसी उपयोगी काम में लगा सकना अति कठिन हो जायेगा।'

'क्रान्ति का यही अर्थ है।' उसका कहना था—'जब कार्ल-मार्क्स और लेनिन कहते हैं कि क्रान्ति के बिना मज़दूरों का अपना राज्य स्थापित नहीं हो सकेगा, तो उनका अर्थ यही है कि अव्यवस्था बनानी पड़ेगी, जिससे नवीन व्यवस्था बन सके।'

'परन्तु डॉक्टर साहब ! इस हड़ताल को हमने अव्यवस्था करने के लिये नहीं कराया था।'

'बिलकुल इसी मतलब के लिये किया था।'

'मुझको किसी ने बताया नहीं ?'

'इसलिये कि तुम अभी पार्टी के हाई कमांड में नहीं हो।'

'यह मैं जानता हूँ, परन्तु जब मुझको किसी काम के लिये नेता नियत किया है, तो उसकी पूर्ण बात मुझको बतानी चाहिये थी।'

'तुम केवल कार्य, वह भी जितना तुमको बताया गया था, उतना ही करने के नेता थे। नीति निश्चय करने के नेता नहीं थे।'

"इससे मैं चुप कर गया। उसी समय से मुझको अपने पर पश्चाताप होने लगा था।

"इस पर माँ के समझाने का प्रभाव हुआ और मैंने वह वक्तव्य दे दिया।"

"अब क्या विचार है ? कॉलेज तो छूट गया होगा ?"

"कॉलेज छोड़े तो मुझको एक वर्ष हो चुका है। मैं पार्टी का होल-टाइम वर्कर हो गया था।"

"सत्य ? पर यह तुमने बताया नहीं था।"

"मुझको आज्ञा थी कि मैंने यह बात किसी को बतानी नहीं।"

"ओह ! तो तुम इस अनधिकार-युक्त आज्ञा को मानने के लिये अपने माता-पिता को भी धोखा देने को तैयार हो गये थे ?"

"बहुत भूल हुई है बाबा ! मैं अब समझता हूँ यह कुटिलता मानव को स्वतन्त्र नहीं, प्रत्युत दास बनाने में सफल होगी।"

"अब क्या करोगे ?"

"मेरा पार्टी के कार्य से मन उचाट हो गया है। मैं कॉलेज में पुनः भर्ती होने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का प्रयत्न करूँगा।"

"यह तो अब अगले वर्ष ही हो सकेगा।"

"जी।"

"देखो हरि ! मैं एक बात, जो इस संसार में तत्त्व की है, बताता हूँ। यूँ तो मानव एक स्वतन्त्र प्राणी है और उसको सदा अपनी उन्नति में संलग्न रहना चाहिए। अपनी उन्नति के अर्थ में शारीरिक, मानसिक और आत्मा सम्बन्धी उन्नति सबस म्मि-लित हैं। ये उत्तरोत्तर एक से दूसरी अधिक आवश्यक हैं। यदि एक को दूसरे पर बलिदान करना पड़े तो पहले को दूसरे पर बलिदान किया जा सकता है। दूसरे को तीसरे पर परन्तु तीसरे को दूसरे अथवा पहले पर नहीं। न ही दूसरे को पहले पर। इसमें कारण यह है कि प्राणी में आत्मा सर्वोपरि है। शरीर और मन उसकी सहायता के लिये हैं।

"यह विधि का विधान है कि एक प्राणी अकेला नहीं रह सकता। इस कारण दूसरे के साथ रहने के लिये प्राणी को अपनी स्वतन्त्रता का दूसरों की स्वतन्त्रता के साथ सामंजस्य करना पड़ता है। इस सामंजस्य में भी आत्मा और मन की स्वतन्त्रता का बलिदान नहीं करना चाहिये। ऐसा सम्भव है कि एक प्राणी बिना किसी दूसरे की स्वतन्त्रता का हरण किये अपनी स्वतन्त्रता रख सके। आत्मा एक ऐसा पदार्थ है, जिसके लाभ-हानि की बात दूसरे की आत्मा के विरोध में नहीं आती।

"शरीर का शरीर से विरोध तो हो सकता है। कभी मन और मन का विरोध होना भी सम्भव है, परन्तु आत्मा का आत्मा से विरोध नहीं होता।

"अत: जो व्यक्ति आत्मोन्नति को सर्वोपरि समझते हैं, वे परस्पर लड़ते-झगड़ते नहीं, प्रत्युत समझौता का मार्ग अपनाते हैं। इस पर भी कभी आत्मा के अस्तित्व और इसकी महानता के न जानने से और कभी आत्मा को शरीर मान लेने से झगड़े होते हैं। इस अवस्था के लिये विद्वान् लोगों ने ऐसे नियम बनाये हैं, जिनसे झगड़े न हों। यदि हों तो निपटे जा सकें। इन नियमों को धर्म का नाम दिया गया है। धर्म एक प्राणी को दूसरों के साथ अर्थात् समाज में रहने के लिये, करने योग्य कर्तव्य का दर्शन कराता है। आज के काल में धर्म का पर्याय कानून है, यद्यपि धर्म और कानून में अन्तर दिखाई देता है। यह अन्तर कानून बनाने वालों की अज्ञानता के कारण है। इस पर भी धर्म का पालन करने वाले को हम कानून का मान करने वाला ही कहेंगे।

"इस कारण समाज में रहने वाले एक प्राणी के लिये धर्म अर्थात् कानून का पालन करना मैं परमावश्यक मानता हूँ।

"कानून अशुद्ध और मानवता का विरोधी हो सकता है। उसके शोधन की ओर उसको मानवता के अनुकूल करने की आवश्यकता है, परन्तु ऐसा करने का उपाय क्रान्ति नहीं। क्रान्ति तो सर्वथा अशुद्ध है और मानवता के विपरीत वस्तु है।

"अब तुम इस सिद्धान्त को समझ, स्वयं अपना मार्ग निर्माण कर सकते हो।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

: ७ :

अपने पिता की बात हरि को सुनने में सरल-सी प्रतीत हुई, परन्तु व्यवहार में यह एक गम्भीर विचार का विषय बन गयी। वह उसी सायंकाल मृणालिनी से मिलने गया। कालीचरण उस समय कचहरी से लौटा था और अपनी पत्नी तथा मृणालिनी की छोटी बहन मृदुला के साथ बैठा चाय पी रहा था। उन्होंने हरिमोहन को देखा तो पहले तो विस्मय में मुख देखते रह गये, जैसे वे उसको पहचानते ही न हों। परन्तु पीछे साधारण रूप से पूछने लगे, "हरि ! कब आये हो ?"

"आज सुबह ही छूटा हूँ।" वह खड़े-खड़े ही कह रहा या। किसी ने उसको बैठने को नहीं कहा था। हरि इस ठण्डे व्यवहार का अर्थ नहीं समझ सका। इस समय मृदुला उठी और दूसरे कमरे से एक कुर्सी उठा कर अपने समीप रख बोली, "बैठियेगा नहीं क्या ?"

"मृणालिनी कहाँ है ?"

"ट्राम संचालक यूनियन के मन्त्री महोदय सादिकहुसैन आये थे। वह उनके साथ गयी है।" यह उत्तर मृदुला ने दिया।

कालीचरण ने बात मृणालिनी के विषय से हटाने के लिये कह दिया, "उस दिन का तुम्हारा कोर्ट में बयान अपने कार्य के लिये बहुत ही हानिकर सिद्ध हुआ है।"

"कैसे ?"

"तुमने यह माना है कि वास्तव में तुम और तुम्हारे साथी बलवा, दंगा-फसाद और आग आदि की वारदातें करने का विचार रखते थे।"

"मैं जानता हूँ कि मैं ऐसा विचार नहीं रखता था। परन्तु डॉक्टर राय ने मुझको जेल में एक दिन बताया था कि यह हमारी पार्टी की नीति है कि हड़तालें करा कर, ऐसी गड़बड़ी मचाई जाये। इसको वे क्रान्ति का अभ्यास करना मानते हैं।"

"डॉक्टर राय ठीक कहते हैं। हमारी पार्टी का यही उद्देश्य है। हम पहले तो शान्तिमय हड़ताल की घोषणा करते हैं तथा इसका प्रबन्ध करते हैं। पीछे जब लोग खूब उत्तेजित हो जाते हैं तो अपने ही कुछ लोग विरोध करने के लिये भेज दिये जाते हैं। तब झगड़ा हो जाता है और फिर झगड़ा करने वाले दोनों पक्ष सरकारी सम्पत्ति को हानि पहुँचाने लगते हैं, धनियों को लूटने लगते हैं और ऐसे कार्य करने लगते हैं, जिससे सरकार और उसके सहायक धनी वर्ग ज़ालिम, मूर्ख और दुर्बल सिद्ध हों। यही क्रान्ति का मार्ग है।"

"परन्तु यह तो झूठ है, फरेब है और शान्तिमय प्रगति का विरोधी है।"

"ठीक उद्देश्य के लिये सब साधन ग्रहण किये जा सकते हैं।"

"परन्तु ठीक और गलत का निर्णय कौन करेगा ?"

"हम तो मज़दूर वर्ग के नेता हैं।"

"परन्तु आप अथवा डॉक्टर राय नेता हैं और मैं अथवा मृणालिनी नहीं, कैसे सिद्ध हुआ ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"देखो हरि ! इस कैसे का उत्तर पाकर तुमको समझ आ जायेगी। अभी तुम इस रहस्य को जानने के योग्य नहीं समझे जाते। रहा यह कि तुम नेता नहीं थे, यह निश्चय ही है। अन्यथा तुमको होने वाली लूटमार का ज्ञान होता।

"तुम्हारे उस दिन के बयान से तुम अभी एक दर्जा और पीछे कर दिये गये हो। मृणालिनी एक दर्जा आगे बढ़ गयी है।"

हरिमोहन को इस प्रकार पद-च्युत किये जाने से दुःख नहीं हुआ। वह आश्चर्य अवश्य करता था। उसने इस विषय को बदल दिया और पूछ लिया, "तो मृणालिनी शीघ्र लौटने वाली नहीं है क्या ?"

"हम नहीं जानते।" कालीचरण का उत्तर था। हरि को किसी ने चाय तक के लिये नहीं पूछा। मृदुला अपनी माँ की ओर विस्मय से देख रही थी। वह माँ से पूछना चाहती थी कि क्या वह हरिमोहन के सामने चाय का प्याला रखे ? परन्तु उसकी माँ, लक्ष्मीदेवी अपने पति की ओर देख रही थी।

हरिमोहन इस परिवर्तित परिस्थिति के विषय में विचार कर रहा था। उसको अपने ठीक अथवा गलत वक्तव्य के परिणामस्वरूप निजी सम्बन्धों में शिथिलता की बात समझ नहीं आयी थी। एकाएक उसको मृणालिनी के माता-पिता का व्यवहार अपमानजनक समझ आया। वह उठ खड़ा हुआ और कहने लगा, "अच्छा, अब मैं चलता हूँ। मृणालिनी को कह दीजियेगा कि मैं उससे मिलने के लिये आया था।"

इसके उत्तर में कालीचरण ने कह दिया, "तुमको अपने वक्तव्य, पहले अपने नेता से स्वीकार करवा लेने चाहियें, अन्यथा···।" वह कहता-कहता विचार करने लगा कि बताये अथवा न।

उसे चुप देख हरिमोहन ने पूछ लिया, "अन्यथा क्या होगा ?"

"कुछ नहीं। तुम वर्तमान स्थिति के भी अयोग्य समझे जाओगे।"

"कौन समझेगा ?"

"जिनको समझने का अधिकार मिला हुआ है।"

"बिना मेरी बात सुने वे निर्णय दे देते हैं क्या ?"

"हाँ, हमारे विधान में ऐसा ही है।"

हरिमोहन को इस सब व्यवहार और कथन पर ग्लानि अनुभव हो रही थी। उसका कलेजा मुख को आ रहा था। वह कमरे से बाहर निकल सड़क के किनारे आ खड़ा हुआ। वह विचार कर रहा था कि अब किधर जाये। उसके मन में मृणालिनी से भेंट करने की तीव्र इच्छा उत्पन्न हो रही थी। वह सड़क पर खड़ा देख रहा था और यह इच्छा कर रहा था कि वह आ जाये। परन्तु अन्य अनेकों आने-जाने वाले चल रहे थे, पर उनमें मृणालिनी नहीं थी।

वह अभी निश्चय नहीं कर सका था कि किधर जाये कि मृदुला घर से निकली और उसके समीप आकर पूछने लगी, "आप अभी यहीं खड़े हैं ? क्या सोच रहे हैं ?"

"ओह ! मृदुला ! मैं विचार कर रहा था कि मृणालिनी आ जाती तो कहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चल कर चाय पीते।"

"वह तो अभी नहीं आयेगी। आ भी जाये तो आपके साथ चाय पीने नहीं जायेगी।"

"क्यों?" हरिमोहन ने मृदुला की ओर देखते हुए पूछ लिया। मृदुला की आँखों में शरारत दिखाई देती थी। वह मुस्करा रही थी और चंचल आँखों से उसकी ओर देख रही थी।

जब मृदुला ने उत्तर नहीं दिया तो हरिमोहन ने कह दिया, "मेरी हँसी कर रही हो न?"

"नहीं जी! चलिये मैं आपके साथ चाय पीने चल सकती हूँ। आपका अपमान देख मेरा चित्त भी चाय पीने को नहीं किया।"

"क्यों?"

"क्यों? क्यों? क्या इस क्यों के बिना आप कोई अन्य शब्द बोल नहीं सकते? सुनिये, इसलिये कि मैं पार्टी की सदस्या नहीं हूँ। मैं किसी भी दर्जा की कम्युनिस्ट नहीं हूँ। इससे मैं आपके साथ चलकर चाय पी सकती हूँ।"

"तो क्या मृणालिनी के मेरे साथ चाय पीने में पार्टी बाधक है?"

"आज आपकी बुद्धि को क्या हो गया है? एक सरल-सी बात को भी आप समझ नहीं सकते। मृणालिनी और सादिक हुसैन में विवाह होने वाला है।"

"सत्य?"

"हाँ; वे दोनों एक ही दर्जा के कम्युनिस्ट हैं।"

"तो चलो, तुम और मैं दोनों दर्जाविहीन हैं। कहाँ चाय पीने चलें?"

"जहाँ के लिये आपकी जेब में पैसे हों? मेरी जेब में तो फूटी कौड़ी भी नहीं।"

"तो चलो, 'फिरपो' में चलें।" हरि ने सामने जाती हुई टैक्सी को हाथ खड़ा कर रोका और मृदुला को उसमें बैठा 'फिरपो' को चल पड़ा।

होटल के रिसेप्शन हाल में, एक कोने में बैठा चाय का आर्डर देकर, वह मृदुला के मुख पर देखता रह गया। वह मृदुला को तबसे जानता था, जब वह अपनी माँ की गोदी में खेला करती थी। इस पर भी उसका पूर्ण ध्यान मृणालिनी की ओर ही रहता था। आज पहला दिन था, जब मृदुला ने बलपूर्वक अपने को उसकी दृष्टि में ला खड़ा किया था।

इससे पहले कलकत्ता में चलती-फिरती असंख्य लड़कियों में एक वह भी थी। उन असंख्य लड़कियों से निकलकर, जब वह उसके सामने आयी तो हरि को समझ आया कि उसमें मृणालिनी से कुछ विशेषता है। वह हास्य प्रवृत्ति रखती थी।

अभी तो उसने दो ही बातें उससे की थीं। एक तो यह कि वह उसके साथ चाय पीने के लिये आ रही है, क्योंकि वह पार्टी की सदस्या नहीं है। इसका अर्थ वह यह लगा रहा था कि पार्टी के सदस्य तो किसी के साथ चाय भी पार्टी की स्वीकृति के बिना नहीं पीते।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक बात उसने और कही थी। वह यह कि चाय पीने के लिये उसको वहाँ ले चले, जहाँ के लिये उसकी जेब में पैसे हैं।

दोनों बातें भावपूर्ण और हास्यरस युक्त थीं। वह मृदुला की ओर देखता हुआ यही विचार कर रहा था। मृदुला ने उसको चुप देख पूछ लिया, "आप मेरे मुख पर क्या देख रहे हैं ?"

"तुमको और तुम्हारे मुख को तो असंख्य बार देखा है। अब कुछ नयी वस्तु नहीं देख रहा। अब तो यह विचार कर रहा था कि तुमने सादिक से अपनी बहिन के विवाह की बात, मुझको चिढ़ाने के लिये की है अथवा उसमें कुछ तथ्य है ?"

"तो आपका उससे बहुत प्रेम है ?"

"क्या आप लोगों को इसमें सन्देह प्रतीत होता है ?"

"आप लोगों से, आपका क्या मतलब है ?"

"तुम, मृणालिनी और तुम्हारे माता-पिता।"

"माता-पिता की बात तो मैं जानती नहीं, परन्तु अपनी और मृणालिनी की बात जानती हूँ।"

"क्या जानती हो ?"

"हम दोनों एक ही बिस्तर में सोया करती हैं। बचपन से हमको इकट्ठा ही बिस्तर मिला है। अतः हमारे में कोई भेद-भाव की बात नहीं। हम दिन भर के अपने अनुभव रात को, एक-दूसरे के गले में बाँह डालकर सुनाया करती हैं।

"पहले तो मृणालिनी आपकी बहुत प्रशंसा किया करती थी। वह बताया करती थी कि आप उसके लिये व्याकुल रहा करते थे। वह आपको सीमा में बाँधकर रखती थी। पीछे जब आपने और उसने कॉलेज छोड़ दिया था, वह आपको संयम में रहते देख विस्मय किया करती थी। वह कुछ-कुछ ऐसा समझने लगी थी कि आप किसी प्रकार से अस्वस्थ हैं। कभी-कभी तो आपकी उसके प्रति उदासीनता से रात-भर वह रोया करती थी। वह अपने मुख से अपने मन की अवस्था आपको कहना नहीं चाहती थी। वह यह अपना अधिकार समझती थी कि आप उससे आग्रह करें और वह आपको गले लगा, अपने दिल का सन्ताप मिटाए। परन्तु आप मौखिक प्रेम भी तो प्रकट नहीं करते थे।

"तदनन्तर आपका कोर्ट में वक्तव्य हुआ। वह छूट आयी और आप पीछे रह गये। यहाँ दिन रात आपके वक्तव्य पर गोष्ठियाँ होने लगीं।

"इन दिनों उसको सादिक हुसैन के साथ जाने का अवसर मिलने लगा। एक रात, आज से कोई एक सप्ताह पहले की बात है, वह मुझसे कसकर आलिंगन कर मेरा मुख चूमने लगी। मैंने कारण पूछा तो बोली, 'आज मैं बहुत प्रसन्न हूँ। आज मुझको पता चला है कि जीवन का सुख क्या है।'

"मैंने पूछा, 'क्या हुआ है आज ?' इस पर उसने बताया कि सादिक ने उसको आत्म-समर्पण करने के लिये विवश कर दिया है। आज समर्पण कर उसकी समझ में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आया है कि आपसे उसका व्यवहार भूल थी।"

हरिमोहन आवाक् मृदुला की बात सुन रहा था। चाय आ चुकी थी। मृदुला ने चाय बनाते हुए कहा, "कल वह कह रही थी कि सादिक से उसका विवाह निश्चय हो गया है। कोर्ट में उन्होंने प्रार्थना कर दी है। वहाँ से नोटिस जारी हो गया है। पन्द्रह दिन के पश्चात् उनका विवाह हो जायेगा।"

हरिमोहन का मुख विवर्ण हो रहा था। उसको यह समझ आया कि वह सत्य ही मूर्ख था, जो उसने बीसियों बार ऐसे अवसर आने पर, जब वह उसको आत्म-समर्पण के लिये विवश कर सकता था, उसको अछूता छोड़ दिया था। उसको अपने व्यवहार पर लज्जा लग रही थी और खेद भी हो रहा था।

मृदुला ने दो घूंट चाय पीकर कहा, "क्या विचार कर रहे हैं?"

"कुछ नहीं! तुम्हारी बहिन की प्रवृत्ति पर विस्मय कर रहा हूँ। मैं उसको ऐसा नहीं समझता था।"

"मैं तो, जब से कुछ समझने लगी हूँ, जानती थी कि वह अति वासनामय विचार रखती है। मैं कभी पूछती थी कि जब आप उसको कहते हैं तो वह मान क्यों नहीं जाती? वह इसका उत्तर नहीं रखती थी। इस पर भी रात को वह आपके सौन्दर्य, स्वभाव और बुद्धि की प्रशंसा करती थकती नहीं थी।

"इस बार पकड़े जाने से पूर्व मैंने उससे पूछा, 'दीदी! तुम विवाह क्यों नहीं कर लेती?"

'अब वे मुझको कभी पूछते ही नहीं।' उसका उत्तर था।"

हरिमोहन ने दीर्घ निःश्वास छोड़ा और चाय पीता रहा। मृदुला ने कहा, "मैं आपके हृदय की बात समझ, आपसे सहानुभूति अनुभव करती हूँ।"

"धन्यवाद मृदुला! इस पर भी मुझको कुछ ऐसा प्रतीत होता है कि तुम मुझको हँसी कर रही हो। मुझको तुम्हारी बहिन इतनी छोटी बुद्धि वाली प्रतीत नहीं होती।"

"कितनी छोटी?"

"जितनी तुम उसको प्रकट कर रही हो। सादिक को मैं जानता हूँ। कोरा पशु है। सूझ-बूझ की बात तो वह कभी करता नहीं। कैसे वह उसको पसन्द कर बैठी है?

इस पर मृदुला हँस पड़ी। हँसकर उसने कहा, "यहाँ चाय का बहुत स्वाद आया है। मैं आपका अत्यन्त धन्यवाद करती हूँ। आशा करती हूँ कि आप कभी-कभी ऐसी मेहरबानी करते रहा करेंगे।"

"मैं मृणालिनी से मिलना चाहता हूँ। यदि तुम कल उसको इसी समय यहाँ ला सको, तो मैं तुम्हारा अत्यन्त आभारी रहूँगा।"

मृदुला ने कुछ विचार कर कहा, "यत्न कर सकती हूँ, परन्तु पक्की बात नहीं कह सकती।"

"तो कैसे पता चलेगा कि तुम सफल हुई हो अथवा नहीं।"

"कल आप इसी समय नीचे पटरी पर खड़े रहियेगा। यदि तो आई तो वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अकेली आयेगी अन्यथा मैं बताने चली आऊँगी। यह भी हो सकता है कि हम दोनों आ जायें।"

"ठीक है। मैं साढ़े पाँच से छः बजे तक आपकी प्रतीक्षा करूँगा। उसकी, दोनों की अथवा तुम अकेली की।"

: ८ :

उस रात हरिमोहन इस नयी स्थिति पर विचार करता हुआ बहुत देर तक सो नहीं सका। उसको पार्टी में पदच्युत किये जाने का कुछ भी शोक नहीं था। वह पार्टी छोड़ने का विचार तो पहले ही कर चुका था। उसके मन में दुःख था मृणालिनी के व्यवहार पर। इस समय उसको उसके बाल्यकाल से उस दिन का पूर्ण इतिहास स्मरण हो आया था।

उसको वह श्रेणी की सब लड़कियों से अधिक सुन्दर प्रतीत होती थी। उसकी मुस्कराहट, उसकी चंचल आँखें, उसकी मीठी-मीठी बातें सब भली प्रतीत होती थीं।

उसको वह दिन भली-भाँति स्मरण था, जब वह पहले दिन उसके साथ उसके कमरे में आयी थी और उसको आलिंगन कर उसका मुख चूम कर बोली थी, "मेरी माँ मुझसे ऐसे प्यार करती है।"

उसने कहा था "तुम मेरी माँ हो ?"

दोनों हँस पड़े थे। इसके कई दिन पीछे मृणालिनी ने बताया था, "तुम से प्यार करने और माँ के प्यार करने में अन्तर है।"

"क्या अन्तर है ? मुझको तो मेरी माँ कभी प्यार नहीं करती।"

"बता नहीं सकती, परन्तु अन्तर है। तुमसे प्यार करने को बहुत जी करता है।"

इस प्रकार दो वर्ष तक मृणालिनी उससे प्यार करती रही। हरि, अब बहुत कुछ इस विषय में जान चुका था। बोला, "मुझको तुम पत्नी समझ आ रही हो।"

"हाँ ! मैं अब जानती हूँ। परन्तु मेरी माँ ने बताया है कि पति-पत्नी बच्चे पैदा करते हैं। इस कारण उसने बताया है कि हम को क्या नहीं करना चाहिये, नहीं तो बच्चे पैदा होंगे और बहुत कष्ट होगा।"

इसके पश्चात् दोनों में एक सीमा बन गयी, जिसका उल्लंघन कभी नहीं हुआ। यदि हरिमोहन उस सीमा को पार करने लगता तो मृणालिनी उसकी ओर ऐसे भाव में देख इन्कार करती कि वह उस पर बल-प्रयोग नहीं कर सकता था।

आज मृदुला ने उसको बताया कि मन-ही-मन वह चाहती थी कि वह उस पर बलात्कार करता। हरि उसके मन की इस अवस्था को समझ नहीं सका था।

इस समय उसको अपने पिता का वक्तव्य स्मरण हो आया। दास बाबू का कहना था, 'प्राणी केवल शरीर ही नहीं, अपितु मन और आत्मा भी है।' वह मन में विचार करता था कि क्या मृणालिनी की आत्मा उसके शरीर के समर्पण को रोकती थी ? क्या उसकी आत्मा ने सादिक को शरीर समर्पण करना ठीक समझा है ?

अवश्य ऐसा हुआ है। तभी तो सादिक से सम्बन्ध बनाकर वह अति प्रसन्न

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थी। अब दोनों में विवाह निश्चय हो गया है।

यदि उसकी आत्मा में सामंजस्य नहीं तो क्या यह अच्छा नहीं हुआ ? वह मन में विचार करता था कि कम-से-कम मृणालिनी के लिये तो ठीक ही हुआ है।

वह अपने मन में तो एक भारी अभाव अनुभव करता था।

प्रातःकाल वह उठा और स्नानादि से निवृत्त हो अपनी कॉलिज की पुस्तकों को निकाल, झाड़ फूँककर मेज पर सजाने लगा। वह अभी पढ़ाई आरम्भ करने के विषय में विचार कर ही रहा था कि नौकर आया और कहने लगा, "हरि बाबू ! टेलीफोन आया है।"

हरिमोहन का विचार था कि अवश्य ही मृणालिनी का है। कदाचित् उसकी आँखों का सामना करने में लज्जा लग रही हो। इसीलिये टेलीफोन पर अपनी बात बताना चाहती है। वह सब-कुछ उसी प्रकार छोड़कर टेलीफोन पर पहुँचा। टेलीफोन कालीचरण का था। परिचय के बाद उसने पूछा, "फरमाइये ! क्या बात है ?"

"हरि ! तुम कल से छूट कर आये हो, परन्तु तुम कार्यालय में रिपोर्ट करने नहीं गये ?"

"नहीं गया।"

"क्यों ?"

"मन नहीं किया।"

"इसमें मन की बात कहाँ से आ गयी ? तुम 'होल टाईमर' हो। तुमको आते ही तुरन्त जाकर रिपोर्ट करनी चाहिये थी।"

"हाँ, परन्तु मैं जा नहीं सका।"

'जा नहीं सके ? कोई मना करता है क्या ?"

"नहीं ! मना किसी ने नहीं किया। मैं वहाँ जाना उचित नहीं समझता। मेरे विचार बदल गये हैं।"

"देखो हरि ! यह पार्टी के साथ दगा है। विचार बदल क्यों गये ? हमारी पार्टी में विचार बदल सकते ही नहीं। कुछ भूल हो गयी है। जाओ ! आज वहाँ हो आओ। रही विचार की बात, सायंकाल आ जाना, कर लेंगे।"

"देखिये जी ! मैं वहाँ नहीं जा रहा। मैं किसी का नौकर नहीं हूँ। न ही मैंने विचार करने की शक्ति गिरवी रखी हुई है। मैं पार्टी से अलग हूँ।"

"आखिर पार्टी में क्या दोष है ?"

"यही कि वहाँ पर विचार-शक्ति को ताला लगाने को कहा जाता है। मैं विचार करने को भारी महत्त्व देता हूँ। साथ ही मैं किसी स्थान पर दुमछल्ला बन कर नहीं रह सकता। जहाँ सादिक जैसे मूर्ख नेता हैं, वहाँ मेरा निर्वाह नहीं हो सकता।"

"देख लो। लोभ-लालच में फँस कर एक महान् मानवता के कार्य को छोड़ रहे हो।"

"देख लिया है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"अच्छा सायंकाल मिल लेना। यहाँ टेलीफोन पर सब बातें नहीं हो सकतीं।"

"आज सायंकाल तो मुझको काम है। मैं आ नहीं सकूँगा। कल आने का यत्न करूँगा।"

"अच्छी बात! कल ही सही।"

अब पार्टी के विषय में कालीचरण की बात सुन वह हँस पड़ा। वह मन में विचार करता था, "पार्टी सादिक़ जैसे पशुओं के लिये ही ठीक है।"

अपने कमरे में आया तो उसका पिता वहाँ उसकी प्रतीक्षा कर रहा था। हरि के कमरे में आने पर उसने कहा, "मैं समझता हूँ कि कॉलिज खुलने में अभी कई महीने हैं और खाली रहना ठीक नहीं। इस कारण या तो तुम बीमा कम्पनी में चले जाया करो और वहाँ जो काम कहा जाये करो। या तुम मेरे कार्यालय में काम किया करो। खाली मस्तिष्क में तो शैतान घुस जाता है।"

"मैं बीमा कम्पनी में नहीं जाना चाहता। मुझको वह काम रुचिकर नहीं है। मैं आपके कार्यालय में काम कर लूँगा।"

"ठीक है। अभी आ जाओ। मैं तुमको दिन भर के लिये काम दे जाऊँगा। नित्य सायंकाल चार बजे काम दिखा दिया करना।"

हरिमोहन पिता के साथ उसके स्टडी-रूम में चला गया और वहाँ उसको दास ने एक मुकदमे की फाइल देकर दो-तीन प्रश्न लिखा दिये। दास ने कहा, "इस पूर्ण फाइल को पढ़कर इन प्रश्नों पर प्रकाश डालने वाली बातें अथवा घटनाएँ पृथक् नोट कर लेना। उनका संबंध लिखना। ये सब लिखकर एक कागज पर टाइप कर छोड़ना।'

इसका अर्थ था कि हरिमोहन को पूर्ण मुकदमे को पढ़, उसको समझ, उन प्रश्नों से सम्बन्धित, जो दास ने लिखाये थे, टिप्पणी लिखनी थी। कार्य अति रुचिकर था।

प्रातः का अल्पाहार ले वह मुकदमा पढ़ने बैठ गया। उसको पता चला कि बहुत मेहनत और सोच-विचार का काम है। इस पर भी मुकदमे में से व्यर्थ की और काम की बातें ढूंढने में वह रस लेने लगा।

मध्याह्न के भोजन तक वह केवल एक सौ पृष्ठ ही पढ़ सका। पूर्ण मुकदमा पाँच सौ पृष्ठों में था। भोजन के पश्चात् आधा घंटा विश्राम कर वह पुनः काम पर लग गया। ठीक चार बजे दास घर पर आया तो वह लड़के को काम पर लगा देख बहुत प्रसन्न हुआ।

"कितना कर लिया है, हरि!"

"अभी तो एक तिहाई भी नहीं पढ़ी गयी।"

"मैं समझता हूँ कि इसके नोट तुम टाइप कर दो। शेष कल कर लेना।"

हरि टाईपराइटर लेकर उन टिप्पणियों को टाइप करने लगा। पाँच बजे तक वह काम पिताजी के हवाले कर फिरपो रेस्टोराँ के बाहर जा पहुँचा। वहाँ दस मिनट तक प्रतीक्षा करने पर मृदुला अकेली आती दिखाई दी।

हरिमोहन ने पूछा, "क्यों? नहीं आयी वह?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"कहती थी कि वह आपसे मिलने की आवश्यकता अनुभव नहीं करती।"

इस उत्तर से वह मृदुला का मुख देखता रह गया। मृदुला हरिमोहन के मन की अवस्था का अनुमान लगा मुस्करा रही थी।

हरिमोहन ने कहा, "चलो, यह तो छुट्टी हुई। अच्छा मृदुला ! चाय पियोगी ?"

"आप निमंत्रण देंगे तो मैं इन्कार कैसे कर सकती हूँ ?"

"आओ।" दोनों हँसते हुए रेस्टोराँ में चले गये।

जब बैठ गये तो मृदुला ने मुस्कराते हुए पूछ लिया, "आपको दीदी के न आने-पर निराशा तो बहुत हुई प्रतीत होती है।"

"निराशा नहीं। कल तुम्हारे मुख से वृत्तान्त सुनकर विश्वास नहीं आया था। आज उसकी पुष्टि हुई है। अब उसके इस पुष्टि के पश्चात् मन कुछ हलका हो गया प्रतीत होता है।"

"परन्तु आपका मुख तो हलका हो गया प्रतीत नहीं होता। ऐसा प्रतीत होता है कि आपको बहुत दुःख हुआ है।"

हरि ने मुस्कराते हुए पूछ लिया, "यह कैसे जाना है ? मुझको तो ऐसी कोई बात प्रतीत नहीं हुई। केवल स्त्री प्रकृति पर अचम्भा हुआ है।"

इस समय बैरा आया तो हरि ने आर्डर दे दिया। मृदुला उसको वह बात सुनाने लगी, जो उसकी मृणालिनी से हुई थी। उसने बताया, "रात मेरी बहिन मेरी ओर पीठ कर सोने लगी तो मैंने उसको पूछ लिया, दीदी ! क्या बात है, आज मुख मोड़ कर लेट रही हो ?"

"उसने मुँख मेरी ओर कर लिया और कहने लगी, 'माँ बता रही थी कि हरि आया था और मेरे विषय में पूछ रहा था। मैं विचार कर रही थी कि अपने विवाह के विषय में उससे किस प्रकार बात करूँगी।'

"इस पर मैंने उसको बता दिया कि मैंने आपको उसके सादिक से विवाह के विषय में बता दिया है और आप उसके मन की दुर्बलता पर हँस दिये थे।

"मेरी इस सूचना पर वह मेरी ओर ध्यानपूर्वक देखने लगी। उसने पूछा, 'कैसे बात हुई थी।'

"इस पर मैंने वे सब बातें, जो कल मुझ और आपमें हुई थीं, उसको बता दीं। इस पर उसने कहा, 'तुमने मेरा एक बहुत कठिन काम कर दिया है। मेरा उससे बचपन का साथ है और हम परस्पर एक-दूसरे को बहुत से वचन दे-देकर, बहुत से हवाई-दुर्ग बना चुके हैं। मैं समझ नहीं रही थी कि मैं कैसे उनको सादिक की बात बताऊँगी। मृदुला ! तुमने मेरा एक भारी काम कर दिया है, मैं तुम्हारी बहुत कृतज्ञ हूँ।'

"इस पर मैंने उसको कहा, 'हरिजी तुमको कल साढ़े पाँच बजे फिरपो पर चाय का निमन्त्रण देते थे।'

'क्या है वहाँ ?'

'उनको मेरी कही बात का विश्वास नहीं आया। वह तुम्हारे मुख से समर्थन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाहते हैं।'

'मैं तो कल जा नहीं सकूँगी।' वह कुछ विचार कर कहने लगी, 'तुम चली जाना और कह देना कि मुझको काम था, इस कारण आ नहीं सकी। मेरी ओर से कह देना कि मैं उनको विवाह पर भोजन का निमन्त्रण दूँगी।"

हरिमोहन हँस पड़ा। हँसकर उसने कहा, "बिना उसके भोजन के तो मैं भूखा ही रह जाऊँगा।"

"मैं एक बात कहूँ।" मृदुला ने चाय की सुरकी लगाते हुए कहा।

"हाँ; कहो।"

"क्या आप उसका विचार छोड़ नहीं सकते ?"

"छोड़ दिया है। यदि अभी भी तुम मुझसे झूठ नहीं बोल रहीं, तो मुझको उससे घृणा अनुभव होने लगी है।"

"घृणा क्यों ? क्या कोई वस्तु प्राप्य न हो तो उससे घृणा हो जाती है ?"

"पत्नी और वस्तु में अन्तर है। वस्तु एक निर्जीव पदार्थ को कहते हैं। यहाँ तो उसने मुझको सादिक से घटिया मान, मेरा तिरस्कार किया है। मैं अपने को उससे घटिया समझता नहीं। इससे उसकी सूझ-बूझ को जान, उसको बहुत ही हीन बुद्धि वाला मानने लगा हूँ।"

"मैं तो यह कह रही थी कि वह हीन बुद्धि है अथवा विकृत मन वाली, छोड़िये। वह आपको प्राप्त नहीं। अपने मन में किसी और के लिये स्थान बनाने का यत्न करिये।"

"यह स्थान बनाने से नहीं बनता। कोई गुप्त शक्ति है, जो इसमें यत्नशील रहती है। देखा न, आठ-दस वर्ष से बन रहा सम्बन्ध एक दिन में टूट गया है। मैं इसको सादिक अथवा मृणालिनी का किया नहीं मानता। यह सब उसी गुप्त शक्ति का करना है।"

"हाँ, मैं इसको कर्मफल मानती हूँ।"

"कर्मफल ? कर्म तो तुम्हारी बहिन के ऐसे थे कि उसको जीवन भर मुझ पर शासन करना चाहिये था।"

"हाँ, पिछले आठ वर्ष के कर्मों से प्रबल उसके पूर्व जन्म के कर्म सिद्ध हुए हैं। उसके भाग्य में सादिक की दासता लिखी थी। इस कारण वह आपकी रानी नहीं बन सकी।"

"यह कर्म-फल की बात और भाग्य का प्रपंच मुझको समझ नहीं आता। किसी ने देखा नहीं। इसके घटने को कोई जानता नहीं। जब घट जाये, तो इसका कोई प्रमाण नहीं। सब अटकल सी बात हैं। इससे मैं इसको गुप्त बात कहता हूँ।"

"मैं समझती हूँ कि आपने इस ओर ध्यान नहीं दिया। दिया होता तो आपको सब कुछ प्रत्यक्ष दिखाई देने लग पड़ता।"

हरिमोहन हँस पड़ा। हँसकर उसने कहा, "तो तुमने यह प्रत्यक्ष किया है ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ-कुछ विचार करने पर समझ ग्रा रहा है। देखिये ! मैंने रामकृष्ण परम-हंस ग्रौर विवेकानन्द के विषय में पढ़ा है। मैंने कुछ लोगों से, जो उनके जीवन के सम्पर्क में ग्राये हैं, उनकी बातें जानी हैं। इससे मेरा पूर्वजन्म के कर्म-फल पर दृढ़ विश्वास हो गया है।"

"क्या जाने वह सब इल्यूज़न (भ्रम) ही हो ?"

"भ्रम का भी तो ग्राधार होता ही है। कोई रस्सी को साँप मानने लगते हैं। मैं कहती हूँ कि रस्सी न होती तो साँप का भ्रम न होता। भूल करने वाले ने किसी वस्तु के ग्रस्तित्व में भूल नहीं की। उसके गुणों में भूल की है।

"इसी प्रकार जब हम, ऐसी घटना होती देखते हैं, जैसे दीदी ग्रौर सादिक में हुई है, तो इसको किसी पूर्व जन्म के कर्म का फल ही मानना होगा। किस प्रकार के कर्म का फल है, यह भले ही हमें न पता चले, इस पर भी है किसी कर्म का फल ही।

"मुझको दीदी ने बताया है कि उस दिन जब दोनों पार्टी-मीटिंग से ग्रा रहे थे, तो सादिक ने कहा, 'यदि निवास-स्थान पर ग्राग्रो तो एक प्याला चाय पी लें।"

"दीदी ने पूछ लिया, 'कहाँ रहते हैं ग्राप ?"

"उसने उँगली से एक मकान की ग्रोर संकेत कर बताया, 'वह कमरा है। चलो, दिखाऊँ, हम किस प्रकार के स्थान पर रहते हैं।'

"दीदी उसके साथ उसके कमरे में चली गयी। वह ग्रकेला वहाँ रहता है। एक में सोता, पढ़ता ग्रौर लिखने का काम करता है। दूसरे में वह चाय-पानी बनाता है ग्रौर खाता-पीता है। दीदी गयी तो उसने स्टोव जलाया ग्रौर चाय के लिये पानी रख दिया। उसने ग्रलमारी खोली ग्रौर उसमें से बिस्कुट, नमकीन दाल-मोठ ग्रौर जैम निकाला। इस समय दीदी उसके पढ़ने के तथा सोने के कमरे में उसकी पुस्तकें इत्यादि देखती रही। वह चाय के दो प्याले बनाकर लाया। एक प्लेट में बिस्कुट इत्यादि रख कर ले ग्राया। दोनों खाट पर बैठ, सामने तिपाई पर खाने का सामान रख, खाने लगे। खाने के पश्चात्, दीदी ने बताया है कि सादिक ने कुछ इस तरह देखा कि दीदी का दिल धड़कने लगा। ग्रगले क्षण दोनों ग्रालिंगन-बद्ध हो रहे थे। ग्राधा घण्टे के पश्चात् दोनों शान्त-चित्त हुए तो घटना पर विवेचना करने लगे ग्रौर इस परिणाम पर पहुँचे कि जो कुछ हुग्रा वह स्वाभाविक था। ग्रब उनका विवाह हो जाना चाहिये।"

"ग्रब बताइये ! यह पूर्व जन्म के कर्मों का फल नहीं क्या ? कम-से-कम यह बुद्धि से विचार की हुई बात तो हो नहीं सकती। ग्राप, दीदी बताया करती थी कि बहुत धनी ग्रादमी हैं। इसका प्रमाण मैं कल ग्रौर ग्राज की चाय से पा चुकी हूँ। इस पर भी दीदी को सादिक, जो भाड़े के कमरे में रहता है, जिसके माता-पिता का पता नहीं, जो पार्टी के वेतन से गुजारा करता है, पसन्द ग्राया है।"

"इसको प्रेम कहते हैं।" हरिमोहन ने मुस्कराते हुए कह दिया।

मृदुला ने कहा, "प्रेम की बात तो जानती नहीं, वासना की उग्रता तो समझ ग्राती है। परन्तु वासना तृप्ति की घटना ग्रापसे न घटकर एक मुसलमान फक्कड़ युवक से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घटी, इसको भाग्य मानती हूँ। मज़ेदार बात तो यह है कि दीदी को यह भूल प्रतीत नहीं हुई। प्रत्युत् वह इसको जीवन-भर की खोज का अति मधुर पुरस्कार समझी है।"

"मृदुला ! तुम्हारा भाग्य किधर ले जा रहा है तुमको ?"

वह हँस पड़ी। अभी हँसी बन्द नहीं हुई थी कि उसे सादिक और मृणालिनी हॉल में आते दिखाई दिये। वे दोनों उनको ही ढूँढ रहे प्रतीत होते थे। मृदुला ने हाथ खड़ा कर संकेत किया तो वे उधर ही आ गये, जहाँ हरिमोहन मृदुला के साथ बैठा था।

: ६ :

हरिमोहन ने मृणालिनी और सादिक को बैठने को कहा तो मृदुला ने कह दिया, "दीदी ! तुम तो कह रही थीं कि तुमको काम है और आ नहीं सकोगी ?"

"काम तो था, परन्तु जब इनको बताया कि चाय के लिये निमन्त्रण है, तो ये बोले कि पहले यहाँ ही आना चाहिये, काम पर पीछे चले जायेंगे।"

हरिमोहन समझता था कि सादिक की उपस्थिति में बात खुलकर नहीं हो सकेगी। इस कारण वह उनके आने से प्रसन्नता अनुभव नहीं कर रहा था। इस पर भी कुछ बात तो होने वाली थी। वह उस बात की सीमा और उसकी दिशा पर विचार कर रहा था।

सादिक ने अभी औपचारिक बातों को जारी रखते हुए कहा, "हरिमोहन ! मैं तो अनामंत्रित ही आ गया हूँ। आशा करता हूँ कि तुमको बुरा प्रतीत नहीं होगा।"

उत्तर मृदुला ने दिया, "चाय पीने में क्या हो सकता है ? क्यों हरि बाबू ? पर इतना तो विस्मय करने की बात है ही कि दीदी जानते हुए भी कि क्या बातचीत होनी है, आपको साथ ले आई है।"

उत्तर सादिक ने ही दिया, "मैं उस बातचीत में बाधक नहीं बनूँगा। इस पर भी मैं स्वयं ही आया हूँ। इस कारण कि मैं अपनी पत्नी पर किसी दूसरे को डोरे डालते देखना नहीं चाहता। मेरी उपस्थिति में तो यह हो नहीं सकेगा।"

"सादिक ! ठीक है, परन्तु तुम स्वयं भी तो वही बात कर रहे हो, जो किसी को करने से मना करना चाहते हो।" हरिमोहन ने कहा, "छापा मारकर प्राप्त की वस्तु को कोई छापा मार ले तो बुरा क्या है ?"

"यह तो बलवान और योग्य व्यक्ति का ही काम है। किसी वस्तु पर अधिकार उसको अपने पास रख सकने की योग्यता पर ही निर्भर करता है। जो किसी वस्तु को सुरक्षित नहीं रख सकते, उनका उस वस्तु पर अधिकार भी मान्य नहीं है।"

मृदुला हँस पड़ी। हँसकर बोली, "यह अधिकारों की कम्युनिस्ट व्याख्या है। कम्युनिस्टों के अतिरिक्त लोग अधिकार के इस अर्थ को गलत समझते हैं।"

"परन्तु मृदुला ! यह बात पूर्ण संसार मानता है। मुख से भले ही कोई कुछ और कहे। हम इस सिद्धान्त की घोषणा करते हैं, इस कारण हमारा नाम इस सिद्धांत के साथ जोड़ दिया जाता है।

"देखो हरिमोहन ! पिछली बात जाने दो। मैं वर्तमान बात कहता हूँ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मृणालिनी मेरी पत्नी होने वाली है। हमने कोर्ट में डेक्लारेशन दे दिया है। अब किसी अन्य को इस विषय में चर्चा करने की न तो आवश्यकता है, न ही अधिकार।"

"जब तक विवाह न हो जाये, विषय अभी बदलने के लिये खुला समझ लेना चाहिये। क्या जाने किसी समय भी किसी के विचारों में परिवर्तन हो जाये।"

"परिवर्तन हो क्यों जाये ? जब मैं, जो मृणालिनी का स्वाभाविक संरक्षक बन गया हूँ, उसको किसी से मिलने ही नहीं दूँगा, तो विचार परिवर्तन कैसे हो सकता है ?"

मृदुला इस समय मुस्करा रही है। उसने हरिमोहन से कह दिया, "हरि बाबू ! सादिक साहब हकीकी कम्युनिस्ट हैं। जो कुछ रूस वाले, वहाँ की पूर्ण जनता से कर रहे हैं, यह वही अपनी छोटी-सी हकूमत में, मेरा मतलब है अपनी बीवी के साथ, करना चाहते हैं। वहाँ की जनता को न तो समाचारपत्र, पुस्तकें अथवा लेकचर पढ़ने-सुनने की स्वीकृति है, न ही परस्पर एक-दूसरे से वार्तालाप करने की। इसी प्रकार सादिक साहब अपनी होने वाली पत्नी को पढ़ने-लिखने और मेल-मुलाकात की कुछ स्वतन्त्रता नहीं दे सकते।

"वास्तव में हरि बाबू ! आप कम्युनिस्ट नहीं हैं। यदि कम्युनिस्ट होते तो एक हमारे हिन्दी लेखक की भाँति, जिनका मैं नाम नहीं लूँगी, अपनी पत्नी छिन जाने पर भी प्रसन्न रहते और कम्युनिस्टों के प्रति कृतज्ञता अनुभव करते।"

"मालूम होता है," मृणालिनी ने बात बदलते हुए कहा, "मृदुला कम्युनिज़म के विषय में बहुत कुछ अध्ययन कर रही है। परन्तु मृदुला ! पढ़ने से कुछ पता नहीं चलता। कम्युनिज़म का वास्तविक ज्ञान तो इसके भीतर पहुँच कर, इसके कार्य को कर और होते देख कर, पता चलता है।"

"भीतरी कार्य का ज्ञान तो हरि बाबू को हो गया है। मुझको इसकी कोई आवश्यकता नहीं। बात यह है कि तुम्हारे और मेरे में विशाल अन्तर है।"

"क्या अन्तर है ?"

"तुम केवल शरीर हो, मिट्टी का ढेला मात्र और मैं चेतन शक्ति, परमात्मा का अंश हूँ।"

"ओह ! यह रामकृष्ण सेवा मिशन में बहुत जाने का रोग प्रतीत होता है। मैं समझती हूँ कि तुम हरि बाबू से सम्बन्ध बना लो तो खूब आनन्द रहेगा, जब मिल बैठेंगे दीवाने दो···।"

"मैं तो आज के वार्तालाप का विषय नहीं हूँ। देखो दीदी ! मैंने इनको तुम्हारे होने वाले विवाह के विषय में बताया था, तो इनको विश्वास नहीं आया। इसीलिए ये तुम से मिलना चाहते थे। मैं समझती हूँ कि अब इनको मेरे कथन का विश्वास आ जायेगा।"

हरिमोहन और मृदुला तो चाय समाप्त कर चुके थे। सादिक और मृणालिनी पीछे आये थे। इस कारण वे डट कर खा रहे थे। हरिमोहन उनको डट कर खाते देख विस्मय कर रहा था। अनामंत्रित अभ्यागत और वह भी खाने में पेटू। यह उसके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आश्चर्य का विषय था।

पेस्टरी का एक टुकड़ा मुख में डाल सादिक कुछ कहने लगा तो शब्द ठीक उच्चारण नहीं कर सका। इस पर मृदुला ने कह दिया, "सादिक साहब ! खा लीजिये। हमें बात सुनने की जल्दी नहीं। हम यहाँ बैठे हैं।"

इससे कुछ लज्जित हो सादिक ने चाय का प्याला उठा एक घूंट ले, मुख का ग्रास गले से उतारकर कहा, "हरि बाबू ! अब तो विश्वास हो जाना चाहिए कि मृणालिनी का विवाह मुझसे हो रहा है। यूं तो हमारा विवाह हो चुका है। केवल मूर्खों की सोसायटी में, उनके कानून का पेट भरने के लिए रस्म अदा करने में कुछ देरी हो रही है।"

हरिमोहन ने पूछा लिया, "तो आपकी सोसायटी में भी कुछ मूर्ख हैं ?"

"मेरा अपना तो कोई यहाँ है नहीं। हाँ, इन देवी जी के सम्बन्धी हैं। उनका ध्यान रखना आवश्यक है।"

"तो क्या इन देवी जी के सम्बन्धी सब मूर्ख हैं, जो असल और नकल में भेद-भाव नहीं कर सकते।"

सादिक समझ गया कि हरि उसी को मूर्ख सिद्ध करने का यत्न कर रहा है। इससे उसने बात बदल दी। उसने कहा, "मैं आपको भोज का निमंत्रण भेज रहा हूँ। आप वहाँ आइयेगा जरूर। सादिक और मिसेज़ सादिक को बधाई तो मिलनी ही चाहिए।"

हरिमोहन ने बैरे से कहा, "बिल लाओ।"

इस पर सादिक ने कह दिया, "भाई, खा तो लेने दो। अच्छा।" उसने बैरे की ओर देखकर कह दिया, "यह पेस्टरी की प्लेट रहने दो। इसका भी बिल ले आओ।"

जब बैरा बिल लाया तो अभी भी प्लेट में तीन टुकड़े शेष थे। सादिक ने प्लेट उठा, मृदुला की ओर कर कहा, "एक तो तुम और ले लो।"

"मैं पेट भर चुकी हूँ।"

इस पर सादिक ने एक टुकड़ा मुँह में डाल लिया और एक हाथ में पकड़कर तीसरे टुकड़े के साथ प्लेट मृणालिनी के सामने रख दी।

ये अभी खा ही रहे थे कि हरिमोहन बिल चुकता कर खड़ा हो गया।

सब नीचे उतर आये। सादिक और मृणालिनी तो बस में चढ़कर बड़ा बाज़ार की ओर चल पड़े। मृदुला और हरिमोहन ने टैक्सी की और कालीचरण के मकान की ओर चल पड़े।

मार्ग में दोनों चुप अपने-अपने विचारों में लीन चले जा रहे थे। हरिमोहन विचार कर रहा था—'यह तो निरा पशु है ! मृणालिनी कैसे इसके चंगुल में फँस गयी है ? इनकी कब तक निभ सकेगी ? मृदुला विचार कर रही थी, 'मृणालिनी सादिक के व्यवहार पर प्रसन्न नहीं है। वह बहुत कम बोली है। क्या उसको अभी से अपने किये पर पश्चात्ताप लग रहा है ?'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टैक्सी कालीचरण के घर के बाहर खड़ी हुई तो उसकी आवाज़ सुन कालीचरण अपने कमरे से निकल, बरामदे में आ खड़ा हुआ।

हरिमोहन की इच्छा थी कि मृदुला को उतार कर बाहर से ही लौट जायेगा, परन्तु जब कालीचरण बरामदे में दिखाई दिया तो वह टैक्सी से उतर हाथ जोड़ नमस्कार करने लगा।

"ओह!" कालीचरण ने उसको अपनी दूसरी लड़की के साथ टैक्सी से निकलते देखा तो कह दिया, "तो यह काम था तुमको, जिससे तुम मुझसे मिलने के लिए नहीं आ सकते थे?"

"जी नहीं! काम तो कुछ और था। वह हुआ नहीं, इस कारण जल्दी ही अवकाश पा गया हूँ। मैं विचार कर रहा था कि क्या आप घर पर मिलेंगे? आप मिल गये। अब मैं टैक्सी छोड़ देता हूँ और आपकी बात सुन लेता हूँ।"

इस समय तक मृदुला घर में चली गयी थी। कालीचरण उसको अपने घर की बैठक में ले गया और बैठाकर बोला, "हाँ, तो बताओ! तुम पार्टी से नाराज़ क्यों हो?"

"मैं पार्टी से नाराज़ नहीं हूँ। पार्टी मुझसे नाराज़ है। परन्तु मैं इससे दुखी भी नहीं। मैं तो जेल में ही पार्टी छोड़ने का विचार कर चुका था। डॉक्टर राय का रहस्योद्घाटन, कि उस दिन कलकत्ता में जो कुछ हुआ, पार्टी की योजनानुसार था, मेरे इस निश्चय में कारण हो गया कि मैं पार्टी में नहीं रह सकता।"

"मैंने समझा था कि तुम एक होनहार युवक हो। शीघ्र ही उन्नति कर किसी ऊँची पदवी पर पहुँच जाओगे।

"देखो हरि! भारत को स्वराज्य मिलने वाला है। 'वेवल कॉन्फ्रेंस' असफल रही है। अब भारत में नये चुनाव लड़े जायेंगे। चुनावों में सरकार विरोधी तत्व उभर आयेंगे। विवश हो अंग्रेज़ों को भारत छोड़ना पड़ेगा।

"कांग्रेस, जो शासन करने का ढंग नहीं जानती, शासक बन जायेगी। वह समय हमारा होगा। हम क्रान्ति कर अपनी पार्टी का शासन बना लेंगे। उस समय जिसका पार्टी से सम्बन्ध होगा, वह लाभ में ही रहेगा। तुमको पार्टी छोड़ने पर उस समय भारी हानि होगी। कदाचित् पार्टी तुमको द्रोही समझ, तुम्हारा नाम उनमें लिख ले, जिनको क्रान्ति को पवित्र बनाने के लिये, बलिदान चढ़ाना हो।"

"आप वकील होकर मुझको धमकी देते हैं। जानते हैं, यह एक भारी अपराध है?"

"अपराध और निरापराध, कानून और गैर-कानून तथा राज-भक्ति और राजद्रोह, ये तो समय, परिस्थिति और उद्देश्यों को जानकर निश्चय होते हैं। क्रान्ति के आगमन के समय इसकी ओढ़नी को लाल रंगना पड़ेगा। इसके लिए किस-किस का रक्त काम आयेगा, यह बताना कठिन है। इसी कारण मैं कहता हूँ कि कहीं तुम उनकी सूची में न आ जाओ, जिनके रक्त को इस कार्य के लिए प्रयोग करना है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"देखिये, मैं तब की बात नहीं जानता। अब की बात कह रहा हूँ। अब आप मुझको धमका कर कम्युनिस्ट पार्टी में सम्मिलित करना चाहते हैं। यह कानून से ब्लैक-मेलिंग है।"

"किसी बात के कानून के अनुसार अथवा विपरीत होने का प्रमाण तो साक्षियों पर निर्भर होता है। तुमको मेरे इस कहने को प्रकट करने के लिये साक्षी कहाँ मिलेगी? साक्षियों के अभाव में मैं पंडित नहीं हो सकता। अर्थात् मेरा कहा, कानून के अनुसार माना जाना चाहिये।"

हरिमोहन विचार करता था कि बात तो कालीचरण ठीक कहता है। यदि आज वह उसके विरुद्ध कोई दावा करे, तो झूठे साक्षी बनाने पड़ेंगे अथवा दावा खारिज हो जायेगा। इस पर भी वह विचार करता था कि क्या कानून का आधार उसका सिद्ध करना ही है? कानून से कोई अपराध सिद्ध न हो सके तो वह क्या अपराध नहीं रहता?

प्रत्यक्ष में तो वह यही देखता था कि दंड उसको मिलता है, जिसके विरुद्ध अपराध सिद्ध हो सके। दंड से बचा हुआ व्यक्ति क्या निर्दोष होगा? संसार में ऐसा ही देखा जाता है।

इस पर भी उसका मन कहता था कि ऐसा होना नहीं चाहिये।

कालीचरण ने समझा कि उसके कथन का प्रभाव हुआ है। वह आशा करने लगा था कि हरिमोहन अब सीधे मार्ग पर आ जायेगा। उसने बात बदल दी और कहा, "मृणालिनी और सादिक विवाह कर रहे हैं। मुझको आज नोटिस मिला है कि कुछ आपत्ति हो तो एक सप्ताह के भीतर कोर्ट में पहुँचूँ।

"इसका अभिप्राय यह है कि अगले सप्ताह किसी दिन भी विवाह हो जायेगा।"

"आपकी स्वीकृति से हो रहा है क्या?"

"विवाह तो विवाह करने वालों की स्वीकृति से होता है। मैं इसमें कैसे आ गया?"

"आप मृणालिनी के पिता हैं। मृणालिनी अभी इक्कीस वर्ष की है भी नहीं।"

"बीस और इक्कीस में क्या अन्तर पड़ता है? उसने कोर्ट में अपनी जन्म-तिथि एक वर्ष पहले की लिखा दी है। मैंने इसमें आपत्ति करनी उचित नहीं समझी।"

"तो सादिक आपको एक ठीक दामाद समझ आया है?"

"ठीक अथवा गलत देखने का अधिकार तो मृणालिनी को है। मुझको वह स्वस्थ, समझदार, दृढ़ विचारों वाला युवक प्रतीत हुआ है।"

हरिमोहन ने कह दिया, "मृणालिनी ने एक से अधिक बार मुझसे विवाह करने का वचन दिया है। अतः जब मैंने सुना कि वह सादिक से विवाह कर रही है, तो मेरे मन को भारी धक्का लगा था।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"क्यों ? धक्का क्यों लगा है ? हम तो विवाह होने के पश्चात् भी तलाक में विश्वास रखते हैं। केवल वचन के तो कुछ अर्थ ही नहीं रहते।"

"अपने अपने विचार हैं। अच्छा···!" वह अपनी बात समाप्त नहीं कर सका। मृणालिनी और सादिक आ गये।

"लो, वह आ गयी है।" कालीचरण ने उनको आते देख कह दिया।

"मैं चलता हूँ और···।"

"ठहरो! उससे भेंट तो करते जाओ।"

हरिमोहन बैठा नहीं। मृणालिनी ने भीतर आते ही कहा, "बाबा! हरि बाबू ने आज हमको चाय पार्टी दी है।"

"कब ? कहाँ ?"

"अभी-अभी। फिरपो में। हम वहीं से तो आ रहे हैं।"

"परन्तु हरि तो मेरे पास कितनी देर से बैठा है।"

"यह मृदुला को लेकर टैक्सी में आ गया और हम बसों में धक्के खाते रहे हैं।"

"क्यों हरिमोहन! किस बात की दावत दी है ? हमें नहीं बुलाया उसमें ?"

"दावत तलाक के उपलक्ष में दी थी। मृणालिनी मुझको तलाक देकर सादिक से विवाह कर रही है न।"

"परन्तु तलाक तो विवाह के पीछे होता है। तुम्हारा इससे विवाह ही कब हुआ था ?"

"मैं वचन को विवाह की रस्म से भी अधिक मानता हूँ। वह वचन भंग तलाक की रस्म से भी अधिक आवश्यक पग है।"

मृणालिनी और सादिक हँस पड़े।

: १० :

हरिमोहन कालीचरण के परिवार को भूल जाने के लिए पिता के दिये कार्य को चित्त लगाकर करने लगा। आरम्भ में तो हरिमोहन मुकदमे में आवश्यक बातों को भूल जाता था और अनावश्यक बातों को अपने 'स्टेटमैंट' में भर देता था।

दास उसके स्टेटमैंट को पढ़ता था और उसमें से दोष निकाल कर बताता था। उसने एक दिन हरिमोहन को बताया, "मेरे पिता हाईकोर्ट के जज थे और जब मैं बी० ए० पास कर चुका और अभी लॉ कॉलेज में दाखिल नहीं हुआ था तो यही काम मुझसे भी कराया जाता था। अब मैं अनुभव करता हूँ कि उन दिनों के बनाये संक्षेप और उनके वक्तव्यों से मेरे मन में आवश्यक को अनावश्यक से, निर्णात्मक प्रमाणों को व्यर्थ के प्रमाणों से और सत्य को झूठ से पृथक् करने की ऐसी योग्यता उत्पन्न हो गयी है कि मैं एक चोटी का सफल वकील बन सका हूँ और अब एक ख्याति प्राप्त जज बना हुआ हूँ।"

इस सूचना से तो हरिमोहन और भी ध्यान से मुकदमे को पढ़ उनके स्टेटमैंट बनाने लगा। उसको यह काम इतना रुचिपूर्ण प्रतीत हुआ कि वह कम्युनिस्ट पार्टी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को भूल गया और कालीचरणादि कम्युनिस्टों को मन से निकालने में सफल हो गया।

लगभग एक मास व्यतीत हो चुका था। उसकी योग्यता स्टेटमैंट बनाने की बढ़ रही थी। दास बाबू उसको प्रोत्साहन देने के लिए अनुभव की नयी-नयी बातें बताते थे।

एक दिन एक तलाक के मुकदमे पर बातों-ही-बातों में दास उसको अपना अनुभव सुनाने लगा। उसने बताया—"यह पिता जी के जज होने के दिनों की बात है। एक अंग्रेज आफिसर का सम्बन्ध अपने चपरासी की लड़की से हो गया। लड़की बहुत ही सुन्दर तथा समझदार थी। उसका सम्मोहन मिस्टर जे० टॉमस पर इतना था कि वह उससे विवाह करने पर राज़ी हो गया। विवाह मुसलमानी ढंग से हुआ। मिस्टर टॉमस को कुरआन की कसमें खाकर विवाह की शर्तें स्वीकार करनी पड़ीं।

"टॉमस ने नाज़िरा को अंग्रेज़ी पढ़ाई और अपनी समाज में रहन-सहन का ढंग सिखाया और फिर उसको लेकर अपने समाज में घूमने लगा।

"टॉमस एक अंग्रेज़ी फर्म का मैनेजर था। हिन्दुस्तान में आने से पूर्व उसका विवाह हो चुका था। वह प्रति छः माह के पीछे पन्द्रह दिन के लिए विलायत जाता रहता था वहाँ अपनी पत्नी ऐमिली से मिल आता था। उसको कोई-न-कोई बहाना बना कर हिन्दुस्तान में नहीं लाता था।

. जब नाज़िरा मिस्टर टॉमस के मित्रों से मिलने जुलने लगी तो किसी ने टॉमस की पहली पत्नी को लिख भेजा कि टॉमस यहाँ एक मिस्ट्रेस रखे हुए है।

"ऐमिली यह सूचना पाते ही हिन्दुस्तान आ गयी और बिना आने की सूचना दिये अपने पति के 'बेड रूम' में जा पहुँची। नाज़िरा उस समय पति के पास थी। उसे देखते ही ऐमिली जल-भुन गयी और नाज़िरा पर अपनी छतरी से पिल पड़ी।

"नाज़िरा को इस बात का ज्ञान नहीं था कि उसके साहब की कोई और भी बीवी है। उसने समझा कि कोई पागल औरत वहाँ आ गयी है और उसको हिन्दुस्तानी औरत समझ उससे लड़ने लगी है। इससे वह अपनी रक्षा करने के लिए लड़ने लगी।

"टॉमस इस द्वन्द्व को चुप-चाप देखता रहा। नाज़िरा ऐमिली से दुर्बल सिद्ध हुई और मुक्कों और घूसों से अचेत हो गिर पड़ी।

"इस समय ऐमिली उसको टाँगों से घसीट, शयनागार से बाहर फेंकने लगी तो टॉमस ने उसको रोक दिया। उसने उसको कहा, 'कदाचित तुमने इसकी हत्या कर दी है। इस कारण इस लाश को फेंकने से पहले पुलिस को आ जाने दो।'

'क्यों ? यह औरत 'ट्रेस-पासर' है। मैंने इसको अपने घर में घुसने से रोका है। इसमें वह मर गयी है, तो मैं क्या करूँ ?'

'नहीं ऐमिली ! यह मेरी विवाहिता पत्नी है। इसके बैड-रूम में तुम ट्रेस-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पासर हों। ठहरो...।' उसने बैड-रूम में लगे टेलिफोन से पुलिस को सूचना दे दी कि 'यहाँ दो औरतों में लड़ाई हुई है और कदाचित् एक मर गयी है अथवा मर रही है। अतः शीघ्र चले आओ।'

"इसके पश्चात्, उसने अपने एक परिचित डॉक्टर को भी बुला लिया।

"पुलिस और डॉक्टर दोनों इक्ट्ठे ही वहाँ पहुँचे। पुलिस ने ऐमिली को बंदी बना लिया और डॉक्टर ने कह दिया कि पेट और मस्तिष्क में अन्दरूनी चोटें इतनी आयी हैं कि इसका बच सकना कठिन है।

"ऐमिली ऐंग्लो-इण्डियन 'लौक-अप' में ले जायी गयी और नाज़िरा की चिकित्सा होने लगी।

"एक महीने की चिकित्सा के उपरान्त नाज़िरा बच गयी, परन्तु तब तक ऐमिली भी ज़मानत पर हवालात से बाहर आ चुकी थी और टॉमस साहब के घर पर रहने लगी थी।

"ऐमिली का कहना था कि वह इस औरत को छोड़ दे, तब ही वह चुप रहेगी, नहीं तो तलाक के लिए प्रार्थना-पत्र दे देगी। इससे उसकी नौकरी भी जायेगी और बदनामी भी होगी।

"टॉमस का कहना था कि वह तलाक स्वीकार कर लेगा, अपनी बदनामी और नौकरी की भी वह चिन्ता नहीं करता, परन्तु नाज़िरा को नहीं छोड़ेगा।

"नाज़िरा को सत्य परिस्थिति का ज्ञान तब हुआ, जब वह अस्पताल से लौट-कर आई। मिस्टर टॉमस ने उसको बता दिया—'अपने देश में मेरा इससे विवाह हुआ था।'

'तो आपने मुझसे विवाह क्यों किया ?' नाज़िरा ने पूछा।

'तुम बहुत सुन्दर हो, इसलिए।'

'आपने अच्छा नहीं किया ?'

'अच्छे और बुरे का फैसला अपना-अपना है। देखो, मैं तुमसे मुहब्बत करता हूँ और तुम्हारे लिए सब प्रकार की हानि उठाने को तैयार हूँ।'

"नाज़िरा चुप रही। ऐमिली ने तलाक का दावा कर दिया। नाज़िरा को जब इस बात का पता चला तो वह अपने पति का घर छोड़ने के लिए तैयार हो गयी। नाज़िरा के माँ-बाप उसको इस बात के लिए मना करते थे। साथ ही टॉमस साहब की मेहरबानी और उसके प्यार को स्मरण कर वह निर्णय नहीं कर सकी कि क्या करे और क्या न करे।

"नाज़िरा की माँ कहती थी कि उसके बच्चा होने वाला है। वह मुसलमान होगा। दीन पर ईमान लायेगा और खुदा की कुदरत को रोशन करेगा।

"वह इसका कुछ उत्तर नहीं दे सकती थी, परन्तु अपने मन में वह यही समझती थी कि उसने किसी की सम्पत्ति पर अनुचित अधिकार किया हुआ है।

"तलाक का मुकदमा हुआ तो टॉमस ने कोर्ट में उपस्थित होकर स्वीकार कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिया कि वह दोषी है। ऐमिली का तलाक स्वीकार, हो गया और बीस हज़ार रुपया—'एलिमोनी' का उसको देने का हुक्म हुआ।

"मुकदमे का फ़ैसला होते ही टॉमस की नौकरी छूट गयी। वह वापस इंग्लैंड जाने की तैयारी करने लगा। इस पर नाज़िरा ने मुसलमानी कायदे-कानून से टॉमस को तलाक देने की प्रार्थना कोर्ट में कर दी। नाज़िरा का कहना था कि उसके पति ने इस्लाम स्वीकार नहीं किया और वह उसको गिरजाघर ले जाने को विवश करता है। मिस्टर टॉमस की पत्नी रहते हुए, उसको अपने मज़हबी रस्मो-रिवाज पालन करने में कठिनाई होती है। इसलिए मिस्टर टॉमस का उससे तलाक स्वीकार किया जाये।

"इससे पूर्ण कलकत्ता में हलचल मच गई। टॉमस स्वयं भी बहुत परेशान हुआ। उसने नाज़िरा से, जो अपने पिता के घर में रहने चली गयी थी, जाकर पूछा, 'यह तुमने क्या किया है?'

"नाज़िरा ने बताया—'मेरा ज़मीर आपके साथ रहने को नहीं मानता। आपने अपनी पहली बीवी को स्वीकार क्यों नहीं कर लिया?'

'वह तुम्हारे मेरे पास रहते हुए, मेरे साथ रहने को तैयार नहीं होती थी। अंग्रेज़ी कानून से एक पुरुष दो विवाह नहीं कर सकता।'

'तो उसको आप मुसलमान बना लेते।'

'भला बनाने से कोई मुसलमान हो सकता है क्या?'

'अजीब बात है! आप तो मुझसे नकाह पढ़ाने के लिए तैयार हो गये थे। भला वह आपसे, विवाह करने के लिए मुसलमान बनने को तैयार क्यों नहीं होती?'

'यह तुम उसी से पूछ लो। अभी तो वह कलकत्ता में ही है।'

"नाज़िरा पता पूछ कर ऐमिली के पास गई। वह ग्रीन होटल में ठहरी हुई थी। ऐमिली उसको आया देख आग बबूला हो गयी। दोनों में खड़े-खड़े ही भेंट हुई। नाज़िरा ने पूछ लिया—'मैं एक बात जानने के लिए आयी हूँ। आपके तलाक का अर्थ यह समझूँ कि आप अपने पति से उत्कृष्ट प्रेम करती हैं अथवा यह समझूँ कि आप उससे घृणा करती हैं?'

"इस प्रश्न से ऐमिली भौचक्की हो गयी और अपनी सौकन का मुख देखने लगी। इस पर नाज़िरा ने कहा, 'क्या मेरी अंग्रेज़ी भाषा इतनी पुष्ट नहीं कि मैं अपना अभिप्राय आपको समझा नहीं सकी?'

"इस पर ऐमिली ने पूछ लिया, 'यह जान कर तुम क्या करोगी?'

'मैंने अभी मिस्टर टॉमस का घर छोड़ा हुआ है। मैं यह विचार कर रही हूँ कि उसके घर जाऊँ अथवा नहीं? यदि तो तुम्हारा मुझको पीटना और उसको तलाक देना उससे प्रेम करने को प्रकट करता है तो क्या तुम उससे पुनः विवाह कर लोगी, यदि मैं उसको छोड़ दूँ।'

'तो तुम उससे प्रेम नहीं करती।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'करती हूँ। मगर हमारे मुल्क और मज़हब में प्रेमी की सुख-सुविधा का हम अपने सुख आराम से अधिक ध्यान रखते हैं। यदि तो तुम उससे प्यार करती हो तो मैं उसको तलाक दे सकती हूँ।'

'और तुम क्या करोगी ?'

'मैं...मैं...यदि तुम पसन्द करो तो तुम दोनों की नौकरी कर लूंगी।'

'बात तो वही होगी, जो अब है। तुम मुझसे अधिक सुन्दर हो, तुम बहुत मीठा बोलती हो, इससे वह तुमसे प्यार करेगा और मुझको भूल जायेगा।'

'परन्तु, यदि तो तुम्हारा प्रेम सच्चा है तो उसको मुझसे छीन सकोगी।'

'और तुमको दुःख नहीं होगा ?'

'यह अभी नहीं बता सकती। इस पर भी मैं तुमसे झगड़ा नहीं करूँगी। तुम उनको प्रसन्न रखोगी तो मुझको सुख ही मिलेगा।'

'यदि वह, जिस बात का मुझको भय है, तुम और मुझसे, एक साथ ही मुहब्बत करता रहा तो ?'

'तो मैं मना कैसे कर सकूंगी ? इस पर भी मुझको संतोष होगा कि वह सुखी है।'

'उसके सुख-दुःख की बात मैं नहीं जानती। मैं केवल अपने सुख की बात विचार कर रही हूँ। एक पुरुष दो युवा-पत्नियों की इच्छाओं की पूर्ति कैसे कर सकता है ?'

'हमारे यहाँ तो पुरुष करते हैं। हमारे पैगम्बर हज़रत सुलाउल इस्लाम ने तो चार पत्नियाँ तक रखने की स्वीकृति दी है।'

'हमारे यहाँ इसको 'एडल्टरी (दुराचार) कहते हैं।'

'देखो ऐमिली ? जब पति हमको प्रेम करता है तो भले ही कभी-कभी ही हमको अपनी संगत का लाभ पहुँचाये, हम संतुष्ट रहती हैं।'

'हम इसको प्रेम नहीं मानतीं, धोखा मानती हैं।'

'अच्छा, यह बताओ यदि मैं उनको छोड़कर यहाँ ही रह जाऊँ तो क्या तुम उससे पुनः विवाह कर, उनके साथ विलायत चली जाओगी ?'

'जो कुछ हो चुका है, उसके पश्चात् मैं यह उचित नहीं मानती।'

'क्यों, इसमें अनौचित्य क्या है ?'

'हमारी समाज उससे और मुझसे नफरत करेगी।'

'तो तुम, लोगों के कहने पर, अपना प्रेम बलिदान कर दोगी ?'

'तुम क्या चाहती हो ?'

'मैं तुम्हारे लिए उसको तलाक देने के लिए तैयार हूँ। ऐसा करने की प्रार्थना भी की हुई है।'

'यदि मैं न मानूं तो ?'

'तब मैं अपनी प्रार्थना वापस ले लूंगी। मैं कोर्ट में ब्यान दूंगी कि मुझको जो, अपने पति के विपरीत शिकायत है, वह दूर हो गयी है। मैं तलाक की प्रार्थना वापस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेती हूँ।'

'बहुत विचित्र औरत हो तुम ! तुम चाहती हो कि मैं पुनः अपने पति के पास जाकर रहने लगूँ।''

'हाँ।'

'तुम किसी अन्य से मुहब्बत करने लगी प्रतीत होती हो ?'

'यह तुम्हारा भ्रम है। मैं मिस्टर टॉमस से प्रेम करती हूँ और जीवन भर प्रेम करती रहूँगी।'

'तलाक हो जाने के बाद भी ?'

'तलाक तो समाज की बात है। तुम्हारा मार्ग साफ करने के लिए मैं यह करना चाहती हूँ। परन्तु प्रेम अपनी आत्मा की बात है। इसका तलाक से कुछ भी सम्बन्ध नहीं।'

''बात ऐमिली की समझ में आ गयी। वह बीस हज़ार रुपया ले चुकी थी। वह विचार करने लगी कि इस धन के साथ यदि उसका पति उसको वापस मिल जाये तो हानि ही क्या है ? इस पर भी उसके मन में एक शंका बनी हुई थी कि चोरी-चोरी उसका पति इस हिन्दुस्तानी औरत से सम्बन्ध रख सकता है। वह यह पसन्द नहीं करती थी। इस पर भी उसने नाज़िरा के प्रस्ताव पर विचार करने का वचन दिया।

''नाज़िरा उससे कई बार मिलने गयी और अंत में उसने उसको मिस्टर टॉमस से बातचीत करने के लिए तैयार कर लिया।

''ऐमिली मिस्टर टॉमस से मिलने गयी। उसने टॉमस को अपने आने का कारण बताया। उसने कहा—'आपकी हिन्दुस्तानी बीवी मुझसे मिलने आती रही है। उसका कहना है कि उसने केवल इसलिये आपको तलाक देने की प्रार्थना की है ताकि आप मुझसे पुनः विवाह कर लें। बताइये, यह क्या आप करा रहे हैं ?'

'नहीं, वह स्वयं कर रही हैं। तलाक के कारण तो काल्पनिक हैं। वास्तव में वह चाहती है कि तुम पुनः मेरी पत्नी बन जाओ।'

'वह ऐसा क्यों चाहती है ?'

'उसके दिमाग में यह बात बैठ गयी है तुमको उसके कारण बहुत दुःख हुआ है। वह एक औरत को दुःखी देख अपनी आत्मा में शांति अनुभव नहीं करती।'

'तो आप मुझसे पुनः विवाह कर लेंगे ?'

'विवाह मैंने नहीं तोड़ा। तलाक तो तुमने कोर्ट से माँगा था। सो तुमको मिल गया है। अब तुम जानो, क्या करना चाहती हो।'

'मैं यह देख नहीं सकती कि कोई दूसरी औरत मेरे पति की शैया की भागीदार हो।'

'अर्थात् तुम्हारा पति तुम्हारी 'मोनोपली' (पृथक्-सम्पत्ति) है ?'

'आखिर एक पति भी तो अपनी पत्नी से ऐसा ही चाहता है ? वह भी तो उस पर अपना एकाधिकार चाहता है।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'ठीक है, इस कारण मैं तुमको विवश नहीं कर सकता कि तुम तो मेरे एकाधिकार में रहो और मैं तुम्हारे और नाज़िरा दोनों के अधिकार में रहूँ।'

'मैं यह जानने आयी हूँ कि यदि मैं आपसे पुनः विवाह कर लूँ तो आप नाज़िरा की ओर आँख उठाकर तो नहीं देखेंगे?'

'मैं ऐसा करने का वचन नहीं दे सकता। इतना मैं वचन देता हूँ कि मैं तुम्हारी देखभाल, पालन-पोषण और यथा-शक्ति वासना-तृप्ति भी करता रहूँगा।'

'यह तो कुछ भी नहीं हुआ।'

'इतना कह वह चली गयी, परन्तु उसने मन में निश्चय कर लिया कि मिस्टर टॉमस को, उसकी हिन्दुस्तानी पत्नी से भी तलाक दिलवाकर ही इंग्लैंड जायेगी।

"अतः उसने नाज़िरा से, जब वह उससे मिलने आई, कहा, 'मैं अपने पति से पुनः विवाह करने को तैयार हूँ। तुम अपना तलाक स्वीकार करा लो।'

"कठिनाई यह थी।" मिस्टर दास ने बताया—"कि मुसलमानी रिवाज के अनुसार औरत को तलाक देने का अधिकार नहीं होता। इस कारण कोर्ट ने यह केस हाईकोर्ट को भेज दिया।

"प्रेज़िडेन्सी मैजिस्ट्रेट का यह कहना था कि हाईकोर्ट इस पर रूलिंग दे कि जब पति अपनी मुसलमान पत्नी के मज़हबी अधिकारों को छीनना चाहे, तो क्या एक मुसलमान औरत तलाक दे सकती है?

"मेरे पिताजी, इस मुकदमे को देखने के लिये नियुक्त हुई बेंच में थे। हाईकोर्ट की बेंच ने नाज़िरा के बयान लेने का निश्चय किया। उसको कोर्ट में हाज़िर होने का हुक्म दिया गया। इस पर वह पिताजी के घर पर हाज़िर हो गयी।

"पिताजी को यह बहुत बुरा लगा, परन्तु जब उसने कहा, 'आपने मुझको कोर्ट में हाज़िर होकर बयान देने की आज्ञा दी है। आप न्यायमूर्ति हैं। मैं आपको कुछ ऐसी बात बताने आयी हूँ, जो मैं अदालत में नहीं बता सकती। आप उचित समझें तो अपने साथी जजों को बता सकते हैं; परन्तु मेरी यह प्रार्थना है कि मैं वे बातें कोर्ट में नहीं बताऊँगी। यदि आप पूछेंगे तो झूठ बोल दूँगी।'

'इन्सानियत के नाते मैं आपसे मदद लेने आयी हूँ।'

"इस पर पिताजी ने कहा, 'हम कानून को इन्सानियत समझते हैं।'

'ठीक है। मगर कानून इन्सान के बनाये हुए हैं। उनमें गलती भी हो सकती है। आपको तो इन्सानी बातों को इसके कुदरती पैमाने, (नैचुरल मेज़र) से नापना है।'

"पिताजी उसकी कहानी सुनने के लिये राजी हो गये।'

'नाज़िरा ने अपनी कहानी और अपने दिल के जज़बात बताये।

"इस पर पिताजी ने कहा, 'हम तुमसे कुछ नहीं पूछेंगे, जिससे तुमको झूठ बोलना पड़े। परन्तु हम अपना निर्णय तो उस पर ही दे सकते हैं, जो लिखित में आया होगा। तुम्हारे तलाक की प्रार्थना स्वीकार नहीं होगी।'

"इस पर भी हाईकोर्ट में नाज़िरा हाज़िर हुई और वकील द्वारा बयान देने के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाद जजों ने प्रश्न पूछने आरम्भ कर दिये। एक जज, मियाँ अब्दुल सैयद साहब ने उससे पूछ ही लिया, 'तुम्हारी मज़हबी हकूक में तुम्हारा खाविन्द हस्तक्षेप करता है क्या ?"

"नाज़िरा ने उत्तर नहीं दिया। वह अपनी प्रार्थना में यह कह चुकी थी। इस पर पिताजी ने जजों के सामने यह प्रस्ताव रख दिया कि तलाक स्वीकार किया जाना चाहिये, वह इस्लाम के हक-हकूक की बात नहीं। यह इन्सानियत की माँग है कि अपने मज़हबी हकूक में दखल देने वाले पति को औरत छोड़ सके। मुसलमानी मज़हब के विरोध की बात नहीं, प्रत्युत यह इस्लाम की रक्षा की बात है।

"मियाँ अब्दुल सैयद ने इस प्रस्ताव का विरोध किया। उसका कहना था कि मज़हब में अक्ल को दखल नहीं दिया जा सकता। यह इन्सान को गलत रास्ते पर ले जाने वाली है।

"इस पर दो जजों की राय से नाज़िरा के हक में फैसला हो गया।'

: ११ :

"पिताजी नाज़िरा की कहानी सुनकर बहुत प्रभावित हुए थे। इससे वे नाज़िरा के प्रयत्नों का फल देखना चाहते थे। इस कारण उन्होंने मिस्टर टॉमस से परिचय प्राप्त किया और दोनों पत्नियों से मुक्त होने के पश्चात् उसके व्यवहार को जानने का यत्न करने लगे।

उन्होंने एक सायं मिस्टर टॉमस को चाय पर आमंत्रित किया और उसको चाय पर बुलाने का प्रयोजन वर्णन कर दिया। पिताजी ने उसको कहा, 'मैं उन जजों में से एक हूँ, जिसने नाज़िरा की प्रार्थना कि वह आपको छोड़ सके, स्वीकार की है। नाज़िरा ने मुझको, अपने तलाक देने का उद्देश्य प्रार्थना में लिखे से भिन्न बताया है। वह आपकी पहली पत्नी के लिये स्थान खाली करना चाहती थी।

"नाज़िरा की पूर्ण कथा सुनने के पश्चात्, स्वाभाविक रूप में मैं उसके प्रयास का परिणाम जानना चाहता हूँ। क्या आप मुझको बता सकेंगे कि अब आप क्या करने जा रहे हैं ?'

'मैं तो नाज़िरा को छोड़ना चाहता नहीं। कानून ने उसको स्वीकृति दी है, परन्तु कानून मुझको विवश नहीं कर सकता कि मैं उसको अपने मन से पत्नी मानना छोड़ दूँ।

'रही मेरी पहली पत्नी। वह आपके निर्णय के पश्चात् मुझको आकर कह गयी है कि वह पुनः विवाह करने के लिये राजी है, यदि मैं नाज़िरा का विचार बिलकुल ही छोड़ दूँ। मैं ऐसा कर नहीं सकता। मेरी पहली पत्नी ऐमिली मुझको अंतिम नमस्कार कर चली गयी है।'

"इसके दो मास पीछे, मिस्टर टॉमस और नाज़िरा पिताजी से मिलने आये। वे दोनों विलायत जा रहे थे। पति पत्नी के रूप में नहीं। कानून ने उनको पृथक्-पृथक् कर दिया था, परन्तु प्रेमी-प्रेमिका के रूप में, जिसके लिये संसार-भर में कोई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कानून नहीं।

"पिताजी ने नाज़िरा से पूछा, 'तुमने तलाक देकर भूल की है न ?'

"उसका निःसंकोच उत्तर था—'जी नहीं। मैं इसको भूल नहीं मानती। यह मेरी, इनकी अंग्रेज़ बीवी के मुख पर चपत है। वह विवाह का सम्बन्ध वासना-तृप्ति के लिये तथा जीविकोपार्जन के लिये मानती है। मैंने उसको बताया कि विवाह तो मूर्ख समाज की आँखों में धूल झोंकने के लिये है। वास्तव में प्रेम ही सब कुछ है। प्रेम में वासना-तृप्ति तथा जीवन चलाने की बातें नहीं आतीं।'

"पिताजी को अभी भी नाज़िरा की जीवन-मीमांसा पर सन्देह था। इस कारण उन्होंने कहा, 'मैं आपका बहुत ही कृतज्ञ रहूँगा यदि आप अपने जीवन के सुख से व्यतीत करने का समाचार भेजते रहेंगे। मेरी हार्दिक शुभकामना आपके साथ है।'

"इस घटना के कुछ समय पश्चात् ही पिताजी का देहान्त हो गया। मैं वकालत करने लगा था और लगभग तीन वर्ष पश्चात् पिताजी के नाम एक लम्बा पत्र आया। उस पत्र में नाज़िरा ने लिखा था, 'माननीय जज महोदय ! मैं आपकी अति कृतज्ञ हूँ कि आपने मुझको अपने जीवन का, अपने ढंग का परीक्षण करने का अवसर दिया था। आपकी और ईश्वर की कृपा से मेरा परीक्षण सफल रहा है। मेरी सौतन अब मेरे पति के पास रहती है। पत्नी के रूप में नहीं, प्रत्युत एक मित्र के रूप में। मैं उनकी समाज में उनकी पत्नी के रूप में विख्यात हूँ।

मैं समझती हूँ कि मैंने अपने पति की मित्र ऐमिली को प्रत्येक प्रकार का अवसर देकर, उसको अपने उचित स्थान पर बैठा दिया है। अब वह मेरा मान करती है।'

"पत्र बहुत लम्बा-चौड़ा था। यह उसका सारांश था। मैंने उस औरत को पत्र लिखा कि जिनको उसने पत्र लिखा है, वे देह छोड़ चुके हैं। इस पर भी मुझको उसकी कथा बता चुके थे, इस कारण मैं उसकी शेष कथा जानकर अत्यन्त प्रभावित हुआ हूँ।

"मैंने आगे लिखा कि मैं बहुत प्रसन्न हूँ कि तुमने हिन्दुस्तानी सभ्यता की श्रेष्ठता का प्रमाण वहाँ उपस्थित कर दिया है।"

हरिमोहन अपने पिता से तलाक की यह कहानी सुन विस्मय में मुख देखता रह गया। दास बाबू उसके मन में उठ रहे संशय को समझ रहा था। इस कारण उसको उन संशयों के निवारणार्थ प्रोत्साहन देने के लिये वह पूछने लगा, "क्यों ? क्या विचार कर रहे हो ?"

"मैं यह नहीं समझ सका कि यह आपने हिन्दुस्तानी सभ्यता की श्रेष्ठता कैसे मान ली है ? क्या एक पुरुष का कई पत्नियाँ रखना एक श्रेष्ठ बात है ?"

"एक से अधिक पत्नियाँ रखना तो श्रेष्ठ बात नहीं। न ही यह कोई ऐसी घृणित बात है कि जिसके लिये जगत् सिर पर उठा लिया जाये। यह तो परस्पर के सुभीते की बात है। हमारे समाज में, मेरा कहना है, हिन्दुओं में, यह दुख का कारण भी हो सकती है, परन्तु उन समाजों में जहाँ तलाक की स्वीकृति है, यह दुःख का कारण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं हो सकती।

"नाज़िरा के विषय में ही विचार कर लो। टॉमस ने झूठ बोला और कुछ काल के लिये दोनों पत्नियों को धोखे में रखा। झूठ बोलना और दूसरों को धोखा देना एक अपराध है, परन्तु यह अपराध तो विवाह की समस्या से पृथक् की बात है। इसके लिये टॉमस दंडनीय हो सकता था, परन्तु इसका तो दोनों में से किसी भी पत्नी ने दावा नहीं किया। हिन्दु समाज में जहाँ तलाक की स्वीकृति नहीं, यह धोखा देना एक गम्भीर अपराध हो जाता। परन्तु उन समाजों में तो इसका प्रतिकार तलाक और 'एलिमोनी' की रस्म है।

"हमारी समाज में, विशेष परिस्थितियों में एक से अधिक पत्नियाँ रखने की स्वीकृति है। यदि पत्नियों से झूठ बोल, उनको धोखे में रखने की बात न हो और पत्नियों की स्वीकृति से यह हो तो क्या हानि है? दोनों पत्नियों को यह विदित होता है कि पति और उससे प्राप्त होने वाला सुख बँटकर मिलने वाला है।

"यह बात नाज़िरा को विदित थी। वह मिस्टर टॉमस से किसी प्रकार के सुख अथवा धन-दौलत की प्राप्ति से, जो ऐमिली से वँटने वाली थी, टॉमस के प्रेम को ऊँचा मानती थी। ऐमिली ऐसा नहीं मानती थी। उसको वासना-तृप्ति और धन की प्राप्ति, दो ही बातें पति से विवाह का परिणाम समझ आ रही थीं।

"हमारी हिन्दुस्तानी सभ्यता में पति और पत्नी का धर्म का सम्बन्ध है। अर्थात् इस संसार में कुछ करने योग्य कर्म हैं, जिनमें पति को पत्नी की और पत्नी को पति की आवश्यकता रहती है। यह कर्तव्य पुरुष-स्त्री के एक से एक के सम्बन्ध होने पर अथवा एक से अनेक के सम्बन्ध की उपस्थिति में भी पालन हो सकता है।"

"यह कर्तव्य क्या है?" हरिमोहन का प्रश्न था।

"समाज के कार्य को सुचारु रूप से चलाने के लिये प्रत्येक व्यक्ति के जीवन को चार भागों में बाँटा गया है। इन भागों को आश्रम कहा है। इन चार आश्रमों में एक गृहस्थ आश्रम है। इसमें पुरुष स्त्री इकट्ठे रहकर समाज के कुछ आवश्यक कार्य करते हैं। धनोपार्जन करना, उस उपार्जित धन से उचित भाग स्वयं प्रयोग कर शेष समाज के हित में व्यय करना, सन्तानोत्पत्ति करना, उसके पालन-पोषण और शिक्षा-दीक्षा का प्रबन्ध करना, इत्यादि।

"इस गृहस्थ कार्य के लिये यह उचित माना गया है कि एक पुरुष का एक ही स्त्री से सम्बन्ध बने। परन्तु यदि किसी अवस्था विशेष में किसी घर-गृहस्थी के कर्तव्य पालन में एक स्त्री समर्थ न हो सके तो दो की सहायता क्यों न ली जाये?

"यह है हिन्दुस्तानी सभ्यता का सार। एक स्त्री से विवाह अथवा एक पुरुष से विवाह नियम है। इस पर भी यह उद्देश्य नहीं। उद्देश्य है गृहस्थ धर्म का पालन। उसके लिये नियम तो केवल पथ-प्रदर्शक ही है। गृहस्थ धर्म का पालन उद्देश्य है। विवाह के नियम साधन हैं। उद्देश्य की प्राप्ति के लिये साधन होते हैं न कि साधन की रक्षा के लिये उद्देश्य की हत्या क्षम्य।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"परन्तु पिताजी ! सब पढ़े-लिखे तो एक पति की एक पत्नी और एक पत्नी का एक पति के लिये कानून बनाना चाहते हैं ?"

"वास्तव में ये लोग प्रतीची के देशों की सभ्यता के अनन्य अनुयायी मात्र हैं। ये विवाह के परम उद्देश्य को भूल गये हैं। युरोपीय देशों में तो विवाह की वासना-तृप्ति का एक सस्ता साधन मात्र ही समझा जाता है। वहाँ पितृ ऋण अथवा ऋषि ऋण के चुकाने का विचार भी नहीं। हमारे भारतीय विद्वान् भी, जो भारतीय धर्म की मीमांसा को तो समझते नहीं और केवल अंग्रेजी शिक्षा ही प्राप्त किये हैं, अपनी समाज को भी उसी ढाँचे में ढालने का यत्न करने लगे हैं। चन्दन के वन में चन्दन की महिमा को न जानने वाले, वन को जला कर कोयला बेचने का प्रबन्ध कर रहे हैं।"

"परन्तु पिताजी ! इस छूट से मानव में वासना की प्रवृत्ति बढ़ेगी नहीं क्या ? साथ ही क्या इससे संसार में दुःख और क्लेश की वृद्धि नहीं होगी ?"

"देखो हरि ! इस छूट का, कि एक पुरुष एक से अधिक पत्नियाँ रख सकता है एक स्त्री एक से अधिक पुरुष, वासना के दास दुरुपयोग करेंगे। परन्तु किसी वस्तु का किसी से दुरुपयोग किये जाने के भय से क्या वह वस्तु उससे छीन ली जानी चाहिये ?

"यह तो ऐसे ही हो जायेगा, जैसे रात को चोर चोरी करने निकलते हैं, इस कारण नगर के लोगों पर कर्फ्यू आर्डर (घरों से बाहर न निकलने की आज्ञा) लगा देना चाहिये।

"कुछ लोग मिठाई अधिक खाकर अपना पेट दूषित कर लेते हैं, इससे नगर भर की मिठाई की दुकानें बन्द कर दी जानी चाहियें क्या ?

"मैं तो यह ढंग ठीक नहीं मानता। अधर्म है इन्द्रियों का वासना में लिप्त रहना। इसके लिये विवाह एक साधन है। विवाह वासना तृप्ति के लिये नहीं, प्रत्युत वासना को नियन्त्रण में रखने के लिये है।"

हरिमोहन के मन में प्रकाश होने लगा। उसको अपने पिता से इसी प्रकार की विवेचनाओं के सुनने से कानून की महिमा, इसके कार्य क्षेत्र की सीमा और इसके चलने के ढंग का ज्ञान हो रहा था।

इन दिनों वह राजनीतिक कार्य से सर्वथा तटस्थ ही रहा था। एक दिन एका-एक मृदुला का टेलीफोन आया। वह उस समय स्टडी-रूम में बैठा पिता द्वारा दिया काम कर रहा था। चपरासी आया और बोला, "हरि बाबू ! आपसे कोई मृदुलादेवी, टेलीफोन पर बात करना चाहती है।"

पहले तो हरिमोहन के मन में विचार आया कि इन्कार कर दे परन्तु इस व्यवहार को, असभ्यतापूर्ण समझ, उठकर वह टेलीफोन के पास जा पहुँचा।

"हैलो।" उसने चोंगा उठाकर कहा—"मैं हरिमोहन बोल रहा हूँ।"

"मैं मृदुला बोल रही हूँ। भूल तो नहीं गये मुझको ?"

"नहीं मृदुला ! बताओ क्या बात है ?"

"आपकी 'फिरपो' पर चाय की याद आ गयी थी। इस कारण इच्छा हुई कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आपसे पूछूँ कि फिर कभी वैसी चाय पीने का सौभाग्य कब मिलेगा ?"

"तुम कब चाहती हो ?"

"आज पाँच बजे।"

"ठीक है, पाँच-सवा पाँच बजे तक मैं वहाँ पहुँच जाऊँगा।"

"इस निमंत्रण के उपलक्ष्य में आपको एक सूचना दूँगी, जिसका स्वाद चाय से अधिक ही रहेगा।"

"ओह ? अब कहा है तो व्याख्या से भी कह दो। सायंकाल तक मन में चंचलता बनी रहेगी।"

'बता तो दूँ, परन्तु वह बात इतनी मजेदार है कि फिर चाय का स्वाद फीका रह जायेगा। देखिये, ऐसा कहते हैं कि इन्तजार में मज़ा है। सो इन्तजार करिये।"

सायंकाल हरिमोहन 'फिरपो' के नीचे पहुँचा तो मृदुला वहाँ पहले ही खड़ी, उसकी प्रतीक्षा कर रही थी।

: १२ :

"आप मुझको बहुत ही तुच्छ विचार की लड़की समझते होंगे, जो एक-दो रुपये की चाय के लिये आपके सामने हाथ पसारती हूँ ?"

"मैं तो, इस चाय के बहाने कुछ मेरे हित की बात करना ही तुम्हारा उद्देश्य मानता हूँ। पिछली बार भी तुमने मुझको कुछ सूचनाएँ दी थीं, जिनसे मेरा हित ही सिद्ध हुआ था। मैं उसके लिये तुम्हारा सदा आभारी रहूँगा।"

"इस पर भी, यहाँ की चाय और आपसे एक घण्टा भर बात-चीत में भी तो रस है। कुछ भी समझिये। आपसे मिलने का बहाना ढूँढती रही थी। एक महीने से ऊपर हो गया है कोई बहाना मिला नहीं। आप दीदी के विवाह पर भी तो नहीं आये।"

"निमंत्रण तो मिला था, परन्तु चित्त नहीं किया।"

"ओह ! तो अभी तक घाव हरा है। छेड़ने से बहने लगता है ?"

"घाव इत्यादि कुछ नहीं। केवल घृणा है। इस घृणा में भी आत्मसम्मान का हाथ ही मुख्य है। मैं मन में विचार करता हूँ कि मुझको सादिक से घटिया समझा गया है। क्या वास्तव में मुझ में घटियापन है अथवा मृणालिनी का यह गलत अनुमान है ? अपने को घटिया माना जाना मुझको भला नहीं लगा। इस प्रकार अपमानित किये जाने के कारण मन में शांति नहीं थी और अकारण अपमान करने वाले से घृणा उत्पन्न हो गयी थी। अब धीरे-धीरे वह भी कम होती जाती है।"

"मैं जानती हूँ कि उसने आप पर सादिक को उपमा देकर भूल की है। मैं तो यह कहती हूँ कि उसको अपनी भूल का अनुभव भी होने लगा है। विवाह के पीछे दस दिन तक वह सादिक के साथ रही है। पीछे वह माँ को कुछ बता रही थी और माँ उसको एक लेडी डॉक्टर के पास ले गयी। तब से वह हमारे घर में रहने लगी है। कभी-कभी सादिक आता है और दोनों घूमने चले जाते हैं। रात को वह हमारे घर में सोती है।

"अब वह मेरे साथ नहीं सोती। माँ ने मना कर दिया है। इस पर भी कल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुझको उससे पृथक् में बातचीत करने का अवसर मिला है। माँ और पिताजी सिनेमा देखने गये थे। भाई और छोटी बहन भी उनके साथ गई थीं। मुझको भी चलने को कहा गया था, परन्तु मेरा चित्त नहीं किया। मृणालिनी, जिसका नाम अब मुमताज है, अस्वस्थ होने के कारण नहीं जा सकी थी।

"अतः हम दोनों घर पर ही रह गयी थीं। मैंने अवसर जान पूछ लिया, "दीदी! क्या कष्ट है तुमको?"

'जिससे मैं डरती थी, वही हुआ है। मेरे गर्भ ठहर गया है।'

'ठहर गया है तो क्या हुआ? यह कोई बीमारी तो है नहीं।'

'बीमारी नहीं। इस पर भी मुझको कष्ट हो रहा है। खाया-पीया हज़म नहीं होता। डॉक्टर ने कह दिया है कि अपने घर वाले से पृथक् रहूँ, अन्यथा बहुत सख्त बीमार हो जाऊँगी।'

"कुछ देर बाद उसने कहा, 'घरवाला नाराज है। वह मुझको छोड़ने को तैयार नहीं थे। इस कारण माँ अपने घर ले आयी है।'

'तब तो ठीक हुआ है।' मेरा कहना था।

'ठीक क्या हुआ है? मुझको पार्टी के लोग कह रहे हैं कि गर्भपात करा दूँ। नहीं तो पार्टी से मिलने वाला अलाऊंस बंद हो जायेगा। सादिक साहब के अपने अलाऊंस में तो उनका अपना गुजर भी नहीं होता। वे मुझको कुछ भी नहीं दे सकते।'

'तुम्हारी पार्टी खूब है। गर्भावस्था में भी छुट्टी नहीं दे सकती।'

'छुट्टी तो दे सकती है, परन्तु अवैतनिक ही!'

'यही तो कह रही हूँ। तुम पार्टी को छोड़ क्यों नहीं देतीं?'

'तो तुम समझती हो कि मैं वेतन के लिये पार्टी में हूँ?'

'और नहीं तो किस लिये हो?'

'मैं देश में कम्युनिज़म का प्रचार करने के लिये कार्य करती हूँ। फंड्स में से मुझको साठ रुपये मासिक अलाऊंस मिलता है।'

'देखो दीदी! संसार में क्या कम्युनिज़म ही एक काम है, जो करने योग्य है?'

'यह परम आवश्यक कार्य हैं। रोटी, कपड़ा, मकान और यौन-सुख को प्राप्त करना तथा करांना, परम कर्त्तव्य है। इनके बिना संसार के सभी प्राणी अति दुःखी हैं। इनका उपाय कम्युनिज़म के अतिरिक्त किसी प्रकार से हो ही नहीं सकता।'

'यह किसने बताया है तुमको?'

'इन आँखों ने।'

'अच्छा बताओ, कलकत्ता में चालीस लाख से ऊपर लोग बसते हैं। इनमें से कितने आपने सुखी किये हैं।'

'अभी तो एक भी नहीं। हम लोग समाजवाद का प्रचार करते हैं। जब प्रचार हो जायेगा, तब इस पर कार्य होगा। पश्चात् ही इसके फल का ज्ञान होगा।

'इस पर भी दीदी! इन चालीस लाख में से पौने चालीस लाख तो सुखी हैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ही। दूर की बात छोड़ो, अपने आस-पास के मकानों में ही देख लो, कितने लोग दुःखी हैं ?'

'वाह ! इसको तुम सुख कहती हो। हमारे माता-पिता भी क्या सुखी हैं ?"

'तो क्या दुःख है उनको ?'

'हमारे घर में टेलिविज़न सेट नहीं है। टेलिविज़न न सही कम-से-कम एक रेडियो-ग्राम तो होना ही चाहिये।'

"मेरी हँसी निकल गयी। मैं सोचने लगी कि क्या यह सुख का नापतोल है। मैंने कह दिया, 'खैर छोड़ो ! तुम बहुत सुखी हो न सादिक के साथ ?'

"इस पर वह चुप कर गयी। मुझको कुछ शंका थी। वह मुझको उसके मुख पर अंकित दिखाई दी। वह उठी और यह कह कर कि 'मेरे सर में चक्कर आ रहा है।' अपने सोने के कमरे में चली गयी। उसी समय से मैं अनुमान लगाने लगी थी कि सादिक से वह संतुष्ट नहीं है। इस पर भी असंतोष का कारण नहीं जान सकी।

"आज दीदी के मन में झाँकने का अवसर मिला है। आज प्रातः के अल्पाहार के समय सादिक आया हुआ था। उसमें और दीदी में कुछ देर तक बातचीत होती रही थी। जब सादिक कमरे से निकला तो उसके माथे पर त्योरी चढ़ी हुई थी। उसके जाने के बाद मैं भीतर गयी। दीदी रो रही थी। मैंने उसके गले में बाँह डाल कर, उसके रोने का कारण पूछा, तो वह और भी विह्वल हो रोने लगी। जब मैंने उसको अपना उससे प्रेम और बचपन से परस्पर विश्वास और मन की बातें बताने की याद दिलाई, तब वह बोली। उसने कहा—'सादिक से विवाह भूल हुई है।'

'कब से अनुभव हुआ है ?'

'जब से यह ज्ञान हुआ है कि मुझको गर्भ ठहर गया है तब से ही वह गर्भपात की राय दे रहा है। मेरी आत्मा मानी नहीं। मैंने माँ से बताया तो वह मुझको यहाँ अपने घर ले आयी है। माँ और लेडी डॉक्टर, दोनों बता रही हैं कि ऐसा करने से जीवन बरबाद हो जायेगा। इसके विपरीत सादिक कहता है कि बच्चा होने से जिन्दगी का लुत्फ जाता रहेगा। पार्टी ने भत्ता देना बन्द कर दिया है। यह भी एक कारण है, जिससे सादिक मियाँ नाराज़ हो रहे हैं। आज वह कह गये हैं कि उनमें और मुझ में सम्बन्ध तब ही बना रह सकता है, जब मैं इससे छुट्टी पा लूँ। उन्होंने आज यह कह दिया है कि अब तो वह तब ही आयेंगे, जब मैं गर्भ से छुट्टी पा चुकूँगी।'

"मैं माँ को बुला लाई और उसको मैंने सादिक का अन्तिम कथन सुना दिया। इस पर माँ ने कह दिया कि यदि दीदी ऐसे आदमी के पास जाना चाहती है तो जाये, अपना गर्भपात करा ले, परन्तु फिर अपना मुख न दिखाये। वह उसको घर में आने नहीं देगी।

"दीदी का प्रश्न था कि वह सादिक को छोड़कर करेगी क्या ? इस पर माँ ने कह दिया, 'निर्वाह का प्रबन्ध बच्चा हो जाने के पश्चात् कर लिया जायेगा। तब तक तुम हमारे घर में रह सकती हो।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"दीदी ने अभी सादिक के घर जाने का विचार छोड़ दिया है। इस पर मैंने आपको टेलिफोन किया है।"

"तो यह सूचना है, जिसका स्वाद तुम चाय से अधिक समझती हो ?"

"जी नहीं ! वह सूचना तो चाय पीने के पीछे दूँगी। यह तो कुछ अधिक स्वाद की बात नहीं।"

चाय पी जा रही थी। आज हरिमोहन ने खाने का सामान और भी अधिक अच्छा तथा महँगा मंगवाया था। वह मृदुला के, इस चाय के बहाने मिलने के आयोजन का अर्थ, मृदुला का अपने प्रति अनुराग समझने लगा था। वह देखना चाहता था कि इस अनुराग की सीमा और दिशा क्या है। इस कारण वह उसको संतुष्ट करना चाहता था। आज की चाय के साथ 'फ्राईड फिश' थी, 'मटन कटलेस' थे और पेस्ट्री थी। मृदुला सब वस्तुएँ बहुत स्वाद से खा रही थी। खाते हुए उसने कहा, "आज तो आपने चाय का विशेष आयोजन किया प्रतीत होता है।"

"हाँ; तुमने कहा था कि तुम्हारी किसी विशेष सूचना का चाय से भी अधिक स्वाद होगा। इस कारण चाय के स्वाद की उस सूचना के स्वाद से होड़ लगाने के लिये मैंने विशेष आर्डर दिया है।"

"तब तो ठीक ही है। इस होड़ का स्वाद मुझको तो आ ही रहा है। भले ही मेरी सूचना का स्वाद आपको न आये।"

"देखो, मदारी के पिटारे में से क्या निकलता है!"

चाय लगभग समाप्त हो चुकी थी। मृणालिनी भी बातचीत का विषय नहीं रही थी। एकाएक मृदुला ने बात कहनी आरम्भ कर दी। उसने कहा, "आपको विदित है डॉक्टर राय छूट गये हैं ?"

"नहीं ! कब छूटे हैं ?"

"कल। छूटने के पश्चात् कल ही वे पिताजी से मिलने आये थे और आप अनुमान लगाकर बताइये कि वे क्या सन्देश लेकर आये थे ?"

"क्या सन्देश लेकर आये थे ?"

"तनिक दिमाग़ पर ज़ोर देकर विचार करिये कि क्या बात हो सकती है। वे पिताजी से कह रहे थे, 'मैं समझता हूँ कि यह प्रबन्ध बहुत अच्छा होगा।"

"क्या मृणालिनी के विषय में कुछ कहते थे ? ऑपरेशन कराने का प्रबन्ध कर देने को कहते होंगे।"

मृदुला टेढ़ी दृष्टि से देख मुस्करा रही थी। उसने कहा, "वह प्रबन्ध तो सादिक कर चुका है। पार्टी खर्चा दे रही है। पार्टी की एक सदस्या, लेडी डॉक्टर बहुत कम दाम पर करने को तैयार है।

"परन्तु हरि बाबू ! यह डॉक्टर राय की बात तो इससे कहीं अधिक रोचक एवं मधुर है। विचार करिये।"

हरिमोहन इस विषय में कुछ अनुमान नहीं लगा सका। इस कारण वह बितर-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बितर मुख देख रहा था।

इस पर मृदुला ने व्यंगात्मक मुद्रा बनाकर कहा, "इसीलिये तो आपको दीदी भी बुद्धू कहती है। सुनिये! डॉक्टर राय मुझको अपनी पत्नी बनाने का सौभाग्य प्रदान करना चाहते हैं।"

"सत्य? मृदुला! क्या मैं तुमको बधाई दे सकता हूँ?"

"बधाई? हाँ; परन्तु विवाह के निमन्त्रण स्वीकार करने के लिये अथवा उस निमन्त्रण के उत्तर में उसको फटकार बताने के लिए?"

"यह निश्चय करना तो तुम्हारा काम है। मैं तो दोनों अवस्थाओं में बधाई देने को तैयार हूँ।"

"आप मुझसे क्या आशा करते हैं?"

"तुम अद्भुत लड़की हो। जो कुछ भी तुम कर दो, वह कम है। यूँ तो मैं समझता हूँ कि वह तुम्हारे पिता की आयु का व्यक्ति है। घर का कुछ धनी अवश्य है, परन्तु आजकल बेकार है।"

"कल मैं अपने स्कूल से जल्दी आ गयी थी। सिर दर्द का बहाना कर, अपनी श्रेणी को छुट्टी देकर चली आयी थी। वास्तव में मैं दीदी के विषय में चिन्ता कर रही थी।

"घर पर पहुँची तो डॉक्टर राय बैठे थे। पिताजी अभी नहीं आये थे। माँ दीदी को लेकर लेडी डॉक्टर के पास गयी हुई थी। घर पर छोटी बहिन थी। इस कारण मैंने, डॉक्टर साहब के पास बैठना उचित जान, उनके छूटने तथा जेल में स्वास्थ्य इत्यादि के विषय पर बात करने लगी।

इस पर बातों-ही-बातों में वे कहने लगे, 'मृदुला देवी! मैं एक बात तुमसे कहने के लिए बहुत दिनों से विचार कर रहा था।'

'बताइये।' मैंने कहा।

'क्या वेतन मिलता है तुमको स्कूल से?'

"मैंने बताया, 'एक सौ बीस रुपये।'

'इतने पर संतुष्ट हो?'

'सन्तोष का वेतन की राशि से सम्बन्ध है क्या? धन से तो केवल शारीरिक सुविधायें प्राप्त होती हैं। परन्तु सन्तोष मन का विषय है।'

'मन शरीर नहीं है क्या?'

'नहीं जी!' मैंने कह दिया, 'हमारे स्कूल में एक बूढ़ा चपरासी है। चालीस रुपये वेतन पाता है। सदा प्रसन्नवदन और सब प्रकार से संतुष्ट प्रतीत होता है। उसके अनुमान से तो मुझको ढाई गुणा अधिक संतुष्ट होना चाहिये। परन्तु मैं उससे कम ही अपने में संतोष अनुभव करती हूँ।' इस समय मैं दीदी के कष्ट के विषय में विचार कर रही थी।

"इस पर डॉक्टर साहब बोले, 'मैं यही विचार कर रहा हूँ। इतने कम वेतन पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भला कैसे कोई संतोष अनुभव कर सकता है ? देखो मृदुला ! मेरी पैतृक सम्पत्ति की आय आजकल एक सहस्र मासिक से अधिक है। मैं अब पुन: प्रैक्टिस करने का विचार कर रहा हूँ। एक बार प्रैक्टिस आरम्भ की तो चार-पाँच सहस्र मासिक की तो आय हो ही जायेगी।

'यदि तुम मेरा प्रस्ताव स्वीकार करो तो हम दोनों इतने में बहुत आनन्द से रह सकेंगे।'

"मैं उसकी बात का भाव तो समझ गयी थी, इस पर भी उसको अपने मुख से कहने का अवसर देने के लिए मैंने कह दिया, 'तो आपने 'कोई प्रस्ताव किया है ? मैंने सुना नहीं।'

'ओह ! तुम कितनी भोली हो ! मैंने अभी तक विवाह नहीं किया। भगवान जाने मैं तुम्हारी प्रतीक्षा में ही बैठा था। मैं समझता हूँ कि मैं तुमको बहुत मान और प्यार से रखूँगा।'

'तो आप भगवान पर विश्वास करने लगे हैं ?' मैंने उसकी बात को हँसी में उड़ाने के लिए पूछ लिया।

'हाँ, आवश्यकता पड़ने पर मैं उसको याद कर लिया करता हूँ।'

'तो वह क्या कह रहा है आपको ? आपको याद करते देख तो वह भागकर आपकी सहायता के लिए चला आया होगा ?'

वैसे तो मैं नास्तिक हूँ। परमात्मा में विश्वास नहीं रखता। परन्तु जब मार्ग नहीं सूझता तो भगवान को याद कर लिया करता हूँ।'

'तो···।' मैं अभी कुछ कहना ही चाहती थी कि पिता जी आ गये। वे सीधे हमारे पास आकर बैठ गये। मैं उठकर चली गयी। मैं समझती थी कि अब मेरे वहाँ बैठने का कोई काम नहीं रहा।

"पिताजी ने कह दिया, 'तुम्हारी माँ घर पर नहीं है। इसलिये चाय तुम ही ले आओ।'

"मैं उनके लिये सामान वहाँ ला चाय बनाने लगी तो पिताजी ने कह दिया, 'मृदुला ! ये डॉक्टर साहब तुम्हारे पाणिग्रहण की याचना कर रहे हैं। मैं, जैसे तुम जानती हो, स्वतन्त्र विचारों का प्राणी हूँ। इस कारण तुमको कुछ कहता नहीं। तुम स्वयं ही डॉक्टर साहब से बातचीत कर लो। यदि तुमको डॉक्टर राय का प्रस्ताव स्वीकार हो तो मैं विवाह का प्रबन्ध कर दूंगा।'

'पिताजी ! आप निश्चिन्त रहें। मैं डॉक्टर साहब के प्रस्ताव पर विचार कर चुकी हूँ। यथा समय इनको अपनी राय से सूचित कर दूँगी।'

इस पर पिताजी निश्चिन्त हो चाय पीने लगे। चाय पीते हुए डॉक्टर राय चुप रहे। चाय के पश्चात् पिताजी उठकर भीतर चले गये। वे मुझको डॉक्टर राय से बातचीत करने का अवसर देना चाहते थे।

"मैंने अपने अनुमान से कहा, 'ताऊजी महाराज ! इस समय आपकी आयु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पैंतालीस के लगभग होगी। मेरे पिताजी इस समय बयालीस वर्ष की आयु के हैं। अतः आपको अपनी लड़की बराबर कन्या से विवाह की बात करने में लज्जा करनी चाहिए। देखिये, फिर यदि कभी ऐसी बात कही, तो मेरे इस सैंडल की एड़ी लकड़ी की बनी है। इसकी चोट बहुत सख्त लगेगी। आपके सिर पर बाल पहले भी कम हो रहे प्रतीत होते हैं।'

"इतना कह मैं दीदी के पास, जो माँ के साथ अब लौट आई थी, चली गयी।

यह वृत्तांत सुन हरिमोहन ने मुस्कराते हुए कहा, "तुम सत्य कहती थीं कि समाचार चाय से अधिक मधुर है। परन्तु मृदुला ! तुम्हारे पिता तुम पर नाराज़ हो जायेंगे।"

"नहीं होंगे। होंगे भी तो मैं समझती हूँ कि हानि उनकी होगी। मैं बीस रुपये मासिक तो मकान का भाड़ा दे देती हूँ। चालीस रुपया भोजनादि के लिए। शेष रुपये मेरे वस्त्र इत्यादि में व्यय हो जाते हैं। यही कारण है कि चाय के लिए आप जैसे भले लोगों से निमंत्रण माँगने की आवश्यकता पड़ जाती है।"

"मुझ जैसों से निमंत्रण माँगने से कोई हानि नहीं होगी। तुम्हारी बहिन को भी मुझसे कभी किसी प्रकार की हानि नहीं हुई। परन्तु कहीं सादिक जैसे से चाय के निमंत्रण की माँग कर दी तो फिर भगवान ही संरक्षक है।"

"मैं समझती हूँ कि मैं दीदी से कम पढ़ी होने पर भी, उससे अधिक बुद्धि रखती हूँ। मुझको ज्ञान है कि किसकी चाय पेट में विकार पैदा नहीं करेगी।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पंचम परिच्छेद

: १ :

"भारतवर्ष का वर्तमान न्याय-प्रपंच ब्रिटिश सरकार का दिया हुआ है। ब्रिटिश सरकार द्वारा निर्माण किया गया न्याय-संस्थान इंग्लैंड न्याय-प्रपंच की नकल है। जहाँ तक तो दंड-विधान का सम्बन्ध है, वह कुछ अधिक विवादास्पद वस्तु नहीं है। यह तो काल, परिस्थिति, देश और आवश्यकता अनुसार बदला जा सकता है; परन्तु झगड़ा है, क्रिमिनल अथवा सिविल प्रोसीज्युर कोड (न्याय प्रदान की प्रक्रिया) पर। यह इतना भद्दा है कि न्याय प्राप्त व्यक्ति के साथ भी प्रायः अन्याय हो जाता है।"

यह बात मिस्टर दास अपने लड़के हरिमोहन को बता रहा था। सन् १९५१ आ चुका था। हरिमोहन अब वकालत पास कर चुका था। उसका पिता अब भारत के नव-स्थापित उच्च-न्यायालय का न्यायाधीश नियुक्त हो चुका था। वह दिल्ली आया हुआ था और तुगलक रोड के एक बँगले में रहता था। मोहिनी भवानी बीमा-कम्पनी के प्रबन्ध के लिये अभी भी कलकत्ता में रहती थी। हरिमोहन मृदुला को लेकर दिल्ली पिता के आस आया था। वह मृदुला से विवाह की स्वीकृति चाहता था।

एक दिन पूर्व वे दोनों आये थे और आज पिताजी को अपने आने का प्रयोजन बता रहे थे। हरिमोहन ने इस विषय में कहा था, "बाबा ! यह मृदुला है। कालीचरणजी गुप्त की दूसरी लड़की। मैं इससे विवाह करने की स्वीकृति लेने आया हूँ।"

"मुझसे ही क्यों ? क्या इसके पिता ने स्वीकृति दे दी है ?"

"जी नहीं ! इसके पिता पहले इसका विवाह डॉक्टर शान्तिसागर राय से करना चाहते थे। जब यह नहीं मानी तो अब एक संतोषकुमार चक्रवर्ती से कर रहे हैं। यह वहाँ से भाग आयी है।

"इस समय इसकी आयु इक्कीस वर्ष की हो चुकी है। यह समझती है कि यह अपना विवाह करने में स्वतंत्र है।"

"और तुम ! क्या तुम इक्कीस वर्ष के नहीं हुए ?"

"मेरी आयु का अनुमान तो आपको मुझसे अधिक होगा ही। परन्तु मैं आपकी सम्मति और फिर उसके अनुकूल होने पर, आशीर्वाद माँगने आया हूँ।

"परसों इसका टेलिफोन आया था कि इसके पिता इसका बलपूर्वक विवाह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संतोषकुमार से कर देना चाहते है। इस अवस्था में यह घर रहना नहीं चाहती थी। मुझसे यह तुरन्त विवाह कर कहीं कलकत्ता से बाहर चले जाने का आग्रह करने लगी। इस पर मैंने इसको अपने घर पर बुला लिया और माताजी से राय करने पर निश्चय किया कि हम आपसे इस विषय में सम्मति माँगें, साथ ही उसका पालन करें।"

"तो तुम्हारी माँ ने इसको पसन्द नहीं किया ?"

"उन्होंने नपसन्द नहीं किया। इस पर भी उनको भय है कि कहीं इसके पिता, और डॉक्टर शान्तिसागर राय कोई झगड़ा मचायें तो आपकी सहायता के बिना उनका विरोध करने की शक्ति हममें नहीं होगी। अतः उन्होंने हमको दिल्ली का मार्ग बता दिया है। परसों हम कालका मेल में सवार होकर, कल रात यहाँ पहुँच गये और आपकी इस विषय में शुभ सम्मति चाहते हैं।"

इस पर दास बाबू ने वह वाक्य, जो इस अध्याय के आरम्भ में दिया गया है, कहा था। वह कहकर उसने कहा, "इस कारण किसी भी मुकदमे में फँस गये तो इस न्याय की चक्की में गेहूँ के दाने की भाँति बहुत ही बारीक पिस जाओगे।

"अतः इस कानून की चक्की से बचने के लिए आरम्भ में ही बहुत सोच-विचार कर कार्य करना चाहिये।

"जहाँ तक विवाह की स्वीकृति का सम्बन्ध है। तुम दोनों अपने मन और आत्मा में विचार कर लो। जो कुछ तुम दोनों निश्चय करोगे, वह मुझको स्वीकार होगा। जहाँ तक आशीर्वाद का सम्बन्ध है, वह तो तुम मेरे कहे अनुसार कार्य करोगे तो प्राप्त हो जायेगा। यदि कुछ उच्छृंखलता कर चुके हो अथवा करने जा रहे हो तो मेरा दिया आशीर्वाद फली-भूत नहीं होगा।

"अच्छा बेटी मृदुला ! तुम्हारी अब आयु कितनी है ?"

"मेरा जन्म सन् १९३० के मार्च मास में हुआ था। उसके अनुसार मैं अब इक्कीस वर्ष और चार मास की हो चुकी हूँ।"

"इसका क्या प्रमाण है तुम्हारे पास ?"

"एक तो मेरे 'मैट्रिकुलेशन' सर्टिफिकेट पर मेरी आयु लिखी है। दूसरे मेरे स्कूल की सर्विस बुक पर मेरी आयु लिखी है। दोनों की नियमानुकूल नकल मेरे पास है।"

"परन्तु ये दोनों प्रमाण मान्य नहीं हैं। देखो हरि ! अपनी माँ के पास तुरन्त जाकर कहो कि वह कालीचरण के सभी बच्चों का, कार्पोरेशन के रजिस्टर से जन्म का सर्टिफिकेट ले ले। तब तक इसको यहीं रहने दो और तुम कलकत्ता लौट जाओ।

"देखो मृदुला ! तुमको कहीं अज्ञातवास करना चाहिए। जब तक तुम्हारी आयु का निर्णयात्मक प्रमाण नहीं मिल जाता, तब तक तुम्हारे माता-पिता को तुम्हारा पता नहीं चलना चाहिए। इस कारण तुम यहाँ से तुरन्त मद्रास चली जाओ। वहाँ मेरे एक मित्र हैं। उनकी पत्नी के नाम मैं तुम्हें चिट्ठी देता हूँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मृदुला के पास दिल्ली तक आने का खर्चा भी नहीं था। अब उसके आगे भेजने की बात हुई तो वह बितर-बितर हरिमोहन का मुख देखने लगी। वह यह जानता था। इस कारण उसने मृदुला को साँत्वना देते हुए कहा, "ठीक है। हमको पिताजी की सम्मति के अनुसार कार्य करना चाहिए।"

उसी सायंकाल हरिमोहन कलकत्ता को चल पड़ा और मृदुला जी० टी० एक्सप्रेस से मद्रास को चली गयी। दोनों को खर्चा दास बाबू ने दे दिया था।

कलकत्ता में मृदुला की प्रतीक्षा उस रात को जब वह दिल्ली के लिए रवाना हुई थी, की जाती रही। जब रात भर वह नहीं आयी तो प्रातःकाल उसको ढूँढने का विचार होने लगा।

मृणालिनी अब सादिक के पास नहीं रहती थी। दोनों में सम्बन्ध टूट चुका था। मृणालिनी के सादिक से एक लड़का उत्पन्न हुआ था। वह अब चार वर्ष का होने वाला था। मृणालिनी उसके पालन-पोषण में तथा अपनी जीविकोपार्जन में लगी थी।

उसने बी० टी० पास कर स्कूल में अध्यापिका का कार्य आरम्भ कर दिया था। एक सौ पचहत्तर रुपये वेतन मिलता था। इससे निर्वाह हो रहा था।

घर में मृणालिनी और कालीचरण, मृदुला के सन्तोषकुमार से विवाह के पक्ष में थे। मृणालिनी का भाई इस विवाह के विरुद्ध थे। इस पर भी ये हरिमोहन से विवाह के न तो विरुद्ध थे, न ही पक्ष में।

प्रत्यक्ष रूप में मृदुला हरिमोहन से तटस्थ रहती थी। इस पर भी दोनों में मेल-जोल, मुलाकात थी और उनमें विवाह करने का निश्चय हो चुका था।

पहली बार जब दोनों में इस विषय में बात हुई तो प्रस्ताव हरिमोहन की ओर से हुआ था। मृणालिनी का सादिक से झगड़ा हो चुका था। उसके लड़का उत्पन्न हो चुका था और वह बी० टी० की परीक्षा दे रही थी। एक दिन मृदुला हरिमोहन से कह रही थी—"हरि बाबू! तुम अब दीदी से विवाह कर सकते हो।"

"ओह! तो अब वह सादिक की त्यक्ता हो गयी है।"

"सादिक उसको लिखकर कह चुका है कि वह उसके खर्चे और लड़के की परवरिश का जिम्मेदार नहीं है। वह जिससे चाहे विवाह कर सकती है।"

"सादिक के लिखने की बात नहीं पूछ रहा, मृदुला! मैं पूछ रहा हूँ कि क्या अब वह त्यक्ता अनुभव करती है?"

"हाँ।"

"वह किसी से विवाह करने की आवश्यकता अनुभव करती है क्या?"

"हाँ! उसने मुझको कहा है कि मैं आपसे मिलकर पता करूँ कि आपके मन में उसके लिए कुछ भी स्थान रह गया है अथवा नहीं?"

"उसके लिए मन में स्थान बहुत लम्बा चौड़ा है। परन्तु वह बहिन का है, अन्य किसी का नहीं।"

"परन्तु वह तो वही स्थान चाहती है, जो सादिक से विवाह के पूर्व उसका था।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"वह स्थान अब रिक्त नहीं रहा।"

"क्यों, वहाँ कोई अन्य देवी आ विराजी है क्या ?"

"हाँ।"

"क्या वह अभी वहाँ अज्ञातवास कर रही है अथवा किसी को बताई जा सकती है ?"

"अभी तक तो उसका वहाँ वास अज्ञात ही है। परन्तु यदि तुमको जानने में रुचि हो तो केवल तुम्हारे लिए बता सकता हूँ।"

"हाँ, यदि आप और उस देवी जी को कुछ हानि प्रतीत न हो तो बता दीजिए।"

"एक हैं श्री कालीचरण गुप्त। उनकी द्वितीय लड़की मृदुला देवी मेरे मन मन्दिर की अधिष्ठात्री है।"

"और उस देवी को विवाह कर कब लावेंगे ?"

"अभी वह अल्प-वयस्क है। उसको इक्कीस वर्ष के होने में अभी डेढ़ वर्ष शेष है।"

मृदुला गम्भीर विचार में पड़ गयी। कुछ विचार कर पूछने लगी—"क्या मृदुला देवी को इस बात का ज्ञान है ?"

"मैं समझता हूँ कि यह देवी जी का मूक प्रस्ताव ही है, जो मैंने मूक रूप से ही स्वीकार कर लिया है। उनको अवश्य इसका ज्ञान होगा।"

इस पर मृदुला हँस पड़ी। हँसकर उसने कहा—"डॉक्टर राय के पश्चात् एक अन्य उम्मीदवार उस देवी से विवाह के लिए भाग दौड़ कर रहा है। देवी के पिता ने उस महानुभाव को स्वीकार कर लिया है। देवी अभी तक टाल-मटोल करती आ रही है। अब आपकी मूक स्वीकृति का ज्ञान उसको होगा, तो वह टाल-मटोल का दृढ़ता-पूर्वक विरोध करेगी।"

"मैं यह जानता हूँ कि देवी के पिता मुझको स्वीकार नहीं करेंगे। इसी कारण देवी के वयस्क होने की प्रतीक्षा में था। मैं समझता हूँ कि उनका मूक प्रस्ताव स्वीकार हो जाने के पश्चात् भी अभी उसको टाल-मटोल ही करना चाहिए। इस समय गड़बड़ हुई तो कानून उसके विरुद्ध हो जायेगा।"

"परन्तु इसका परिणाम यह भी होगा कि मेरे पिता के साथ दीदी भी इस विवाह का विरोध करेगी।"

"करने दो। उसको तो पहले अपनी दशा सम्हालनी चाहिये।"

"मैं समझती हूँ कि दीदी को यह सन्देह हो गया प्रतीत होता है कि मैं उसके मार्ग में बाधा हूँ। इसी कारण वह मेरे इस विवाह पर बल दे रही है।"

इस पर एक योजना बन गयी, जिससे यह सब झगड़ा डेढ़ वर्ष तक टाला जा सके।

डेढ़ वर्ष व्यतीत हो गया। सन्तोषकुमार से विवाह तो इस कारण रुका कि मृदुला विवाह के लिए रुपये एकत्रित करने में लगी हुई है, ऐसा कहा गया। साथ ही मृणालिनी को यह बताया गया कि हरि लॉ की परीक्षा दे ले। पीछे ही वह विवाह के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिए अपने पिता को कह सकता है।

इस व्यवहार में डेढ़ वर्ष व्यतीत हो गया। हरिमोहन ने लॉ की परीक्षा पास कर वकालत करने का लाइसेंस भी ले लिया। इस बीच मृणालिनी ने एक दिन उससे मिलकर, उससे विवाह का प्रस्ताव कर दिया; परन्तु हरिमोहन ने स्पष्ट कह दिया कि वह उसकी बहन मृदुला को उस पर उपमा देता है।

इससे कालीचरण के घर में हंगामा खड़ा हो गया। घर में दो पक्ष हो गये। एक ओर कालीचरण और उसकी लड़की मृणालिनी थी और दूसरी ओर लक्ष्मी तथा मृदुला का बड़ा भाई भारत। इस विवाद में तू-तू, मैं-मैं हुई। पिता ने मृदुला का विवाह बलपूर्वक कर देने की धमकी दी तो अगले दिन मृदुला घर से भाग गयी। पहले वह मोहिनी के पास पहुँची, परन्तु मोहिनी ने उसको हरि के साथ दिल्ली भेज दिया।

दिल्ली में सहानुभूति तो मिली, परन्तु विवाह को अभी स्थगित करना पड़ा।

जिस रात मृदुला घर नहीं आयी, उससे अगले दिन लक्ष्मी उसका पता करने के लिए दास बाबू के घर पर जा पहुँची। मोहिनी बीमा कम्पनी के कार्यालय को जाने के लिए तैयार हो रही थी कि लक्ष्मी के मिलने के लिए आने की सूचना मिली। उसका लक्ष्मी से परिचय नहीं था। इस कारण वह उससे ड्राइंग रूम में मिली और उससे पूछने लगी, "आपका क्या काम है, मुझसे ?"

"मैं हरिमोहन से मिलने आयी हूँ।"

"वह यहाँ नहीं है ?"

"कहाँ गया है ?"

"दिल्ली अपने पिता से मिलने गया है।"

"उसके साथ मृदुला भी थी क्या ?"

मोहिनी को समझ आ गया कि वह भूल कर बैठी है। इस कारण वह सतर्क हो गयी और कहने लगी, "नहीं, वह तो अकेला ही गया है परन्तु आप किस मृदुला की बात कर रही हैं ?"

"श्री कालीचरण गुप्त की लड़की मृदुला की ?"

"आप उसकी क्या हैं ?"

"मैं उसकी माँ हूँ।"

"मैं मृदुला को नहीं जानती। हरि के पिता का पत्र आया था कि उसको दिल्ली आ जाना चाहिये। इस कारण वह अभी एक-दो दिन के लिये वहाँ गया है।"

लक्ष्मी को संदेह तो था कि मृदुला हरि के साथ गयी है, परन्तु उसके संशय का समर्थन नहीं हुआ। उसने अपने पति को बता दिया कि हरि यहाँ नहीं है। वह दिल्ली गया है।

इतनी मात्र सूचना से कालीचरण को विश्वास हो गया कि मृदुला हरि के साथ है। अतः उसने पुलिस में रिपोर्ट लिखा दी कि उसकी नाबालिग लड़की मृदुला को,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हरिमोहन, जस्टिस दास का लड़का भगाकर ले गया है। पुलिस को ले देकर हरि के वारंट निकलवा दिये गये, परन्तु वारंट लेने में तीन दिन लग गये।

तब तक हरि लौटकर कलकत्ता आ गया था। वारंट दिल्ली भेजे गये और वहाँ से समाचार आया कि हरिमोहन वहाँ नहीं है। न ही मृदुला मिली।

हरिमोहन का कलकत्ता में होना छुपा नहीं रह सका। इस कारण वारंट उसको दे दिये गये। वारंट जमानत के साथ थे। उसको कोर्ट में हाज़िर होकर बताना था कि क्यों न उस पर मृदुला देवी को भगा ले जाने का मुकदमा चलाया जाये।

हरिमोहन को वारंट मिले तो वह अपने पिता की सूझ-बूझ पर हैरान रह गया। वह समझ गया कि क्यों उन्होंने दोनों को दिल्ली से बाहर भेज दिया है।

हरिमोहन ने बयान दे दिया, "मैं मृदुला से प्रेम करता हूँ। वह अब इक्कीस वर्ष ऊपर की आयु की है। इस कारण मैं उसको भगा ले जाने का आवश्यकता नहीं समझता। मैं तो उसके पिता की आज्ञा के बिना भी उससे विवाह करने का अधिकार रखता हूँ। परन्तु मैं नहीं जानता कि वह कहाँ है। मैं भी उसको ढूंढने में सहायता दूंगा।"

इस पर भी उसकी पाँच हज़ार की जमानत हो गयी और मुकदमे की तारीख दे दी गयी।

: २ :

तारीख से पूर्व कलकत्ता कार्पोरेशन के कार्यालय से कालीचरण के बच्चों के जन्म के प्रमाणपत्र प्राप्त कर लिये गये थे। दास बाबू की सम्मति से मृदुला उन सर्टिफिकेटों को लेकर मुकदमे के दिन कचहरी में उपस्थित हो गयी। ठीक जब मुकदमे की आवाज़ पड़ी तो मृदुला का वकील हाजिर हो गया और उसने मृदुला की ओर से प्रार्थना कर दी कि वह कचहरी में हाज़िर है, परन्तु अपने पिता और मित्रों से बलपूर्वक हरण की आशंका में प्रकट नहीं हो रही। उसकी रक्षा का प्रबन्ध किया जाये तो वह स्वयं उपस्थित होकर अपने बयान दे देगी।

कोर्ट ने दो पुलिसमैन वकील के साथ भेजने की आज्ञा दे दी और पाँच मिनट में मृदुला कचहरी में आ गयी। उसके बयान हुए—"मुझको कोई भगाकर नहीं ले गया। मैं स्वेच्छा से मद्रास चली गयी थी। मेरे जाने का प्रयोजन यह था कि मेरे पिता, मेरी इच्छा के विपरीत बलपूर्वक मेरा विवाह एक संतोषकुमार चक्रवर्ती से करना चाहते थे। इस कारण मैं पिता का घर छोड़कर चली गयी थी।

"पिछले पन्द्रह दिनों में यह बात शाँत हो गयी होगी, यह विचारकर मैं कलकत्ता लौट आई हूँ। आने पर मुझको पता चला कि मेरे वारंट निकले हुए हैं। अतः कचहरी में हाजिर हो गयी हूँ।"

उसकी भी ज़मानत हो गयी और उसने मैजिस्ट्रेट के सम्मुख यह प्रार्थना कर दी कि—"मैं बालिग हूँ। इस कारण मैं जहाँ चाहूँ स्वतन्त्रता से रह सकती हूँ। मैं अपने पिता के घर पर रहना नहीं चाहती।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"कहाँ रहोगी ?" मैजिस्ट्रेट ने पूछ लिया।"

"आपने ज़ामिन के घर में।"

"ठीक है, रह सकती हो।"

इस मुकदमे का एक प्रभाव यह हुआ कि जस्टिस दास का नाम बार-बार समाचार-पत्रों में आने लगा। समाचार-पत्रों के सम्वाददाताओं के वक्तव्य ऐसे ढंग से छपते थे, जिससे यह प्रकट हो कि एक 'सुप्रीम कोर्ट' के जज की सहायता से एक भले घर की लड़की को खराब किया जा रहा है।

दास के सहयोगी न्यायाधीशों में से एक जस्टिस सैयदहुसैन ने उसको कहा भी—"यह प्रचार तुम्हारी नौकरी में बाधक होगा।"

"तो एक सुप्रीम कोर्ट का जज किसी का नौकर होता है ?"

"हाँ, भारत के राष्ट्रपति का।"

"मैं उनसे निपट लूँगा। मैं अपने को किसी का नौकर नहीं मानता। यह कार्य नौकरी नहीं, प्रत्युत सेवा-कार्य है।"

"बात एक ही है। दास बाबू ! तुम इस सेवा कार्य के योग्य नहीं समझे जाओगे।"

"तो इससे सेवा करने वाले को हानि होगी क्या ? वह इससे कुछ अधिक आर्थिक लाभ तो कर नहीं रहा।"

सैयदहुसैन ने अपने कन्धों को झटककर, असंतोष प्रकट किया और चुप कर रहा।

दास इस सम्भावना को, कि उसको सुप्रीम कोर्ट के न्यायाधीश के कार्य के अयोग्य माना जायेगा, समझ रहा था। इस पर भी वह देख रहा था कि देश की, यह प्रवृत्ति कि सर्वसाधारण के हो-हल्ला करने से न्याय का मुख मोड़ दिया जाता है, मानवता के पनपने में बाधक हो रही है।

इस समय मृदुला ने अपनी जन्म-तिथि का प्रमाणपत्र और अपने भाई-बहनों के भी ऐसे ही प्रमाण-पत्र मैजिस्ट्रेट के सम्मुख उपस्थित कर दिये। कालीचरण ने उनकी व्याख्या कर दी। उसने बयान दे दिया कि वह लड़की, जिसका जन्म सन् १९२७ में हुआ, मृणालिनी है। इसके पश्चात् एक लड़की १९३० में हुई थी। वह कुछ दिन की होकर मर गयी थी। उस लड़की का देहान्त लड़की के नाना के घर में हुआ था। पश्चात् एक लड़की १९३२ में हुई। वह मृदुला है और उसके पश्चात् एक लड़की १९३४ में हुई, जिसका नाम माधुरी है।

इस प्रकार मृदुला अभी १९ वर्ष की हुई है। इस पर मृदुला के वकील ने यह माँग उपस्थित की कि कालीचरण और कालीचरण की पत्नी लक्ष्मीदेवी के सौगन्ध-पूर्वक बयान लिख लिये जाएँ। इसके लिये दोनों को आज्ञा हो गई कि अमुक तिथि को उपस्थित होकर सौगन्धपूर्वक बयान दें।

कालीचरण को यह समझ नहीं आया था कि उसकी स्त्री को भी साक्षी के रूप में बुलाया जा सकता है। यदि तो उसकी पत्नी उसकी छलना में सम्मिलित होती तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ठीक था, परन्तु वह मृदुला के विवाह को संतोषकुमार से होना पसन्द नहीं करती थी। अतः इसमें सहायता देने के लिये झूठ बोलना पाप समझती थी।

इस कारण जब मैजिस्ट्रेट की लक्ष्मीदेवी को कचहरी में उपस्थित होकर बयान देने की आज्ञा हुई तो कालीचरण के घर में भारी झगड़ा खड़ा हो गया।

"बताओ लक्ष्मी! अब तुम क्या करने जा रही हो?" कालीचरण ने घर पहुँचते ही पूछा।

"किस विषय में?"

"तुम मृदुला का विवाह संतोषकुमार से करोगी अथवा नहीं?"

"पहले कचहरी में यह तो सिद्ध कर लो कि वह इक्कीस वर्ष से कम आयु की है।"

"इसी सिद्ध करने के लिये तुम्हारी साक्षी की आवश्यकता है।"

"मैं क्या साक्षी भरूँगी?"

"तुमको यह कहना होगा कि तुम्हारी लड़की जो सन् १९३० में पैदा हुई थी, वह छः महीने पश्चात् ही ननिहाल में मर गयी थी।"

"यह तो सर्वथा झूठ होगा।"

"कार्य सिद्धि के लिये सभी उपाय क्षम्य हैं।"

"एक गलत उद्देश्य के लिये झूठ बोलना तो और भी भारी पाप हो जायेगा।"

"पाप-पुण्य क्या होता है? सफलता पुण्य है, असफलता पाप है।"

"तो आप मृदुला का संतोषकुमार से विवाह सफलता समझते हैं?"

"हाँ।"

"क्या लाभ होगा इससे? लड़की उसको पसन्द नहीं करती। न जाने आपने क्या गुण देखा है उसमें?"

"वह हमारे दल का नेता है। यूँ भी धनी बाप का बेटा है। यदि तो हमारे दल की योजना चल गयी तो वह बंगाल का प्रीमियर बन सकता है और यदि न बनी तो खाने-पीने को पर्याप्त है।

"इसके विपरीत यदि हरि से विवाह हुआ तो अपने दल के सत्तारूढ़ होते-होते उसके परिवार वालों को गोली से उड़ा दिया जायेगा।"

"क्यों?"

"वे सरमायेदार हैं। सदा हमारे दल वालों को तंग करते रहते हैं।"

"कुछ भी हो, मैं झूठ नहीं बोलूंगी।"

"तो जानती हो क्या होगा?"

"क्या होगा?"

"तुम्हारे घर वाले का दावा खारिज होगा। उसको, झूठा बयान देने पर उसका वकालत का लाईसेंस ज़ब्त होगा। मृदुला का विवाह उस बेईमान के लड़के से होगा।"

लाईसेंस ज़ब्त होने की बात सुन लक्ष्मी चुप कर गयी। उसे चुप देख, काली-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चरण ने समझा कि काम बन गया। वह आशा करने लगा था कि कुछ दिनों में वह नर्म पड़ जायेगी।

तारीख के दिन तक लक्ष्मी विचार करती रही कि वह झूठ बोले अथवा न। झूठ बोलने से उसके घर वाले की वकालत का लाईसेंस बचता है। इसका अभिप्राय यह है कि जिससे परिवार का पालन-पोषण चलता है, झूठ बोलने में यह बचाया जा सकता है।

साथ ही यह भी स्पष्ट था कि झूठ बोलने से वह अपनी लड़की को इन हत्यारों के हाथ में दे देती है।

वह किसी अंतिम निर्णय पर नहीं पहुँची। कचहरी में उपस्थित होने की तारीख आ गयी। वह चुपचाप घर से निकली और पड़ोस के एक डॉक्टर से तीव्र बुखार होने का सर्टिफिकेट लेकर आ गई। वह सर्टिफिकेट उसने अपने पति के हाथ में रखकर कहा, "यह ले जाईये ! मैं आज कचहरी में नहीं जा सकती।"

"क्यों ?"

"मैं झूठ बोलने के लिये अभी अपने मन को तैयार नहीं कर सकी।"

"सारी रात रोते रहे, मरा एक भी नहीं। मैं तुमको समझाते-समझाते थक गया, परन्तु तुम्हारी समझ में कुछ नहीं आया।"

"जी ! आज तो यह ले जाईये। मुझको विचार करने के लिये और अवसर दीजिये।"

विवश कालीचरण कोर्ट में चला गया। वहाँ उसके हलफिया (सौगन्धपूर्वक) बयान हो गये। कालीचरण ने बताया, "मृदुला सन् १९३२ में उत्पन्न हुई थी। उससे पहले भी एक लड़की हुई थी और वह छः मास की होकर मर गयी थी। वह अपने नाना के घर में मरी थी। उसके मरने की रिपोर्ट गाँव में लिखाई गयी है अथवा नहीं, वह नहीं जानता। नाना और उनके घर के प्रायः सभी प्राणी मर चुके हैं। मेरी पत्नी का एक भाई है, जो उस समय दस वर्ष का था और अब अमेरिका गया हुआ है।"

मृदुला के वकील ने एक प्रश्न और पूछा, "आपकी कुल कितनी सन्तानें हो चुकी हैं ?"

"पाँच।"

"यह संख्या मर जाने वाली लड़की को मिलाकर है अथवा छोड़कर ?"

"मरने वाली लड़की सहित।"

"सबसे छोटी सन्तान का क्या नाम है ?"

"माधुरी।"

"किस सन् में उत्पन्न हुई थी ?"

"१९३४ में।"

"उसके पश्चात् कोई सन्तान नहीं हुई ?"

"नहीं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस पर मृदुला के वकील ने कार्पोरेशन के रिकार्ड की एक प्रमाणित नकल उपस्थित कर दी। उसमें कालीचरण ने रिपोर्ट की थी कि एक लड़की, तीन मास की आयु में, चेचक से मर गयी थी। रिपोर्ट की तारीख सितम्बर १६३२ थी।

जब कालीचरण की पत्नी की आवाज़ पड़ी तो कालीचरण के वकील ने एक मैडिकल सर्टिफिकेट उपस्थित कर दिया। यह लक्ष्मीदेवी के तीव्र ज्वर में ग्रस्त होने का था।

इस पर लक्ष्मीदेवी की गवाही के लिये पुनः पन्द्रह दिन की तारीख पड़ गयी।

अब पुनः लक्ष्मीदेवी पर जोर डाला जाने लगा कि वह चलकर गवाही दे कि मृदुला का जन्म १६३२ में हुआ है और १६३० में उत्पन्न लड़की का देहान्त १६३० में ही हुआ था।

अभी कालीचरण को यह विदित नहीं था कि उसके एक अन्य रिपोर्ट की प्रमाणित प्रतिलिपि भी कोर्ट में उपस्थित हो चुकी है।

लक्ष्मीदेवी द्विविधा में फँसी थी कि क्या करे। कालीचरण उसको धर्म-भीरू कहकर डाँट रहा था। वह उसको बताता था कि सत्य और झूठ का निर्णय उसके फल से होता है, सफलता को सत्य कहते हैं और असफल कार्य ही झूठ है, परन्तु वह बिचारी हिन्दू संस्कारों में पली इस युक्ति को समझ नहीं पाती थी।

: ३ :

मृणालिनी तो इस परिस्थिति से घबरा उठी। वह जब माँ को कहती कि वह कचहरी में बाबा के कहने के अनुसार साक्षी कर दे तो मन-ही-मन विचार करती थी कि असत्य भाषण का परिणाम कैसे शुभ होगा ?

वह मन-ही-मन हरिमोहन से घृणा करती थी। वह यह नहीं चाहती थी कि उसकी बहिन का विवाह उससे हो, परन्तु वह यह जानती थी कि इसके लिये न केवल माँ को झूठ बोलना पड़ेगा, प्रत्युत मृदुला को भी किसी अन्य से विवाह के लिये विवश करना पड़ेगा।

वह इन दिनों एक स्कूल में पढ़ाने का कार्य करती थी। स्कूल से आते हुए वह ट्राम पर सवार हुई तो उसको अपनी साथ की सीट पर हरिमोहन बैठा दिखाई दिया। हरिमोहन ने उसको बैठते देख लिया और नमस्कार कर दी। उसने कहा, "मृणालिनी देवी ! नमस्ते।"

"अच्छा ! तो आप हैं। काम कैसे चल रहा है ?"

"काम तो अभी आरम्भ नहीं किया। पिताजी वकालत करने से मना कर रहे हैं।"

"क्यों ?"

"वे 'प्रोफेशनल लॉयर' (पेशावर वकीलों) को पसन्द नहीं करते।"

"अच्छा, तो सौ चूहे खाकर बिल्ली हज्ज को जा रही है ?"

"हाँ ! उनको चूहे खाने से पेट में दर्द होने लगी है। इस कारण वे इनका खाना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मना कर रहे हैं।"

"कैसा दर्द हुआ है पेट में ?"

"उसका अनुभव है कि अस्सी प्रतिशत मुकदमे वकीलों को अपने लिये काम प्राप्त करने के लिये किये जाते हैं। पचास प्रतिशत के लगभग का निर्णय गलत कराने में वकीलों की रोटी का सवाल ही कारण होता है। मुकदमे में वकीलों की बहस पर भरोसा कर मजिस्ट्रेट और जज स्वयं मेहनत करने का अभ्यास छोड़ देते हैं। वे न तो अपना मस्तिष्क प्रयोग करते हैं और न ही कानून को अध्ययन करने की आवश्यकता मानते हैं।"

"तो 'लॉ' कॉलेज बन्द कर देने चाहियें ?"

"नहीं, कानून पढ़ने की आवश्यकता तो रहेगी, परन्तु मैजिस्ट्रेटों और जजों को। साथ ही कुछ व्यवसाय ऐसे हैं, जिनमें कानून के ज्ञान की आवश्यकता रहेगी।"

"वकीलों के न होने से बहुत से लोगों को तो पता ही नहीं चलेगा कि उनके साथ न्याय हो रहा है अथवा अन्याय।

"यह इस कारण कि कानून बनाने वाले ऐसे लोग हैं, जो कानून का सार नहीं जानते। और फिर कानून के साधारण अर्थों को पेशावर वकील तोड़-मरोड़ करने में लगे रहते हैं।"

मृणालिनी को इस सिद्धान्तात्मक विवाद करने की आवश्यकता नहीं थी। उसने तो यूँ ही बात आरम्भ की थी। अब उसने बात बदल कर पूछ लिया, "कहाँ उतर रहे हैं आप ?"

"चौरंगी पर ! 'फिरपो' में चाय पीने जा रहा हूँ।"

मृणालिनी का दीर्घ श्वास निकल गया और उसका मुख मलिन हो गया। यह बात हरिमोहन से छुपी न रह सकी। उसने मन के भावों को अनुमान लगाकर कह दिया, "मृणालिनी ! यदि घर जाने में जल्दी न हो तो आओ, चाय पीती चलो। मृदुला भी आने वाली है।"

"ओह ! कहाँ रहती है वह ?"

"अपनी ज़मानत देने वाले के घर पर। वह उत्तर पाड़ा में कहीं रहती है।"

"आपसे वह मिलती रहती है क्या ?"

"नित्य चाय पीने के लिये शाम को वह आती है। कभी कहीं, कभी कहीं। हम समय और स्थान एक दिन पहले ही निश्चय कर लेते हैं।"

"मृदुला मेरा आपके साथ चाय पीने के लिये आने को पसन्द करेगी क्या ?"

"क्यों ? मैं इसमें कोई आपत्ति नहीं समझता। मेरे विचार में वह तुमसे मिलकर अति प्रसन्न होगी।"

चौरंगी पर ट्राम पहुँची तो मृणालिनी भी हरिमोहन के साथ उतर पड़ी। दोनों जब 'फिरपो' के रिसेप्शन हाल में पहुँचे तो मृदुला पहले ही वहाँ उपस्थित थी।

हरिमोहन ने पहुँचते ही कहा, "देखो मृदुला ! किसको साथ लेकर आया हूँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"दीदी !" मृदुला उठकर उससे गले मिलने लगी। कसकर आलिंगन कर दोनों बैठीं तो हरिमोहन ने कह दिया, "ये कहती थीं कि तुम इनको देखकर प्रसन्न नहीं होगी। क्यों मृदुला ! यह ठीक है क्या ?"

"बिलकुल ग़लत। मैं तो दीदी से मिलने के लिये दिन-रात लालायित रहती हूँ। बताओ दीदी ! माँ कैसी हैं ? भारत भैया से कहना कि मुझको वह कभी-कभी तो मिल ही सकता है।"

"बात यह है कि मैं तुम्हारे विरोध पक्ष में हूँ। इस कारण न तो माँ मुझसे बात करती है, न ही भूषण। वे समझते हैं कि मैं तुम्हारा अहित चिन्तन करने वालों में हूँ।"

"परन्तु तुम हो नहीं। ठीक है न ? मेरी प्यारी दीदी ! मैं तो घर के सब लोगों को अपना हितचिन्तक मानती हूँ। मतभेद हितचिन्तन में नहीं है। यह उन उपायों में हैं, जिनसे वे मेरा हित करना चाहते हैं। इस मतभेद के होने पर भी उद्देश्य एक है। अतः यह द्वेष का विषय नहीं हो सकता।"

"तो फिर तुम घर से भाग क्यों आई हो ?"

"इस कारण कि मतभेद समझ-समझाकर दूर करने के स्थान बलपूर्वक दूसरे पर थोपने का यत्न होने लगा था और अब तो झूठ बोलकर मत की श्रेष्ठता सिद्ध करने का प्रयास आरम्भ हो गया है।"

"पिताजी उद्देश्य की सिद्धि के लिये सब प्रकार के उपायों को उपादेय मानते हैं।"

"मैं ऐसा नहीं मानती थी। इस कारण घर से भाग जाना आवश्यक हो गया। परन्तु दीदी ! तुम भी क्या यही ठीक मानती हो ?"

"मैं अब हृदय से कम्युनिस्ट हूँ और यह कम्युनिज़म की आधार-शिला है।"

"तब ठीक है। तुम लोग बल प्रयोग से अपनी बात मनवाना चाहते थे। मैंने तुमसे अधिक बलशील का आह्वान कर लिया है। वह बल है क़ानून और राज्य का। तुम उससे दुर्बल सिद्ध हुई हो।"

"परन्तु राज्य भी तो हमारे हाथ में आने वाला है। तब भागकर कहाँ जाओगी ?"

"जिस दिन भारत में ऐसा अनर्थ करने वालों का राज्य होगा, तब यह रहने के योग्य नहीं रहेगा। तब इस देश को छोड़ ही जाना होगा।"

"यही तो पूछ रही हूँ कि कहाँ और किस देश में जाओगी ?"

"एक स्थान है जहाँ तुम लोगों की पहुँच नहीं है। वह है पितृलोक। जहाँ मरने के पश्चात् आत्माएँ जाती हैं।"

"तुमने देखा है उस लोक को ?"

"देखा तो नहीं, परन्तु वहाँ के रहने वालों से बातें की हैं।"

"कैसे ?" मृणालिनी ने व्यंगात्मक मुद्रा बनाकर पूछ लिया।

"तुम मानोगी नहीं दीदी ! परन्तु यह सर्वथा सत्य है। मृत आत्माओं का तुरन्त दूसरा जन्म नहीं हो जाता। वे एक ऐसे लोक में रहती हैं, जिसको पितृलोक कहते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनेक लोगों ने उन आत्माओं से बातें की हैं। वे इस लोक के लोगों का पथ-प्रदर्शन भी करती रहती हैं। उस लोक में शरीर इतना सूक्ष्म होता है कि आत्माएँ भूलोक में सर्वत्र घूम सकती हैं।"

"यह सब व्यर्थ की बात है। मृदुला ! मुख्य बात है रोटी, कपड़ा, मकान और शारीरिक सुख-सुविधा।"

"जिस प्रकार की सादिक से मिली है, वैसी ही न ? देखो दीदी ! कोई मक्की की रोटी खाना चाहता है और कोई दाल-भात। कोई स्कर्ट और पेटीकोट पहनना चाहता है तो कोई साड़ी-जम्पर। इसी प्रकार कोई सादिक को पसन्द करता है और कोई हरिमोहन को। मैं तो यह कहती हूँ कि इसमें कोई अन्य क्यों हस्तक्षेप करे ?"

मृणालिनी सादिक की बात सुन अपने उस काल की पूर्ण स्थिति को स्मरण कर रोमांचित हो उठी थी। सादिक से सहवास अति आनन्दमय प्रतीत हुआ था। उसकी स्मृति उसके मस्तिष्क को अभी तक आन्दोलित करती रहती थी। परन्तु जब मृदुला ने कहा कि उसको हरिमोहन पसन्द है तो उसको समझ आया कि दोनों में सहवास हो चुका है।

इस पर उसको अपने सादिक से बिछुड़ने की याद आ गयी। जितना मिलन मधुर था, उतना ही विच्छेद दुःखदायी था। इससे उसके पूर्ण शरीर में कंपकंपी हो उठी। हरिमोहन ने मृणालिनी के चित्त की अवस्था का अनुमान लगाकर कह दिया, "मृणालिनी ! जब तुमने सादिक को पसन्द किया था, तब किसी ने भी, घर अथवा बाहर से, मना नहीं किया था। अब मृदुला जब वही कुछ करने जा रही है, अर्थात् अपने मन पसन्द के पति को वरने लगी है तो तुम लोग आपत्ति क्यों करते हो ?"

"बाबा का कहना है कि मृदुला अल्प आयु है।"

"उस समय तो तुम भी अल्पवयस्क थीं। अब तो मृदुला कहती है कि उसकी आयु इक्कीस वर्ष से अधिक हो चुकी है।"

"मृदुला को अपनी आयु का भ्रम हो गया है। वास्तव में इसका जन्म १९३२ में हुआ था।"

"यह तो कोर्ट निर्णय करेगा। परन्तु अपने विषय में तो तुम भी अपने को इक्कीस वर्ष से कम बताती थीं।"

"हाँ, परन्तु मैं तो वही बात कर रही थी, जिसको पिता जी कहते थे।"

"और तुम्हारे पिताजी के कहने में भूल नहीं थी ?"

"उस समय तो भूल प्रतीत नहीं होती थी।"

"और अब ? सादिक ने तुमको छोड़ क्यों दिया है ?"

"वह एक अच्छा पिता सिद्ध नहीं हुआ।"

"गृहस्थ में जहाँ पत्नी का पति होना पड़ता है, वहाँ अपने माँ-बाप का पुत्र भी होना होता है। बहिन का भाई, सन्तान का पिता और साथ ही कारोबार में मालिक का नौकर और अधीनस्थों का मालिक होना पड़ता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"सादिक गृहस्थ जीवन के योग्य नहीं था और उससे तुम्हारा विवाह भूल थी। तुम्हारे पिताजी की सूझ-बूझ मिथ्या थी। तुम्हारा अपना अनुमान भी अशुद्ध था।

"क्या तुम लोग अभी भी वही बुद्धि नहीं रखते हो, जो तुम्हारे विवाह के समय थी?"

"नहीं, ऐसी कोई बात नहीं। एक वार भूल की है तो क्या उस भूल से हम शिक्षा ग्रहण नहीं करेंगे? उस समय मेरी पसन्द का आदमी स्वीकार कर लिया गया था। इसी कारण अब मृदुला की पसन्द पर विश्वास नहीं किया जा रहा।"

मृणालिनी ने यह बात कह तो दी, परन्तु उसी का मन इस युक्ति के मिथ्या होने को अनुभव कर रहा था। इससे उसने बात बन्द कर दी और सामने रखी पेस्टरी का एक टुकड़ा उठाकर खाने लगी।

हरिमोहन ने मुस्कराकर कहा, "या तो मृणालिनी बहिन को धोखे में रखा जा रहा है अथवा वह जान-बूझकर अपने को धोखा दे रही है। मृदुला के निर्वाचन को न पसन्द करने का कारण यह नहीं कि वह अनजान और कम अनुभव रखती है, प्रत्युत यह इस कारण है कि उसका चुना हुआ युवक कम्युनिस्ट नहीं और उस युवक का पिता कम्युनिज़म का विरोधी है।

"सादिक को भी पसन्द इसी बात पर किया गया था कि वह प्रगतिशील विचारों का व्यक्ति था और संतोष का निर्वाचन भी इसी आधार पर हो रहा है।

"अर्थात् तुम लोग अपनी पहली भूल से शिक्षा ग्रहण नहीं कर रहे।"

"क्या कम्युनिज़म इस्लाम की भाँति कोई मज़हब है, जो एक कम्युनिस्ट की लड़की को ग़ैर कम्युनिस्ट से विवाहने पर आपत्ति की जा रही है?"

"हाँ, मुसलमान एक हिन्दू को अपनी लड़को देने में संकोच नहीं करते, क्योंकि वे जानते हैं कि वह मुसलमान बन जायेगा; परन्तु कोई भी मुसलमान स्वेच्छा से अपनी लड़की किसी सिख अथवा आर्य-समाजी को देने के लिए तैयार नहीं होता। वह जानता है कि उस अवस्था में लड़का मुसलमान बन जाने के स्थान लड़की के इस्लाम छोड़ बैठने की सम्भावना अधिक है।

"यही बात कम्युनिस्टों की है। वे उन सरलचित्त व्यक्तियों से विवाह सम्बन्ध बना लेने में हानि नहीं समझते, जिनको वे अपने दल में सम्मिलित कर लेने का विश्वास रखते हैं। यहाँ विपिनविहारी दास के लड़के हरिमोहन को वरग़ला कर ले जाने की किंचित्-मात्र भी सम्भावना नहीं। इस कारण, स्वेच्छा से, वे अपनी लड़की यहाँ नहीं देना चाहते।"

"एक बात और है। हरिमोहन तो आपके दल में रह आया है और उस दल के दोषों को समझ उसको छोड़कर आया है।"

"ऐसी कोई बात नहीं। पर छोड़ो इस बात को। आपने मुझको बहिन कब से कहना आरम्भ किया है?"

"जब से तुमने सादिक हुसैन से सम्बन्ध बनाया था। यह मृदुला से विवाह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करने का विचार तो पीछे की बात है।"

"परन्तु मैं तो सादिक साहब से सम्वन्ध-विच्छेद होने के समय से ही मन में आपसे वही सम्बन्ध बनाने की आशा में बैठी हूँ, जो सादिक से विवाह के पहले था।"

"देखो मृणालिनी! मैं समझता हूँ कि विवाह सम्बन्ध तो पूर्व जन्म के कर्मों के अधीन परमात्मा के द्वारा निश्चय होता है। जब सादिक से तुम्हारा विवाह निश्चय हुआ तो मैं यह समझ गया था कि तुम्हारे कर्म ही तुमको खेंच कर मुझसे पृथक् कर रहे हैं।

"हम, जिससे विवाह नहीं होना होता, उस लड़की को बहिन कहते हैं। मैं अब भी इस सम्वन्ध को ही उचित सम्बन्ध समझता हूँ।"

: ४ :

मृणालिनी के मन पर इस चाय के समय हुए वार्तालाप का भारी प्रभाव हुआ था। एक तो वह हरिमोहन को पुनः किसी प्रकार भी पति रूप में पाने का विचार छोड़ बैठी थी। दूसरे, वह यह जान गयी थी कि हरिमोहन का विश्लेषण, उसके और उसके पिता के व्यवहार का, सर्वथा ठीक है। वे दोनों, उसके माता-पिता के और तदर्थ उनके लड़के के विरुद्ध इसी कारण थे कि वे उनको अपने वाग्जाल में फँसा नहीं सके थे। उनके विपरीत भावना के बनने में डॉक्टर राय का भारी हाथ था। डॉक्टर राय दास बाबू, मोहिनी और हरिमोहन का घोर विरोधी था।

जब मृणालिनी के मन में हरिमोहन को पुनः पाने की आशा समाप्त हुई और उसका अपना विरोध निश्शेष हुआ तो उसको अपने पिता और डॉक्टर राय की युक्ति व्यर्थ प्रतीत होने लगी। उसकी सहानुभूति अपने पिता की योजना से हट गयी।

इस पर भी उसको अपने मन के भावों का विश्लेषण करने और उस विश्लेषण से परिणाम निकालने तथा परिणामों पर कर्त्तव्य का निश्चय करने में कई दिन लग गये।

लक्ष्मीदेवी के कोर्ट में बयान देने की तारीख आ गयी। उस तारीख की पहली रात मृणालिनी निश्चय कर बैठी थी कि अगले दिन वह अपनी माँ को स्वयं साथ ले जाकर, कोर्ट में सत्य बात कहने में प्रोत्साहन देगी। उसके पिता का यह कहना कि उसका वकालत करने का लाइसेंस छिन जायेगा, उसको एक अशुद्ध बात प्रतीत हुई थी। वह कहती थी कि लाइसेंस की रक्षा सत्य बोलकर करनी चाहिये थी। पहले स्वयं झूठ बोलकर खतरा मोल लेना और फिर उस खतरे को टालने के लिये दूसरों को भी झूठ बोलने के लिये कहना सर्वथा अयुक्तिसंगत बात है।

वह मुकदमे की तारीख वाले दिन प्रातः उठी, अपने कमरे से निकली और माँ से मिलने और अपने निर्णय की बात उसको बताने के लिये, उसके कमरे में जा पहुँची। कमरे का दरवाज़ा खुला था। वह भीतर गयी तो एकाएक उसकी चीख निकल गई। उसकी माँ का शव, गले में रस्सी डाले, छत के पंखे से लटक रहा था।

उसको समझ आया कि उसकी माँ ने आत्महत्या कर ली है। वह बिचारी निर्णय नहीं कर सकी होगी कि अपने पति की इच्छा के विपरीत बयान दे अथवा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

असत्य भाषण करे। मृणालिनी को अपने मन की बात बताने में देरी करने का भारी शोक लग गया।

इस समय उसको विचार आया कि उसका पिता, जो माँ के साथ कमरे में सोता था, कहाँ है ? वह उस कमरे में नहीं था। उसका पिता देरी से उठने का आदि था। आज वह प्रातः पाँच बजे ही जाग कर चला गया है। इसका कारण वह समझ नहीं सकी।

इस समय उसको विचार आया कि अपनी वहिन माधुरी और भाई को जगाकर बता दे। उसने उनको आवाज़ दी। माधुरी तो जाग रही थी। वह अपने कमरे से निकल आयी और माँ के शव को पंखे से लटका देख चीख मारकर अचेत हो गयी। भारतभूषण को हिला कर जगाना पड़ा। उसने पहले तो माधुरी को चेतनता में लाना उचित समझा। उसके मुख पर ठंडे जल के छींटे मारकर उसे सचेत किया गया। तत्-पश्चात् पुलिस को टेलीफोन किया गया। पुलिस आयी तो उसने मृणालिनी, उसकी बहिन और उसके भाई के बयान लेने आरम्भ कर दिये। शव की अवस्था का ज्ञान प्राप्त किया गया। टाँगें और बाँहें अकड़ गयी थीं। पुलिस वालों का विचार था कि आत्म-हत्या किये कई घण्टे व्यतीत हो चुके हैं।

पुलिस ने शव को उतारा। उसको अस्पताल ले जाने का प्रबन्ध किया जा रहा था कि कालीचरण आ गया। उससे पुलिस ने पूछा तो उसने बयान दे दिया कि वह प्रातः चार बजे भ्रमण के लिये गया था। उस समय उसकी पत्नी अपने बिस्तर में लेटी हुई खुर्राटें भर रही थी।

माँ की आत्महत्या करने का सबसे अधिक शोक मृणालिनी को था। वह समझती थी कि यदि वह माँ का, ठीक मार्ग पर चलने में साथ देतीं तो वह इतना भयंकर पग न उठाती।

भारतभूषण तो इसी प्रकार की किसी दुर्घटना की आशंका कई दिनों से कर रहा था। जब उसका पिता अपनी पत्नी को युक्तियों से झूठ बोलने पर राज़ी नहीं कर सकता था तो अपने वकालत के लाइसेंस छिन जाने की सम्भावना से डरा देता था। इस पर लक्ष्मीदेवी चुप कर जाती और चुपचाप आँसू बहाने लगती थी।

भारतभूषण का विचार था कि परिस्थिति में परिवार पर कोई घोर विपत्ति आने वाली है। इस कारण जब उसने माँ का शव बिजली के पंखे के साथ लटके देखा तो सब कुछ समझ गया। वह मन में कल्पना करने लगा था कि रात अवश्य माता-पिता में पुनः इसी बात पर विवाद हुआ है। उससे दुःखी होकर माँ ने अपने को फाँसी पर लटका लिया है।

उस दिन मुकदमे की पुनः तारीख मिल गयी। बहुत कठिनाई से रात को शव मिला, तत्पश्चात् उसका दाह-संस्कार किया गया।

अगले दिन कालीचरण घर पर रहा, जिससे शोक प्रकट करने वाले आकर शोक एवं सहानुभूति प्रकट कर सकें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मृदुला और हरिमोहन भी आये। वे आये तो थे शोक प्रकट करने, परन्तु कालीचरण ने उनको डाँटना आरम्भ कर दिया कि वे ही उसकी पत्नी की हत्या में कारण हैं, वे हत्यारे हैं इत्यादि।

दस मिनट तक दोनों चुपचाप बैठे रहे और डाँट-डपट सुनते रहे। पश्चात् वे उठकर चले आये। मृदुला का भाई भारतभूषण भी वहाँ था। वह मृदुला के साथ ही उठकर चला आया और घर से बाहर आ कहने लगा, "मृदुला! मुझको पोस्ट मार्टम की रिपोर्ट और पिताजी के बयानों से, जो उन्होंने पुलिस में दिये हैं, यह विश्वास हो गया है कि माँ ने आत्म-हत्या नहीं की, प्रत्युत माँ की हत्या पिताजी ने की है।

"मैं अभी पुलिस थाने से होकर आया हूँ। इंस्पेक्टर पुलिस मुझको बता रहा था कि मृत को मारा-पीटा गया है। मार-पीट के चिह्न शरीर पर मिले हैं। डॉक्टर की सम्मति है कि मृत्यु तो मार-पीट से हुई है। पीछे शव को लटका दिया गया है, जिससे यह पता चले कि आत्महत्या हुई है।

"इसके अतिरिक्त भी कई बातें हैं, जिससे यही प्रतीत होता है कि यह हत्या का मामला है, आत्महत्या का नहीं।"

मृदुला और हरिमोहन तो मनुष्य में यह दानवता देख स्तब्ध खड़े रह गये। यह समझ कि उसके पिता ने हत्या की है, मृदुला का कलेजा मुख को आने लगा था। वह सिर में चक्कर आने पर खड़ी न रह सकी। अतः घर की ड्योढ़ी की सीढ़ियों पर बैठ गयी। भारतभूषण भीतर गया और एक गिलास में जल ले आया। जल पीने से चित्त कुछ स्थिर हुआ तो दोनों उठकर वहाँ से चले गये।

भारतभूषण का विचार ठीक था। उसी सायंकाल पुलिस ने कालीचरण को हिरासत में ले लिया। अगले दिन मैजिस्ट्रेट के समक्ष उपस्थित कर पुलिस ने पन्द्रह दिन की रिमांड ले ली।

मृदुला के विपरीत मुकदमे का निर्णय पहले हो गया कि मृदुला इक्कीस वर्ष की हो चुकी है और स्वयं विवाह करने के योग्य है। परन्तु कालीचरण के विपरीत मुकदमा लम्बा और लम्बा होता गया। डॉक्टर राय इसकी पैरवी कर रहा था।

यह सिद्ध करने का यत्न किया गया कि लक्ष्मी के शव पर मार-पीट के चिह्न उसके अपने थे। वह अपने-आपको हानि पहुँचाने का यत्न तो कई दिन से कर रही थी और उन सब प्रयत्नों का अन्त अपने को लटका कर अपनी हत्या करने से हुआ है।

यह भी सिद्ध करने का यत्न किया गया कि मृणालिनी के असफल विवाह संबंध के कारण उसकी माँ लक्ष्मी का मस्तिष्क दिन-प्रतिदिन बिगड़ता जा रहा था। वह एक प्रकार से पागल-सी बनी जा रही थी।

पुलिस का यह कहना था कि शव सात बजे अकड़ चुका था। इससे यह प्रकट था कि लक्ष्मीदेवी का देहान्त हुए कई घण्टे व्यतीत हो चुके हैं। डॉक्टर राय का कहना था कि मरने वाला प्राणी यदि मरने से कई दिन पूर्व खाना-पीना छोड़ दे अथवा कम खाना आरम्भ कर दे तो उसका शव तुरन्त अकड़ सकता है। लक्ष्मी आत्म-हत्या करने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के लिये भूखी रह रही थी। ऐसी अवस्था में मृत शव की तो बात ही दूसरी है, जीवित शरीर भी अकड़ जाता है।

पहले कोर्ट ने तो मुकदमे का निर्णय दे दिया कि मृत की हत्या की गयी है और हत्यारा उसका पति कालीचरण है। इस पर मुकदमा सैशन कोर्ट के पास भेज दिया गया।

सैशन कोर्ट ने हत्या के विषय में सन्देह मान लिया और सन्देह का लाभ अपराधी को देकर कालीचरण को छोड़ दिया।

इस सब में दो वर्ष लग गये।

: ५ :

कालीचरण के घर की दुर्घटना का परिणाम यह हुआ कि भारतभूषण, जो भवानी-बीमा कम्पनी में काम पा गया था, विवाह कर पृथक् रहने लगा था। माधुरी मृदुला के साथ दिल्ली चली गयी थी। हरिमोहन दिल्ली से एक अंग्रेज़ी साप्ताहिक पत्र निकालने लगा था। वह विवाह कर वहाँ जाकर रहने लगा था। माधुरी दिल्ली के लॉ कॉलेज में कानून की शिक्षा ले रही थी।

मृणालिनी एक बंगाली युवक शरदेन्दु से, बिना विवाह के, सम्बन्ध बना कर रहने लगी थी। वह स्कूल में काम करती थी और शरदेन्दु लड़कों के एक स्कूल में अध्यापक था। दोनों अपनी आय को एकत्रित कर मज़े में निर्वाह कर रहे थे।

इस समय सेशन कोर्ट से कालीचरण छूट गया। वह घर पर पहुँचा तो परिवार को सर्वथा बिखर गया देख, अति निराश हुआ और उस निराशा में वह अपना सारा समय कम्युनिज़म के प्रचार में लगाने लगा।

सन् १९५३ आ गया था। भारत के विभिन्न राज्यों की विभिन्न धारासभाओं और संसद के प्रथम निर्वाचन हो चुके थे और ये सभाएँ कार्य करने लगी थीं।

धारासभाएँ और संसद कानून पर कानून बनाने लगी थीं। संसद पर किसी प्रकार का प्रतिबन्ध नहीं था। वह किसी भी विषय और किसी भी दिशा में ले जाने वाला कानून बना सकती थी। यही बात अपने-अपने क्षेत्र में धारासभाएँ कर रही थीं। इन सबके कार्य पर सीमा थी विधान की, परन्तु उसको भी बदलने का एक ऐसा ढंग बना दिया गया, जिससे संसद और धारासभाएँ कानून बनाने का असीम अधिकार पा गयीं।

हरिमोहन का पत्र 'लॉ ऐण्ड ऑर्डर' (कानून और शान्ति) देश में कानून व्यवस्था की अवस्था और उसमें सुधार के विषय पर निरंतर लिख रहा था, जिसको ग्राहकों की एक बहुत बड़ी संख्या पढ़ती थी। इस पर भी देश में वही कानून व्यवस्था चल रही थी, जो अंग्रेज़ों के समय देश में स्थापित हो गयी थी।

अंग्रेज़ी काल की व्यवस्था से बिगाड़ दो दिशाओं में आरम्भ हो गया था। एक तो जनता के प्रतिनिधि धारासभाओं और संसद में नित नये कानून बनाने लगे थे। जनता के प्रतिनिधि प्रायः कानून से अनभिज्ञ और कानून के आधार को गलत समझने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वाले थे। जो कानून के ज्ञाता संसद इत्यादि में थे, वे भी कानून का वही आधार मानते थे, जो अंग्रेज़ों ने अपने राज्यकाल में भारत में प्रचार किया था। ये, जनता के प्रतिनिधि, देश की कानूनी व्यवस्था को अपने विचारों और धारणाओं के अनुसार मिथ्या मार्गों पर चला रहे थे।

एक दूसरा कारण भी था जो देश की विगड़ रही कानूनी व्यवस्था को और विगाड़ने में सहायक हो रहा था। 'जमात करामात' का सिद्धान्त अटल मान लिया गया था। 'बहुत लोग मिलकर यदि कोई बात करने का निश्चय कर लें तो वह ठीक है और होनी चाहिये' को दिन-प्रतिदिन माना जाने लगा। इस अर्थ जलसे, जलूस, प्रदर्शन, भूख-हड़ताल और बलवे किये जाने लगे। बिना इस बात का विचार किये कि इन प्रदर्शनों के करने वाले कोई उचित और धर्मानुकूल अधिकार अथवा सुविधा माँगते हैं अथवा अनुचित और अधर्मानुकूल। लोग और विधान-सभाई, प्रदर्शनकारियों की संख्या और प्रदर्शन में बल को देखकर, उनकी माँग को ठीक मानने लगते थे।

इन दूषित प्रवृत्तियों को रोकने के लिये जन-साधारण में धर्म अर्थात् कर्तव्य की महिमा बनाने की आवश्यकता थी परन्तु इस दिशा में शिक्षा, प्रचार और उदाहरण से जो कुछ किया जा रहा था, तो वह इन प्रवृत्तियों को बढ़ाने वाला ही सिद्ध हो रहा था।

कलकत्ता में ट्राम का भाड़ा एक पैसा प्रति 'ट्रिप' बढ़ा दिया गया। इसकी कॉर्पोरेशन की ओर से घोषणा की गयी कि पहली अप्रेल से किराये में बढ़ोतरी की जायेगी। जनता ने इस किराये में वृद्धि की घोषणा को सुना और इसे इतनी साधारण बात समझी कि इस ओर ध्यान देना भी समय का अपव्यय समझा।

इस घोषणा के होने पर कालीचरण ने डॉक्टर राय को टेलीफोन किया। कालीचरण का कहना था, "राय! एक बहुत अच्छा अवसर हाथ में आया है।"

"कैसा अवसर?"

"ट्राम का भाड़ा बढ़ा दिया गया है।"

"कितना?"

"प्रत्येक बार चढ़ने का एक पैसा।"

"तो फिर क्या हुआ?"

"जनता के अधिकारों पर कुठाराघात हुआ है।"

डॉक्टर राय हँस पड़ा। हँसकर उसने पूछ लिया, 'क्या कुठाराघात हुआ है?"

"गरीब आदमी के काम पर जाने की सवारी मँहगी कर दी गयी है।"

"क्या महँगी हुई है? आजकल ट्राम भाड़े के वही किराये हैं, जो सन् १९३९ में थे। तब मछली का भाव ढाई आने सेर था और आज का भाव सवा रुपया सेर है। मछली पकड़ने वाले को उतनी ही मेहनत करनी पड़ती है, जितनी १९३९ में करनी पड़ती थी। तो उसको जो अधिक मूल्य मिल रहा है, उसमें से ट्राम भाड़े में एक पैसा वृद्धि होनी ही चाहिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यह बात नहीं, डॉक्टर राय ! बात यह नहीं कि इस एक पैसे के बढ़ने से किसी को कष्ट होता है अथवा नहीं। हमारा उद्देश्य तो यह है कि कुछ भी हो, कैसी भी बात हो, असन्तोष उत्पन्न करने का कारण ढूंढा जाये। वह कारण अनायास ही प्राप्त हो रहा है। यदि हम इससे लाभ नहीं उठाते तो हम मूर्ख हैं।"

"अच्छा ऐसा करो, आज पार्टी की कार्यकारिणी की मीटिंग बुला लो उसमें इस विषय में विचार कर लिया जायेगा।"

"बस यही तो कह रहा हूँ।"

डॉक्टर राय ने टेलीफोन बन्द कर दिया। उस समय उसके मुख से स्वयं निकल गया—"बहुत पाजी है यह आदमी।"

इतना कह वह घूमा तो उसका भतीजा मोहनसागर, जो उसके टेलीफोन करते समय आकर पीछे बैठ गया था, दिखाई दिया। डॉक्टर राय ने उसे देख कहा—"ओह, मोहन ! तुम यहाँ बैठे हो ?"

"हाँ, चाचा ! एक काम था तुमसे। परन्तु यह पाजी किसको कह रहे थे तुम ?"

"यह तुम्हारे साथ सम्बन्ध नहीं रखता। तुम अपनी बात बताओ।"

"सरकार का पुनर्वास मन्त्रालय व्यवस्थापित लोगों को ऋण दे रहा है। ऋण देने वाला अफसर तुम्हारा मित्र है। मुझको एक कारखाना खोलने के लिये पाँच लाख की आवश्यकता है। यदि तुम मेरी इसमें सहायता कर दो तो मैं तुम्हारी जो कहो बात पूरी कर दूंगा।"

डॉक्टर राय खिलखिलाकर हँस पड़ा। उसने हँसते हुए पूछा, "परन्तु भतीजा जी महाराज ! आप कब से व्यवस्थापित हुए हैं ?"

"देखो चाचा ! मेरे नाना ढाका के रहने वाले थे और यह तो तुम जानते ही हो कि मैं नाना का गोद लिया पुत्र हूँ। इस कारण मैंने अपना नाम व्यवस्थपितों के रजिस्टर में लिखाया हुआ है। और नाना की पूर्ण सम्पत्ति जो पाकिस्तान में रह गई है, अपने नाम लिखा ली है।"

"कितनी है वह ?"

"थी तो तीन-चार हज़ार की। एक तो उसको बीस हज़ार की लिखा दी है। उसके क्लेम, सुना है, बन रहे हैं। परन्तु अब तो रिफ्यूजी के नाम पर तीन अथवा कम-से-कम दो लाख का ऋण दिलवा दो तो काम बन जाये।"

"तुम किसी बैंक से ऋण का प्रबन्ध कर लो।"

"परन्तु तुम वहाँ से क्यों नहीं ले देते ? बैंक में सूद बहुत देना पड़ेगा। दूसरे इसमें पहले पाँच वर्ष तक कोई ब्याज नहीं देना होगा।"

"मुझको क्या दोगे ?"

"तुम और ऋण देने वाले अधिकारी दोनों को दस-प्रतिशत दे दूंगा।"

यह इतनी बड़ी रकम थी कि डॉक्टर राय के मुख में लार टपक आयी। इस पर भी कुछ अकड़ने के लिये उसने कह दिया—"मोहन ! यह बेईमानी है ! पहले

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो तुम रिफ़्यूजी नहीं हो। तुम्हारे नाना की सन्तान तुम्हारी माँ है। तुमने कैसे उसकी सम्पत्ति को अपने नाम करा लिया। तीसरे तुम ऋण के अधिकारी नहीं हो। यह ऋण तो उन लोगों को दिया जाता है जो व्यवस्थापित निर्धन हैं और अपने-आप कोई दस्तकारी चलाने में पूँजी नहीं रखते। तुममें ऐसी कोई बात नहीं। इस कारण मैं तुम्हारी सहायता नहीं कर सकता।"

"चाचा ! सहायता तो उनकी हो सकती है, जिनको पाने का कुछ भी अधिकार न हो। अधिकारी तो अपने अधिकार से स्वयमेव पा जाता है। अनधिकारी को दिलाने से ही जो कुछ मिल सकता है।"

"परन्तु दस प्रतिशत तो बहुत ही कम है।"

"मैं तो आधा भी दे सकता हूँ, परन्तु कोई ऐसा प्रबन्ध हो जाये कि ऋण वापस न देना पड़े।"

डॉक्टर राय हँस पड़ा। उसे हँसते देख मोहन भी हँसने लगा। हँसकर डॉक्टर राय ने कह दिया, "अच्छा, कल आना। मैं पता करूँगा कि क्या हो सकता है ?"

मोहन गया तो उसने टेलीफोन उठाया और 'रिहैबिलिटेशन डिपार्टमेंट' से मिलाया। वहाँ से आवाज़ आने पर डॉक्टर राय ने पूछ लिया, "कौन बोल रहा है ?"

"शरद।"

"ठीक ! मैं डाक्टर राय हूँ। बताओ, आज चाय पीने आ सकोगे ?"

"हाँ ! कुछ मतलब की बात हो तो।"

"बेमतलब, मैं तुमको कष्ट नहीं दे सकता। तो बताओ कितने बजे आओगे ?"

"पाँच बजे। ठीक है न ?"

"देखो भाई ! मुझको छः बजे पार्टी मीटिंग में जाना है। इस कारण ठीक समय पर आ सको तो ठीक है। हो सके तो दस-पन्द्रह मिनट पहले आओ, जिससे साढ़े पाँच तक मैं जा सकूँ।"

इस पर टेलीफोन बन्द कर, उसने विचार करना आरम्भ किया कि पार्टी में उसको क्या व्यवहार स्वीकार करना चाहिये। विचार था कि ट्राम का भाड़ा बढ़ना नहीं चाहिये। इसको रोका कैसे जाय ? क्या ट्राम-चालकों की हड़ताल करा दी जाये ? इससे तो जनता ही विरोध करने लगेगी। जनता सहयोग नहीं देगी तो हड़ताल सफल नहीं हो सकती। तो ट्राम में चढ़ने वालों की ओर से विरोध कराया जाये ? यह ठीक है, परन्तु इसका आयोजन कैसे किया जायेगा ? डॉक्टर राय सोचता था कि गरीब जनता का नाम लेकर और यह कहकर कि एक पैसा जाने में तथा एक पैसा आने में अधिक व्यय होने से एक रुपया मासिक व्यय बढ़ जायेगा। इस कारण गरीब को रोटी कम खानी पड़ेगी। यदि किसी के घर में चार बच्चे स्कूल जाने वाले हैं और सब पर दो-दो पैसा नित्य का खर्चा बढ़ जाता है तो उस ग़रीब पिता को चार रुपये प्रति मास पेट चीरकर निकालने पड़ेंगे।

इस प्रकार विचार कर वह विरोध के ढंग की योजना बनाने लगा। ट्रामों में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चढ़कर भाड़ा देने के लिये इन्कार कर दिया जाये। लोगों को कहा जाये कि जब तक कन्डक्टर पुराना भाड़ा स्वीकार नहीं करता, तब तक कुछ भी न दिया जाये। यदि कोई यात्री अधिक भाड़ा देने लगे तो उसको भीरू, ग़रीब जनता का द्रोही और देश-द्रोही कहकर लज्जित किया जाये। यदि वह तब भी न माने तो उसकी पिटाई की जाये। इस प्रकार कार्य आरम्भ किया जाये। कण्डक्टर ट्राम चलानी बन्द कर दें और अधिकारियों को कह दें कि उनको अपनी जान का भय है। ट्रामें भी चौराहों पर खड़ी की जायें, जिससे मार्ग रुक जाये। जब मार्ग अवरुद्ध हो जायें तो फिर उन ट्रामों एवं बसों को आग लगा दी जाये।

ठीक पौने पाँच बजे शरद आया तो डॉक्टर राय ने अपने नौकर कान्हे को चाय लाने को कह दिया। शरद ने आते ही पूछा, "राय! तुम इतना कुछ पैदा करते हो, कहीं विवाह क्यों नहीं कर लेते ?"

"मैं अब तिरेपन वर्ष का हो रहा हूँ। अब विवाह क्या करूँगा ?"

"परन्तु यह रुपया तुम छोकरियों पर व्यय करते हो तो मुझको दुःख होता है।"

"तो कोई विवाह का प्रस्ताव है ? है तो बताओ। इतना ध्यान रख लेना कि मेरा गला काटकर सब कुछ लेकर न भाग जाये।"

"नहीं, ऐसा नहीं होगा। हमारे कार्यालय में एक चन्द्रकला है। पूर्वी बंगाल से आयी है। बहुत ग़रीब और भली है। उसका पति पाकिस्तान में मार डाला गया है। कहो तो बात करूँ ?"

"देखने में कैसी है ?"

"तीस-बत्तीस वर्ष की होगी। सुन्दर है। एक बात है, दो बच्चे साथ हैं।"

"धत् तेरे की। शरद! तुमने मुझको क्या समझ रखा है! मैं अनायास ही पिता बनना नहीं चाहता।"

"राय! विचार कर लो। पीछे ऐसा काम नहीं मिलेगा। जीवन सुख से व्यतीत हो जायेगा।"

"अच्छा दिखा दो, बात करा दो।"

"विवाह करना पड़ेगा।"

"यदि काम बढ़िया हुआ तो विवाह भी कर लूँगा।"

"तो कल उसे सायं लाऊँगा।"

इसके बाद राय ने मोहन का प्रस्ताव बता दिया। शरद ने गम्भीर होकर कहा, "किसी चीज़ का कारखाना खोलेगा ?"

" 'रेयन' बनाने और उसका कपड़ा बुनने का।"

"उसको सहायता मिल जायेगी। शर्त यह होगी कि चालीस प्रतिशत उसको इमारत और मशीनरी में अपने पास से व्यय करना होगा। जब वह इसका प्रमाण उपस्थित कर देगा, तभी सरकारी रुपया मिल सकेगा। सरकारी ऑडिटर प्रतिवर्ष हिसाब देखा करेंगे और पाँच वर्ष के पश्चात् रुपये की किश्तें और सूद देना होगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक वर्ष में कितना देना होगा, यह सरकारी ऑडिटर की रिपोर्ट पर निश्चय होगा। इस पर भी बारह वार्षिक किश्तों से अधिक नहीं हो सकेंगी।"

"हाँ, और शरद बाबू क्या लेगा ?"

"जो मोहन प्रसन्न होकर दे सके।"

"न्यूनातिन्यून, कितने से तुम प्रसन्न हो सकोगे ?"

"यदि तीन लाख होगा तो दस हज़ार तो होना ही चाहिये।"

"अच्छी बात है! बातकर मैं उसको तुम्हारे पास भेज दूँगा। तुमने उसको देखा तो होगा ?"

"हाँ-हाँ, बहुत अच्छी तरह जानता हूँ। आज कलकत्ता का कौन चार सौ बीस है, जिसका मुझको पता नहीं।"

डॉक्टर राय मन में विचार करता था—'हमको भी कोई जानता और देखता है क्या ?'

: ६ :

शरद गया तो डॉक्टर राय अपनी मोटर में पार्टी मीटिंग में जा पहुँचा। पन्द्रह लोग वहाँ एकत्रित थे। पार्टी का सेक्रेटरी कालीचरण था। कुछ समाचार पत्रों में कार्य करने वाले थे और कुछ ट्रेड यूनियनों के प्रधान थे।

विचार्य विषय कालीचरण ने उपस्थित किया। कालीचरण ने बताया—"कार्पोरेशन ने ट्राम तथा बसों के भाड़े में एक पैसा प्रति 'ट्रिप' बढ़ा दिया है। यह एक प्रकार से कलकत्ता की उस पूर्ण जनता पर, जो मोटरकार रखने की सामर्थ्य नहीं रखता, टैक्स है। हमको जनता में यह अनुभव करने की शक्ति उत्पन्न करनी चाहिये, जिससे इस प्रकार के टैक्स, जो गरीब जनता पर ही लगा है, का विरोध हो सके।"

कालीचरण के इस प्रस्ताव पर सब उपस्थितगण फड़क उठे और कालीचरण के प्रस्ताव का समर्थन करने लगे। एक सुरेन्द्रमोहन कलकत्ता के एक दैनिक पत्र के सम्पादकीय विभाग के कर्मचारी ने कह दिया, "इसके लिये पहले एक वातावरण बनाना पड़ेगा। हमको कल से ही समाचारपत्रों में इसके लिये लिखना आरम्भ कर देना चाहिये।"

डॉक्टर राय का कहना था—"इस एक पैसा वृद्धि को ऐसा प्रकट करना चाहिये कि यह बहुत बड़ी रकम प्रकट हो।"

इसके पश्चात् डॉक्टर राय ने अपनी विचार की हुई योजना सुना दी। उसने कहा, "हमको पहली अप्रेल को, जब भाड़ा बढ़ाकर वसूली आरम्भ की जायेगी, तो लोगों को बढ़ा हुआ भाड़ा न देने पर तैयार करना चाहिये। अपने लोगों को, उस दिन, उन लोगों को धमकाना चाहिये जो बढ़ा हुआ भाड़ा देने को तैयार हो जायें। उनकी पिटाई भी हो जानी चाहिये। इस पर ट्राम तथा बस चालकों को अपनी ट्रामें तथा बसें ऐसे स्थानों पर ले जाकर खड़ी कर देनी चाहियें, जहाँ दूसरी ट्रामें तथा बसें चलने से रुक जायें। इससे भारी मजमा एकत्रित हो जायेगा। तब समय होगा, जब सरकारी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पत्ति को आग लगानी आरम्भ कर दी जाये।"

सबने यह योजना स्वीकार की और समाचारपत्रों में जब कम्युनिस्ट कर्मचारियों को इस भाड़े के विरुद्ध लिखने के लिये आदेश भेज दिये गए। पश्चात् सब यूनियनों को कह दिया गया कि अपने सदस्यों को कह दें कि उन्होंने पहली अप्रेल को बढ़े हुए भाड़े नहीं देने। इसके लिये झगड़ा करना है।

इस प्रकार यह बैठक समाप्त हुई। अगले दिन समाचारपत्रों में तथा फुसफुसाहट से प्रचार-कार्य आरम्भ हो गया। बसों में, ट्रामों में, पटरी पर चलते लोगों में तथा रेस्टोरां में, यही चर्चा होने लगी।

मृणालिनी और शरदेन्दु सायंकाल का खाना घर के समीप ही एक भोजनालय में खाया करते थे। एक दिन वे वहाँ पहुँचे तो बहुत गरमागरम वाद-विवाद चल रहा था। ये प्रायः इस प्रकार के झगड़ों से पृथक् रहा करते थे। परन्तु आज तो भोजनालय की सब मेज़ों पर विवाद चल रहा था। विवश शरदेन्दु और मृणालिनी को इस वाद-विवाद को सुनना पड़ा।

एक युवक जोश में कह रहा था, "यह विचित्र स्वराज्य आया है। प्रत्येक आवश्यकता की वस्तु महँगी हो रही है। अब ट्रामों का किराया भी बढ़ गया है। हम गरीबों के लिये इस नगर में रहना ही कठिन हो रहा है।"

मृणालिनी इस युवक को पहचानती थी। जब वह ट्राम-चालकों की यूनियन की अध्यक्षा थी, तब वह ट्राम-चालक था। उस समय पचास रुपये वेतन पाता था। पीछे वह युवक नौकरी छोड़ कम्युनिस्ट पार्टी का वैतनिक कार्य करने वाला हो गया था। अब वह डेढ़ सौ रुपया मासिक वेतन पाने लगा था।

मृणाणिनी उसकी ओर मुस्कराती हुई चुपचाप देख रही थी। वह कम्युनिस्ट कार्यकर्त्ताओं के तरीकों को जानती थी। अतः वह उस चर्चा में भाग लेने का विचार नहीं रखती थी। शरदेन्दु ने भी ऐसी बातों में कभी रुचि नहीं ली थी। परन्तु उस कम्युनिस्ट कार्यकर्त्ता ने उनको चुप नहीं रहने दिया। उसने मृणालिनी की ओर देखकर पूछ लिया, "क्यों बहिन जी! आप क्या समझती हैं कि यह भाड़ा वृद्धि उचित है?"

सब मृणालिनी की ओर देखने लगे। विवश मृणालिनी को उत्तर देना पड़ा। उसने शान्ति से कह दिया, "नहीं, ठीक नहीं हुआ।"

उस युवक के मन में विचार था कि मृणालिनी अभी भी कम्युनिस्ट कार्यकर्त्ता है और वह इसी उत्तर की, जो मृणालिनी ने दिया था, आशा करता था। इससे प्रोत्साहित हो उसने कहा, "बहिन जी! इनको बताइये कि क्यों आप इस वृद्धि के विरुद्ध हैं?"

मृणालिनी ने शान्ति से उत्तर दे दिया, "आज इस देश में राज्य तो कांग्रेस का है। परन्तु चलती कुछ गुंडों की है। गुंडों ने यह माँग की है कि जब इस महाशय का वेतन पचास रुपये से डेढ़ सौ रुपया हो गया है, ट्राम वालों को एक पैसा भी अधिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं मिलना चाहिये। चलती इन गुंडों की है। इसलिये जिस बात का ये विरोध करें, वह अनुचित ही माननी चाहिये।"

सब खिलखिलाकर हँस पड़े। वह युवक अपने को गुंडा कहा जाने पर क्रोध से लाल हो गया। उसने कह दिया, "आप कैसे कहती हैं कि मैं गुंडा हूँ ?"

"देखा सुधीर!" मृणालिनी ने उसका नाम लेकर कहा, "मैंने तुमको गुंडा नहीं कहा। मैंने तो उनको गुंडा कहा है, जो इस उचित वृद्धि का विरोध, इसलिये करना चाहते हैं कि कलकत्ता जैसे नगर में गड़बड़ मचाई जाये। फिर लूट-मार मचाई जाये और उस अव्यवस्था में औरतों और लड़कियों को भगाया जाये, उनसे दुराचार किया जाये और कहा जाये कि यह सब कुछ गरीब जनता के हित के लिये है।"

वहाँ एकत्रित लोग पुनः हँसने लगे। सुधीर ने खाना नहीं खाया और खाना छोड़, चला गया।

मृणालिनी ने वहाँ एकत्रित लोगों को कहा, "आप लोग भोजन करिये। यह बहुत ही भयंकर प्राणी है। ऐसे लोगों से बचना चाहिये।"

: ७ :

शरदेन्दु ने घर पहुँच मृणालिनी को कहा, "यह आज तुमको क्या हो गया था ? उस युवक को तुमने ऐसा डाँटा है कि वह तुम्हारा शत्रु हुए बिना नहीं रहेगा।"

"मुझको इन लोगों की अनर्गल बातों का स्मरण हो आया था। वह अपना काम कर रहा था और मैं उसको कुछ नहीं कह रही थी। जब उसने मुझको वार्तालाप में घसीटने का यत्न किया तो मुझको क्रोध चढ़ आया। मैं समझती हूँ कि इस समय पार्टी कार्यालय में मैं चर्चा का विषय बनी हुई हूँगी।"

"मुझको भय है कि ये तुम्हारा कुछ अनिष्ट न कर दें।"

"वैसे तो पार्टी की काली सूची में मेरा नाम है ही। मुझको ये कभी भी मार-कर हुगली में बहा दें तो आश्चर्य नहीं। इतना भय तो है ही। मैंने जब पार्टी छोड़ी थी, तो इतना कुछ समझ-सोचकर ही छोड़ी थी।"

"परन्तु मेरा क्या होगा ? मैंने तुमको अपने जीवन में सम्मिलित कर लिया है। तुमको किसी प्रकार की हानि होने से मुझको भी हानि होगी।"

"यदि आपको भय लग रहा है तो आप मुझको अभी छोड़ सकते हैं। इसी कारण तो मैंने विश्वास नहीं किया और साथ ही सन्तान पैदा करने से बचने का यत्न कर रही हूँ।"

शरदेन्दु चुप कर गया। परन्तु उसके भय की सत्यता तो हड़ताल की तारीख से पहले ही प्रकट हो गयी।

मृणालिनी का लड़का इस समय छः वर्ष का था। वह एक स्कूल में तृतीय श्रेणी में पढ़ता था। मृणालिनी और शरदेन्दु अध्यापन का कार्य करते थे और भिन्न-भिन्न स्कूलों को जाते ये। महेन्द्र, मृणालिनी का लड़का तो घर के समीप ही एक स्कूल में जाता था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हड़ताल ग्रारम्भ होने से कुछ दिन पहले महेन्द्र स्कूल से यथासमय लौटा, परन्तु घर नहीं पहुँचा। मृणालिनी बहुत देर तक प्रतीक्षा कर स्कूल तक देखने के लिये गयी, पर वह नहीं मिला। स्कूल बन्द था ग्रौर चौकीदार लड़के के विषय में कुछ नहीं जानता था।

विवश रात के ग्राठ बजे तक प्रतीक्षा कर मृणालिनी ग्रौर शरदेन्दु समीप के थाने में रिपोर्ट लिखा ग्राये। लड़के की पहचान के चिह्न-ग्रादि बता दिए गये।

इस पर भी लड़का नहीं मिला। शरदेन्दु का विचार था कि लड़के को कोई उठाकर ले गया है। मृणालिनी का विचार था कि सादिक ने यह शरारत की है।

तीन-चार दिन प्रतीक्षा करने के पश्चात् मृणालिनी ग्रपने पिता के पास पहुँची। उनको ग्रपने लड़के के खो जाने की बात बताकर कहने लगी, "मुझको सन्देह है कि यह सब सादिक ने किया है।"

"इस सन्देह में कुछ ग्राधार है क्या ?"

"कुछ दिन हुए, वह मार्केट में मिला था ग्रौर उस समय महेन्द्र को बहुत वक्र दृष्टि से देख रहा था।"

"मैं समझता हूँ," कालीचरण का कहना था, "यह तुम्हारा भ्रम ही है कि लड़के को सादिक उठा ले गया है। भला उसने ले जाना होता तो ऐसे ही कहकर ले जा सकता था। साथ ही उसने लड़के का क्या करना है ? उसका घर तो कोई नहीं, जहाँ ले जाकर उसको रखेगा।"

"बाबा ! मेरा यह कहना है कि उसने महेन्द्र को कहीं छुपा रखा है। वह ग्रभी तक मुझको भूला नहीं ग्रौर कदाचित मुझको ग्रपने साथ रखने के लिए लड़के को ले गया है।"

"विश्वास तो नहीं होता। इस पर भी कहती हो तो पूछूँगा ग्रौर पता करने का यत्न करूँगा।"

दो दिन पश्चात् मृणालिनी ग्रपने पिता से मिलने ग्राई तो उसने बताया, "सादिक ने कुरग्रान की कसम खाकर कहा है कि वह लड़के के विषय में कुछ नहीं जानता।"

"वह कुरग्रान को कब से मानने लगा है ?"

"मुसलमान कुरग्रान की किताब को पाक मानते हैं। वे भले ही कम्युनिस्ट हों ग्रथवा कांग्रेसी।"

"तो कम्युनिस्टों की भी नौका मुसलमान डुबो देंगे।"

"तुमको ग्रपने लड़के से मतलब है, उनके कुरग्रान इत्यादि से क्या ?"

"परन्तु बाबा लड़के के विषय में वह झूठी कसम खाता है। मुझे विश्वास है कि लड़का उसके पास है। वह तो कुरग्रान को गाली दिया करता था।"

"मुझको यह किसी मुसलमान से उम्मीद नहीं। तुमको भ्रम हो गया है।"

मृणालिनी निराश लौट ग्रायी। उसने ग्रपने साथी शरदेन्दु से कहा तो वह थाने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में गया और सादिक पर सन्देह की बात बता आया। पुलिस ने इस बात के बताये जाने से पहले भी कुछ प्रयत्न लड़के के ढूँढने का नहीं किया था, न ही अब कोई प्रयास किया।

किसी पुलिसमैन को यह विश्वास नहीं होता था कि सत्य ही कोई सादिक जैसा फक्कड़ लड़के को उड़ाकर अपने पर और खर्चा बाँध लेगा।

हड़ताल का दिन आ गया।

सादिक की ड्यूटी लगी थी कि वह भीड़ पर, आग इत्यादि लगाने के विषय में, नेतृत्व करेगा।

अत: सादिक एक बंगाली युवक के कपड़े पहिन, भवानीपुर में एक चौराहे पर जा पहुँचा। छुट-पुट झगड़े तो दिन चढ़ने पर ही आरम्भ हो गये थे। कण्डक्टर एक पैसा अधिक माँगता और जब कोई देने से इन्कार करता तो चुप कर रहता। इसका परिणाम यह हो रहा था कि ट्रामों और बसों पर बिक्री बहुत कम हो रही थी। परन्तु नित्यप्रति से भीड़ कुछ अधिक थी। एकाएक कुछ लोग, जो बढ़ा हुआ किराया दे रहे थे, पीटे जाने लगे। इस पर झगड़ों ने भयंकर रूप धारण कर लिया।

दो-तीन स्थानों पर तो बढ़ा हुआ भाड़ा देने वाले मार डाले गये। इस पर ट्रामें रास्ते में ही रुकने लगीं। बारह बजे तक पूर्ण कलकत्ता की ट्राम और बस सर्विस जाम हो गयी। लोगों की भीड़ बढ़ने लगी। सब से पहली ट्राम, जिसको आग लगाई गई, वह भवानीपुर में थी।

एक ट्राम और एक बस ऐसे खड़ी कर दी गयीं थी कि उनसे आगे-पीछे की बीसों ट्रामें और बसें रुक जायें। उनमें चढ़े लोग नीचे उतर आये तो बाजार में खूब भीड़ हो गयी। इस भीड़ को सादिक ने भड़काना आरम्भ कर दिया। उसने शोर मचाना आरम्भ कर दिया कि—"हमने काम पर जाना है। बहुत नुकसान हो रहा है। यह कण्डक्टर और ट्राम-चालक महा बदमाश है। जान-बूझकर ट्राम ऐसे स्थान पर खड़ी की है कि जो लोग भाड़ा देना भी चाहते हैं वे भी कहीं जा नहीं सकते।"

इस पर किसी ने एक ट्राम को आग लगा दी। अब अन्य ट्रामों को आग लगने लगी। जब दस के लगभग ट्राम गाड़ियाँ और बसों को भवानीपुर में आग लगा दी गयी तो पुलिस आई और आते ही भीड़ पर गोली चलाने लगी।

सादिक सबसे आगे खड़ा था। इससे पहली गोली उसको ही लगी। पुलिस पर पथराव किया गया, इस पर फिर गोली चली। पाँच बार गोली चलने पर भीड़ तितर-बितर हो गयी।

इसके तुरन्त बाद ही 'कर्फ्यू आर्डर' पहले भवानीपुर के क्षेत्र में और पीछे पूर्ण कलकत्ता शहर में लगा दिया गया। इस पर भी दुकानें लुटती रहीं, बसें और टैक्सियाँ जलाई जाती रहीं। प्राईवेट कारों में चढ़े लोगों को, उतारकर गाड़ियाँ तोड़-फोड़ दी जाती रहीं।

पुलिस में बीसों बच्चों और लड़कियों के लापता हो जाने की रिपोर्ट करायी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गयी। चालीस के लगभग लोग गोली से मारे गये। दो सौ के लगभग जखमी हो गये। पुलिसमैन भी एक भारी संख्या में घायल हुए।

मृणालिनी स्कूल गयी थी, परन्तु वह स्कूल पहुँच नहीं सकी। जिस ट्राम में वह सवार थी, उसमें भी झगड़ा हो गया था। सुधीर, वही युवक जिसको मृणालिनी ने डाँटा था, उसी ट्राम के कण्डक्टर से लड़ पड़ा था। कण्डक्टर सबसे दाम प्राप्त कर रहा था और प्रायः सभी दे रहे थे। इस समय सुधीर ट्राम में चढ़ आया। जब कण्डक्टर ने उससे टिकट का दाम माँगा तो सुधीर ने कह दिया, "सात पैसे? मैं तो छः पैसे दूंगा। छः पैसे ही दूंगा। छः पैसे ही रोज़ देता हूँ।"

"बाबू! आज पहली अप्रेल से एक पैसा बढ़ गया है।"

"मैं तो छः ही दूंगा।"

"सात लगेंगे। नहीं तो उतर जाओ।"

"नहीं उतरूँगा।"

कण्डक्टर ने रस्सी खेंची तो ट्राम रुक गयी। उसने सुधीर को कहा, "बाबू! उतर जाओ।"

इस समय दो और यात्री चढ़ आये। कण्डक्टर सुधीर को धकेलने लगा तो वे नये आये दो बाबू कण्डक्टर को धकेलने से रोकने लगे। इस पर झगड़ा हो गया।

ट्राम तो खड़ी ही थी। कण्डक्टर और ड्राइवर, दोनों योजनानुसार अथवा मारे जाने के भय से, ट्राम छोड़कर भाग गये। इतने में पाँच-छः ट्रामें पीछे और पाँच-छः ट्रामें आगे खड़ी हो गयीं। एक बस भी वहीं आकर खड़ी हो गयी। बस फिर क्या था, देखते-ही-देखते हज़ारों की भीड़ एकत्रित हो गयी। बीसों ट्रामें, बस, ट्रक और टैक्सियाँ वहाँ खड़ी होने लगीं।

सुधीर तो वहाँ दिखाई नहीं दिया। परन्तु कुछ अन्य लोग, जिनके विषय में मृणालिनी का अनुमान था कि कम्युनिस्ट हैं, लोगों को भड़काने लगे।

एकाएक किसी ने एक ट्राम को आग लगा दी और फिर बहुत से ट्रक और बसें भी जलने लगीं। पुलिस को आते देख मृणालिनी समझ गयी कि अब गोली चलने वाली है। वह भीड़ को छोड़ एक गली में घुस गयी। उसके पीछे भीड़ भागती हुई आयी, जिससे वह ठोकर खाकर गिर पड़ी। उसके सिर में चक्कर आने लगा था। दो-तीन लोग उसके ऊपर गिर पड़े थे। दबने से उसका दम घुटने लगा। इस समय किसी ने उसको उठाया और उसकी बाँह पकड़कर, उसको भीड़ के साथ भागने में सहायता देने लगा। वह कुछ दूर तक उसके साथ भागती गयी। परन्तु पुनः उसका पाँव फिसला। इस बार तो वह अचेत हो गयी।

: ८ :

मृणालिनी को चेतनता हुई तो वह एक खाट पर लेटी हुई थी। एक युवक उसके माथे पर ठंडे पानी की पट्टी कर रहा था।

मृणालिनी को वह युवक कुछ जाना-पहचाना सा प्रतीत हुआ। उसका अनुमान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था कि कोई उसकी यूनियन का ही सदस्य होगा, जिसकी वह अध्यक्षा रही है। वह कुछ बोलने का प्रयत्न करने लगी तो उस युवक ने होठों पर उँगली रख चुप रहने का संकेत कर दिया।

इतने में एक युवक हाथ में चाय का प्याला लिये हुए आया। वह मृणालिनी के मुँह में चम्मच से चाय डालने लगा। इस चाय के अन्दर जाते ही मृणालिनी अपने को स्वस्थ अनुभव करने लगी। पहले तो वह सर्वथा शिथिल हुई पड़ी थी।

चाय समाप्त हुई तो प्रथम युवक ने उसे पुनः चुप रहने का संकेत किया और दोनों बाहर चले गये। मृणालिनी अब उस कमरे का निरीक्षण कर रही थी, जिसमें वह लेटी हुई थी। कमरे की सफाई और उस में की वस्तुओं के अस्त-व्यस्त ढंग से पड़े होने से वह समझ रही थी कि यह किसी अविवाहित का कमरा है। मेज पर मेजपोश तो था, परन्तु वह टेढ़ा-मेढ़ा बिछा था। मेज़ पर पुस्तकें बिखरी पड़ी थीं।

मेज़ एक दीवार के साथ लगी हुई थी। उस दीवार के साथ बीस-पच्चीस सिनेमा ऐक्ट्रेसों के चित्र चिपके हुए थे।

वह खाट भी, जिस पर वह लेटी थी, एक दीवार के साथ डाली हुई थी। उस दीवार पर भी दो बड़े-बड़े चित्र, सुरैया और मधुबाला के लगे थे।

फर्श पर कोई दरी इत्यादि नहीं थी। खाट पर भी तकिया दरी ही थी। सामने की दीवार के साथ लगी खूँटी पर मैले कपड़े लटक रहे थे।

मृणालिनी विचार कर रही थी कि वह कहाँ आ गयी है। ये विद्यार्थी हैं अथवा कोई कर्मचारी। दूसरी सम्भावना अधिक प्रतीत होती थी। उन युवकों को, जो उसकी सेवा-शुश्रूषा कर रहे थे, कमरे से बाहर गये आध घंटे से अधिक हो गया था। वह समझ नहीं रही थी कि लेटी रहे अथवा क्या करे? उनकी लम्बी प्रतीक्षा करने के पश्चात् वह उठी। उसका सिर अभी भी भारी हो रहा था। इस पर भी अब शिथिलता कम हो गयी थी और वह उठ कर जानना चाहती थी कि वह कहाँ है, ये युवक कौन हैं और अब कहाँ गये हैं?

अतः वह खाट से उठ खड़ी हुई। इस समय उसको कलाई पर बंधी घड़ी की याद आई। वह वहाँ नहीं थी। कदाचित् भीड़ में गिर गयी थी। इस कारण वह समय नहीं जान सकी। कमरे के एक ओर खिड़की थी, जो किसी गली में खुलती थी। मृणालिनी ने उसमें से झाँककर देखा। दोपहर ढल चुकी थी। सूर्य के तो दर्शन नहीं हुए, केवल प्रकाश से उसका ऐसा अनुमान था। गली तंग थी, परन्तु उसमें कोई आ जा नहीं रहा था।

अब वह कमरे से बाहर निकली। तीन कमरे थे। सब एक बराबर, लगभग आठ फुट चौड़े और दस फुट लम्बे। कमरे के आगे एक छोटा-सा बरामदा था। छः फुट चौड़ा प्रतीत होता था, तीनों कमरे खुले थे और लगभग एक जैसा सामान उनमें था। प्रत्येक में एक-एक खाट, एक मेज, कुर्सी और मेज के समीप एक कोने में भूमि पर लोहे का सन्दूक था। सिनेमा ऐक्ट्रेसों की तस्वीर भी सब कमरों में एक समान थीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बरामदा एक ओर से बन्द था और दूसरी ओर दरवाजा था। दरवाजा बाहर से बन्द था मृणालिनी ने दरवाजा खोलने का प्रयत्न किया, परन्तु वह नहीं खुल सका।

बरामदे में से गली में झांका जा सकता था। यहाँ से गली और भी भली-भाँति दिखाई देती थी। गली बहुत लम्बी थी और उसके दोनों ओर ऊँचे-ऊँचे मकान थे। वह स्वयं मकान की तीसरी मंज़िल पर खड़ी थी।

इस समय गली में तथा उस मकान में, जिसमें वह थी, कोई प्राणी उपस्थित प्रतीत नहीं होता था। मृणालिनी एक कमरे में से कुर्सी निकाल बरामदे में लगा ऐसे बैठ गयी, जिससे वह दूर तक गली को देख सके।

लगभग एक घण्टे की प्रतीक्षा के पश्चात्, उसको तीन युवक गली में आते दिखाई दिये। तीनों के हाथ में गठरी थी। वह पहले तो समझ नहीं सकी कि ये उस घर के, जिसमें वह बैठी है, स्वामी हैं। परन्तु उनके कुछ समीप आने पर वह एक को पहचान गयी। यह वही था, जो उसको चाय पिला रहा था। वे बाहर से दरवाजा खोल बरामदे में आये तो मृणालिनी को वहाँ कुर्सी पर बैठा देख हँस पड़े।

चाय पिलाने वाले युवक ने कहा, "तो अब आप ठीक मालूम पड़ती हैं।"

"हाँ, आपका धन्यवाद है कि आपने मेरी जान बचायी है। मैं समझती हूँ कि अब मुझको चलना चाहिए।"

"अभी जल्दी किस बात की है? खाना बन रहा है। खाकर जाने के विषय में विचार कर लिया जायेगा। वैसे तो अभी कलकत्ता भर में लूट मची हुई है। किसी भी औरत का आना-जाना सुरक्षित नहीं।"

"क्या हुआ है?"

"आज ट्रामगाड़ियों का भाड़ा बढ़ गया है न? लोगों ने अधिक भाड़ा देने से इन्कार किया और झगड़ा हो गया है।"

इसके बाद तीनों ने अपनी-अपनी गठरी वहीं बरामदे में रख दी और उसमें से एक ने एक संदूक, जो बरामदे के एक कोने में पड़ा था, खोला। उसमें मिट्टी के तेल का स्टोव, तवा और कुछ वर्तन रखे थे। वह वर्तन धोने के लिए बरामदे के दरवाजे से बाहर चला गया। दूसरे ने स्टोव बाहर निकालकर जला दिया। तीसरा अपने कमरे में से डबल रोटी लाकर काटने लगा।

मृणालिनी ने देखा कि वह वहाँ से जा तो सकती नहीं, अवश्य ही बाजार में लूट-मार मची होगी। वह स्वयं भी भूख अनुभव कर रही थी। इस कारण उसने खाना बनाने में उनका हाथ बँटाना उचित समझा। वह कुर्सी से उठी और कहने लगी, "छोड़ो, मैं बना देती हूँ।"

इस पर डबल रोटी काट रहे युवक ने रोटी और छुरी उसके हाथ में दे दी। वह अपने कमरे में गया तो आधा दर्जन अण्डे, एक कागज में लपेटी आधा सेर मछली, बैंगन और पालक का साग ले आया। इतने में वर्तन धुलकर आ गये और मृणालिनी मछली को काट-छाँटकर, टुकड़े करने लगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब मृणालिनी रसोई बनाने लगी तो वे तीनों युवक बरामदे में ही बैठ, अपनी अपनी गठरी खोल, उनमें बँधा सामान देखने और पृथक्-पृथक् करने लगे।

नकद रुपये और नोट भी थे। वे उन्होंने गिन डाले। दो हज़ार पाँच सौ चालीस रुपये थे। वे एक ओर रख दिये गये। कुछ भूषण थे। प्रत्येक को ध्यान से देखकर उनकी सूची बना ली गयी। कुछ चाँदी के बर्तन भी थे।

मृणालिनी सब्जी बनाती हुई उनकी वस्तुओं का निरीक्षण भी करती रही। उसको यह समझने में देरी नहीं लगी कि यह सब लूट का सामान है। वह समझ गयी कि ये लोग पार्टी के सदस्य नहीं हो सकते। वे जब कभी कोई वस्तु लूटते थे, तो पार्टी के कोश में जमा कराते थे। यहाँ ऐसा कुछ भी प्रतीत नहीं होता। वह समझ रही थी कि वह चोरों के फँदे में फँस गयी है। इससे भय के कारण उसका मन भीतर-ही-भीतर बैठता जा रहा था।

रुपया तीन भागों में बाँट लिया गया। भूषण और बर्तन भी तीन भागों में कर लिए गये और फिर उन पर लाटरी डाल ली गयी। जिसके भाग में जो आया, वह उठा कर अपने-अपने कमरे में ले गया और अपने-अपने संदूक में रख आया।

इसके पश्चात् वे तीनों बैठ गये और एक कहने लगा—"अब इस विषय में कैसे किया जाये?"

दूसरा कहने लगा, "भोजन के पश्चात्।"

"अभी लाटरी क्यों न डाल दी जाये?"

"तनिक धैर्य करो। मुख्य वस्तु से बातचीत करने के पश्चात् ही तय करेंगे।"

मृणालिनी को संदेह हो गया था कि यह उसके विषय में बातचीत हो रही है। इस कारण बिना उनकी ओर देखे वह उनकी बातों में कान लगाये हुए थी।

चाय पिलाने वाले ने कहा, "देखो जी! यह कोई वस्तु नहीं है। अतः इसके विषय में कुछ धैर्य और चतुरायी से बात करनी होगी।"

"तो तुम क्या कहते हो।"

"भोजन के समय बात करेंगे।"

मृणालिनी ने भोजन तैयार कर लिया तो तीनों अपनी-अपनी प्लेटें भीतर से ले आये। मृणालिनी ने सभी वस्तुओं को तीन-तीन भागों में बाँट दिया। टोस्ट थे, जिन्हें अंडों में भूना हुआ था। पालक, मछली और बैंगन की भाजी थी। साथ में चावल थे।

जब तीन भागों में सब-कुछ बाँट दिया गया तो वे पूछने लगे, "आपने अपने लिये कुछ नहीं रखा?"

"पहले भाइयों के पेट भर जायें तो पीछे बहिन अपने लिये विचार कर लेगी।"

"विचार की बात नहीं। आज तो आप यहाँ से जा नहीं सकेंगी। जाना सुरक्षित नहीं। इसलिये आप यह ढकना ले लीजिये। हमारे पास चौथी प्लेट नहीं है।"

इस पर एक ने वह ढकना उसके सामने रख दिया और तीनों ने अपने-अपने भाग में से कुछ उसको दिया। चारों खाने लगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मृणालिनीने कहा, "भाई साहब ! आपका क्या नाम है ?" वह उसको देख रही थी, जिसने उसको चाय पिलाई थी।

"नागेन्द्र; पर देखिये ! मैं आपका भाई नहीं हूँ । एक युवक हूँ और आपको बहुत पसन्द करता हूँ।"

"पसन्द की बात तो ठीक है। भाई बहिन को भी पसन्द करते ही हैं। मैं तो अपने मन की भावना अपने संरक्षकों के प्रति बता रही हूँ।"

अब उसके समीप बैठा हुआ दूसरा युवक बोल उठा, "हम तीनों भाई भी नहीं हैं। इस कारण यदि किसी एक की आप बहिन हैं तो दूसरों की प्रेमिका भी हो सकती हैं। हम तो दूसरों की कमाई पर निर्वाह करने वाले हैं। आपने देखा ही होगा कि आज बलवा करने वालों की कृपा हुई है और हमने जी भरकर हाथ रंगे हैं।"

मृणालिनी का मन भीतर-ही-भीतर बैठता जा रहा था। वह समझ रही थी कि उसके भाग्य में क्या बदा है। इस पर भी साहस बाँध, इस कठिनाई से बचने के लिए उपाय सोचने लगी। उसने दूसरे साथी से पूछा—"आपका नाम जान सकती हूँ क्या ?"

"हाँ-हाँ, क्यों नहीं ? मेरा नाम कृष्णकुमार है। यह हमारा तीसरा साथी मधु बाबू के नाम से विख्यात है। मैं बिहारी हूँ । यह नागेन्द्र जिला पूर्णिया का रहने वाला है और तीसरा पत्तिदार बलिया उत्तर प्रदेश का रहने वाला है । हमारे काम के लिये कलकत्ता एक उचित स्थान प्रतीत हुआ है। यहाँ हम अपने ढंग से निर्वाह करते हुए मज़े में रहते हैं।"

इस पर मधु बाबू बोला, "आज हाथ रंगने का बहुत अच्छा अवसर मिला है। केवल तुम एक ही मिल सकी हो। हम भोजन के पूर्व यही विचार कर रहे थे कि तुम्हारा बँटवारा कैसे करें ?"

"कोई तेज़ छुरी हो तो इसमें भी कठिनाई नहीं होनी चाहिये।" मृणालिनी ने पीत-मुख पर भी मुस्कान लाते हुए कहा।

"नहीं।" नागेन्द्र ने कह दिया, "यह प्रस्ताव हम स्वीकार नहीं कर सकते। यदि यह करना होता तो आपको यहाँ लाते ही नहीं।"

"तो फिर क्या करेंगे ?"

"यही तो विचार करना है।"

: ६ :

पहिली अप्रेल को शरदेन्दु भी काम पर गया था। वह स्कूल तो पहुँचा था, परन्तु वहाँ से लौट नहीं सका। ट्राम, बसें, टैक्सियाँ सब बंद हो गई थीं। साथ ही सड़कों पर झुण्ड-के-झुण्ड लूट-मार करने वालों के घूम रहे थे। स्कूल में कुछ ही अध्यापक आये थे। विद्यार्थी तो एक भी नहीं आया था।

शरदेन्दु मृणालिनी के विषय में विचार कर रहा था। वह देख रहा था कि स्त्रियों और युवा लड़कियों के लिये आना-जाना सुरक्षित नहीं है। मृणालिनी स्कूल जाने के लिए घर से तो निकल गई थी। स्कूल पहुँची या नहीं ? कहीं मार्ग में लुट-पिट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गई हो ! इसी प्रकार की चिन्ता में लीन वह स्कूल के स्टाफ रूम में बैठा घर वापिस जाने के उपाय पर विचार कर रहा था।

शहर में कर्फ़्यू लग चुका था और पुलिस गली और सड़कों पर गश्त लगा रही थी। इस पर भी जब रात हुई तो शरदेन्दु मृणालिनी की चिन्ता में अधीर, अपने को रोक नहीं सका। साथ ही वह विचार करता था कि अन्धेरे में बिना देखे वह घर पहुँच सकेगा।

स्कूल से निकल वह पैदल ही घर को चल पड़ा। सवारी का तो प्रश्न ही नहीं था। स्कूल से घर पाँच मील का रास्ता था।

शरदेन्दु घर नहीं पहुँच सका। वह गश्त लगाती हुई पुलिस की एक टुकड़ी के हाथ लग गया। वह दीवारों के साथ-साथ लग कर जा रहा था कि एक सिपाही की नज़र उस पर पड़ी। सिपाही ने दूर से ही कड़कती आवाज़ में कहा—"कौन है ? ठहरो।"

शरदेन्दु ठहर गया। तीन सिपाही दौड़कर आये और उन्होंने उसे पकड़ लिया। शरदेन्दु ने बताया कि वह स्कूल में अध्यापक है और अब घर जा रहा है। घर पर उसकी पत्नी भयभीत अकेली होगी, परन्तु सिपाही ने कह दिया—"यह तुम थाने में जाकर बताना। इस समय कर्फ़्यू आर्डर है और तुम बाहर निकले ही क्यों ?"

शरदेन्दु विवश था। सिपाही उसे पकड़ कर समीप के थाने में ले गये। इस समय थानेदार अथवा इंस्पेक्टर कोई भी नहीं था। अतः शरदेन्दु को हवालात की कोठरी में डाल दिया गया। शरदेन्दु ने देखा कि कई अन्य उसी की तरह पकड़े हुए लोग भी वहाँ बंद थे।

अगले दिन उसको सवेरे ग्यारह बजे थानेदार के सामने उपस्थित किया गया। रात-भर चिन्ता में डूबा भूखा-प्यासा वह सो नहीं सका था। परन्तु अब जब उसे थानेदार के सामने लाया गया तो उसे आशा बँध गई।

थानेदार ने पूछा, "क्या नाम है तुम्हारा ?'।

"शरदेन्दु।"

"क्या काम करते हो ?"

"स्कूल में अध्यापक हूँ।"

"कोई ज़ामिन पेश कर सकते हो ?"

इस पर शरदेन्दु विचार करने लगा। नगर में उसका कोई भी सम्बन्धी नहीं था। वह रहने वाला बर्दवान का था और कलकत्ता में शिक्षा प्राप्त कर, वहीं अध्यापन कार्य में लग गया था। ज़ामिन के नाम पर उसे मृणालिनी तथा उसके पिता स्मरण हो आये। पिता कालीचरण से उसे आशा कम थी कि उसे छुड़ाने आयेंगे। अचानक उसे मृणालिनी के भाई भारतभूषण का स्मरण हो आया। उसने कहा, "हाँ, मेरा साला भारतभूषण भवानी बीमा में, मैनेजिंग डायरेक्टर मिसेज़ मोहिनी दास का स्टेनो है।"

मिसेज़ दास के नाम का प्रभाव पड़ा। शरदेन्दु यह जानता था, इसी कारण उसने उसका नाम लिया था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भवानी बीमा कम्पनी में फोन किया गया। पिछले दिन दंगे के कारण बीमा कम्पनी के सभी कर्मचारी पुलिस की सुरक्षा में कार्यालय में ही रहे थे। आज उनको पुलिस की सुरक्षा में घर पहुँचाया जा रहा था। भारतभूषण अभी वहीं था। जब उसको बताया गया कि शरदेन्दु थाने में है तो उसने उसका ज़ामिन होना स्वीकार कर लिया। उसने यह भी कहा कि वह कम्पनी की जीप में वहाँ आ रहा है और शरदेन्दु को लेकर घर पहुँचा देगा।

आधे घंटे में भारतभूषण शरदेन्दु को लेकर उसके घर पर पहुँचा। मृणालिनी घर पर ही थी और घबराई हुई तथा चिन्तित शरदेन्दु की प्रतीक्षा कर रही थी। उसका मुख पीला पड़ा हुआ था।

भारतभूषण ने मृणालिनी को देख पूछा, "दीदी! क्या बात है?"

"कुछ नहीं!" मृणालिनी ने मुख नीचा कर कहा—"मैं इनकी प्रतीक्षा कर रही थी। मुझे भय लग गया था कि कहीं इनको कुछ हो न गया हो।"

"हुआ तो नहीं, परन्तु यदि कुछ हो जाता तो आश्चर्य न होता। दीदी! यह ......सब कुछ तुम लोगों का किया हुआ ही है। देखो, कल शाम तुम्हारी पार्टी के लोगों ने दास बाबू के बंगले पर धावा बोल दिया था। मोहिनी देवी वहाँ अकेली थीं। उन्होंने अपना पिस्तौल निकाल लिया और बंगले की छत पर चढ़ कर एक घंटा भर गोली चलाती रहीं। दस आदमियों की हत्या हो गयी। धावा करने वालों ने कोठी को आग लगा दी, परन्तु ठीक इसी समय आग बुझाने के दमकल और कुछ फौजी वहाँ पहुँच गये।

"मोहिनी देवी भी पत्थरों के लगने से घायल हो गई है। इस समय अस्पताल में हैं। बंगले की आग बुझा दी गयी है। मुझको कोई बता रहा था कि डॉक्टर राय आक्रमणकारियों का नेतृत्व कर रहे थे।"

मृणालिनी अपने साथ बीती घटना को स्मरण कर बहुत लज्जित हो रही थी। पिछली रात उसके साथ तीनों युवको ने बारीबारी से बलात्कार किया था। बलात्कार किये जाते समय वह प्रायः बेसुध हो गई थी और प्रातः चार बजे तक वैसे ही पड़ी रही थी। जब उसको कुछ होश आया, तो तीनों युवक गहरी नींद में सो रहे थे। मृणालिनी उठी, उसने परिस्थिति देखी और वहाँ से भाग खड़ी हुई। इस समय गश्त लगाने वाले सिपाही भी थक कर नींद के कारण ऊँघ से रहे थे और मृणालिनी बिना किसी का ध्यान आकर्षित किये पाँच बजे अपने घर आ पहुँची थी।

शरदेन्दु अभी घर नहीं पहुँचा था। इससे एक ओर तो उसको चिन्ता लगी, परन्तु साथ ही उसके मन को शान्ति मिली। शरदेन्दु घर पर होता तो उसके विषय में पूछता और वह अपनी लज्जा की बात उसको कैसे बताती?

अब जब भारतभूषण ने कहा कि यह सब कुछ उन जैसे लोगों का किया हुआ ही है, तो वह इसका प्रतिकार नहीं कर सकी। उसने बात बदलने के लिये पूछ लिया—"तुम कहाँ हो?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हमारी बीमा कम्पनी की रक्षा तो पुलिस आज प्रातःकाल से कर रही है और मैं अपनी पत्नी तथा बच्चों को वहाँ ले गया हूँ।"

"पिताजी ?"

"वे घर पर नहीं हैं। मैं नहीं जानता कि उनके साथ कैसी बीत रही है।"

अब भारतभूषण मृणालिनी और शरदेन्दु को भी अपने साथ कम्पनी के कार्यालय में ले गया। वहाँ सुरक्षा का प्रबन्ध अधिक अच्छा था।

दो दिन तक वे कम्पनी के कार्यालय में ही रहे। तीसरे दिन लोग घरों से निकलने लगे थे। भारतभूषण अस्पताल में मोहिनीदेवी का समाचार लेने जाने के लिये तैयार हुआ तो मृणालिनी भी चलने को तैयार हो गयी।

"क्या करोगी वहाँ जाकर ?"

"मेरा हरिमोहन की माँ से अच्छा परिचय है। चलकर देख आऊँ तो क्या हानि है ?"

भारतभूषण ने विमलानन्द को, जो अभी भी बीमा कम्पनी के सेक्रटरी के रूप में कार्य कर रहा था, कहकर कम्पनी की जीप निकलवाई और बहिन को लेकर अस्पताल जा पहुँचा।

वे वहाँ पहुँचे तो उनको दास बाबू, हरिमोहन, मृदुला और माधुरी को वहाँ खड़े देख विस्मय हुआ। हरिमोहन ने बताया, "हमको माँ के घायल होने तथा बँगले को आग लगने की सूचना कल तार द्वारा दी गई थी। अतः आज हम यहाँ हवाई जहाज द्वारा पहुँचे हैं।"

मृणालिनी मृदुला से मिली तो उसको पता चला कि उसका एक लड़का दो वर्ष का दिल्ली में है और अब वह पुनः तीसरे मास में जा रही है। मृदुला के सौभाग्य को देख वह ईर्ष्या से जलने लगी। मृदुला ने मृणालिनी का मुख काला हुआ देखा तो पूछने लगी, "महेन्द्र कहाँ है, दीदी ?"

"उसको लापता हुए आज नौ दिन हो गये हैं। एक दिन वह स्कूल गया तो घर नहीं लौटा।"

मृदुला भौचक्की हो मुख देखती रह गयी।

भीतर मोहिनी अपने घायल होने का वृतान्त सुना रही थी। सब लोग कमरे के बाहर बरामदे में बैठे थे। भीतर केवल दास और हरिमोहन था। मोहिनी के मुख पर और सिर पर पट्टी बँधी हुई थी।

मोहिनी बता रही थी, "नगर में लूट-मार होने का समाचार मिलते ही मैंने कार्यालय बन्द कर दिया। पुलिस को तुरन्त उसकी रक्षा के लिये बुला लिया। कर्मचारियों को लिखित पास देकर, उनको पुलिस की सुरक्षा में रहने का प्रस्ताव कर, मैं मोटर लेकर अपने बंगले में जा पहुँची दिन-भर तो ठीक गुजरा। मैं रात का भोजन कर सोने का विचार कर रही थी कि हो-हल्ला सुन बंगले की छत पर चढ़ गयी। मैंने देखा कि मशालें जलाये हुए एक जलूस उसी ओर आ रहा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मुझको यह समझ नहीं आया कि वह जलूस हमारे बंगले की ओर ही आ रहा है। परन्तु जब वे बंगले के बाहर खड़े होकर आपको और मुझको गालियाँ देने लगे तो मुझको सन्देह नहीं रहा कि वे क्या करने वाले हैं।

"मैं भागी हुई नीचे गयी और पुलिस थाने में टेलीफोन कर दिया। मैंने बताया कि मैं अकेली हूँ और भीड़ में चार-पाँच हज़ार आदमी प्रतीत होते हैं। अतः सहायता तुरन्त आनी चाहिये।

"टेलीफोन कर मैंने पिस्तौल और जितने कारतूस थे, निकाल लिये और कोठी की छत पर चढ़ कर, वहाँ से बरामदे की छत पर कूद कर आ गयी। मैं मुँडेर के पीछे छिप कर बैठ गयी और पिस्तौल भर कर प्रतीक्षा करने लगी।

"एक आदमी कोठी में घुसा। परन्तु ज्यूँ ही वह समीप आया तो मैंने उसका निशाना बाँध गोली चला दी। लगभग पचास गोलियाँ चलानी पड़ीं और एक घंटा तक उनको आग लगाने से रोकती रही।

"मुझको कुछ ऐसा प्रतीत हुआ कि डॉक्टर राय भीड़ में खड़ा लोगों को एकदम हल्ला बोल देने के लिये भड़का रहा था।

"एक दो के अतिरिक्त सब गोलियाँ काम आईं और एक घंटा तक रोकने पर जब कारतूस समाप्त हो गये तो मैं छिप कर बैठ गयी। इस सब समय पथराव होता रहा। जब गोलियाँ समाप्त हो गयीं तो भीड़ बंगले में घुस आई, बंगले में आग लगा दी गयी। उस समय पुलिस और दमकल आ गयी। मैं बच गयी। कुछ नहीं कह सकती कि बंगले की कितनी हानि हुई है!"

दास बाबू ने मोहिनी को कह दिया कि बलवाइयों में डॉक्टर राय का नाम लिखा दे। पीछे देखा जायेगा। इस दिन पुलिस पकड़-धकड़ कर रही थी। लगभग एक सहस्र व्यक्ति पकड़े गये थे। उन पर मुकदमे बनने लगे थे।

इस समय सादिक हुसैन का शव पहचाना गया और उसको दफना दिया गया।

सबसे विचित्र बात यह हुई कि जब शान्ति हो गई तो बंगाल के मुख्य मंत्री की घोषणा निकली। उसमें यह कहा गया कि ट्राम भाड़े में वृद्धि रोक दी गयी है। अब वही भाड़ा लिया जायेगा, जो पहली अप्रेल से पहले लिया जाता रहा है।

"जो आग लगाते अथवा लूट-मार करते पकड़े गये हैं, उनके अतिरिक्त अन्य सब छोड़ दिये जायेंगे।

"जो जनता में, गोली से अथवा अन्य किसी प्रकार मारे गये हैं, उनके सम्बन्धियों से हमदर्दी प्रकट की जाती है। और उनकी मृत्यु का प्रतिकार सरकार देगी।"

इस दिन मोहिनी बंगले में वापस आ गयी थी। दास बाबू और हरिमोहन उसके बिस्तर के पास बैठे समाचार-पत्र से यह समाचार पढ़ रहे थे। यह घोषणा जानकर दास बाबू की हँसी निकल गयी।

सब दास बाबू का मुख देखने लगे। दास बाबू का कहना था, "इस देश में न्याय की महिमा नहीं रही। यहाँ गुंडागर्दी का सिक्का चलने लगा है। भला उन बेकसूर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुकनदारों अथवा जनता का, जिनके घर जलाये गये, क्या दोष है कि वे लूट-मार का शिकार हुए ? उन लोगों के लिये हमारे नेताओं के पास सहानुभूति का एक शब्द तक नहीं है, घाटा पूरा करने की तो बात ही दूसरी है, सादिक और उसके साथियों के लिये, जो इस सारी गड़बड़ी के मुख्य कारण हैं।"

: १० :

दास उच्च न्यायालय से छुट्टी पर आया हुआ था। कोठी को आग से कुछ हानि पहुँची थी, उसकी मुरम्मत करवा रहा था और मोहिनी के स्वस्थ होने की प्रतीक्षा कर रहा था।

इस समय हरिमोहन के साप्ताहिक पत्र 'लॉ ऐण्ड आर्डर' में एक गुप्त नाम से एक लेख छपा। उस लेख में संक्षेप में कलकत्ता के ट्राम भाड़ा की वृद्धि पर हुए बलवा का विवरण था और अन्त में बंगाल के मुख्य मंत्री की घोषणा कि ट्राम भाड़ा की वृद्धि रोकी जाती है और मृतकों की हानि का प्रतिकार उनके सम्बन्धियों को मिलेगा, लिखी थी।

इतना विवरण देकर यह लिखा था कि यह गुंडागर्दी को पुरस्कार है, जो मर गये, क्या वे ट्रामों का जलाने, बसों में आग लगाने और दुकानों को लूटने वाले नहीं थे ? किसने यह निश्चय किया है कि ये लोग बलवा करने वालों में नहीं थे ? क्या शासन, जिसने ऐसे लोगों को मुआवज़ा देने की घोषणा की है, न्यायकर्ता भी हो गया है ? कब से और किस अधिकार से ? जनता के धन से उनका पोषण, जिनके विरुद्ध यह लूटमार और आग लगाने का आरोप है, देश में गुंडागर्दी को पुरस्कृत करने के समान है।

"ऐसा राज्य चिरकाल तक जीवित नहीं रह सकता। शासन स्वयं न्यायकर्ता नहीं हो सकता। न्याय करने वाले शासन से पृथक् और जनता के दबाव से स्वतन्त्र व्यक्ति होने चाहियें।"

इस लेख के छपने के पश्चात् एक दिन हाई-कोर्ट में चीफ़ जस्टिस द्वारा दी गयी पार्टी में दास बाबू की एक मंत्री महोदय से भेंट हो गयी। "ओह दास बाबू ! सुनाओ भाई, मिसेज़ कैसी हैं ?" उस मंत्री महोदय ने पूछ लिया।

"आपकी कृपा से जीवित हैं।"

"मेरी कृपा से क्यों ?"

"आप यहाँ के कानून बनाने वाले, शासनकर्ता और न्यायकर्ता, मेरा अभिप्राय यह है कि आप सर्वेसर्वा हैं। यहाँ जो कुछ भी है, आपकी कृपा से ही है?"

"यह सब निन्दा के भाव से कह रहे हो न ?"

"यह तो समझने की बात है। अंग्रेज़ी काल में हम एक अंग्रेज़ को 'जौन बुल्ल' कह कर पुकारते थे। हमारे विचार में यह शब्द निन्दात्मक होता था, परन्तु अंग्रेज़ इसको प्रशंसात्मक समझता था।"

इस पर वह मंत्री हँस पड़ा और बोला, "हाँ समझ आया है। आपके लड़के ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी तो हमको गुण्डों को पुरस्कृत करने वाले शासक की उपाधि दी है।"

"मैं समझता हूँ उसने बहुत ही नरम शब्दों का प्रयोग किया है। क्या मैं आपको बता सकता हूँ कि एक सादिकहुसैन की पत्नी को, उसके खाविन्द के मारे जाने पर पाँच सहस्र मुआवज़ा मिला है। वह सादिकहुसैन कम्युनिस्ट था और भवानीपुर में बलवे के दिन लोगों को भड़का कर ट्रामों को जला देने की राय देता रहा था।"

"आप कैसे कहते हैं यह?"

"मेरे पास प्रमाण है। जहाँ तक मेरा ज्ञान है पुलिस के पास भी उसका रिकार्ड है।"

"मुझको भली-भाँति स्मरण है कि उसकी पत्नी और बच्चों की बुरी हालत की सूचना एक कालीचरण वकील ने दी थी।"

"और क्या सादिक हुसैन की स्त्री और कालीचरण के सम्बन्ध के विषय में आपको ज्ञान है?"

"उसकी मिस्ट्रैस है क्या?"

दास हँस पड़ा। हँसकर उसने कहा, "जी नहीं। कालीचरण की लड़की है। इसी से तो मैं कहता कि शासन न्यायकर्ता नहीं हो सकता।

"ऐसा प्रतीत होता है कि आपके कार्यालय में कोई कम्युनिस्ट पार्टी का सदस्य ऐसा है, जो आपके मुख लगा हुआ है। यही कारण हो सकता है कि कालीचरण जैसे विख्यात कम्युनिस्ट की लड़की को उस व्यक्ति के मरने का इनाम मिला है, जिसके साथ पिछले छः वर्षों से उसकी बनती नहीं थी। जो सादिक के जीवन-काल में भी एक शरदेन्दु नाम के किसी दूसरे व्यक्ति के घर रहती थी।"

"अब ये सब बातें एक मन्त्री कैसे जान सकता है?"

"जानने की जरूरत भी नहीं। आपको यह मामला किसी हाईकोर्ट के ट्रिब्युनल के पास दे देना चाहिये था। वह ट्रिब्युनल यह जाँच कर कि यदि कोई निर्दोष मारा गया है और उसके आश्रित निराश्रय रह गये हैं तो यह जनता का धन उसको दिला देता।"

"आपका यह मतलब है कि एक वह व्यक्ति, जिसको हाईकोर्ट के जज का लेवल लग चुका है, एक मन्त्री के लेवल वाले व्यक्ति से अधिक जनता का अन्तर्यामी है?"

"हजूर! यह नहीं। मैं तो कहता हूँ कि आप जनता के वोट से चुनकर आये हुए प्रतिनिधि, न्याय बुद्धि रख ही नहीं सकते। आपके मस्तिष्क में अपनी पार्टी और क्षेत्र के मतदाताओं का हित ही सर्वोपरि होता है। यदि आप समझते हैं कि आप न्याय करने के योग्य हैं तो न्यायकर्त्ता का पद भी आप अर्थात् चुनाओं में चुने हुए व्यक्ति को ही मिल जाना चाहिये। न्यायालयों को राष्ट्रपति के अधीन रखने की क्या आवश्यकता थी?"

"दास बाबू! यह नीति है, तुम इसको समझ नहीं सकते।"

"ठीक है! मैं इस बात को मानता हूँ कि जो कुछ आप समझते हैं, वह मैं नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समझ सकता। विचारणीय बात तो यह है कि जो कुछ आप समझते हैं, वह देश के हित में है अथवा जो कुछ मैं समझता हूँ वह है ?"

इस वार्तालाप का परिणाम यह हुआ कि जहाँ दास बाबू के उच्च न्यायालय में नियुक्ति-काल को बढ़ाने का विचार हो रहा था, वहाँ न बढ़ाने की बातचीत होने लगी।

कलकत्ता की घटना होने के कुछ पूर्व दास से प्राईवेट रूप में पूछा गया था कि वह सुप्रीम कोर्ट में कुछ और काल तक रहना पसन्द करेगा अथवा नहीं। अब दास के दिल्ली जाते ही उसकी नियुक्ति का काल समाप्त होने पर उसको 'रिटायर' कर दिया गया।

दास जब मुक्त हुआ तो अपने लड़के के साप्ताहिक पत्र में निरन्तर लेख लिखने लगा। वह अब चेम्बर प्रैक्टिस करने लगा था। उसने दो स्थानों पर अपना कार्यालय रखा हुआ था। एक कलकत्ता में और एक दिल्ली में।

भाँति-भाँति में मुकदमे उसके पास सम्मति और पथ-प्रदर्शन के लिए आते थे। दास उनके, अपनी देख-रेख में स्टेटमेंट तैयार करा देता था और कोई दूसरा वकील उस पर कोर्ट में बहस कर देता था।

इन दिनों मोहिनी ने भवानी बीमा कम्पनी की मैनेजिंग डायरेक्टरी छोड़ दी। उसने और दास बाबू ने अपने बहुमत से हिस्से बेच डाले थे। इन हिस्सों को खरीदने वाले प्रायः मारवाड़ी और बिहारी थे।

इस पर सानियाल चौधरी को अपनी स्थिति बीमा कम्पनी में डाँवाँडोल प्रतीत हुई। वह भागा-भागा दिल्ली आया और दास बाबू से इस विषय में बातचीत करने लगा। चौधरी साहब का कहना था, "दास बाबू ! आपने अपने बहुत से हिस्से बेच डाले हैं ? क्यों ?"

"हाँ, कलकत्ता में ट्राम भाड़ा के विषय में बलवा होने के पश्चात् मेरा मन कलकत्ता से उचाट हो गया है। मैंने अपने हिस्से सिवानी ब्रदर्स को बेचने के लिये दे दिये थे। मुझको सूचना मिली है कि हिस्से बिक रहे हैं।"

"पिछली डायरेक्टरों की मीटिंग में तीन मारवाड़ियों और दो बिहारियों ने लगभग चालीस हजार के हिस्से खरीद लिये हैं। मैं तो बंगालियों से बाहर के समुदाय के हाथ हिस्से जाते देख घबरा उठा हूँ।"

"क्यों ? घबराने की क्या बात है ?"

"मोहिनी जी जानती हैं कि पिछले अठारह वर्ष में हमारी कम्पनी ने बीस करोड़ रुपया उद्योग-धन्धों में लगाया है। इस बीस करोड़ रुपयों में से लगभग सत्रह करोड़ बंगालियों के पास लगा हुआ है। मेरा यह अनुमान है कि लगभग दो सौ छोटे-बड़े व्यवसाय बंगालियों के हाथ में हमारी कम्पनी के आश्रय चल रहे हैं और लाखों बंगाली उससे पल रहे हैं।

"यदि कम्पनी मारवाड़ियों के हाथ में चली गयी तो यह सब धन बंगालियों के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हाथों से निकल जायेगा और सब मारवाड़ी व्यापारियों के हाथ में चला जायेगा।"

"मुझको इस बात का बहुत खेद है। आप उन हिस्सों को खरीद सकते थे। अब भी मेरे पास बीस हज़ार हिस्से और हैं। आप अथवा आपके मित्र इसको खरीद सकते हैं।"

"परन्तु आप अपने पास ही क्यों नहीं रहने देते ? क्या कुछ हाथ तंग हो गया है आपका ?"

"नहीं, यह बात नहीं। मैं यह देख रहा हूँ कि भारत सरकार ने भारत में 'सोशयलिस्टक पैटर्न ऑफ सोसायटी' निर्माण करने का निश्चय कर लिया है। इस कारण मैं अपने विषय में कुछ योजना बना रहा हूँ।"

"क्या योजना बना रहे हैं ?"

"यह निर्णय अवैधानिक है। समाज का 'पैटर्न' अर्थात् इसके रहन-सहन के ढंग बदलना सरकार के अधिकार में नहीं है। समाज को तो समाज ही बदल सकता है। इस समाज में परिवर्तन कानून से नहीं, प्रत्युत विचार-परिवर्तन से हो सकता है। जहाँ राजनीतिक नेता समाज के ढाँचे में परिवर्तन करने का यत्न करते हैं, वहाँ तानाशाही की स्थापना हो जाती है। यही यहाँ पर होने वाला है।

"मेरी आत्मा ऐसे देश में रहते हुए बेचैनी अनुभव कर रही है और ये हिस्से बेचने भी इस बेचैनी का लक्षण ही हैं।"

सानियाल चौधरी भौचक्का हो मुख देखता रह गया। दास मुस्करा रहा था। सानियाल के मुख से ऐसा प्रतीत होता था कि वह कुछ समझा नहीं। यह देख दास ने अपने कथन को दूसरे शब्दों में रख दिया। उसने कहा, "समाजवादी ढाँचे का अर्थ है व्यक्ति समाज के अधीन हो जाये। अभी तक भारत में व्यक्ति की स्वतंत्रता सुरक्षित है। समाज अपनी स्वतंत्रता व्यक्ति की स्वतन्त्रता से ही प्राप्त करता है।

"अब समाज का रूप, बिना समाज के घटकों की स्वीकृति के बदलने का निश्चय कर दिया गया है। होगा यह कि समाज शक्तिशाली हो जायेगा और व्यक्ति अपना सब-कुछ समाज से माँग कर खायेगा।

"यह एक व्यक्ति के साथ अन्याय है और जिस ढंग से यह परिवर्तन लाने का यत्न किया जा रहा है, पूर्ण समाज के साथ 'फ्राड' (छलना) है।"

सानियाल ने कह दिया, "दास बाबू ! मैं आपकी यह बात तो समझा हूँ कि समाज का रूप बदला जा रहा है। परन्तु यह अन्याय और फ्रॉड कैसे हो गया ? यही मेरी समझ में नहीं आ रहा।"

"देखो, कांग्रेस में समाज का रूप बदलने का प्रस्ताव पेश हुआ। सोशियलिस्ट के साथ 'इक' प्रत्यय लगाने से कांग्रेसियों को धोखा देने का प्रयत्न किया गया है। इस प्रत्यय से सोशियलिज़म से किन बातों में अन्तर आने वाला है, यह तो बताया नहीं गया। पार्लियामेंट से भी, बिना इसकी व्याख्या किये इसको पास कराया जा रहा है।

"पंडित जवाहरलालजी ने यह बात उपस्थित की और कांग्रेस में किसी को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहस नहीं हुआ कि वह इस 'इक' प्रत्यय को समझने का यत्न करे। यदि किसी ने इस प्रस्ताव के विषय में कुछ जानने का प्रयत्न भी किया तो उसको डाँटकर बैठा दिया गया।

"यह तो है छलना। अब अन्याय की बात भी सुन लो। जब तक कोई व्यक्ति किसी दूसरे के अधिकारों को कम करने का यत्न नहीं करता, तब तक उस पर रोक लगाने का अधिकार किसी को भी नहीं। यही 'फ्री सोसायटी' (स्वतन्त्र समाज) का नियम है। भारत में ऐसा ही स्वतन्त्र समाज आज सहस्त्रों वर्षों से चल रहा है। यह ढंग सर्वथा न्याययुक्त है। प्रत्येक व्यक्ति स्वतन्त्र है। उसे वह सब स्वतन्त्रता प्राप्त है, जो किसी दूसरे की वैसी ही स्वतन्त्रता का अपहरण नहीं करती।

"इस न्याययुक्त समाज के रूप को बदलने का यत्न किया गया है, बिना लोगों को समझाये और उनसे राय लिये। यह अन्याय ही तो है।

"अब इससे होने वाले परिणाम भी सुन लो। देश का पूर्ण उद्योग तथा व्यवसाय सरकार अपने हाथ में कर लेगी। खेती-बाड़ी, दुकानदारी, यहाँ तक की पढ़ना-लिखना और विचार करना भी सरकार की इच्छानुसार होने लगेगा। यह सब एकदम तो नहीं हो सकेगा, इस पर भी होगा। पूर्ण समाज के घटक इन राजनीतिक नेताओं के नौकर हो जायेंगे उनका अधिकार रह जायेगा सरकार द्वारा निश्चित वेतन पाना।

"वेतन-धारियों को हम शूद्र प्रवृत्ति के लोग मानते हैं। अर्थात् पूर्ण समाज ही शूद्र हो जायेगा।

"यह सब पूर्ण जाति की पतितावस्था होगी। यह पतित समाज, जिसमें चारों ओर शूद्र ही शूद्र दिखाई दें, रहने योग्य रह जायेगा क्या ?

"यह है, जो मैं अपने विषय विचार कर रहा हूँ। इस कारण मैं अपने हिस्से बेच देना चाहता हूँ।"

सानियाल समझ रहा था कि दास के ये कठोर शब्द उसके मन की दुखित अवस्था को प्रकट कर रहे हैं। इस पर भी वह समझ नहीं सका था कि हिस्से बेचने से उसके मन को दुःख कैसे कम हो जायेगा। इस कारण उसने पूछ लिया, "परन्तु हिस्से बेचने से क्या आप इस आने वाली अवस्था को रोक लेंगे ?"

"नहीं, इसके रोकने के लिये तो अपनी क्षीण आवाज 'ला ऐण्ड आर्डर' नाम के साप्ताहिक पत्र में उठा रहा हूँ। इससे कितना कुछ हो सकेगा, मैं नहीं जानता।

"हिस्से बेचकर तो अपनी पूर्ण सम्पत्ति, जो मैंने अपने प्रयत्नों से पैदा की है, का एक ट्रस्ट बना देना चाहता हूँ। उस ट्रस्ट का उद्देश्य यह होगा कि समाज-धर्म और व्यक्ति के धर्म की व्याख्या करे और प्रचार करे।

"मुझको कुछ ऐसा प्रतीत होता है कि आने वाला 'सोशियलिस्टक' समाज मेरे इस ट्रस्ट को जब्त कर लेगा। इस कारण इस सब धन को सोने के रूप में करके, इसके साथ ही अपना ट्रस्ट-डीड लिखकर और फिर एक पुस्तक, अपने विचार से धर्म, न्याय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग्रौर समाज के विषय में लिखकर एक बहुत गहरा गढ़ा खोदकर, सबको उसमें दबा जाऊँगा जिससे भविष्य में कभी कोई उस धन को पा जाये तो मेरे ट्रस्ट के कार्य को चला सके।"

सानियाल खिलखिलाकर हँस पड़ा। उसको कुछ ऐसा समझ ग्राया कि दास के मस्तिष्क में कुछ खुशकी पैदा हो रही है। वह विचार-शक्ति खो रहा है। इस पर भी वह इस दैव समान मस्तिष्क रखने वाले के साथ बहस करने की क्षमता न रखने के कारण कहने लगा, "तो ग्राप शेष हिस्से मेरे पास बेच दें।"

"हाँ, बाज़ार भाव पर ग्राप ले लीजिये। ग्राप सिंघानी ब्रदर्स के पास मेरा पत्र ले जाइये ग्रौर रुपया देने पर हिस्से ग्रापको मिल जायेंगे।"

बात निश्चय हो गई। ग्रगले दिन जब सानियाल जाने लगा तो उसने दास को व्यंगात्मक भाव में कह दिया, "दास बाबू! ग्रपने ट्रस्ट में मुझको एक ट्रस्टी बना दीजियेगा।"

"हाँ-हाँ! यदि उस समय ग्राप मानव शरीर में हुए तो।"

"तो किस शरीर में हूँगा।"

"ग्रापके कर्म तो ग्रापको चूहे की योनि में ले जाने वाले प्रतीत होते हैं।"

इस बात पर दोनों हँस पड़े। सानियाल समझ गया कि यह पागल ग्रभी भी एक वकील की भाँति युक्ति कर सकता है।

: ११ :

भारत की संसद में हिन्दू-कोड बिल का वह ग्रंश उपस्थित हुग्रा, जिसमें हिन्दुग्रों के लिये एक ही पत्नी रखने का ग्रौर विशेष ग्रवस्था में तलाक देने का प्रबन्ध था। जब इस विषय पर लोकसभा ग्रौर राज्यसभा की संयुक्त कमेटी बनाई गयी, जो इस कानून को ग्रन्तिम रूप दे तो भारत की स्त्री-समाज का प्रतिनिधि मण्डल दिल्ली में इस कमेटी के सदस्यों को मिलने ग्राया। इस प्रतिनिधि मण्डल में पाँच स्त्रियाँ थीं ग्रौर उन पाँच में कलकत्ता की मृणालिनी देवी भी थी।

इस स्त्री मण्डल ने इम्पीरियल होटल में प्रेस काँफ्रेंस की। हरिमोहन के पास प्रेस प्रतिनिधि का कार्ड था। ग्रतः उसको भी इस काँफ्रेंस का निमन्त्रण मिल गया था।

जब हरिमोहन उस हाल में पहुँचा, जहाँ सब प्रेस-प्रतिनिधि उपस्थित थे, तो वह स्त्री-वर्ग के पाँच प्रतिनिधियों में मृणालिनी को बैठा देख चकित रह गया। स्त्री-मण्डल का वक्तव्य मृणालिनी ने पढ़कर सुनाया। वक्तव्य ग्रंग्रेज़ी में लिखा था। उसी भाषा में पढ़ा गया।

प्रेस के संवाददाताग्रों ने प्रश्न पूछे ग्रौर एक स्त्री जो बम्बई हाईकोर्ट के एक जज की पत्नी थी, उत्तर देती रही। काँफ्रेंस ग्रति सफल मानी गयी। कारण यह था कि साथ ही 'कॉकटेल' पार्टी दी गयी थी। ग्रतः प्रायः संवाददाता सुन्दर स्त्रियों के साथ बैठ मद्य-सेवन से इतने प्रभावित हुए कि ग्रगले दिन दिल्ली के समाचारपत्रों में इस डेलिगेशन के वक्तव्य की धूम थी। कई समाचारपत्रों में सम्पादकीय लेख लिखे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गये थे।

रात जब हरिमोहन ने खाने के समय मृणालिनी के प्रतिनिधि मण्डल में होने की बात बतायी तो दास हँस पड़ा। उसका अब तो यह स्वभाव हो गया था कि जब भी वह किसी विषय में विषमता देखता तो हँस पड़ता था। उसको स्वराज्य काल की यह विडम्बना प्रतीत हुई थी कि मृणालिनी जैसी औरतों को भारत की सति-साधवी नारियों का प्रतिनिधित्व प्राप्त था।

मृदुला ने कह दिया, "बाबा ! कल दीदी को यहाँ रात के खाने पर बुला लें तो कैसा रहे ?"

"बहुत मज़ा रहेगा, यदि पूर्ण प्रतिनिधि मण्डल को बुला लिया जाये तो ?"

"कहिये तो यत्न करूँ ?"

"हाँ।"

मृदुला ने इम्पीरियल होटल में टेलीफोन मिलाकर कहा, "मुझको आल इंडिया विमेन्ज़ डेलिगेशन की मृणालिनी देवी से बात करनी है।"

"मैं अभी मिला देती हूँ।" होटल के टेलीफोन ऑपरेटर ने कहा।

टेलीफोन पर मृणालिनी बोली तो मृदुला ने बताया, "मैं मृदुला हूँ।"

"ओह ! कहाँ रहती हो ?"

"पृथ्वीराज रोड नम्बर बत्तीस पर। अभी-अभी पता चला है कि तुम विमेन्ज़ डेलिगेशन में आयी हुई हो। मैं चाहती हूँ कि तुम अपनी सब सदस्यों के साथ कल रात का खाना हमारे यहाँ खाओ।"

"पूछ कर बताती हूँ।" दो मिनट के पश्चात् मृणालिनी ने कहा, "सबने निमन्त्रण स्वीकार कर लिया है।"

"तो मैं बाबा से कह देती हूँ।"

"दास बाबू भी वहाँ रहेंगे क्या ?"

"हाँ ! वह अवश्य रहेंगे।"

"एक सदस्या शराब पीती है।"

"वह यहाँ से वापिस जाकर अपने होटल में पी सकती है।"

"यह तो बहुत बुरा लगेगा।"

"हमारा विचार है कि जहाँ कोई नहीं पीता, वहाँ एक का पीना बुरा लगना ही चाहिये।"

मृणालिनी चुपकर रही। अगले दिन सायंकाल साढ़े सात बजे पूर्ण डेलिगेशन मृदुला के धर पर आ पहुँचा। माधुरी 'लॉ' की फ़ाइनल परीक्षा दे रही थी। बात उसी से आरम्भ हो गयी।

मृणालिनी ने पूछ लिया, "माधुरी ! क्या कर रही हो आजकल ?"

"लॉ की फाइनल परीक्षा दे रही हूँ।"

"तो पीछे प्रैक्टिस करोगी ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"नहीं, इसकी आवश्यकता नहीं पड़ेगी।"

"क्यों?"

"मेरा विवाह होने वाला है।"

"ओह! परन्तु लॉ की प्रैक्टिस और विवाह में कोई विरोध है क्या?"

"नहीं! विरोध तो नहीं। परन्तु मेरे होने वाले पति इसको पसन्द नहीं करते।"

"क्यों? क्या खराबी प्रतीत हुई है उनको इसमें?"

"वे कहते हैं कि स्त्री के लिये कोई व्यवसाय तब तक करना ठीक नहीं, जब तक कोई विवशता न हो और वे वकालत को व्यवसाय के रूप में करना तो बहुत ही बुरा मानते हैं।"

"तो दास बाबू ने उसको भी पढ़ा-लिखाकर समझा दिया लगता है। हरि बाबू भी तो कह रहे थे कि पेशावर वकील मुकदमे कराते हैं।"

"हाँ, ऐसे ही जैसे पेशावर नेता राजनीतिक झगड़े खड़े करते रहते हैं।"

"यह भी दास बाबू की सम्मति है?"

इस समय तक खाना परसा जा चुका था। अब सब खाने लगे। दास बाबू का नाम वार्तालाप में बार-बार आने लगा तो उसने अपने विषय में स्वयं कहना उचित समझकर कह दिया, "देखो मृणालिनी! समाज के कुछ काम ऐसे हैं, जिनके बिना समाज का कार्य चल नहीं सकता। उदाहरण के रूप में किसान का कार्य है। बिना अनाज पैदा किये जीना असम्भव हो जाता है। इसी प्रकार समाज में सेना का कार्य है अथवा अध्यापक का कार्य है। परन्तु यह वकील का कार्य ऐसा है जिसके बिना भी कार्य चल सकता है। साथ ही यदि वकील आवश्यकता से अधिक हो जायें तो वे मुकदमों में वादी-प्रतिवादी की सहायता करते-करते नये वादी-प्रतिवादी निर्माण करने लग जाते हैं।

"इसी प्रकार जब नेता आवश्यकता से अधिक बन जायें तो वे समाज की समस्याओं को सुलझाने के स्थान अधिक और अधिक समस्यायें निर्माण करने लगते हैं।

कुछ समय गम्भीर रहने के बाद दास ने कहना जारी रखा, "बताओ न! तुम सब भी तो यही कह रही हो। हिन्दू समाज में बिना तलाक के कार्य चल रहा था। कहीं-कहीं झगड़ा तो होता ही रहता है। तलाक की स्वीकृति होने से, सैकड़ों झगड़े जो सुलह में बदल जाते हैं, उनके विग्रह में बदले जाने की सम्भावना बढ़ जायेगी।"

"आपके घर में ईश्वर की कृपा है।" एक सदस्या ने कहा, "पति-पत्नी में झगड़ा नहीं होता। इससे आप समझ नहीं सकते कि किसी घर में जीवन-भर की कलह का क्या दुःखद परिणाम होता है?"

इस पर एक मिसेज़ साठे, जो बम्बई हाईकोर्ट के एक जज की पत्नी थीं, बोल पड़ी, 'सुइसाईड' (आत्महत्या)।"

दास हँस पड़ा। हँसकर उसने कहा, "देवीजी का ज्ञान इस विषय में बहुत कम है। अमेरिका में तलाक अति सुगमता से मिलता है। इस पर भी आत्मा-हत्या वहाँ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सबसे अधिक होती है।

"एक बात और, आत्म-हत्याओं की संख्या अविवाहितों में विवाहितों से अधिक है।

"इंग्लैंड में भी आत्म-हत्यायें भारत से अधिक होती हैं।"

"तो इसमें आप क्या कारण समझते हैं?"

"आत्म-हत्या करना एक स्नायुमंडल के रोग का परिणाम है। ये रोग युवा असंतुष्ट अविवाहितों में अधिक होता है। रोग उन देशों में अधिक होता है, जहाँ सभ्यता कृतिम अर्थात् नकली आडम्बर के जाल में फँस गयी हो।"

अब फिर मृणालिनी ने पूछ लिया, "सभ्यता भी कभी कृतिम हुई है?"

"हाँ; और अब भारत में भी यही बात होती जाती है। इस कारण अब समझना कठिन नहीं। देखो! जो औरत रूज़, पाउडर, लिपस्टिक लगाती है, अंग्रेज़ी में बातें करती है अथवा अन्य इसी प्रकार के बाहरी शृंगार करने का स्वभाव बना लेती है, वह कृतिम सभ्यता के जाल में फँसी मानी जाती है। ये सब सभ्यता के सामान बाजार में बिकते हैं।

"इसके विपरीत स्वाभाविक सभ्यता के लक्षण हैं सन्तोष, धैर्य, सत्य, इन्द्रिय-दमन इत्यादि। ये सब बातें अपने भीतर विद्यमान होती हैं। इनके प्राप्त करने के लिए धन की आवश्यकता नहीं।

"अतः कृत्रिम सभ्यता के अवयवों की प्राप्ति के लिए साधनों का न होना अथवा अपर्याप्त होना, जीवन से असन्तोष उत्पन्न करता है और परिणाम होता है, आत्म-हत्या।

"अपने भीतरी गुणों को कहीं बाहर से खरीदने के लिए न तो स्थान है न ही आवश्यकता। इसके अभाव की पूर्ति किसी दूसरे पर निर्भर नहीं और इस अभाव का परिणाम किसी पर रोष नहीं होता। अर्थात् आत्महत्या की आवश्यकता प्रतीत नहीं होती।"

इस पर मिसेज़ साठे पुनः पूछने लगी, "जब किसी वस्तु की अप्राप्ति हो तो उससे असन्तोष होना स्वाभाविक नहीं क्या?"

"जब उस वस्तु को जीवन के लिए अनिवार्य समझा जाये। देखिये, आज के युग की सभ्य स्त्री किसी पार्टी में जाने के समय लिपस्टिक न पा सके तो इस पर वह असन्तोष अनुभव करती है। परन्तु वही स्त्री, जो अपने सौन्दर्य के लिए लिपस्टिक का आश्रय नहीं लेती, वह उसके न प्राप्त होने पर असन्तोष अनुभव क्यों करेगी?"

"लिपस्टिक के अतिरिक्त कुछ तो होठों पर लगाने के लिए चाहिए। जो कुछ भी होगा, न प्राप्त होने पर असन्तोष तो होगा ही?"

"होठों को रंगने के स्थान स्वास्थ्य से उत्पन्न रंग तो कभी अप्राप्य नहीं होता। जब अप्राप्य होता है तो वह किसी दूसरे के करने से नहीं, प्रत्युत अपने ही दोष से होता है। ऐसी अवस्था में असंतोष अपनी भूल पर ही होता है और उस भूल को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुधारने का उपाय भी अपने पास ही होता है।

"आत्म-हत्या का एक कारण यह भी है कि ऐसा करने वाला इस जन्म को अपना आरम्भ और अन्त समझ लेता है। आत्मा के अस्तित्व पर अविश्वास ही आत्महत्या का मूल कारण होता है।"

"कुछ भी हो, दास बाबू!" मृणालिनी ने कह दिया, "तलाक का कानून बन जाने से कुछ तो असंतोष में कमी होगी ही।"

"कहीं हुई है क्या?"

"युरोप में घरेलू झगड़ों से निकलने का यह मार्ग खुला रहने से मन को आश्वासन रहता है।"

"हाँ, भूल करने का साहस रहता है। जीवन-साथी ढूँढने में उतनी सावधानी की आवश्यकता नहीं रहती, जितनी भारत में है। जैसे सस्ते दाम का खिलौना, जो खरीदा और पसन्द न आने पर सुगमता से बदला या फेंका जा सके, वैसे ही तलाक की रस्म स्वीकार होने से, पति ग्रहण और त्याग किये जाने में सुविधा हो जाने पर, पति ग्रहण करने में कुछ अधिक सावधानी नहीं रहेगी।"

भोजन समाप्त हुआ। सब उठ खड़े हुए। जब सब ड्राइंग-रूम में बैठकर कॉफी ले रहे थे, हरिमोहन मृणालिनी के पास बैठ कहने लगा, "एक बात की मुझको प्रसन्नता है। मृणालिनी देवी अब नेतृ बन गयी हैं। मेरे साथ विवाह करने पर तो यह अवसर न मिल सकता।"

"यदि आप पार्टी न छोड़ते तो हम दोनों नेता होते।"

"परन्तु तुम तो मुझको मेरे पार्टी छोड़ने से पहले ही छोड़ चुकी थीं? मैं तो अभी जेल में ही था कि तुम्हारा सादिक से सम्बन्ध बन गया था।"

"परन्तु तुमने पार्टी तो तब छोड़ी थी, जब हाईकोर्ट में बयान दे दिया था कि हम लोग बलवा-फसाद, लूटमार कराने वाले थे। जब मैं छूटकर आयी तो उसी सायंकाल तुम्हारे बयान पर गरमा-गरम बहस हुई थी और यह निश्चय हो गया था कि बताये बिना तुमको पार्टी से बाहर समझा जाये। उसी मीटिंग में यह निश्चय हो गया था कि मेरा विवाह तुमसे नहीं हो सकता।"

"परन्तु तुम्हारा इस डेलिगेशन का सदस्य बनना पार्टी से क्या सम्बन्ध रखता है?"

"रखता क्यों नहीं? हमारी पार्टी के सदस्य प्रायः सभी प्रमुख समाचार-पत्रों, सरकारी-कार्यालयों, कारखानों, कम्पनियों और सभा-सोसाइटियों में घुसे हुए है और वे अपनी पार्टी के लोगों को आगे करने में यत्नशील रहते हैं। 'आल इंडिया विमेन्स कान्फ्रेंस' के इस डेलिगेशन में एक बंगाली महिला की आवश्यकता थी। तुरन्त हमारे दल की एक सदस्या ने मेरा नाम प्रस्तावित कर दिया और मैं एक रात में नेतृ बन गयी।"

"जैसे एक रात में नेतृ बना दी गयी हो, वैसे ही एक रात में गिरा कर मिट्टी में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
मिलाई भी जा सकती हो।"

"हाँ, पर यदि मैं पार्टी का विरोध करूँगी, तब न ? मैं विरोध करूँगी ही क्यों ?"

"अर्थात् नेतागीरी के लोभ में तुम अपनी आत्मा का भी हनन करोगी ?"

"आत्मा का हनन क्या होता है ? यह तो मूर्खों को डरा-धमकाकर अपने अधिकार और अधीन रखने के लिए चतुर लोगों ने एक 'भूत' बनाया हुआ है। जो लोग इस संसार में समाज को सर्वोपरि मानते हैं, उनके लिए इस प्रकार की मूर्खता की आवश्यकता नहीं।

: १२ :

तलाक का कानून पास हो गया। इसके साथ ही एक समय में एक पत्नी और एक पति के विषय में भी कानून की अवहेलना दंडनीय हो गयी। दास ने इस कानून के पास हो जाने पर 'ला ऐण्ड आर्डर' पत्रिका में एक लेख लिखा। लेख का शीर्षक था, 'मैडनैस रैम्पैंट' (पागलपन की चरम सीमा)।

विषय था कि इस कानून से ये लोग क्या सिद्ध करना चाहते हैं ? संयम सम्भव नहीं। संयम धर्म का लक्षण है। विवाह न करना नहीं। क्या एक पत्नी के पश्चात् दूसरी पत्नी न रखने से पुरुष अधिक संयमशील हो जायेगा ? समझ तो नहीं आता।

"सम्भावना यह है कि संयम टूटेगा। अधर्माचरण बढ़ेगा।

"इस बात में कुछ तत्त्व अवश्य है कि यही स्वतन्त्रता स्त्रियों को क्यों नहीं दी जाती ? दी जानी चाहिए। यदि वे चाहती हों तो। स्त्री-वर्ग में इस विषय पर, कि क्या वे एक से अधिक पतियों की पत्नी बनने की छूट चाहती हैं, 'प्लैबिसाईट' (मतदान) ले लिया जाये। यदि इकावन प्रतिशत स्त्रियाँ ऐसी स्वीकृति अपने हित में समझें तो उनको मिलनी चाहिए।

"बात यह है कि पुरुषों में भी दूसरा विवाह एक अपवाद है। यह अनिवार्य नहीं है। विशेष परिस्थिति में ही इसकी स्वीकृति होती है। इस विशेष परिस्थिति के लक्षण होने चाहिए थे, न कि इसकी मनाई। द्वितीय विवाह के विषय में कुछ आवश्यक शर्तें होनी चाहिए थीं। वे तो की नहीं। यदि एक पत्नी की पाबन्दी से पुरुष का किसी अन्य स्त्री से अनियमित सम्बन्ध बने तो उस पर तलाक तो एक काष्ठा (एक्सट्रीम) की चिकित्सा है, जो जीवन को सुधारने के स्थान बिगाड़ने वाला होगा।"

इस समय डॉक्टर राय का एकाएक देहान्त हो गया। डॉक्टर राय के घर में एक विधवा रहती थी। उसका नाम चन्द्रकला था। वह पूर्वी बंगाल की रहने वाली थी और पाकिस्तान बनने पर कलकत्ता में आ गयी थी। पढ़ी-लिखी औरत थी। तीस वर्ष से कम आयु की थी। दो बच्चे थे—एक पाँच वर्ष का और दूसरा दो वर्ष का।

चन्द्रकला को कलकत्ता पुनर्वास मंत्री के कार्यालय में नौकरी मिली तो वह शरद के साथ कार्य करने लगी। शरद व्यवस्थापितों को ऋण देने के विभाग का सुप्रिन्टेंडेंट था। चन्द्रकला उसके पास टाईपपिस्ट का काम करने लगी थी।

शरद बाबू को वह सुन्दर प्रतीत हुई और उसको प्रलोभनों में डालकर पथच्युत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर बैठा। दोनों के सम्बन्ध का शरद् की पत्नी शारदा को पता चला तो घर में भारी कलह उत्पन्न हो गयी।

दोनों में, चन्द्रकला और शारदा में भेंट हुई तो उसको चन्द्रकला की अवस्था दयनीय प्रतीत हुई। वह मान गयी कि यदि उसका पति उससे दूसरा विवाह कर ले तो वह उसको सहन कर लेगी। परन्तु शरद् बाबू को दूसरा विवाह झंझट-सा प्रतीत हुआ।

इस समय शरद ने राय से विवाह करने का प्रस्ताव किया तो दोनों में भेंट कराई गयी। डॉक्टर तो चन्द्रकला पर मुग्ध हो गया और चन्द्रकला घर पाने के लोभ में मान गयी। इस पर भी डॉक्टर राय विवाह के लिये राजी नहीं हुआ और उसने विना विवाह के ही चन्द्रकला को घर में रहने के लिये राज़ी कर लिया।

जब तक डॉक्टर शान्तिसागर राय जीवित रहा, चन्द्रकला बहुत प्रसन्न रही। इन दिनों शरद और डॉक्टर राय में मित्रता बहुत ही घनिष्ठ हो गयी थी।

सन् पचपन में एकाएक डॉक्टर राय को प्रोस्टेट का कष्ट हुआ। उसका ऑपरेशन हुआ और ऑपरेशन में उसका देहान्त हो गया। इस समय चन्द्रकला को गर्भ ठहर चुका था।

डॉक्टर राय के देहान्त के चौथे दिन मोहन डॉक्टर राय के मकान पर पहुँचा और उसने चन्द्रकला का हाथ पकड़कर उसको घर से धक्के दे-दे कर बाहर कर दिया और घर को ताला लगा दिया।

चन्द्रकला शरद बाबू के पास पहुँची और जब उसने अपनी अवस्था का वर्णन किया तो वह भौचक्का हो मुख देखता रह गया। बहुत विचारोपरान्त उसने कहा, "मैं तुम को घर नहीं ले जा सकता। मेरे पहले ही सात बच्चे हैं। तीन और, यह बहुत अधिक हैं। मैं मोहन से झगड़ा भी नहीं कर सकता। मैं गुप्त रूप में मोहन के 'रेयन' के कारखाने में पत्तीदार हूँ। उससे झगड़ा करने का अर्थ यह होगा कि सवा लाख से ऊपर उस कारखाने में लगा धन समाप्त। दस हज़ार वार्षिक आय को तिलांजलि।"

"तो मैं क्या करूँ?"

"मैं तुम्हारा मोहन से फैसला करा दूंगा। वह तुम्हारा जीवन-भर के लिये कुछ गुज़ारा बाँध देगा।"

"रहने को मकान और दो सौ रुपया महीना मिल जाये तो मैं निर्वाह कर लूँगी।"

शरद बाबू को यह बात सरल प्रतीत हुई। उसने मोहन को बुलाकर बात की तो मोहन ने एक पाई देने से भी इन्कार कर दिया। शरद ने बहुत समझाया, परन्तु वह नहीं माना। उसका स्पष्ट कहना था, "शरद! यह गर्भ तुम्हारा है, चाचा का नहीं। इस कारण तुम जो करना चाहो, करो। चाचा इसके लिये और इस नवजात की माँ के लिये किसी प्रकार भी उत्तरदायी नहीं था।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं तो इससे विवाह कर लेता, परन्तु अब तो दूसरे विवाह को स्वीकृति नहीं रही।"

"तो बिना विवाह के ही रख लो ?"

"तुम भी तो रख सकते हो। यह कुछ बहुत बड़ी आयु की नहीं है।"

"मेरा पहले ही अपनी पत्नी के अतिरिक्त तीन से सम्बन्ध है। इससे अधिक मेरे बस का रोग नहीं।"

इस समय राष्ट्रपति का एक अध्यादेश निकला। देश की सब बीमा कम्पनियों पर सरकारी अधिकार हो गया। दिल्ली के किसी बीमा कम्पनी के मैनेजिंग डायरेक्टर पर कम्पनी के धन के दुरुपयोग करने का आरोप लगा और उसके हू-हल्ला की आड़ में सब बीमा-कम्पनियों का राष्ट्रीयकरण कर दिया गया।

भवानी बीमा कम्पनी पर भी सरकारी अधिकार हो गया। मोहिनी और दास बाबू ने तो अपने सब हिस्से बेच डाले थे। विमलानन्द के अभी दो हजार हिस्से थे। कुछ हिस्से हरिमोहन के नाम के भी थे। अतः मोहिनी और दास ने यह उचित समझा कि कलकत्ता पहुँचकर सब हिस्सों के बारे में जाँच पड़ताल करें। सिंघानी ब्रदर्स से भी अभी हिसाब करना था। इस कारण राष्ट्रपति के अध्यादेश के जारी होते ही मोहिनी और दास बाबू कलकत्ता पहुँच गये।

दास बाबू सिंघानी ब्रदर्स के कार्यालय में हिसाब देखने गया था और मोहिनी अपने पति की प्रतीक्षा में, अपने बंगले की लान में बैठी थी कि एक स्त्री जो गर्भ-भार के कारण धीरे-धीरे ही चल पा रही थी और जिसके साथ दो अन्य बच्चे थे, बंगले में आ मोहिनी के पाँवों पर सिर रख कर रोने लगी। यह चन्द्रकला थी।

मोहिनी ने उसको बाँह से पकड़ कर उठाया। अपने सामने घास पर बैठाकर पूछा, "क्या चाहती हो ?"

"कहानी लम्बी है। यदि समय हो तो कहती हूँ। परन्तु ये छोटे बच्चे और पेट का बच्चा कल से भूखे हैं। जो कुछ भी हो, इस समय खाने के लिये दो, मैं जीवन भर कृतज्ञ रहूँगी।"

मोहिनी ने उनको वहीं बैठने को कहा और स्वयं कोठी में जा नौकर को बिस्कुट और पानी लाने को कह दिया। वह नौकर के साथ ही बाहर आ गई। बाहर आ उसने कहा, "अभी यह खाओ। चाय आदि बनने में पाँच-दस मिनट लगेंगे।"

उसने फिर नौकर को कहा, "शीघ्र चाय फिश इत्यादि बनाओ।"

तीनों ने बिस्कुट खा ठंडा पानी पिया। उनके खाने में हलबुली से स्पष्ट था कि वे तीनों भूखे थे। जब खा चुके तो चन्द्रकला ने अपनी कथा आद्योपान्त सुना दी।

मोहिनी को वह जान विस्मय हुआ कि डॉक्टर राय का देहान्त हो चुका है।

"तुम मेरे पास किस लिये आई हो ?" मोहिनी का प्रश्न था।

"मुझको, जब मैं डॉक्टर राय के पास रहती थी, यह बात पता चली थी कि आपके पति पहले भी डॉक्टर राय के हाथ से दुःखी कई लोगों की सहायता कर चुके हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसी से एक क्षीण-सी आशा लेकर आपके पास आई हूँ।"

"तुमको किसने बताया है कि हमारा यह मकान है और मैं यहाँ पर हूँ।"

"मकान तो कलकत्ता भर के लोग जानते हैं। मुझको कल, जब मैं शरद बाबू से, आपके पति का नाम बता सहायता लेने की बात कर रही थी, पता चला था। अब तो उसने भी सहायता देनी बन्द कर दी है। अतः आज अन्य कोई चारा नहीं रहा तो इधर को चली आई। आपको यहाँ बैठे देख भगवान का धन्यवाद कर रही थी।"

मोहिनी ने कहा, "तुम क्या सहायता चाहती हो?"

"राय की सम्पत्ति में से मेरे निर्वाह का प्रबन्ध करवा दीजिये।"

"यह तो मेरे पति ही बतायेंगे कि क्या हो सकता है? वे अभी आने ही वाले हैं। तुम तब तक चाय आदि पियो।"

इस समय नौकर चाय का सामान लेकर पहुँच गया। मोहिनी ने उसको मेज़ कुर्सियाँ लगाने को कह दिया। वह समझ गयी थी कि वह कोई भिखारिन नहीं। अतः उसके लिये अपने मन में उत्पन्न आदर का प्रदर्शन उसको कुर्सी देकर करने लगी।

चन्द्रकला और उसके बच्चे अभी चाय ले ही रहे थे कि दास बाबू आ गये।

आते ही उसने प्रश्न भरी दृष्टि से चन्द्रकला की ओर देखते हुए अपनी पत्नी से पूछ लिया, "क्या मेरे लिये भी चाय आयेगी?"

मोहिनी ने नौकर को संकेत किया और अपने पति को बैठने को कह, चन्द्रकला का संक्षेप में इतिहास बताकर पूछने लगी "क्या हो सकता है, इसके लिये?"

इस प्रश्न से दास गम्भीर विचार में पड़ गया।

जब चन्द्रकला प्रश्नभरी दृष्टि से दास बाबू की ओर देखने लगी तो दास ने पूछ लिया, "रात कहाँ रहती हो?"

"मोहन बाबू का ड्राईवर नित्यानन्द मुझ पर दया कर, अपने घर ले गया था। उसने वहाँ रखा हुआ था, परन्तु तीन दिन हुए उसकी पत्नी आ गयी है और मुझको नित्य गालियाँ दिया करती है।"

"देखो देवी! कानून तुम्हारी कुछ भी सहायता नहीं कर सकता। दया और धर्म की प्रवृत्ति ही मोहन को तुम्हारी सहायता के लिये प्रेरित कर सकती है, परन्तु मोहन में इन दोनों बातों का कहीं कुछ चिन्ह भी है, मैं जानता नहीं। यदि तुम कहो तो उसको बुलाकर बात कर सकता हूँ। इस पर भी सफलता की आशा कम है।"

"तो फिर?"

"फिर यह कि मुझको चाय पी लेने दो। मैं अभी मोहन से टेलीफोन पर बात कर लेता हूँ। मुझको दो दिन में दिल्ली जाना है और यदि जाने से पूर्व कुछ प्रबन्ध हो गया तो मुझको बहुत प्रसन्ता होगी।"

चन्द्रकला को इस बात से कुछ आशा बँधी नहीं। इस पर भी अन्य कोई मार्ग न देखकर चुपचाप बैठी रही। दास ने चाय पी और उठकर कोठी में जा मोहन से टेलीफोन मिलाने लगा। मोहन मिला तो दास ने कहा, "मोहन! तुम्हारे चाचा के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देहान्त के विषय में सुनकर बहुत शोक हुआ है।"

"सत्य ? दास बाबू ! मुझको इसमें सन्देह है। मैं अपने मन की बात बता दूं। भू-भार कम हुआ है।"

दास मुस्कराया। यह मुस्कराहट तो टेलीफोन पर देखी नहीं जा सकी। इस कारण मोहन ने पूछ लिया, "दास बाबू ! आपको सन्देह है इसमें ?"

"नहीं; तुम ठीक ही कहते प्रतीत होते हो। परन्तु मैं विचार कर रहा था कि हम स्वयं कितना बोझा हैं इस धरती पर।"

"मैं तो दो मन चार सेर हूँ। आप मुझसे भी कम हैं।"

दास हँस पड़ा। हँसकर उसने कहा, "डॉक्टर राय भी दो मन चार सेर से कुछ कम ही रहा होगा।

"अच्छा देखो मोहन ! मैं दो दिन में दिल्ली जा रहा हूँ। तुमसे मुझको एक आवश्यक काम है। यदि मेरी किसी भी सहायता का स्मरण हो, तो तुरन्त यहाँ चले आओ।"

"कुछ रुपये पैसे की आवश्यकता है दास बाबू ! कहो तो चैक बुक साथ लेता आऊँ ?"

"नहीं, कुछ ऐसी बात नहीं। रात के आठ बजे हमारे यहाँ चीफ जस्टिस खाने पर आ रहे हैं। उससे पहले ही बातचीत करना चाहता हूँ।"

"मैं आधे घण्टे में आया।"

दास टेलीफोन बन्द कर बाहर लॉन में आ गया। उसने चन्द्रकला की ओर देखकर कहा, "मोहन आ रहा है। तुम बताओ, कम-से-कम कितने में भली औरत की भाँति रह सकोगी ?"

"रहने को मकान और दो सौ रुपया महीना पर्याप्त होगा।"

"देखो, यत्न करूँगा। अभी तुम मोहिनी के साथ कोठी के भीतर चली जाओ। मैं उसके आने पर तुमको बुला लूँगा।"

: १३ :

मोहन आया तो दास बाबू ने उसको बैठा, जलपान पूछ, कहा, "डॉक्टर राय मेरा विरोधी था। इस पर भी मैं उसकी भावनाओं का आदर करता हूँ। अच्छा मोहन ! कैसे देहान्त हुआ है उसका ?"

'प्रोस्टेट' का ऑपरेशन हुआ था। डॉक्टर सह नहीं सका और चल बसा। वह पचपन वर्ष की आयु का था; परन्तु वासनामय जीवन व्यतीत करने के कारण उसका शरीर जर्जर हो चुका था।"

"तो क्या अभी भी वह लड़कियों के पीछे भागता रहता था ?"

"पिछले दो वर्ष से एक पचीस-तीस वर्ष की औरत घर पर रखे हुए था। वह उसका रक्त चूस गयी प्रतीत होती है।"

"विवाह कर लिया था, उससे ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"जी नहीं। ऐसे ही रखे हुए था। वह खूब खाती-पीती थी और दिन-रात उससे चिपटी रहती थी।"

"तो अब वह कहाँ है?"

"मेरे ड्राईवर नित्यानन्द के पास चली गयी है, परन्तु उसकी बीवी भी उसको वहाँ से निकाले बिना नहीं रहेगी।"

"यह तो और भी अधिक दुःख की बात है। तुम्हारे चाचा की अन्तिम प्रेमिका मोटर ड्राइवरों के टुकड़े खाये।"

"पर इसमें किया क्या जा सकता है? वह आवारा औरत है।"

"तो इससे तो वह और भी आवारा हो जायेगी। उसको डॉक्टर राय के घर में ही क्यों नहीं रहने दिया तुमने?"

"मकान का भाड़ा चार सौ रुपये महीना आने लगा है। उसके लिये इतना बलिदान मुझको ठीक प्रतीत नहीं हुआ।"

"देखो मोहन! स्त्री जाति के साथ सहानुभूति का व्यवहार करना चाहिये। वह अबला होने से क्षमा के योग्य है।"

"दास बाबू। मैं कुछ नहीं कर सकता।"

"अच्छी बात है; परन्तु क्या तुम अपने चाचा की रखेल को गुज़ारा भी देना नहीं चाहते? तभी तो कह रहा था कि तुम्हारा बोझा तुम्हारे चाचा से अधिक है।"

"आप उसकी सहायता में क्या चाहते हैं?"

"उसके रहने योग्य छोटा-सा मकान और गुज़ारे के लिये दो सौ रुपया दे सकोगे क्या?"

"ऐसा प्रतीत होता है कि वह आपके पास आयी है। ठीक यही वह मुझसे माँग रही थी।"

दास की हँसी निकल गयी। उसने घण्टी बजाई। चपरासी आया तो दास ने कहा, "उस औरत को बुलाओ।"

चन्द्रकला आयी तो उसे बैठा, दास ने कहा, "देखो मोहन! अपने चाचा का श्राद्ध करना चाहते हो तो इस औरत और इसके बच्चों के लिये इतना कुछ कर दो।"

"यदि न करूँ तो?"

"तो क्या? भगवान तुमसे निपटेगा। मैं इसमें कौन हूँ जो हस्तक्षेप करूँ?"

"कोई मुकदमा तो नहीं करेंगे आप?"

"मुकदमा हो नहीं सकता। यदि इस औरत ने दो वेद मन्त्र पढ़कर सम्बन्ध बनाया होता तो मैं इस दिशा में सहायता करता। परन्तु अब तो कुछ नहीं हो सकता।"

"तो दास बाबू! अपने पास से सहायता कर दीजिये न।"

"यह तुम्हारा कहने का अधिकार नहीं है। यह मेरे और मेरी भावना की बात है।"

मोहन कुछ देर तक चुप बैठा रहा, पश्चात् उठ खड़ा हुआ और कहने लगा,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"चन्द्रकला ! चलो। यह चाचा के लिये नहीं, परन्तु दास बाबू के कहने पर कर रहा हूँ। तुमको, जो तुम चाहती हो मिल जायेगा।"

जब चन्द्रकला जाने लगी तो मोहिनी, जो उसके बच्चों के साथ वहाँ आ गयी थी, उसको कहने लगी, "देखो ! भली औरत बनकर रहोगी तो भगवान तुम्हारी सहायता करेंगे। मोहन बाबू कहते हैं तो करेंगे। यदि इन्होंने सहायता करने से न की तो दिल्ली में हमारे पास चली आना अन्यथा पाँच पैसे का पोस्टकार्ड ही डाल देना।"

मोहिनी ने अपना छपा कार्ड दे दिया, जिस पर पता लिखा था।

अगले दिन दास और मोहिनी दिल्ली चले गये। दास ने मोहिनी को बताया था कि उनके सब हिस्से बिक गये हैं। चालीस लाख से ऊपर नकद मिल गया है और अब वह विचार कर रहा है कि इस रुपये से कुछ करना चाहिये। अन्यथा यह धन तो व्यर्थ हो जायेगा।

"परन्तु यदि उसका भी, एक दिन, सरकार ने राष्ट्रीयकरण कर लिया तो ?" मोहिनी का प्रश्न था।

"तो क्या ? सरकार और देश जिस विनाश की ओर जा रहे हैं, उस ओर एक पग और बढ़ जायेगा।

"मेरी यह पक्की धारणा है कि सरकार का व्यवसाय में हस्तक्षेप, शासन, जाति और समाज के घोर पतन में कारण होगा। यह नैसर्गिक धर्म के विपरीत है।"

"नैसर्गिक धर्म क्या है ?"

"शासन क्षत्रियों का कार्य है। शासक भले ही सार्वजनिक मतदान से बना हो। जब वे शासक बन गये तो क्षत्रिय हो गये। क्षत्रिय व्यवसाय, व्यापार आदि कार्य करने के योग्य नहीं होते। यदि वे करेंगे तो निस्सन्देह या तो वे शासन करना भूल जायेंगे अथवा व्यापार करने में भूल कर बैठेंगे। वैश्यवृत्ति के लोग शासन के योग्य नहीं हो सकते। वैश्यवृत्ति के लोग शासित हैं। वे लोभ-वश समाज का अहित न करें, इस कारण उन पर नियन्त्रण रखने के लिये शासन की आवश्यकता होती है।

"परन्तु जब शासक और शासित एक हो गये तो वह धाँधली मचेगी, जिसका अन्त नहीं होगा।

मोहिनी के मन में बात पूर्ण रूप से स्पष्ट नहीं थी। उसने अपने मन का संशय बता दिया, "आपकी बात उस काल में सत्य हो सकती थी, जब एक राजा होता था। राजा शासक भी और व्यापारी अथवा उद्योगपति भी सभी कुछ नहीं हो सकता था। होता तो अनर्थ हो सकता था। परन्तु प्रजातन्त्रात्मक राज्य में तो भिन्न-भिन्न मन्त्री भिन्न-भिन्न कार्य करते हैं। गृहमन्त्री शासन का कार्य करता है, सुरक्षा मन्त्री क्षत्रिय वर्ग का कार्य करता है। इसी प्रकार व्यापार मन्त्री व्यापार आदि का कार्य क्यों नहीं कर सकता ?"

"परन्तु ये मन्त्री पृथक्-पृथक् कैसे हो गये ? सबका उत्तरदायित्व प्रत्येक विभाग में समान होता है और फिर सब मन्त्री प्रधान मन्त्री की इच्छा पर ही मन्त्री रह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सकते हैं।"

"ऐसी अवस्था में शासक और शासित तो एक हो ही गये। मान लो किसी सरकारी उद्योग में धाँधली हो जाती है। पुलिस उसमें जांच करती है और शक्तिशाली अधिकारी दोषी प्रतीत होता है। तब गृह मन्त्री, जो साँझी जिम्मेदारी के कारण उस उद्योग में धाँधली का भी जिम्मेदार है, कैसे अपनी पुलिस को रहस्योद्‌घाटन करने देगा ?

"हिन्दुतान हौज़िंग फैक्ट्री के करोड़ों रुपयों के व्यर्थ जाने में कौन उत्तरदायी है, क्यों नहीं पता चला ? क्या यह इस कारण नहीं था, कि शासन स्वयं भूलकर रहा और स्वयं ही जाँच कर रहा था। संसद सदस्य वेचारे वास्तविक दोष को न समझते हुए प्रश्न पर प्रश्न करते थे और उनको बरगलाने वाले उत्तर देकर टाल दिया जाता था।"

"तो फिर," मोहिनी का प्रश्न था, "हम इस धन को क्यों, ऐसी सन्देहात्मक परिस्थिति में, किसी उद्योग में लगायें ? जब यह निश्चय नहीं कि चलता हुआ उद्योग शासन अपने हाथ में लेकर मटियामेट नहीं कर देगा, तो उसके लिये मेहनत करने से और धन व्यय करने से लाभ ही क्या ?"

"देखो मोहिनी ! धन मेरा नहीं है। यह तो जाति का है। मैं इसका संरक्षक मात्र हूँ। मैं ईमानदारी से इसको जाति के हित में लगा दूंगा। मैं अपने उत्तरदायित्व से मुक्त हो जाऊँगा। जाति को इसे अयोग्य लोगों के हाथों में देने से रोकने के लिये भरसक प्रयत्न करूँगा। उस उद्योग को बड़ी योग्यता से चलाऊँगा। उसमें काम करने वालों को सुखी और सम्पन्न रखने का यत्न करूँगा। निर्मित वस्तुओं को सस्ता और बढ़िया बनाने का यत्न करूँगा। इतना कुछ करने पर भी और सरकारी उद्योगों में इनका अभाव होने पर भी यदि जाति इस सबको नष्ट-भ्रष्ट करने पर तुली होगी तो मैं तो उऋण हो ही जाऊँगा। आगे समाज जाने और समाज का काम।"

"मैं तो समझती हूँ कि आपका काम है कानून की व्याख्या करना। आप अपनी वृद्धावस्था उसी काम में, जिसकी आप में योग्यता है, व्यय करें। यह व्यर्थ का झंझट मोल लेने में क्या लाभ ?"

"परन्तु मैं तो इसको भी कानूनी ज्ञान के समर्थन के लिये ही करना चाहता हूँ। मेरा कानूनी ज्ञान कहता है कि शासन से चलाये उद्योगों से, निजी लोगों से चलाये उद्योग सर्वथा श्रेष्ठ और अधिक लाभप्रद, कर्मचारियों को अधिक सुख-सुविधादायक और देश के कल्याण में अधिक समर्थ होंगे। मैं सिद्ध कर देना चाहता हूँ कि मेरा ज्ञान ठीक है।

"यदि निजी उद्योगों में कहीं दोष है तो वह उद्योगपतियों की मूर्खतापूर्ण स्वार्थपरता के कारण है। वह स्वार्थपरता उद्योग के चलाने के कारण नहीं, अपितु उनकी मिथ्या शिक्षा के कारण है तथा शासन में शिथिलता के कारण है।

"परन्तु सरकारी उद्योगों में तो आधारभूत ही भूल है। उद्योग कार्य नियन्त्रण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में रखने योग्य वस्तु है। नियन्त्रण रखने वाला अर्थात् शासक स्वयं अपने पर शासन अर्थात् नियन्त्रण नहीं रख सकता।''

परिणाम यह हुआ कि दास बाबू उद्योगपति बन गये। उसने प्लास्टिक के घरेलू सामान बनाने वाला कारखाना खोल लिया। पाँच वर्ग मील स्थान लेकर उस पर फैक्ट्री, अन्वेषणशाला, कर्मचारियों के मकान और बिजली-पानी का प्रबन्ध होने लगा। सड़कें बनने लगीं। जर्मन से योग्य इन्जीनियर आये और हिन्दुस्तानी कर्मचारियों को शिक्षा देने लगे।

सन् पचास में कार्यारम्भ हुआ। सन् सत्तावन में विपिन नगर और विपिन फैक्ट्री कार्य करने लगी। सन् अठावन में माल की पूर्ण देश में बिक्री होने लगी। ट्रे, गिलास, चम्मच, मेजपोश, दीवारों पर लगाने के तख्ते आदि दो सौ से ऊपर प्रकार की वस्तुओं का निर्माण होने लगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

षष्ठ परिच्छेद

: १ :

१९६० के भारत में, कम्युनिस्ट तूफान से विक्षुब्ध, कर्मचारी जगत् अशान्त हो रहा था। पैरिस में शिखर सम्मेलन के असफल होने पर जहाँ अमेरिका, ब्रिटेन तथा फ्राँस भौंचक्के हो समझ नहीं सके थे कि क्या हो रहा है, वहाँ कम्युनिस्टों के मस्तिष्क शस्त्र-युद्ध को व्यर्थ समझ सैद्धान्तिक युद्ध को उग्र कर बैठे थे।

शिखर सम्मेलन के तुरन्त ही पीछे टर्की, कोरिया, जापान और इटली में कम्युनिस्ट सैद्धान्तिक युद्ध उग्र हो गया। अमेरिका तथा ब्रिटेन इसको न समझते हुए 'पीसफुल को-ऐग्ज़िसटैंस' (शान्तिमय सह-अस्तित्व) के गीत गा रहे थे।

अमेरिका में भी, प्रधान के निर्वाचन में अपने दल की जीत कराने के लिए, अमेरिका की सुरक्षा नीति की निन्दा करने में ऊल-जलूल युक्तियाँ देने में, दल एक-दूसरे से बाज़ी ले रहे थे। जापान में अमेरिकन मान की छीछालेदार उड़ती देख, आइज़नहॉवर की हँसी उड़ाने में कुछ मूर्ख अमेरिकन भिन्न-भिन्न बोलियाँ बोल रहे थे।

उस समय रूस के आश्रित कम्युनिस्ट दुनिया भर में क्रान्ति की योजनाएँ बना रहे थे। जब भारत के राष्ट्रपति रूस को चरौड़ी कर रहे थे और स्थान-स्थान पर रूस की शान्ति के प्रयासों की डुग्गी पीट रहे थे, वहाँ रूस के टुकड़ों पर पल रहे कम्युनिस्ट कार्यकर्ता भारत की योजनाओं, सुप्रबन्ध और अर्थ-व्यवस्था को नष्ट-भ्रष्ट करने के लिये देश-व्यापी हड़ताल कराने में लगे थे।

रूस के प्रधानमंत्री निकिटा ख्रुश्चेव, एक ओर तो यह कह रहे थे कि भू-मण्डल में शान्ति स्थापित करने के लिये सब प्रकार के अस्त्र-शस्त्रों का निर्माण बंद होना चाहिये, दूसरी ओर वह अमेरिका और इंग्लैंड को गालियाँ दे-देकर अपनी वाणी अलंकृत कर रहे थे।

इस प्रकार की घटनाओं का ज्ञान दास बाबू का अपनी दूर-दृष्टि से तब ही हो गया था, जब वह कारखाने के लिये योजना बना रहा था। जब उसने अपने कारखाने की योजना भारत सरकार के पास भेजी तो भारत सरकार ने सहर्ष सहायता देने के लिये हाथ बढ़ाया साथ ही रूसी विशेषताओं की सहायता ले देने की योजना उपस्थित कर दी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसके विपरीत विपिनबिहारी दास ने पश्चिमी जर्मनी के कुछ विशेषज्ञों की सेवा उपलब्ध कर लेने की सूचना भेज दी। इस पर सरकार के उच्च पदाधिकारी हठ करने लगे कि रूसी सहायता ली जाये, परन्तु दास बाबू नहीं माने और जब उसने सरकार के रूसी थर्ड-रेट विशेषज्ञों को उस पर थोपने के आरोप को विख्यात करने की धमकी दी तो स्वीकृति मिल गयी, परन्तु जर्मनी भेजने के लिये 'फौरन एक्सचेंज' का अभाव बता दिया। जब इसका प्रबन्ध भी दास ने कर लिया तो विवश हो उसे कारखाना खोलने की स्वीकृति दे दी गयी।

विपिनबिहारी ने यह सूचना अपने लड़के को देकर बताया—"मैंने अपने कारखाने की सफलता की ओर प्रथम सफल पग धर लिया है। यदि मैं इसमें हार मान जाता तो मानो बालक के जन्म से पूर्व ही शरीर में विष का इंजेक्शन लग जाता।"

दास ने अपनी इस नीति को चलाने के लिये विमलानन्द को, जो बीमा कम्पनी में उसके राष्ट्रीयकरण होने पर छुट्टी पा गया था, बुला लिया। प्रत्येक कर्मचारी की भर्ती से पहले, उसने विमलानन्द को यह कार्य सौंप रखा था कि वह उस उम्मीदवार के विचार और कम्युनिज़म की ओर झुकाव का अनुमान लगाये।

दो वर्ष के अनथक प्रयत्न से विमलानन्द ने कारखाने के लिये पाँच सौ कर्मचारी भर्ती किये थे। उनमें से एक भी 'होल टाईमर' (कम्युनिस्ट) आने नहीं दिया गया। यही कारण था कि दो वर्षों में कारखाना चलने लगा था और पेट भर वेतन सब को मिलने लगा था।

विमलानन्द एक ओर तो भर्ती करने वाला अफसर था, दूसरी ओर वह ही मज़दूरों का हितैषी (वेलफेयर) अफसर भी था।

कारखाने को भली-भाँति चलते एक वर्ष हो रहा था और इसमें इतना लाभ हुआ था कि मज़दूरों को दो-दो मास का वेतन अतिरिक्त मिल गया। कहावत है कि मीठे पर मक्खियाँ आती हैं, परन्तु विपिनबिहारी दास जानता था कि मक्खियाँ तब ही आती हैं, जब गुड़ नंगा छोड़ा जाये। अतः वह कारखाने में किसी कम्युनिस्ट को घुसने नहीं देता था।

हरिमोहन के साप्ताहिक पत्र में कारखाने की खुशहाली का विवरण छपा था। उसमें लाभ की राशि छपी थी और कर्मचारियों को दो-दो मास के वेतन के भत्ते की बात भी छपी थी।

इस पर कम्युनिस्ट जगत् ने अपने बग़ावत उत्पन्न करने के लिये बनाये जाने वाले मान-चित्रों को देखा तो वहाँ विपिन फैक्टरी का नाम नहीं पाया। इस पर वे परस्पर चर्चा करने लगे, कि यह फैक्टरी कहाँ है?

आखिर पता किया गया और आश्चर्य प्रकट किया गया कि यह कैसे हो गया कि उनका एक भी 'होलटाईमर' कार्यकर्ता वहाँ नहीं है। अतः तुरन्त एक कार्यकर्ता को जाँच के लिये वहाँ भेज दिया गया। परन्तु जब वह कार्यकर्ता वहाँ पहुँचा तो उसको कारखाने के द्वार पर ही रोक लिया गया। जब उसे विमलानन्द के पास ले जाया गया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो उसने पूछा, "क्या नाम है ?"

"वृजविहारी शुक्ल।"

"क्या काम है ?"

"फैक्टरी देखने आया हूँ।"

"देखकर क्या करोगे ?"

"अपने ज्ञान की वृद्धि।"

"इसके लिये किसी स्कूल कॉलेज में जाओ।"

"परन्तु इस फैक्टरी को दिखाने में आपको क्या दुःख होता है ?"

वृजविहारी ने समझा था कि प्रायः सभी फैक्ट्रियों के वेलफेयर अफसरों के समान यह भी कम्युनिस्ट होगा और उसको स्वीकृति आसानी से मिल जायेगी। परन्तु यहाँ बात उलटी निकली। विमलानन्द ने पूछ लिया—

"किसी स्कूल कॉलेज में पढ़ते हो क्या ?"

"नहीं ?"

"क्या काम करते हो ?"

"एक स्कूल में अध्यापक हूँ।"

"विमलानन्द ने विचार कर पूछा, "कहाँ ?"

शुक्ल ने बताया, "सागर यूनिवर्सिटी के अधीन हिन्दी का अध्यापक हूँ।"

"कोई प्रमाण बताओ। कोई छपा कार्ड अथवा कोई पत्र, जिससे पता चले कि तुम जो कहते हो, सत्य है ?"

"आपका मतलब क्या है ? क्या मैं झूठ बोल रहा हूँ ?" शुक्ल ने क्रोध में कहा —"इस स्वर्ग में किसी को घुसने नहीं देना चाहते तो रखिये इसको अपने पास।"

"तुम जा सकते हो। परन्तु जो कुछ तुम कहते हो, उसका प्रमाण जाने बिना मैं तुमको फैक्ट्री देखने की स्वीकृति नहीं दे सकता।"

वृजविहारी शुक्ल जाने लगा तो विमलानन्द ने कहा, "ठहरो।"

"क्यों ?"

"मैं तुमको पुलिस के हवाले करने लगा हूँ।"

"किस लिये ?"

"इसलिये कि तुम यहाँ किसी सन्देहात्मक कार्य के लिये आये प्रतीत होते हो। अपनी सफाई पुलिस को देना।"

यह सुनकर वृजविहारी शुक्ल वहाँ से बाहर निकलने लगा तो उसके पास खड़े चौकीदार ने उसको बाँह से पकड़ लिया। विमलानन्द ने विपिननगर की पुलिस चौकी पर फोन कर दिया। विमलानन्द ने कहा, "थानेदार साहब ! एक पक्षी उड़ता हुआ आया है। तनिक उसकी जाँच कर बताइये कि उसको कारखाना देखने दूँ अथवा न ?"

इस पर वृजविहारी ने कहा, "यहाँ फौजी सामान बनता है जो इतनी देखभाल की जाती है ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यह पुलिस से पूछना।"

दो पुलिस कॉन्स्टेबल आये और वृजविहारी शुक्ल को थाने में ले गये। बहुत कठिनाई से शुक्ल साहब ने जान बचाई और दिल्ली पहुँचे।

अगले दिन समाचार पत्रों में विपिन प्लास्टिक फैक्ट्री में नाकाबन्दी और वहाँ पर मज़दूरों की बुरी हालत पर एक संवाददाता का लेख छप गया।

दास ने दो समाचार पत्र के सम्पादकों को नोटिस दे दिया कि वे अपने समाचार पत्र में, उसी स्थान पर जहाँ यह समाचार प्रकाशित हुआ है, क्षमा माँगें अन्यथा उन पर मान-हानि का दावा कर दिया जायेगा।

इस पर एक समाचार पत्र का संवाददाता आया और असली वृतान्त जानने के लिए उसने कारखाने के निरीक्षण की स्वीकृति माँग ली। उससे विमलानन्द ने पूछा, "किस समाचार पत्र से सम्बन्ध रखते हो ?"

"......पत्र से।"

"देखिये, आपने हमारी फैक्टरी के खिलाफ जो समाचार छापा है, पहिले उसके लिये क्षमा याचना छपवाइये ! इसके उपरान्त ही आपको स्वीकृति मिल सकती है।"

निराश संवाददाता लौट गया और उसने जाकर यही बात अपने सम्पादक को बता दी। इस पर पत्र-व्यवहार चलने लगा। पत्रों का उत्तर दास बाबू बनाते और विमलानन्द के हस्ताक्षरों से जाते।

इस पर संसद के कम्युनिस्ट सदस्यों का एक ग्रुप फैक्टरी एरिया पर जा पहुँचा। कार्ड देने पर विमलानन्द ने उनको दास बाबू के सामने उपस्थित कर दिया।

परिचय के पश्चात् दास ने पूछा, "सुनाईये, कैसे आना हुआ है ?"

"आपकी इस फैक्टरी की भारतवर्ष में धूम है। यहाँ सुप्रबन्ध और कर्मचारियों की खुशहाली की चर्चा सबके मुख पर है। इस कारण हम देखने आये हैं कि इस सब में क्या रहस्य है।"

"देखिये साहब ! यह डेलिगेशन संसद की ओर से नहीं आया। आप सब एक दल के लोग हैं और दल भी कम्युनिस्ट दल, जिस पर मुझको विश्वास नहीं। इस कारण मैं आपको फैक्टरी दिखाने में कोई लाभ नहीं समझता।"

"आप वही दास हैं न, जो किसी समय सुप्रीम कोर्ट के जज थे।"

"हाँ।"

"आपसे हम इस प्रकार के कटु व्यवहार की आशा नहीं करते।"

"यह कटु व्यवहार नहीं। यह स्पष्टवादिता कही जाती है। परन्तु आप तो कम्युनिस्ट हैं, जो सब संसार को लुटेरा कहते हैं।"

"क्या।"

"लुटेरा अर्थात् 'एक्सप्लॉयटर्स।"

"कारखानों के मालिकों को यही उपाधि देते हैं।"

"दुकानदारों को नहीं ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हाँ, उनको भी।"

"और व्यापारियों को? अफसरों को और राज्य के मिनिस्टरों को नहीं क्या?"

"इसमें संदेह है क्या?"

"राजनीतिक नेताओं को भी तो आप ठग मानते हैं। केवल अपने को ही ईमानदार और मजदूर समझते हैं।"

इस पर वे संसद सदस्य मुस्कराते हुए मुख देखते रहे। दास ने कह दिया, "मेरे पास आप जैसे ईमानदार व्यक्तियों से वार्तालाप करने का समय नहीं है। न ही मैं आपको अपने कारखाने में जाने की स्वीकृति देता हूँ।"

इस प्रकार सागर में ज्वार के समय, उसका कारखाना चट्टान की भाँति दृढ़ खड़ा था।

पाँच सौ कर्मचारियों के लिये पाँच सौ मकान थे। उस छोटी सी बस्ती में अस्पताल था, डिस्पेंसरी थी। स्कूल और पुस्तकालय था और साथ ही मनोरंजन के लिये सिनेमा और थिएटर का प्रवन्ध था।

दास और विमलानन्द प्रत्येक कर्मचारी से परिचित थे, और मोहिनी प्रत्येक कर्मचारी के परिवार को जान-पहिचान में रखती थी।

: २ :

दिल्ली के एक समाचार-पत्र ने क्षमा याचना कर ली, परन्तु एक दूसरे समाचार-पत्र के सम्पादक ने हठ से विपिन प्लास्टिक्स की नीति, कि वहाँ किसी को घुसने नहीं दिया जाता, की घोर निन्दा की। इस पर मान-हानि का दावा कर दिया गया।

अब चर्चा होने लगी कि एक फैक्टरी, जिसमें पाँच सौ कर्मचारी काम करते हों, क्या 'क्लोज़्ड एरिया' (सुरक्षित स्थान) है अथवा यह 'पब्लिक प्लेस' है। यह भी चर्चा होने लगी कि कर्मचारियों की बस्ती को जेलखाना बनाया हुआ है। वहाँ किसी भी बाहर के व्यक्ति को घुसने नहीं दिया जाता।

इन सब आरोपों का उत्तर दिये बिना मुकदमा चलने लगा। समाचार-पत्र के वकील ने कई बातें बनाने का यत्न किया कि वह जेलखाना है, वह पब्लिक प्लेस नहीं है, वह कारखाना है, वह निजी सम्पत्ति नहीं है इत्यादि।

इन सबके उत्तर में कारखाने के वकील ने कह दिया कि कारखाने के मालिक ने दावा अमुक समाचार-पत्र में, हमारे विषय में झूठा समाचार छापने के विरुद्ध किया है। उस समाचार-पत्र में यह नहीं छपा था कि उसके संवाददाता को वहाँ जाने नहीं दिया गया। वह तो कहता है कि वह वहाँ गया और उसने यह देखा है।

कारखाने के वकील का कहना था कि यह असत्य भाषण है। मेरी कोर्ट से प्रार्थना है कि इसके अतिरिक्त यदि कुछ कहा जाये तो उसकी स्वीकृति न दी जाये।

इस पर सब-जज ने कहा, "मान लो कि यह सब आरोप सत्य हैं कि वहाँ पर ऐसा ही है, जैसा कहा जा रहा है, तो क्या यह भयंकर स्थिति नहीं है?"

"इसके लिये समाचार-पत्र को पुलिस में रिपोर्ट करनी चाहिये अथवा एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पृथक् दावा करना चाहिए। तब हम उसका उत्तर दे देंगे।"

"यदि कोर्ट इन आरोपों को दावे में सम्मिलित कर ले तो ?"

"तो मैं यह प्रार्थना करूँगा कि इन आरोपों को लगाने वाला कोर्ट के सामने सौगन्धपूर्वक बयान दे। मैं उस व्यक्ति पर जिरह करूँगा। पश्चात् ही उसका उत्तर दे सकूँगा।"

"कोर्ट इन बातों को सम्मिलित समझता है।"

"तो जो कुछ आरोप हैं, उनको पहले लिखित में ले लिया जाये। पश्चात् मैं आरोप लगाने वाले पर जिरह करूँगा।"

जज ने इस विषय पर निर्णय देने के लिये तिथि दे दी। इस पर वकील ने लिखित आपत्ति अदालत को दे दी। उसने लिखा—"यह प्रार्थना है कि इस दावे में जो कुछ हमने माँगा है, उस पर निर्णय दिया जाये और मुकदमा उसी बात तक सीमित रखा जाये। इसके अतिरिक्त यदि किसी को कारखाने के विरुद्ध कुछ आरोप लगाना है तो नया दावा दायर किया जाये। कारखाना उसमें अपनी सफाई देगा।"

बात सरल थी। परन्तु एक विख्यात, लाखों की सम्पत्ति से चलने वाले समाचार-पत्र की बात को टालने का साहस जज को नहीं हुआ और मुक़दमे के क्षेत्र को बढ़ा दिया गया। इस पर कारखाने के वकील ने कह दिया कि इस आरोप को लगाने वाला कि कर्मचारियों के मकान जेलखाना हैं, साक्षी के कठघरे में आ जाये।

जज ने कह दिया, "यह समय पर हो जायेगा।"

इस पर कारखाने के वकील ने कह दिया, "मैं अदालत के इस हुक्म को अनुचित समझता हूँ। इसकी अपील ऊँचे कोर्ट में करना चाहता हूँ। अदालत अपना हुक्म फाईल पर लिख दे, जिससे मैं उसकी नकल ले सकूँ।"

तारीख दे दी गयी। और जज के हुक्म को अनुचित घोषित करने के लिये सेशन कोर्ट में अपील दाखिल कर दी गयी। सेशन कोर्ट में दोनों वकीलों की बहस हुई। जब समाचार-पत्र के वकील ने यह कहा, "जब तक वहाँ जा कर जाँच करने का अवसर न मिले, तब तक कैसे कहा जा सकता है कि संवाददाता की रिपोर्ट ठीक है अथवा गलत है ?"

तब सैशन जज ने पूछा, "वहाँ किसी को जाने दिया जाता है अथवा नहीं ?"

"नहीं ?"

"उक्त लेख लिखने वाला संवाददाता वहाँ भीतर की बातें देखने गया है अथवा नहीं ?"

"हम नहीं जानते।"

"तो उस संवाददाता को अदालत में उपस्थित कर उसके बयान क्यों नहीं कराये जाते ?"

"सम्पादक इसको उचित नहीं मानता।"

इस पर सेशन जज ने सब-जज की मुक़दमे की जाँच को विस्तृत करने की आज्ञा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को रद्द करते हुए कहा, "जब तक पुलिस अथवा कोई व्यक्ति उन आरोपों को न लगाये जिनके विषय में जाँच विस्तृत करने की आज्ञा है, कोर्ट उन पर विचार नहीं कर सकता।"

मुकदमा पुनः सब-जज की अदालत में आ गया और कारखाने के वकील ने माँग की कि उस संवाददाता को उपस्थित किया जाये, जिसने वह लेख लिखा है। अन्यथा सम्पादक स्वयं जिरह के लिये हाजिर हो।

विवश संवाददाता और सम्पादक के नाम सम्मन जारी हो गये। इनकी तामील नहीं हो सकी। पुनः सम्मन निकाले गये।

इस समय सम्पादक बदल दिये गये और उसने क्षमा माँग ली।

जब मुकदमा चल रहा था, कारखाने पर आय छुपाने का मुकदमा कर दिया गया। इन्कमटैक्स अधिकारी ने कागजों की जाँच-पड़ताल करनी आरम्भ कर दी। पेशी पर पेशी होने लगीं।

दूसरी ओर फैक्टरी लॉ के अधीन इन्स्पेक्टर पर इन्स्पेक्टर वहाँ आने लगे। कभी हाज़िरी तथा ओवर-टाईम देखने वाला इन्स्पेक्टर आ जाता तो कभी मज़दूरी और वेतन देखने का इन्स्पेक्टर आ जाता। सरकार ने बीस प्रकार के नियन्त्रण फैक्टरी पर रखे हुए थे। सब इन्स्पेक्टर पृथक्-पृथक् थे। सबके लिये पृथक्-पृथक् रजिस्टरों में वृत्तान्त लिखा जाता था और वे इन्स्पेक्टर उन रजिस्टरों को देखने आते थे।

ऐसा प्रतीत होता था कि इन इन्स्पेक्टरों को हुक्म होता था कि वे कोई-न-कोई दोष अवश्य निकालें, जिससे नियन्त्रण की कार्यवाई मालिक के विरुद्ध की जा सके। वे बेचारे जब आते और कोई बड़ा दोष न पाते तो छोटे-छोटे दोष निकालने लगते। एक इन्स्पेक्टर ने तो यह रिपोर्ट कर दी कि हाज़िरी के रजिस्टर की जिल्द फटी हुई है और उसमें पृष्ठ बदले जा सकते हैं।

इस पर फैक्टरी को दस रुपया जुर्माना हो गया। एक अन्य इन्स्पेक्टर ने यह रिपोर्ट कर दी कि 'फर्स्ट-एड' का बॉक्स ताले में बन्द था। इससे 'फर्स्ट-एड' का उद्देश्य पूरा नहीं हो सकता।

इस पर मालिक को पचास रुपया जुर्माना हो गया।

दास ये जुर्माने 'अंडर-प्रोटेस्ट' जमा कराता जाता था। साथ ही नये-नये इन्स्पेक्टर इसी प्रकार की शिकायतें करते रहते थे।

एक दिन एक मिनिस्टर महोदय आ गये। उनको कारखाने को देखने दिया गया। उनकी कर्मचारियों से भेंट कराई गयी। उनके रहने के मकान दिखाये गये। साथ ही उनके बाल-बच्चों के लिये खेल-कूद तथा पढ़ाई सम्बन्धी प्रबन्ध भी बताया गया।

पश्चात् दास मिनिस्टर साहब को अपने बंगले में चाय-पानी के लिए ले गया। मिनिस्टर ने कहा, "दास बाबू! आप जैसे विद्वान व्यक्ति ने ऐसा गंदा कार्य क्यों ले लिया है?"

"कौन-सा गंदा कार्य?"

"यह कारखाना चलाना कोई अच्छा कार्य नहीं है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"जब सरकार स्वयं यह कार्य करने लगी है तो इसको बहुत बढ़िया कार्य समझ, मैं भी करने लगा हूँ।"

"सरकार तो विवश हो करती है?"

"क्या विवशता है?"

"सरकार बड़े-बड़े कार्य जो 'प्राईवेट-सेक्टर' में होने सम्भव नहीं, वही करती है। यह मजबूरी है।"

"यदि सरकार उन तमाम बड़े-बड़े कामों को करने के लिए देश के व्यापारियों और उद्योगपतियों का आह्वान करती, तो ये उन द्वारा किये जाने असम्भव नहीं थे। सरकार ने तो ऐसा अवसर जनता को दिया ही नहीं।

"देखिये साहब! जाँच-पड़ताल के पश्चात् यह निमंत्रण दिया जाता तो मैं समझता हूँ कि ये भिलाई, रूरकेला इत्यादि के काम भी उद्योगपति चला लेते और मेरा अनुमान है कि कम खर्चे में अधिक अच्छी तरह कर लेते।"

"यह असम्भव है?"

"इसका प्रमाण।"

"सब पैसे वाले बेईमान हैं?"

दास हँस पड़ा। हँसकर कहने लगा, " 'एवरी थिंग लुक्स येलो टू ए जाँडिस्ट आई।' (पीलिया के रोग वाले को सब पीले ही दिखाई देते हैं।)"

मिनिस्टर के माथे पर त्यौरी पड़ गयी। दास इस चढ़ी त्यौरी का अर्थ अच्छी तरह समझता था। उसने कहा, "मैंने युक्ति जो साहित्य में विख्यात है, कही है। मेरे घर में बैठे, मुझ जैसों को बेईमान तो आपने और वह भी एक बहुत भद्दे ढंग से, कहा है।

"खैर छोड़िये। मैंने कारखाना खोला है आप जैसे झूठे स्लोगनों के कहने वालों को झूठा सिद्ध करने के लिए। मैं बेईमान नहीं हूँ। आपके इन्स्पेक्टर नित्य यहाँ आ रहे हैं और वे मेरे काम में यह दोष निकाल रहे हैं कि रजिस्टर की जिल्द फटी है। इस पर आपके अधिकारी मुझको दस रुपये जुर्माना कर देते हैं।

"छः मास की भाग-दौड़ के करने पर भी कोई बेईमानी नहीं पकड़ी गयी।"

मिनिस्टर चाय को कड़ुवा घूँट कर पी रहा था। ज्यूँ-त्यूँ कर उसने चाय समाप्त की। जब वह चलने के लिए तैयार हुआ तो उसने कहा—"कोई 'लौग-बुक' है तो लाइये मैं अपने रिमार्क्स लिख दूँ।"

"क्षमा करें, मुझको समझ नहीं आ रहा कि आप उससे अधिक क्या लिखना जानते हैं, जो आपके इन्स्पेक्टर लिख रहे हैं। आपने तो प्लास्टिक का कोई कारखाना कभी चलाया नहीं। न ही आप प्लास्टिक 'एक्सपर्ट' हैं, न ही इण्डस्ट्रियलिस्ट तथा न ही आपको कुछ ऐसा अनुभव है।"

"तो आप समझते हैं कि मैं ऐसे ही मिनिस्टर बन गया हूँ?"

"नहीं साहब! आपको मत मिले हैं। आप शासक पार्टी में और विशेष रूप में पार्टी के नेता पर भारी प्रभाव रखते हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो मैं आपका बहुत कुछ भला कर सकता हूँ।"

"मैं यह जानता हूँ। परन्तु जब मैंने यह कारखाना खोलने का विचार ही किया था, तो यह निश्चय कर लिया था कि सरकार से किसी प्रकार की सहायता के बिना कार्य करूँगा।"

"परन्तु याद रहे, मैं नाराज़ हो जाऊँ तो भारी हानि भी पहुँचा सकता हूँ।" यह कहते हुए मिनिस्टर साहब खिलखिलाकर हँस पड़े।

दास भी हँसने लगा। हँसते हुए उसने कहा, "मैं आपसे इतनी मूर्खता की आशा नहीं करता।"

"क्यों, इसमें मूर्खता क्या है ? आप मुझको अयोग्य समझते हैं। इससे आपके सुप्रबन्ध को कुप्रबन्ध समझ लूँ तो आपके लिए विस्मय करने की बात नहीं होनी चाहिए। समझे ?"

दास ने हँसते हुए कहा, "हज़ूरेवाला ! मैं यही आपसे आशा करता था। इसलिए मिनिस्टरों से लिखवाने के लिए 'लौग-बुक' नहीं बनवाई गयी।"

"तो और किनसे लिखवाने के लिये बनवाई है ?"

"पश्चिमी जर्मनी, रूस, तुर्की, स्लाबिया के दस्तकारी के डेलिगेशन आये थे। उनकी सम्मति और उनसे सुझाव लिखवाये हैं।

"चीफ इंजीनियर आफ वेस्ट जर्मनी आया था। उसने भी कुछ सुझाव लौग-बुक में लिखे हैं। टाटा के चीफ मैनेजर आये थे। उनसे भी कुछ लिखने को कहा था।"

"और मिनिस्टरों से कुछ नहीं लिखवाइयेगा ?"

"मुझको निर्वाचन नहीं लड़ना। आप उसी विद्या के एक्सपर्ट हैं न ?"

: ३ :

सन् १९५९ में जहाँ चीन ने तिब्बत पर अधिकार करने के पश्चात् भारत के एक भू-भाग पर अधिकार कर लिया, वहाँ ख्रुश्चेव ने पूर्वी जर्मनी के साथ पृथक् से समझौता कर लेने की धमकी दे दी। जहाँ चीन ने फारमोसा द्वीप के अधीन कुछ द्वीपों पर गोला-बारी की, वहाँ भारत के कम्युनिस्टों ने तिब्बत को एक पिछड़ा हुआ देश कहकर, चीन द्वारा उसके लोगों को उन्नति के पथ पर लाये जाने में प्रसन्नता प्रकट कर दी। जहाँ भारत के कुछ भू-भाग पर चीनी अधिकार को उचित ठहराया, वहाँ फारमोसा पर चीनी गोलाबारी को उनका अधिकार माना।

कलकत्ता में तो कम्युनिस्टों ने भारी सभा कर यह घोषित कर दिया कि यदि चीन की सेना भारत में आयेगी तो हम उनका स्वागत करेंगे।

ऐसी अवस्था में देश की सरकार को क्या करना चाहिए ? यह किसी प्रकार भी संदिग्ध नहीं। एक विदेशी राज्य को देश पर आक्रमण करने के लिए प्रोत्साहन देना तो देश-द्रोह है। इसका एक ही उत्तर हो सकता था कि देश की कम्युनिस्ट पार्टी को अवैध घोषित कर दिया जाता। यदि ऐसा करने के लिए कोई कानून नहीं था, तो राष्ट्रपति एक अध्यादेश (आर्डिनैंस) निकाल सकते थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परन्तु हुआ यह कि चीन और रूस की उन्नति के गीत गाए जाते रहे। जिसका स्वाभाविक परिणाम यह था कि केरल में जनता के घोर विरोध पर भी कम्युनिस्ट पार्टी को मिलने वाले मतों की संख्या बढ़ गयी। इस सबका उत्तरदायित्व भारत की केन्द्रीय सरकार पर था, जो प्रत्येक क्षेत्र में कम्युनिस्टों को बढ़ावा दे रही थी।

जब देश में कम्युनिस्ट चीन की निन्दा हो रही थी तो भारत की केन्द्रीय सरकार के प्रमुख अधिकारी यह कह रहे थे कि यह चीन में कम्युनिज़म के कारण नहीं, प्रत्युत चीन की सदा से चली आ रही विस्तारवाद की प्रवृत्ति के कारण है।

देश की इस सब अस्त-व्यस्त अवस्था के कारण, कम्युनिस्ट सब क्षेत्रों में खूब पदावियाँ पा रहे थे।

सन् १९६० के आरम्भ की बात है। मोहनसागर का एक पत्र दास बाबू को मिला। उसमें लिखा था—"मैं आपसे मिलना चाहता हूँ।"

समय निश्चय हुआ और मोहन मिलने के लिए विपिन नगर में आ गया। जब दास बाबू से भेंट हुई तो मोहन ने बताया, "दास बाबू! मैंने समाचार-पत्रों में पढ़ा है कि आपका कारखाना उत्तरोत्तर उन्नति कर रहा है।"

"हाँ, मैं इसको चमत्कारिक उन्नति समझता हूँ।"

"मैंने यह भी पढ़ा है कि आप इसी फैक्टरी को और विस्तार देना चाहते हैं।"

"यह सूचना मैंने ही समाचार-पत्रों को दी थी।"

"मैं अपने 'रेयन' के कारखाने से निराश हूँ।"

"क्यों, क्या हुआ है?"

"पिछले वर्ष कारखाने में साढ़े तीन महीने हड़ताल रही है। उस हड़ताल पर 'ऐड्ज्यूडिकेशन' हुआ तो दोष मेरा माना गया और हड़ताल का सब खर्चा मेरे नाम पड़ा। अब 'बैलेंस शीट' घाटे का है और कर्मचारियों ने बोनस की माँग कर दी है।

"मैंने उनकी यूनियन को बताया है कि पिछले वर्ष घाटा रहा है तो उन्होंने हड़ताल का नोटिस दे दिया है।"

"तो अब क्या करने जा रहे हो?"

"मुझको तो समझ में नहीं आता।"

"कारखाना बन्द कर दो।"

"बन्द करूँ तो एकदम इतना कुछ प्रतिकार में देना पड़ेगा कि मेरा तो दिवाला पिट जायेगा।"

"तो यह तुमको रिज़र्व में रखना चाहिये था। कानून के तो पालन करने की क्षमता रखनी चाहिए थी।"

"यह मेरे ऑडिटरों ने बताया नहीं।"

"देखो मोहन! जितने वर्ष किसी कर्मचारी ने नौकरी की है, पन्द्रह दिन प्रति-वर्ष के हिसाब से वेतन ग्रैच्युयिटी के रूप में कर्मचारी को अकारण छुट्टी देने के समय देना होता है। इतना कुछ तो तुमको जमा रखना ही चाहिये था।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"नहीं रखा, दास बाबू !"

"इसका अर्थ है कि मज़दूरों का हक तुमने अपने निजी प्रयोग में खर्च कर दिया है। यह तो बेईमानी है।"

"दास बाबू ! अब बताइये मैं क्या करूँ ?"

दास ने कुछ देर विचार कर कहा, "अपने कारखाने को किसी दूसरे कारखाने वाले से संयुक्त कर दो।"

"यही प्रस्ताव करने तो आया हूँ। या तो आप कारखाने को मोल ले लें। अन्यथा अपने साथ इसको भी मिला लें और जो कुछ मेरे भाग में आये दे दीजियेगा।"

"मैं कारखाने को अपने कारखाने के साथ संयुक्त तो करूँगा नहीं। तुम बन्द कर दो तो मैं खरीद लूँगा।"

मोहन का निश्चित उत्तर था, "मैं कारखानेदारी से बाज़ आया। मैं तो पुनः व्यापार में चला जाऊँगा।"

"ठीक है। ज्यूँ ही कर्मचारी हड़ताल घोषित करें, कारखाने को ताला लगा दो और उसको बन्द करने की घोषणा कर दो। पीछे विचार कर लिया जायेगा कि तुम्हारी पूँजी क्या है और तुमको देना कितना है।"

मोहन अभी विपिन नगर में ही था कि रेयन मिल के कर्मचारियों ने हड़ताल की घोषणा कर दी। दास ने बताया, "तुम तुरन्त कलकत्ता चले जाओ। जाते ही कारखाने पर पहरा लगवा दो, ताकि उसको कोई कुछ हानि न पहुँचा सके।

"पश्चात् यह घोषणा कर दो कि तुम कारखाना बन्द करते हो। जिन्होंने हड़ताल नहीं की वे नौकरी छोड़ने का प्रतिकार जो कानून से उनका बनता है लेते जायें। जिन्होंने हड़ताल की है, उनको कह दो कि यह हड़ताल गैर-कानूनी है। अतः उनको कुछ न दो और मुकदमा चलने दो।

"उस समय तुम कारखाना मेरे पास बेचने का प्रस्ताव कर देना। मैं कारखाना ले लूँगा।"

मोहन कलकत्ता लौट गया। परन्तु उसके लौटने से पूर्व ही मोहन के कारखाने को बहुत हानि पहुँचाई जा चुकी थी। यह कारखाने में 'स्टे इन' (भीतर ठहरो) हड़ताल थी। कर्मचारी काम नहीं करते थे। खाली बैठे मशीनों को हानि पहुँचाने का काम करते रहते थे।

मोहन ने बहुत कठिनाई से भारी पुलिस और सेना की सहायता से कारखाना खाली करवाया और कारखाना बन्द कर दिया। हड़तालियों को डिसमिसल का नोटिस दे दिया और कुछ कर्मचारियों को, जो उपस्थित हो रहे थे, उनको नौकरी छूटने का हर्जाना देने की घोषणा कर दी।

हड़तालियों ने औद्योगिक कचहरी (इन्डस्ट्रियल कोर्ट) में दावा कर दिया। मोहन के वकील ने कह दिया कि यह हड़ताल अकारण है अतएव अनियमित है। इस बात की सूचना हड़तालियों को यथासमय दे दी गयी थी। कारखाना पिछले वर्ष से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घाटे में जा रहा था। अतएव बोनस नहीं दिया जा सकता। इस पर भी हड़ताल की गई है।

जब यह मुकदमा चल रहा था तो दास भी मोहिनी को साथ ले कलकत्ता आ पहुँचा। दास ने अपने हिसाब-किताब देखने के मुन्शी को रेयन के कारखाने के हानि-लाभ, सम्पत्ति तथा देय की जाँच के लिये बैठा दिया।

दास अभी कलकत्ता में ही था कि यह बात किसी प्रकार बाहर निकल गयी कि दास बाबू रेयन का कारखाना खरीदने का विचार रखता है। इससे मज़दूरों में, जो हड़ताल किये हुए थे और जिनकी ओर से मुकदमा चलाया जा रहा था, प्रसन्नता की लहर दौड़ गयी। कुछ मज़दूर दास बाबू से मिलने आये तो उन्होंने बताया, "हम मोहन बाबू के 'रेयन' के कारखाने के कर्मचारी हैं। हमने सुना है कि यह कारखाना आप खरीद रहे हैं? क्या यह सच है?"

"यह इस प्रकार है। मुझको कारखाना खरीदने का प्रस्ताव किया गया है। मैं कारखाने की आर्थिक अवस्था की जाँच कर रहा हूँ। यदि अवस्था मेरे मन पसन्द हुई और भाव-ताव अनुकूल हो गया तो सौदा हो सकता है।"

"हमको बहुत प्रसन्नता होगी, यदि आप इसको ले लेंगे।"

"आपको प्रसन्न होने में कोई कारण नहीं। मैं कारखाना ले लूंगा तो नई भर्ती करूँगा। पिछला लेना-देना पिछले मालिकों से चलेगा।"

"हमको बताया गया है कि वास्तव में ही कारखाने को हानि हुई है और हमारा बोनस लेना नहीं बनता।"

"तो आपने हड़ताल क्यों की?"

"यह बात हमको बताई नहीं गयी। जब हमने मुकदमा दायर कर दिया तो अब वकील बताने लगे हैं कि हड़ताल कराने में भूल हो गयी है।"

"परन्तु यह जाँच तो हड़ताल करने से पहले करनी चाहिये थी।"

"हमारे नेताओं ने जाँच की थी। उनकी सम्मति में मालिक झूठ बोल रहा था। उनका विचार था कि जाँच पर उसका झूठ प्रकट किया जा सकेगा।"

"देखो जी; जाँच पहले होनी चाहिये थी। मालिक के झूठ के प्रमाण ढूंढने चाहिये थे। जब यह पता चल जाता तब हड़ताल की घोषणा होनी चाहिये थी।"

"हमारे नेता अयोग्य सिद्ध हुए हैं।"

"उन नेताओं के नाम लिखवा जाओ?"

"क्यों?"

"इसलिये कि मैं उनको नौकर रखने में भूल न कर बैठूं।"

"वे नेता तो नौकर नहीं हैं। वे हमारी यूनियन के संगठनकर्ता थे।"

"तो तुम लोग बाहर के लोगों की सम्मति से कारखाने के साथ खिलवाड़ कर रहे थे?"

"यह तो सब जगह हो रहा है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यह सब मेरे कारखाने में नहीं चलेगा। उनकी यूनियनों को मैं चलने नहीं दूंगा।"

"यह हम नहीं कर सकेंगे।"

"देखो, साथियो !" साथियो शब्द कहते हुए दास मुस्करा दिया। उसने कहा, "किसी देश के नागरिक उस देश के विषय में देश के बाहर के लोगों की सम्मति पर कार्य करें तो वे देश-द्रोही माने जाते हैं। यदि देश का शासक समझदार हो तो उन देश-द्रोहियों का स्थान फाँसी का तख्ता होता है। इस प्रकार यदि कारखाने के विषय में कारखाने के कर्मचारी ही, कारखाने के बाहर के किसी व्यक्ति की राय से कार्य करने लगें तो वे कारखाने के द्रोही होते हैं। उनके लिये स्थान कारखाने से बाहर है। कारखाने में नहीं।"

वे सब सब लोग मुख लटकाये चले गये। दस कर्मचारी आये थे। उनमें से केवल एक था, जो दास की युक्ति को समझ पाया था और अपने साथियों को कहने लगा था, "दास बाबू ठीक कहते हैं। यूनियन के प्रधान ने हमको धोखा दिया है। हम अब जान गये हैं कि यह जान-बूझकर किया गया है। इस कारण यदि हमने नौकरी करनी है तो उससे सम्बन्ध विच्छेद करना ही होगा।"

: ४ :

कर्मचारियों के निराश लौट जाने पर मृणालिनी, जो पार्टी की ओर से कारखाने के मालिकों से समझौता कराने के काम में लगी थी, दास बाबू से मिलने चली आयी।

दास मृणालिनी को देखते ही समझ गया कि विरोधी कैम्प में बेचैनी फैल रही है। इस बेचैनी का कारण यह है कि हड़तालियों का मुकदमा दुर्बल है और हड़तालियों की दास बाबू से समझौता कराने में कठिनाई अनुभव होने लगी है।

"ओह ! मृणालिनी देवी। आओ, आओ बैठो। मोहिनी देवी को अभी बुलाता हूँ।"

"नहीं, मुझको आपसे काम है ?"

"मुझसे ? क्या अपराध हो गया है मुझसे ?"

"अपराध नहीं। मैं यह जानने आयी थी कि इस बात में कितनी सच्चाई है कि आप मोहन बाबू का 'रेयन' का कारखाना ले रहे हैं ?"

"तो क्या आज प्रातः जो कर्मचारी आये थे, वे तुमसे मिले नहीं ?"

"कौन आये थे ?"

"देखो मृणालिनी ! तुम नेता अवश्य हो, परन्तु तुम मेरे जितना अनुभव और मानव प्रकृति का ज्ञान नहीं रखतीं। मैं बताता हूँ कि वे लोग, जो आज प्रातः यहाँ आये थे, यहाँ से जाने के पश्चात् तुमसे मिले हैं और तुमको मेरे साथ हुई बात बताई गयी है। इससे उसी बात को दुहराने में समय व्यर्थ न गँवाकर आगे बात करो।"

"हमारी सूचना है," मृणालिनी ने कहा, "कि आपने मोहन बाबू का कारखाना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
लेने का निश्चय कर लिया है। अतः मैं जानने के लिये आयी हूँ कि आप हड़तालियों को नौकर रखेंगे अथवा नहीं ?"

"मैंने नौकर तो रखने ही हैं। पुराने अनुभवी कर्मचारियों को प्राथमिकता ही दूँगा। परन्तु जिनकी 'लायलटी' (श्रद्धा) कारखाने के विषय में, कारखाने से बाहर के लोगों के साथ है, उनको मैं नौकर नहीं रख सकता।"

"परन्तु यह तो कानून के अनुसार है। आप तो कानूनदाँ हैं। हम आपसे किसी ऐसी बात की आशा नहीं करते, जो कानून के अनुसार न हो।"

"देखो मृणाणिनी ! मुझको यह कहने का अधिकार है कि मैं कानून तुमसे अधिक समझता हूँ। मेरे कारखाने के कर्मचारियों की यूनियन तो बनेगी, परन्तु कोई भी कारखाने के बाहर का व्यक्ति यूनियन में घुस नहीं सकेगा।"

"हम आपके कर्मचारियों की यूनियन में बाहर का व्यक्ति नहीं भेजेंगे।"

"यह मैं नौकर रखने के समय देखूँगा कि वह बाहर का व्यक्ति है अथवा भीतर का व्यक्ति है ?"

"तो आप अपने कर्मचारियों के राजनीतिक विचारों में हस्तक्षेप करेंगे ?"

"नहीं, मैं किसी को विवश नहीं कर सकता कि वह आपकी पार्टी में सम्मिलित न हो। इसी प्रकार आप मुझको विवश नहीं कर सकतीं कि मैं किसी कम्युनिस्ट को अवश्य नौकर रखूँ।"

"हम देखेंगे कि आप कैसे यह रोक सकते हैं।"

"तो देख लीजियेगा। मैंने अभी कारखाना लेने का निर्णय नहीं किया। जिस दिन करूँगा, देखियेगा कि मैं कैसे कम्युनिस्टों को उसमें आने से रोकता हूँ।"

"तनिक हमको भी बता दीजिए। आप तो स्पष्ट बात करने वाले हैं न ?"

"मुझको बताना तो नहीं चाहिये। इस पर भी बताता हूँ। मैं प्रत्येक कर्मचारी से यह 'बाँड' लिखवाऊँगा कि वह मन, वचन और कर्म से कम्युनिस्ट नहीं है। वह हड़ताल को किसी भी झगड़े में प्रयोग नहीं करेगा। प्रत्येक झगड़े के लिए वह 'इन्डस्ट्रियल डिस्प्यूट ऐक्ट' के अनुसार निबटारा करेगा।

"कारखाने के मालिक की हैसियत से प्रत्येक बाँड पर मैं यह वचन दूंगा कि कोर्ट के निर्णय को मैं मानूंगा। न मानने पर पूरी हानि दूंगा।"

"यह सब असम्भव है। मालिक कोर्ट के निर्णयों को नहीं मानते। मोहन ने कारखाना भी बन्द इसी कारण ही किया है कि वह कोर्ट के निर्णय को मानने का विचार नहीं रखता था।"

"मोहन की बात मोहन जाने। कानून के अन्दर ऐसी धारा है, जिससे कारखाने के मालिक को कोर्ट का निर्णय मानने के लिये विवश किया जा सकता है। मैं वचनबद्ध रहूँगा कि जो हड़ताल नहीं करेंगे, उनके साथ कोर्ट का निर्णय मानूंगा। हड़ताल करने वाले वचन-भंग के अपराधी मान कर निकाल दिये जायेंगे।"

"परन्तु हड़ताल करना तो हमारा जन्म-सिद्ध अधिकार है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"ठीक है। क्या आपका यह भी जन्म-सिद्ध अधिकार है कि जबरदस्ती किसी से नौकरी लें। मैं तो उसी को अपने कारखाने में नौकर रखूँगा, जो इस हथियार को प्रयोग न करने का वचन देगा। जब मैं कोर्ट की आज्ञा मानने के लिए वचनबद्ध हूँ तो कोई कारण नहीं कि हड़ताल की जाये।"

मृणालिनी हँस पड़ी। हँसकर उसने कहा, "दास बाबू ! आप बहुत ही भोली प्रकृति रखते हैं। आप यह नहीं जानते कि जनमत एक प्रबल शक्ति का नाम है।"

"वह आपके साथ नहीं है। यदि जनमत आपके साथ होगा तो मुझको कर्मचारी नहीं मिलेंगे।"

अभी हड़तालियों का मुकदमा चल ही रहा कि मोहन के कारखाने का सौदा हो गया। बिक्री की रजिस्ट्री भी हो गयी, परन्तु जिस दिन कारखाने की टूट-फूट की मरम्मत के लिए दास के आदमी वहाँ पहुँचे तो कारखाना सरकार की ओर से अपने अधिकार में कर लिया गया।

दास इस सब की आशा करता था। इस कारण बीस हज़ार पेशगी देने के पश्चात् शेष रकम कारखाने पर अधिकार प्राप्त करने के बाद देने की बात थी। शेष रुपया रोक दिया गया।

साथ ही दास ने एक ओर, तथा मोहन ने दूसरी ओर बंगाल सरकार पर मूल्य दिये बिना कारखाना चलाने पर इन्जक्शन का दावा कर दिया।

दास जानता था कि यह कानून से दुर्बल स्थिति है। दास ने अपने दावे में यह आरोप लगाया था कि सरकार एक नागरिक की सम्पत्ति को छीन कर, उन कर्मचारियों में बाँट देने का विचार रखती है, जिन्होंने उसमें अनियमित हड़ताल कर रखी थी।

उसी सायंकाल मृणालिनी दास से मिलने आई। वास्तव में वह अपने पक्ष की जीत की घोषणा करने आयी थी।

दास ने उसके पहुँचते ही बधाई दे दी और कहा, "तो तुम अपने विचार से यह बताने आई हो कि तुमने हड़तालियों को कारखाने में नौकर रखवा लिया है?"

"हाँ और बिना किसी प्रकार का बाँड भर कर दिये।"

"परन्तु यह कारखाना तो अभी मेरा नहीं हुआ था। उसकी रकम तो तब देनी थी, जब कारखाने पर अधिकार हो जाता।"

कुछ भी हो। आप अपने षड्यन्त्र में सफल नहीं हो सके।"

"षड्यन्त्र है अथवा एक खुली योजना है, सरकार ने उसको विफल कर दिया है। इसीलिये तुमको बधाई दे रहा हूँ। इस पर भी इतना तो स्पष्ट है कि मैंने बिना बाँड लिखवाये, एक भी कर्मचारी नौकर नहीं रखा।"

मृणालिनी हँस पड़ी। इस समय मोहन वहाँ आ पहुँचा। उसने मृणालिनी को वहाँ बैठे देखकर कह दिया, "हमारी योजना को असफल करने वाली ये हैं। इनका मिनिस्टर फॉर कॉमर्स तथा इन्डस्ट्रीज़ से विशेष सम्बन्ध है और ये वह सब-कुछ करा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
लायी हैं जो हम पुरुष होते हुए नहीं करा सके।"

"शटअप।" मृणालिनी ने मोहन को डाँटकर कहा, "इस प्रकार की भद्दी बातें करते आपको लज्जा लगनी चाहिए। देखिये दास बाबू ! मैं आपको बताती हूँ।

"इनके घर में एक चन्द्रकला नाम की औरत रहती थी। उसकी शरद बाबू से मित्रता थी। शरद बाबू 'इन्डस्ट्रीज़ तथा कॉमर्स' विभाग का सेक्रेटरी है। इन्होंने शरद बाबू की चन्द्रकला पर छापा डाला है और शरत बाबू ने इनके कारखाने पर छापा मारा है।"

दास बाबू हँस पड़ा। मृणालिनी समझ रही थी कि दास बाबू को उसके कथन पर विश्वास नहीं आया। इससे उसने विश्वास से कहा, "आप मेरी बात को झूठ समझते हैं क्या ?"

"नहीं, मुझको तुम दोनों की बातों को सुनकर न तो उनकी सचाई पर संदेह हुआ है न ही विस्मय।

"मैं देश में इस परिस्थिति की आशा तो तीस वर्ष पहले ही लगा चुका था।

"मोहिनी !" मोहिनी वहीं बैठी एक पुस्तक पढ़ रही थी। वह अपना नाम सुन पुस्तक से ध्यान हटा इनकी ओर देखने लगी थी। दास ने उसको सम्बोधन कर कहा, "हाँ तो तुम बताओ मोहिनी ! मैंने तुमको सन् १९३४ में, जब तुम जेल से छूटकर आयी थीं, क्या कहा था ?"

मोहिनी ने कह दिया—"ठीक शब्द तो स्मरण नहीं। हाँ, आपके कहने का अर्थ यह था कि गांधी जी के कानून भंग करने के बार-बार किये हुए आन्दोलन जनता में और विशेष रूप में नेताओं में कानून भंग करने की प्रवृत्ति उत्पन्न कर देंगे और कहीं इन नेताओं के हाथ में राज्य चला गया तो ये अपने राज्य को स्थिर रखने के लिये कानून की होली खेलने में भी संकोच नहीं करेंगे।

"एक बात आपने और कही थी कि गांधी जी राम-राम कहते रहते हैं। वे यह भी कहते हैं—'नाट ए ब्लेड ऑफ ग्रास मूव्ज़ विदौट हिज़ विल।' (बिना भगवान की इच्छा के एक तिनका भी नहीं हिलता।) परन्तु उनकी यह सब मौखिक बातें हैं। यह उनके हृदय एवं विश्वास की बातें प्रतीत नहीं होतीं। यदि उनको परमात्मा पर वैसी ही श्रद्धा होती, जैसी वे अपने शब्दों में प्रकट करते रहे हैं, तो वह पंडित जवाहर लाल नेहरू जैसे नास्तिक के आश्रय न रहते। या तो उसको अपने आन्दोलनों से बाहर कर देते अथवा स्वयं कांग्रेस को छोड़ देते।

"गांधी जी किसी भी आस्तिक को अपना सहयोगी नहीं बना सके। उनके प्रायः सहयोगी भगवान पर आस्था न रखने वाले थे।

"गांधी जी ने जैसा बोया, वैसे ही नेता इनके उत्तराधिकारी हुए और आज देश में जो कुछ अन्धेर-गर्दी, गैर-कानूनी व्यवहार हो रहा है और चारों ओर स्वार्थ-परता दिखाई देती है, आपने तब ही कह दिया था कि होने वाली है।"

□□□

167926
३९५
081
167926
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकालय

गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

वर्ग संख्या R 089.9143 GUR-N आगत संख्या 167926

पुस्तक विवरण की तिथि नीचे अंकित है। इस तिथि सहित 30वें दिन यह पुस्तक पुस्तकालय में वापस आ जानी चाहिए। अन्यथा 50 पैसे प्रतिदिन के हिसाब से विलम्ब शुल्क लगेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Acc
Clas
Cat
Tag
E.A
Rec
Dat
Che

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar